अढार दूषण निवारक.

रचनार

शेठ. अनोपचंद मलुकचंद.

छपावी प्रसिद्ध करनार

शेठ. अनोपचंद मलुकचंद.

संघ तरफथी. भरुच.

अमदावाद

निर्मळ प्रिन्टिंग प्रेस. मदनगोपालनी हवेलीमां लल्लुभाई

ईश्वरदास त्रिवेदीए छाप्युं.

संवत १९६०. सन १९०३.

कीमत रु. ०-६-०.

प्रस्तावना.

आ ग्रंथमां प्रथम आस्तिक मतनी सिद्धि करी छे, ने ना-
स्तिक मतनुं खंडन कर्युं छे, तेथी वांचक वर्गने वांचवाथी ...
स्तिक मतनी श्रद्धा दृढ थशे. पछी अढार दूषण सहित संसारी
जीव छे तेनुं वर्णन कर्युं छे, अने ते दूषणाथी केम लेपाय छे ने
केम मुक्त थाय छे तेनुं वर्णन करेलुं छे, अने तेनी साथे अढार दू-
षण रहित वीतराग छे ते दर्शाववामां आव्युं छे. आ रूपनो वर्णव
जूदो नहीं होवाथी शास्त्रना आधारथी भव्य जीवना हितने अर्थे
केटलाएक प्रिय बंधुनी प्रेरणाथी लख्यो छे. पाछळना भागमां जै-
नो केम सुधरे तेनुं वर्णन करेलुं छे. आ पुस्तकमां मारी मतिना
दोषथी कांइ शास्त्र विरुद्ध लखायुं होय तो शास्त्र जोइ शुद्ध कर-
वा विनंती करुं छुं आ ग्रंथनो केटलोएक भाग आचार्य श्री विजया-
नंदसूरि महाराजना शिष्यानुशिष्य परम पूज्य मुनि महाराज
श्री हंसविजयजी महराज शोध्यो छे. तेमज केटलुंक शुद्ध कर-
वानी मेहेनत अमदावादना शा. हीराचंद ककलभाइए लीधी छे,
तेथी ते बंने पुरुषोनो उपकार मानुं छुं. आ ग्रंथ तइयार करवामां
ज्ञानानुरागी भाइओए प्रथमथी मददने माटे रुपीआ मोकली
दीधा छे तेम साहेबनां नाम उपकार साथे नीचे जणावुं छुं.

) शा. वीरचंद कशनाजी श्री पुनावासी अति उत्कंठाथी आ-
पी गया छे

) श्री. कलकत्ता बंदर निवासी बाबु लक्ष्मीचंदजी शीपाणीए
पोतानां पत्नी छगनकुंवर तरफथी ज्ञान वृद्धिने अर्थे मो-
कल्या छे

२५) मूर्शिदावाद निवाशी बाबु साहेब कालुरामजी किरतचंदजी
ना मालेक माजी साहेबनी तरफथी

२५) श्री. मीआंगामना शेठ. दलीचंद पीतांबरदास जे धर्मना काममां घणा मददगार हता, तेमना पुन्यने अर्थे तेमना भाइ नेमचंद पीतांबरदास ज्ञानवृद्धिने अर्थे आपी गया छे

५) भरुचनां बाइ मोतीकोर शा. रुपचंद झवेरचंदनां दीकरीए पोताना आत्माहितार्थे आप्या छे.

१०) भरुचनां बाइ हरकोर उर्फे नाथी शा. नरोतम वीरचंदनी दीकरी

१०) शा. मगनलाल परसोतमदास.

आ प्रमाणे उपर मुजब पोतानी उत्कंठाथी आ पुस्तक छपाववामां मदद मळी छे, तथा प्रथम प्रश्नोत्तर—रत्नचिंतामणि छपाववामां जे मदद मळी हती तेमांनो वधारो पण आ पुस्तक छपाववामां वापर्यो छे. तेथी मुनि महाराजोने तथा साध्वीजी महाराज विगेरेने मफत आपवामां आवशे. तेमां हरकत पम्शे नही किंमत पण लागत करतां ओछी राखी छे. माटे जे जे मुनिराज तथा साधवीजी महाराजने खप होय तेमणे मंगाववी. हुं मोकली आपीश. आ ग्रंथ लखवाने देशावरना केटलाक भाइओए पण प्रेरणा करेली तेनो उपकार मानुंछुं. तथा मने जे जे पुरुषोए सम्यक बोध कर्यो छे, अने हरिभद्रादि आचार्य महाराजना ग्रंथो जोवाथी बोध थयो अने जेथी आ ग्रंथ लखायो तेथी ते सर्वे उपकार ते महान् पुरुषोनो छे तेमां वीतरागनी आज्ञाथी विरुद्ध जे कांइ लखायुं होय तेनुं मिच्छामि दुक्कडं देउछुं. शंवः

अनुक्रमणिका.

श्री आदीश्वराय नमः

श्री मुनिसुव्रतस्वामि जिनेंद्राय नमः

श्री पार्श्वनाथाय नमः

श्री महावीराय नमः

अढार दूषण निवारक.

प्र. १. आपणुं आ शरीर देखाय छे, तेमां जीव छे एम केटलाएक सज्जनो कहे छे, अने केटलाएक जीव नथी एम कहे छे ते केम ?

उत्तर. जेटला धर्म आस्तिकमती छे ते सचेतन शरीरमां जीव अने जड जे शरीर रुप अजीव एम बे माने छे. जे नास्तिकमती छे ते एकलुं शरीर माने छे. शरीर विनाश पाम्युं एटले पछी कांइ नथी. पाप, पुन्यनुं फल पण भोगववुं नथी.

प्र. २. आ बे पक्षमां तमे कयो पक्ष मानो छो ?

उ. अमे पूर्ण खातरीथी जीव अने अजीव बे मानीए छीए, बंने वस्तु छे, तेनो सारी रीते अनुभव थई शके छे.

प्र. ३. जीव छे एवी शी रीते खातरी थाय छे ?

उ. आ शरीरमां जीव होय छे, त्यांसुधी हालवुं, चालवुं, बोलवुं, विचारवुं, हिताहितनुं जाणवुं, सुख दुःखनुं जाणवुं ए विगेरे बने छे, अने जीव रहित शरीर थाय छे, त्यारे ए सर्वे क्रिया बंध थई जाय छे, तेथी जाणवानी शक्तिवालो ते जीवज छे. शरीर अजीव छे, तेथी शरीरथी जीव विना कांइपण बनी शकतुं नथी. माटे जीव पदार्थ छे, तेमां संशय नथी.

प्र. ४. नास्तिकमती एम कहे छे के पांचभूतना संजोगथी

जाणवा विगेरेनी शक्ति उत्पन्न थाय छे, माटे तेनुं शुं समजवुं ?

उ. पांच भूतमां एवी पृथक् पृथक् शक्ति नथीज, तो पछी एकठा थवाथी केवी रीते थाय; कदापि उत्पन्न थवानो स्वभाव माने तो बधा जीवनी सरखी शक्ति होवी जोइए, ते देखाती नथी; ज्ञानशक्ति सर्वनी भिन्न भिन्न देखाय छे, ते न होवी जोइए. सुख दुःख पण भिन्न भिन्न जोवामां आवे छे, ते होवुं न जोइए; ने ज्यारे भिन्न भिन्न देखाय छे त्यारे तेनुं कांइ पण कारण होवुं जोइए.

प्र. ५. जे ज्ञानशक्ति उछी वधती जोवामां आवे छे, तेतो उद्यमनी खामीथी जोवामां आवे छे, जे ज्ञाननो उद्यम करे तेने ज्ञान थाय, जे उद्यम न करे तेने ते न थाय.

उ. बे माणस साथे बेशी एकी वखत उद्यम करे छे, सरखो वखत महेनत करे छे, पण सरखुं भणी शकता नथी. केटलाएक भणे छे तो अर्थ समजी शकता नथी, केटलाएक समजीने ते प्रमाणे वर्ती शके छे; तेम बीजो माणस वर्ती शकतो नथी. माटे एकला उद्यमथी ज्ञान आवरुतुं नथी.

प्र. ६. उद्यम सिवाय ज्ञान बीजा शाथी आवे छे.

उ. ज्ञानशक्ति जीवनी छे, ते अवराई गई छे, तेमांथी जेटलां जेटलां आवरण खुले छे, ते प्रमाणे ते माणसने ज्ञान थाय छे.

प्र. ७. त्यारे शुं उद्यमनी जरुर नथी ? एकली आत्मशक्तिथीज ज्ञान थाय छे, ने हिताहित जाणे छे ?

उ. ज्यांसुधी आत्मानी जेटली शक्ति छे, ते प्रगट नथी थई त्यां सुधी आत्मा अने शरीर ए बन्नेना मलवाथी ज्ञान थाय छे. आत्मानुं ज्ञान अने आत्मानी शक्ति कर्मना जोगथी अवराई गई छे. ते अवराएली छे त्यांसुधी इंद्रियोना संजोगथी ज्ञान थाय छे. जेमके आंखे आपणे जोईए छीए, ते आंखो उघाडी होय, अने जीव नीकली गयो, तो ते आंखोथी कंइ जणातुं नथी. जीव श

रीरमां छे, पण आंखो मींची दईए, तो कोई पदार्थ जोई शकता नथी. आंखो उघाडी छे, पण पोते बीजा उपयोगमां परोवायेलो होय तो पदार्थ जोई शकतो नथी. तेथी खुल्लुं समजाय छे के उपयोग करनार अंदर कोई छे, तेज जीव छे. एमज वली काने सांभलवामां पण, उपयोग जो ते वात सांभलवामां होय तो संभलाय छे, पण बीजा काममां ध्यान होय तो कोई गमे ते बोले तो ते सांभलवामां आवतुं नथी. तेमज मांहे जीव छे पण कानमां कोइ पुमडुं घाले या रोग थाय, तो सांभली शकतो नथी तेम नाकना विषय पण कोई कहेशे. आ गंध शानी आवे छे, त्यारे त्यां बेठेलो माणस उपयोग मुकी गंध तपासे, त्यारे कहे छे के घीनी गंध आवे छे. हवे विचार करो जे नासिका तो खुल्ली छे, पण उपयोग नहीं हतो तेथी गंधनी खबर पडी नहि, तो आ शरीरनी मांहे गंध लेनार जुदो छे, रस इंद्रि जे जीभ तेमां माणसनुं ध्यान खावा बेठो छे तेमां नथी. बीजा काममां छे ने उतावलथी खाय छे, तो स्वादनुं ज्ञान तेने थतुं नथी. स्वादनो जाणनार शरीरमां जीव छे, तेम स्पर्श इंद्रि जे शरीर तेने स्पर्श थाय छे तेथी ज्ञान थाय छे, पण शरीरे वस्तु स्पर्शे ते वखत कांइ बीजा ध्यानमां होय तो तेनी पण खबर पडती नथी. वली शरीरे सरदीना रोगथी बेहेर मारी होय तो अंदर जीव छे, पण स्पर्शनुं ज्ञान थतुं नथी. आ बधुं तपासतां शरीर अने जीव बे मलीने बधुं काम करे छे, तेमां पण एकबीजाने विषय लेवानो फेरफार होय छे, बधा सरखो विषय लई शकता नथी, तेनुं कारण कोईने कर्म आवरण वधारे छे, तो दरेक विषय थोडो करी शके छे. जेने ए पांचे इंद्रिनां आवरण खुल्यां छे ते विशेष इंद्रियोथी जाणी शके छे. माटे जे जे ज्ञान थाय छे, ते कर्मना क्षयोपशमथी थाय छे, एकला उद्यमथी बनतुं नथी. थोडो उद्य-

म करे ने ज्ञान वधारे थाय, वधारे उद्यम करे ने ज्ञान ओछुं थाय, माटे जीव ने अजीव वे मानवाथी वधुं समजवुं सुगम पडशे.

प्र. ए. अमे जीव मानीए पण पाछा तमे जीवने कर्मसंजोग कहो छो ते शुं छे? शी वस्तु छे?

उ. कर्म छे ते जड पदार्थ छे, तेनो आ जीवनी साथे अनादिनो संबंध छे. ए अतिशय ज्ञानी पुरुषना वचनथी प्रमाण थाय छे. अनुभवथी विचारतां पण जो प्रथम निरावरण होय तो कर्म लागे केम? कदापि लाग्यां मानीए तो ते दिवस आदि थइ, त्यारे तेनी आगली स्थितिमां निर्मल हतो, ते क्यारथी हतो ते पण अनादि कहेवुं पडे. केटलाएक आदि कहे छे तो तेनी अगाउना कालमां संसार जगत् हतुंज नहि. ए केम संभवे, आ जगत्नी स्थिति फेरफार थाय पण कांइ चीज होय नहि तेतो आवेज क्यांथी. माटे जैन दर्शनवाला अनादिनो जीव कर्म संयुक्त छे एम माने छे ते वात निर्विवाद सिद्ध थाय छे. ए कर्म न होय तो जीव सुख दुःख शाथी पामे, सुख दुःख केटलुं भोगववुं, केटला काल जीववुं, केटलुं कुटुंब मलवुं, ए वधुं कर्म प्रयोगेज बने छे.

प्र. ए. ए सर्वे उद्यमथी बने एमां कर्म शुं करे छे?

उ. अरे इच्छाकारि सुख दुःख जो उद्यमथीज बनतुं होय तो मजुर आखो दिवस महेनत करे छे, त्यारे चार आनाना पइसा मले छे अने एक माणसनो जमीनमां पग गरकी जाय छे ने निधान मले छे ने धनवान थाय छे. जेमके सीयाजीराव गायकवाड सरकार शी स्थितिमां हता ने एकदम राज्यगादी उपर बेठा ए शुं उद्यम करवा गया हता? पूर्वे पून्य उपार्जन कर्युं हतुं तो राज्य मल्युं. एक दवा बे माणस खाय छे, एकने सारुं थाय छे, एकने सारुं थतुं नथी ने दाक्तर पण एकज छे, तेम छतां मटतुं नथी, ते कर्मनो फेरफार छे तेथी बने छे. एक बुद्धिवान् सा-

रो विद्वान् आलसु नहि, उद्यम करवामां तत्पर रहे छे, पण वे पारमां वापदादाना पेदा करेला पइसा गुमावे छे तो जो उद्यमथी वनतुं होत तो गुमावेज नहि, पूर्वेनां करेलां पाप उदय आव्यां तेथी तेणे दुःख भोगववुं जोईए. तेथी तेना पैसा चाल्या जाय छे. ए कर्मनुंज फल छे. कोई माणस एक वे स्त्री परणे पण तेने एक पण छोकरुं थतुं नथी. भोगादिकनो उद्यम करे छे, पण छोकरां थतां नथी. एम करतां थाय छे, तो जीवतां नथी. तो ए शुं छे? पूर्वना कर्मना संजोग छे. एक माणस मोटो वलवान छे ने सारु खाय पीए छे, सारी शरीरनी संभाल राखे छे. एवो प्राणी मरकी विगेरेना उपद्रव शिवाय वगासुं खाय छे अने मरीजाय छे, वली मरकीनी हवा आखा शहेरमां चाले छे तेम छतां तेहवा बधामां प्रवेश करती नथी. जेनो पाप उदय होय तेनामांज ए रोग प्रवेश करे छे. वे माणस एक घरमां रहेनार, साथे फरनारा, साथे खानारा, सारी संभाल राखनारा, ते छतां एक माणसमां मरकी प्रवेश करे छे तेथी ते मरी जाय छे. एक जीवतो रहे छे तो ए पूर्वना कर्मनो प्रभाव छे. जो केवल उद्यमथी बनतुं होय तो ए वे माणस सरखा उद्यमी ते मरवा न जोइए. माटे पूर्वे पाप कर्म वांध्यां छे तेनां फल छे. ए उपरथी समजो के केवल उद्यम व्यर्थ जाय छे, त्यारे कांइ हेतु होवो जोइए. ते हेतु पूर्वनां करेलां कर्म. ज्यारे पूर्वनां कर्म रह्यां त्यारे पाछलो भव रह्यो. पाछलो भव रह्यो त्यारे जीव पण रह्यो. जीव शब्द अजीव शब्दनो प्रतिपक्षी छे तो दुनीयामां अजीव शब्द जीव होवाथी पड्यो छे, माटे जीव सारी रीते सिद्ध थाय छे. आ जगत्मां नास्तिक=जीव नहि माननार एवा जुज छे. घणा धर्मवाला एम तो कहेछे जे 'जेवां करीशुं तेवां पामीशुं.' त्यारे करनार जीवज होवो जोइए, एथी पण सिद्ध थाय छे. जीव शब्दनो अर्थ पण ए-

ज छे ते जीव प्राणधारणे धातुथी सिद्ध थाय छे वास्ते जीवे
ते जीव छे. माटे शरीर फेरफार थया करे छे, पण जीव तो तेने
तेज छे. जेवां कर्म बांध्यां होय तेवुं पाछुं शरीर धारण करे छे,
तेज जीव छे, अने जे जे सुख दुःख उत्पन्न थाय छे ते जेवां जे-
वां पाप, पुन्य गया भवमां करेलां छे तेवां जीव भोगवे छे. ने त-
मारा मत प्रमाणे जीव न होय, ने शरीरज एकलुं होय त्यारे
आ उपर फेरफार बताव्या छे ते होवा न जोईए, अने तेम थाय
छे, तो तमारुं नास्तिकनुं समजवुं भूल भरेलुं छे. आ नास्तिक
मतनो काढनार पापी होवो जोइए, कारण जे हालमां इंग्लांड-
मां केटलाएक एवा माननार नीकळ्या छे के पाप पुन्य नथी.
शरीरनी संभालथी सारु शरीर रहे छे. नहि संभालथी शरीर
बगडे छे. आवो विचार करी गुन्हो कर्यानी शिक्षाज मानता न-
थी, अने नहीं मानवाथी एवाज माणसो खून वहु करे छे. तो
जेम हाल नास्तिक पाप नहि माने, एटले कांइ पण खोटां का-
म करवानी धास्ती नहिज रहे, ने बुरां काम करे ते उपरथी
समजाय छे के नास्तिक मतनो काढनार पापी होवो जोइए, अ-
ने तेनी संगते रहे ते पण कोई प्रकारना पापना कामथी वीहे
नहि. हालमां जेटलां राज्य चाले छे ते वधां राज्यमां गुन्हानी
शिक्षा छे. तो जेवी शिक्षा वधी दुनिया प्रमाण करे छे. तेमज
दरेक पाप करे तेनी शिक्षा होवी जोइए. आ दुनियामां वधा मा-
णस माने छे के कोई जीवने दुःख थाय ते न करवुं, ने ज्यारे
नास्तिक थाय त्यारे तो कोईने दुःख देवानी फीकर रहेती नथी
तेथी तो दुनियाना विचारथी अने न्यायथी ए अयोग्य थाय
छे. आ वधी हरकतो तपासतां जीव मानवो, अने सुख दुःख क-
र्मना संजोगथी बने छे, एम मानवाथी वधां दूषण टली जाय छे
ए कर्मनुं स्वरुप मारा करेला प्रश्नोत्तर रत्नचिंतामणिमां बहु वि-

स्तारे छे त्यांथी जोई लेवुं.

प्र. १०. तमारा कहेवा प्रमाणे कर्मना संजोगथी वधुं बने छे त्यारे जीव एकलो कांइ करी शकतो नथी ?

उ. जीवनी शक्ति तो अनंती छे, पण कर्मने वशीभूत छे त्यांसुधी एकली आत्मानी शक्ति चलावी शकतो नथी. जेम कोई महोटो राजा होय ने ते केद पडे छे, त्यारे पोतानुं जोर चालतुं नथी, तेम कर्मना वशमां जीव पड्यो छे, त्यांसुधी आत्मानी प्रवृत्ति आत्मा जडनी संगत विना करी शकतो नथी.

प्र. ११. कर्मना संबंधथी प्रवृत्ति करे छे त्यारे जीवनी शक्ति तो न रही, त्यारे जीव पदार्थ शा सारु मानवो जोइए ?

उ. जीव विना जड तो कंइ पण करी शकवानो नथी. कारण जे जेनामां जड स्वभावछे चेतन स्वभावनथी ते शुं करी शके? जेटली जेटली विचार शक्ति छे ते चेतननी छे, जडमां ए स्वभाव नथी. पांचभूत तमे मानो छो ते पण जड छे, तेमां पण विचारशक्ति नथी. पांचभूत खावानी रसोइमां पण मले छे, पण तेमां कांइ जीवशक्ति उत्पन्न थती नथी; माटे पांचभूतनी वातमां पण बहु प्रश्न छे ते प्रकरण रत्नाकर भाग बीजामां पाने १७७ मे नास्तिकनो संवाद छे त्यांथी जोवुं.

प्र. १२. तमे कहो छो के जडमां चेतनशक्तिज नथी, त्यारे तमे पण बुद्धि वधवाने सरस्वती चूर्ण खवडावो छो. वली शास्त्रमां पण वज्र ऋषभ नाराच संघयण होय तो क्षपकश्रेणी मांडी शके, वली "प्रश्नोत्तर रत्न चिंतामणि"मां पण यात्राना फलमां सार पुद्गल फरसवाथी सारी बुद्धि थाय एम जणाव्युं छे. ते जडनी शक्तिथी केम बने छे ?

उ. जड छे तेनी शक्ति ज्यांसुधी कर्म सहित जीव छे ने कर्मे करी आत्मानो स्वभाव अवराई गयो छे, ते आवरण करना-

र पुद्गल छे. ते पुद्गलो एवा मळ्या छे के आत्मानी ज्ञानशक्ति चालवा देता नथी. तो सरस्वती चुर्ण प्रमुखना सार पुद्गल छे. ते तो जेम औषध खाईए पीए तो शरीरमां रोगना पुद्गलने काढी नांखे छे, तेम शरीरमां वायु प्रमुखथी इंद्रियोनी शक्तिने हरकत होय ते दूर करे छे. एटले चेतनशक्ति चालवामां जे अडचण हती ते दूर थई एटले जे बुद्धि हती ते चाली शके छे. जेम आंखोने पाटो बांध्यो होय अने खशेडी नांखीए तो आंखेथी जोई शकीए. पाटो जवाथी कांई आंखमां जोर आवतुं नथी; परंतु बाधाकारी टली गयुं, तेमज सरस्वती चूर्ण करे छे. संघयणनुं बल पण जेम कानमां रोग थयो होय तेथी आत्मा छे तोपण सांभली शकातुं नथी, केमके काननो भाग बगड्यो छे ते सुधरे एटले सांभले छे. तेम संघयण बलवान होय तो आत्माने पोतानुं काम करवाने बाध करनारनी हरकत रहेती नथी. तेथी पोतानी ज्ञानशक्ति चाली शके छे. जेम निर्बल माणसने लाकडीनो टेको होय तो चालवाने अडचण पडती नथी तेम आत्मा कर्म आवरण सहित छे, त्यां सुधी निर्बल छे. तेथी टेकारुप संघयणनुं बल जोईए छे. सर्वथा कर्मथी रहीत थाय त्यारे देहरहीत थाय छे, अने त्यारे पोतानी आत्मशक्ति जेटली छे ते चाले छे. तेमां कांइ पण पुद्गलनो आधार जोइतो नथी. जेम निरोगी आंखवालाने चशमां जोइतां नथी. आंखनी शक्ति घटी होय तेने चशमां जोइए छे. तेमज कर्म आवरणरुप रोग छे, त्यांसुधी जे जे ज्ञान थाय छे ते इंद्रीओना बलथी थाय छे, त्यांसुधी सारा पुद्गलनो खप पडे छे. जेमके केवलज्ञान प्रगट थाय छे, त्यारे कोईपण इंद्रिनो खप पडतो नथी. पोतानी आत्मशक्तिथीज ज्ञान थाय छे. माटे आत्मशक्तिमां कांईपण जडनो खप पडतो नथी. जेम जेम जड संगत छूटशे तेम तेम आत्मभाव प्रगट थशे, अने संसारमां रख-

रुवानुं मटशे. आत्माना अवला विचारो थाय ठे ते ते जरूनी संगतनां फल ठे. ते जरूनी संगत बूटशे, ने आत्मानी सन्मुख थशो त्यारेज जे जे खरा विचार ठे ते जणाशे, त्यांसुधी जणाशे नहि, माटे जरूनी संगत ठंवी करो के सर्व सारुं थाय.

प्र. १३ जरूनी संगत ठंगी करवाने शुं करवुं?

उ. सद्गुरुनी संगत, निस्पृही निर्विषयी, स्वात्माज्ञावी एवा पुरुषनी सोवत करवाथी मार्ग पामशो.

प्र. १४. तमारा कहेवा प्रमाणे सर्वे कर्मथी वने ठे तो तो जेम वनवानुं ठे तेम वनशे. उद्यम करवानुं शुं काम ठे? उद्यम तो आगल तमे नकामो कर्यो ठे.

उ. अमारा जैन शासनमां तो हरकोई कार्य थाय ठे ते पांचे कारणो मल्याथी थाय ठे. अने ते पांच कारणमां उद्यम पण कह्यो ठे. तमे तो एकला उद्यमथीज कार्य मान्युं ते अमे न थी मानता, केमके प्रत्यक्ष जोईए ठीए जे उद्यम वहुए करे ठे पण पुन्यनी खामी होय तो मलतुं नथी. वली एकला उद्यमथी थाय ठे त्यारे तेने सारी करणी करवानी वुद्धि नाश पामे ठे, केमके एना मनमां पूर्वना पुन्यनी श्रद्धा नथी के पुन्यथी थशे, एटले पुन्य करवानो उद्यम नष्ट थई जाय ठे, तेम केटलाएक ज्ञावी उपर रहे ठे के जेम वनवानुं हशे तेम वनशे. ते पण निरुद्यमी थाय ठे. ते पण कामनुं नथी. पांचे कारणना जोग मलवाथीज कार्यनी सिद्धि थाय ठे.

प्र. १५. (अ) पांच कारण शी रीते मानो ठो?

उ. पांच कारण ते काल, स्वज्ञाव, नियत, उद्यम अने पूर्वकृत. आ पांच कारण मले ठे त्यारे हरेक कार्य थाय ठे. काल ते हालमां पंचम काल ठे. तो पंचम कालमां कोई जीव मुक्तिमां जई शके नहि. त्रीजो चोथो आरो वर्ततो होय त्यारेज जीव मोक्ष

पामे. जेम ऋण ऋतुमाज आंबो फले. स्त्रीनी उमर जोईए एट-
ली नथी थई त्यां सुधी गर्भ धारण करे नहि, तेम हरेक काममां
कालनी सामग्री मलवी जोईए. कालनी सामग्री चोथा आराना
जीवने मली पण ते जीवमां भव्य स्वभाव नथी त्यांसुधी मुक्ति
पामे नहि माटे भव्य स्वभाव जोईए. ने त्रीजा चोथा आरामां
घणा भव्य जीव हता एटले स्वभाव कारण मल्युं, पण ते जीवे
समकित प्राप्त कर्युं नहि, तेथी नियत कारण मल्युं नहि. त्यारे
कोई कहेशे जे श्रेणीक महाराज तथा कृष्ण महाराज तो क्षाय-
क सम्यक्त्व पाम्या हता. तेमने नियत कारण मल्युं, पण केम
मोक्षे गया नथी? एनुं एम समजवुं के ए त्रण कारण मल्यां,
पण मोक्ष साधननो उद्यम कर्यो नहि. जेम आंबानी ऋतु
छे. वंध्यपणुं आंबामां नथी. ते स्वभाव अने मांजर विगेरे आवी
छे. ए त्रणे कारण मल्यां; पण जो ए आंबानुं रखोपुं न करे, पा-
णी विगेरे जे आंबाने जोईए ते शींचे नहीं तो फलवंत आंबो न
थाय, तेम समकित पाम्या पण ज्ञान दर्शन चारित्र प्रगट करवानो
उद्यम न करे, तो मुक्ति मले नहि. तेमज श्रेणिकराजाए संजम
आराधन न कर्युं तेथी तद्भव केवलज्ञान पाम्या नहि. हवे उ-
द्यमथी जो केवलज्ञान थाय तो थुलीभद्र प्रमुख मुनि महाराजे
तप संजमनो घणो उद्यम कर्यो हतो ते छतां केवलज्ञान न पाम्या
तेनुं शुं कारण? पांचमुं भवीतव्यतानो जोग मलवो जोइए. थुली-
भद्रने हजी कर्म भोगववां बाकी हतां तेथी मोक्षे गया नहि. क-
र्मनी स्थितिउ जे जे मुनिनी परिपक्व थाय छे ते ते मुनिउद्यम
करवाथी केवलज्ञान पामी सिद्ध सुखने पामे छे. वली पण पामशे.
माटे पांचे कारण मलवाथी मोक्षरुप कार्य थशे. आ अधिकार
प्रकरणरत्नाकर भाग १ लाना पाने १७६ मे छे त्यांथी जोई लेवो.
वली विनयविजयजी महाराजे स्याद्वादनुं स्तवन रच्युं छे तेमां

पण विस्तारे कह्युं छे. ते त्यांथी जोई लेवुं. आ पांच कारणमांथी एक एक कारणनी मुख्यता लई जुदा जुदा मतो नीकल्या छे, तेमांथी आत्मार्थीए जोवुं के आ पांचेना मेलापथी जेवुं थाय छे तेवुं एक एक कारणथी थतुं नथी. केटलाएक उद्यमनी महत्त्वता गणी उद्यम करे छे, पण ज्यारे धारेलुं कार्य थतुं नथी त्यारे चित्तमां विखवाद आवे छे, पण जो कर्मनी प्रतीत होय तो तेथी कर्मनो विचार करे जे वेपार तो कर्यो पण पूर्वकृत पुण्यनी खामी छे, तेथी पेदा कर्युं नहि. हवे विकल्प करीने शुं करीश, एम विचार करी समता लावे. वली केटलाएक एम कहे छे के भावी बनवानुं हशे तेम बनशे, एम विचार करी उद्यम करता नथी तो एवा जीवो पण प्रभुना मार्गनो लाभ लई शकता नथी; कारण के प्रभुजीए कर्म बे प्रकारनां कह्यां छे, तेमां एक उपक्रमी अने बीजुं निरुपक्रमी. हवे जे निरुपक्रमी कर्म छे तेमां तो उपक्रम लागवानुं नथी, पण उपक्रमी कर्ममां उद्यमथी उपक्रम लागे छे, ने तेथी कर्म नाश पामे छे; कारण के क्षायक समकित जे वखत पामे छे त्यारे एक कोडाकोडी सागरोपममां पल्योपमनो असंख्यातमो भाग उणो एटली स्थिति साते कर्मनी रहे छे. हवे जो बीजा भवनुं आयुष्य बांध्युं नथी, तो तेज भवमां मुक्ति पामशे, त्यारे आयुष्य तो क्रोड पूर्वथी अधिक कोइ पण मोक्षगामीनुं नथी तो ए कर्म क्यां भोगवशे. अर्थात् भोगवशे नही ? ज्ञान दर्शन चारित्रना आराधनरुप उद्यमे ए कर्मनी स्थिति घटाडी कर्म थोडा कालमां भोगवी लेशे वास्ते ए सर्वे उद्यमथी बने छे, माटे भावी उपर बेशी रहेवुं ते जोग्य नथी. जे जे कार्य करवुं होय तेमां उद्यम तो करवो, तेमां पण उद्यम करतां कार्य न थयुं त्यारे विचारवुं जे आ कार्यमां अंतराय कर्म जोर मारे छे, ते कारणनी खामी पडी तेथी मारुं कार्य थयुं नहि, एम विचारथी समभावमां रहेवुं तेथी चित्त

प्रसन्न रहेशे. नवां कर्म नहि बंधाय माटे जे जे कार्य करवुं होय तेमां पांच कारणमांथी जे जे कारणनी खामी होय, त्यां सुधी कार्य थशे नहि. एम विचारी न थएलानो संताप करवो नहि. कोइ वखत उद्यम कर्यो पण खामी जरेलो कर्यो तो तेथी पण कार्य थाय नहि. तो फरी उद्यम करवो. आ विषे एम समजवुं के जे जे वखत जे करवा योग्य होय ते करवुं. आ मुजवनां पांच कारणना जोगथी कार्य थाय, एम जैन आगमनुं कहेवुं छे, तेज अमने मनोवांछितने पूरनार छे.

प्र. १५. (व) जैन आगमनी मर्यादा मने पण बहु सारी लागे छे. आ पांच कारणना संजोगथी कार्य थाय एमां कांई शंका रहेती नथी, पण तमोए जीवनुं स्वरुप बताव्युं ते जोतां अनंत ज्ञानादि शक्ति रही तो ते प्रगट शी रीते करवी ?

उ. अढार दूषण ज्यां सुधी जीवमां छे त्यां सुधी जीवनी जे जे आत्मशक्ति छे, ते प्रगट थती नथी. ते अढार दूषणनां नामः— दानांतराय, लाभांतराय, भोगांतराय, उपभोगांतराय, वीर्यांतराय, हास्य, रति, अरति, भय, शोक, दुगंछा, काम, अज्ञान, मिथ्यात्व, निद्रा, अव्रत, राग, द्वेष. आ अढार प्रकारना अवगुण टाली, नांखे त्यारे आत्माने गुण प्रगट थाय, अने जन्म मरणना फेरा टले.

प्र. १६. दानांतराय ते शुं ?

उ. दान एटले आपवुं ते. संसारमां दान पांच प्रकारनां छे ते—अभयदान, सुपात्रदान, अनुकंपादान, कीर्तिदान, उचितदान, आ पांच प्रकारनां दान छे तेनो अंतराय होय त्यां सुधी जीव दान दई शकतो नथी.

सुपात्रदान ते तीर्थंकर महाराज, सामान्य केवलज्ञानी, आचार्य, उपाध्याय, साधु मुनिराज, तथा उत्तम श्रावक, सम्यग्‌ दृष्टी, मार्गानुसारी आ सरवे सुपात्र छे. एवा पुरुषोनो जोग बने

अने पोतानी पासे जोगवाई पण होय एवा पुरुषोने आपवामां लाभ पण जाणतो होय तोपण दान अंतराये करी आपी शके नहि. अने दान अंतराय कर्मनो क्षयोपशम थयो होय, तो आपी शके. अभय दान ते कोई जीवने मारी नांखतो होय तो तेने बचावे. ते जीवने बचावतां पोताने कष्ट वेठवुं पडे तो वेठे पण ते जीवने बचावे. वली जे पुरुषोने विशेष दान अंतरायनो क्षयोपशम थयो होय, तेतो पोताना खावा पीवा सारु पण कोई जीवनी हिंसा थवा देता नथी. पोते कष्ट सहन करे. अचित्त (जीव रहित) वस्तु मले तेज ले. नहीं मले तो पण जीवनी हिंसा थाय तेवुं ले नहि. पोतानुं मरण थाय ते कबुल करे पण कोई जीवने दुःख थाय एम करे नहि. एवा पुरुषो तो कोई पण कारणे कोई पण जीवने दुःख थाय तेम करे नहि. कारण के जेम मने कांइपण पीडा थाय छे तो दुःख थाय छे. तेम बीजा जीवने पण दुःख थाय माटे कोईने दुःख थाय ते मारे करवुं नहि. आवी रीते वर्तवाथी अभयदान थाय.

अनुकंपादान ते कोई जीव दुःखी होय ने पोतानी पासे वस्तु होय तो ते आपीने तेने सुखी करवो. पछी थोडी जोगवाई होय तो थोडुं आपवुं. वधारे जोगवाई होय तो वधारे आपे. शरीरनी महेनतथी दुःख टलतुं होय तो महेनत करीने तेनुं दुःख टाले. एमां पात्र अपात्रनो विचार छे नहि. फक्त दुःखी जीवनुं दुःख भांगवानी बुद्धि छे. वली जेने ज्ञाननी शक्ति छे तेमणे अधर्मी जीवने ज्ञाननो बोध करवो. ते पण अनुकंपादान छे. औषधादिक होय ते आपीने सुखी करवो. जेम बीजो जीव सुखी थाय एवी बुद्धिए करवुं, ते अनुकंपा दान जाणवुं. एनो अंतराय होय तो ए दान खरी जोगवाइए करी शके नहि, अने ए अंतरायनो क्षयोपशम थयो होय तो ए दान दई शके. आ त्रण

दान आत्माने हित कर्त्ता छे. चोथुं कीर्तिदान ते पोतानी कीर्ति थाय ते सारु आपवुं. बीजुं शासननी कीर्ति सारु आपवुं. एटले जैनी लोक शुं दानेश्वरी छे! शुं उदार दीलना छे! धन्य छे जैन धर्मने, एम धर्मनी प्रशंशाने सारु आपवुं ते एक सम्यक्त्वनो प्रभाविक गुण छे ए पण अंतराय कर्मनां आवरण खस्यां होय तो बने छे. पांचमुं उचित दान. संसारी कुटंबादिकने उचित प्रमाणे आपवुं ते. ए पण अंतराय होय तो उचित साचवी शके नहि. ए रीते पांच प्रकारनां दान छे. तेमां पाछलां बे दानथी आ लोकने विषे जश कीर्ति थाय छे. नीति जलवाय छे. माता पिता प्रमुख उपकारी छे. तेमना उपकारनो बदलो वले छे जे उचितमां नथी समजतो ते पापनो भागी थाय छे. वली पहेलां त्रण दान छे ते आत्माने हितकारक छे. ते ज्यारे दानांतराय तुट्यो होय तोज गुणवंतने गुणवंत जाणी आपवानो विचार थाय. त्यारे जेटलो जेटलो दानांतराय तुट्यो एटलो आत्मा विशुद्ध थाय. इहां कोईने शंका थशे जे मुनि महाराजो विगेरे शुं दान दे छे ? ते विषे समजवुंजे ज्ञानदान जेवुं जगतमां बीजुं कोई दान नथी. माटे मुनि महाराजो भव्य जीवने ज्ञान भणावे छे. ज्ञाननो उपदेश दे छे, तेथी ते जीवो अकार्य एटले नहि करवा जोग कामथी मुक्त थाय छे, अने पापनां काम करता नथी. एथी दुर्गतिनां दुःख भोगववां पमतां नथी. अने सद्गति जे देव लोक प्रमुख तेना सुखनीप्राप्ति थाय छे. तो ए सुखना आपनार ए गुरु महाराज छे तो कोईथी न अपाय एटलुं दान आप्युं. केटलाएक तीर्थंकर महाराजनो उपदेश सांभली संपूर्ण तीर्थंकर महाराजनी आज्ञा शिरपर चढावी सर्वथा राग द्वेषथी मुक्त थाय छे. केवल पोताना आत्म धर्ममांज वर्ते छे. तेथी केवलज्ञान पामी मुक्तिमां जाय छे त्यां सदा स्थिरपणे रहे छे, फरी संसारमां आ-

ववुं नथी. जन्म मरणनुं दुःख टली जाय छे. सर्व प्रकारना विकल्पो टली जाय छे. पूर्ण आत्माना गुण प्रगट थाय. बाधा कोई प्रकारनी नथी एवुं अव्याबाध सुख प्राप्त थाय छे. तो ए आपनार तीर्थंकर महाराज छे. एज दानांतराय क्षय थवाथी आत्मामां अनंत दान शक्ति प्रगट थई छे. तेथी ज्ञाननुं दान देई जगत्‌ने भव दुःखथी मुकावे छे. जे कांई करी न शके एवुं अद्भूत ज्ञानदान छे. वली गृहस्थपणामां हता त्यारे रोज एक वरस दिवस सुधी एक करोड ने आठ लाख सोनईआनुं दान दीधुं एवा दानेश्वरी जगत्‌मां कोई नथी. ए दानांतरायना क्षयोपशमनुं फल छे. वली ज्यारे केवलज्ञान थाय छे त्यारे सर्वथा दानांतराय क्षय थाय छे तेना प्रभावे ज्ञान दान छे ए व्यवहारमां, ने निश्चयमां पोताना आत्माना गुण अवराई गया हता, ने बहिरात्म दशा थई हती ते टली पोताना गुण पोताना आत्मामां आव्या ते रूपदान गुण प्रगट थयो छे ने सदाकाल अवस्थित छे, ने ते गुण सिद्ध भगवान् थाय छे त्यारे कायम रहे छे. ए जीव पोतानी आत्मसत्ताने ध्यावतां ते वर्तना करवाथी दानांतराय क्षय थाय.

प्र. १७. दानांतराय शाथी बंधाय छे ?

उ. दान हरकोइ पांचे प्रकारमांथी करतुं होय, तेने कहे जे ए दान आपवुं ते करतां पेटे खावुं ठीक छे ते भांडी लोकोने आपवामां शुं फायदो छे. वा गुणवंत होय तेने निर्गुणी ठरावी आपे नहि. वली आपता होय तेने ना कहे तेनी निंदा करे तेने कहे जे आतो उन्माद छे कांइ पैसा खरचवानो विचार करतो नथी. वा पोते शक्तिवान होय ने दान आपनारनो महिमा थाय ते जोईने तेना उपर रोष करे, पोताथी बने तो तेनुं बिगाडे, तेनी हीलना करे, वली कदापि दान आपे तो तेनो अहंकार करे, महारा जेवो ज-

गतुमा कोण दान देनार छे. में धर्मनां काम कोई न करी शके तेवां कर्यां. ए आदे अनेक प्रकारना कारणोथी जीव दानांतराय कर्म वांधे छे, अने जे आत्मार्थी छे ते तो विचार करे छे जे ज्ञगवाने वरशीदान दीधुं ने में शुं कर्युं? मह्यारा आत्मानो तो दान गुण अवराई गयो छे ते प्रगट करवो जोईए. अनंत दान देवानी आत्मानी शक्ति ते तो कांईपण प्रगट करी नथी. फक्त पुन्य उदयेथी धन मळ्युं छे; ते पण जेटलुं मह्यारा ज्ञोगववामां वापरुं छुं तेटलुं दानमां वापरतो नथी. तो हुं शुं अहंकार करुं. पूर्वेना मोटा पुरुषो मूलदेव जेवा के जेने त्रण दिवस थयां अन्न मळ्युं नथी. त्यारवाद अरूद मळ्या तो पण मनमां आव्युं के कोई सुपात्र मुनि मले तो तेमने आपीने खाऊं. एम वीचार करे छे एटलामां ज्ञाग्यशालीने मासखमणना पारणावाला मुनि मळ्या. तेमने अरूदना वाकला आपी दीधा. जेह्यना दान गुणना महिमाथी आकाशे वाणी थई. दान प्रशंस्युं, ने सातमे दिवसे राज मलशे एम देवताए कह्युं ने तेमज मळ्युं. तो हे चेतन तें तो छती वस्तुए पण एवुं दान दीधुं नहीं तो शुं अहंकार करे छे. पूर्वना एवा गुणवंत पुरुषो पोतानुं धन अने शरीर वंने गुरुने अर्पण करे छे; ते पण तें कर्युं नथी. तो तुं शुं अहंकार करे छे. देवनी ज्ञक्तिमां खामी न पमे ते सारुं रावणे पोतानी नस काढीने वीणाए वांधी गायन जारी राख्युं. तो एवी तें ज्ञगवंतनी ज्ञक्ति करी वा द्रव्य वापर्युं वा शरीर वापर्युं के तुं अहंकार करे छे? पूर्व पुरुषोए अज्ञयदान सारु कोई जीव मरतो होय तो ते वचाववाने पोतानी दोलतो आपी छे ते तें आपी? के अहंकार करे छे? शांतीनाथ मह्याराजे तीर्थंकरनाम कर्म वांध्युं. ते जीवे कबुतर वगारवा सारु पोताना शरीरनुं मांस कापीने आपवा मांड्युं. जुओ दानेश्वरीपणुं! तें एवुं तो अज्ञयदान नथी कर्युं

के अहंकार करे छे? सर्व जीवने अभयदान थाय ते सारु चक्रवर्तिनी रिद्धि छोडीने संजम लीधुं. तो चेतन तें शुं कर्युं के अहंकार करे छे सगराम सोनीए सोनाना अक्षरे ज्ञान लखाव्युं तेमांनुं में शुं कर्युं. के अहंकार करुं. वली कुमारपाले ज्ञान लखाववाने ताम्रपत्र नहि हतां तेथी कागल उपर पुस्तक लखता जोई हेमचंद्र आचार्य महाराजने कह्युं जे केम कागल उपर पुस्तक लखावो छो? त्यारे आचार्य महाराजे फरमाव्युं जे हाल ताम्रपत्रनी खोट छे. तेज वखत पोते निश्चय कर्यो जे ज्यारे ताम्रपत्र पुरां करुं त्यारे अन्न पाणी लउं. ते वखत प्रधाने कह्युं के ताम्रपत्र दूर देशथी आवे छे. माटे ए नियम केम पुरो थशे. तो पण पोते कह्युं जे एतो अभिग्रह लीधो. गमे तेम थाय तो पण ताम्रपत्र पुरां कर्या विना अन्न पाणी लउं नहि. पछी एमना उग्र अभिग्रहना प्रभावथी पोताना बागमां खम्रताम्र हता ते असल ताम्र थई गया. ने अभिग्रह पुरो थयो. तो चेतन तें ज्ञान केटलां लखाव्यां? केटला आवा अभिग्रह लीधा के ज्ञानमां कांई अल्प खरच करी अहंकार करे छे. तें साधर्मीनी शुं वच्छलता करी? कुमारपाले स्वधर्मीने राज्यमां रोजगारे दाखल कर्या. एवा तें शुं उपकार कर्या के अहंकार करे छे. संप्रती राजाए सवाक्रोड जिनबिंब भराव्यां. तेमांनुं तें शुं कर्युं? के अहंकार करे छे. धनाजीए ठेर ठेर धन मेलव्युं. ने ते पोताना भाईने आपी परदेश चाली नीकल्या तें एवुं कुटुंबनुं रखोपुं शुं कर्युं के अहंकार करे छे. विक्रम राजाए तथा भोजराजाए एक एक श्लोकना लाखो रुपीया दानमां आप्या. तेमां तें शुं कर्युं? सिद्धसेन दिवाकरजी महाराजे चार श्लोक कह्या तेमां विक्रमे चारे दिशानुं राज्य आप्युं.हवे विचार एवुं तें शुं दान दीधुं? के अहंकार करे छे. आवी सुंदर भावना भावीने दान दई अहंकार न करतां दान आपवानी बीजाने प्रे-

रणा करे छे कोई दान करे छे, तेनी प्रशंसा करे छे, दानना अति-
शय व्यसनी थाय छे, पोताने पहेरवानुं वस्त्र सरखुं पण आपी
देई पोते दुःख जोगवे छे, एवा दानना उत्कृष्टा जाव जेम जेम
थाय छे, तेम तेम दानांतराय तूटे छे. दातारनी सोबत करवी
दानना फलनां शास्त्र सांजलवां, विषयनी लालसा गंमवी, वि-
षयनी लालसावालो तो विचारे छे के हुं दान दईश तो पछी हुं
शुं खाईश. एम पुद्गल सुखमां मग्न थवाथी दान दई शकतो नथी.
ने दानांतराय बांधे छे, अने जेहने दानांतराय तूटवानो छे. ते तो
विचारे छे के हे आत्मा तारो स्वजाव ज्ञानदर्शन चारित्र गुणमां
रहेवानो छे. आ शरीर ते तुं नहि, शरीर कर्म संजोगे मल्युं छे,
तो एने पुष्ट करवाथी नवां कर्म बंधाशे. जे जे विषय जोगवीश
तेथी कर्म बंधाशे. ने आ धनादिक पुन्य उदयथी मल्युं छे तो पण
ए द्रव्यनी ममता करीश तो कर्म बंधाशे. ने तारो आत्मा
अवराशे. माटे ए द्रव्यनुं दान करीश तो जे द्रव्यवमे विषय
जोगवी कर्म बंधाय, ते नहीं बंधाय. माटे आ द्रव्य जेम बने तेम
सुपात्रमां वापरवुं. आवी जावना जावे छे. वली जावे छे के
ताहरा आत्माना गुण प्रगट करी आत्माने आपवा ते दान गुण
छे ने ए धनादिकनी ममता छे. तेनो त्याग थाय तो जेटली जेट-
ली ममता ताहरी त्याग थई एटलो आत्मा निर्मल थयो ने तें ताहरा
आत्माना गुण आत्माने प्रगट करी आप्या. एज स्वाजाविक-दान
गुण प्रगटयो. आवा विशुद्ध जावथी दानांतराय तूटे छे. एम अ-
नुक्रमे सर्वथा तूटे छे.

प्र. १८. लाजांतराय ते शुं ?

उ. जे जे लाज थवाना ते लाजांतराय तूटवाथी थवाना
छे. हवे ते लाज बे प्रकारना. एक संसारी लाज ने एक आत्मीक
लाज. ए बंनेमां अंतराय कर्म पीमे छे. प्रथम संसारी लाज ते

शरीर निरोगी मलवुं. स्त्री, पुत्र परिवार मलवो, धन मलवुं, अनुकुल माणस नोकरो मलवा, ने जे जे वखत जे जे इच्छा थाय ते मलवुं. विद्याकला शीखवी ए बधो लाभांतराय कर्मनो क्षयोपशम थयो होय तो मले तेमां थोडो क्षयोपशम थयो होय तो थोडुं मले. विशेष थयो होय तो विशेष मले. अने जे जे वस्तुनो अंतराय होय ते ते लाभ मली शके नहि. उत्तम पुरुषोए ए कर्मनुं स्वरूप जाण्युं छे. तेथी ए वस्तु नथी मलती तेनो संताप करता नथी. मनमां क्लेश जेहने आवे छे ते पण विचारे छे. के पूर्वे लाभांतराय कर्म बांध्युं छे. तेथी नथी मलतुं. पूर्वे कर्म बांधती वखत विचार कर्यो नहि. ने हवे संताप करे छे. ते शुं कामनो. आम विचारथी संतोषमां रहे छे. तेथी लाभांतराय कर्मनी निर्जरा करे छे. विशेष उत्तम पुरुषने तो विचारवुं पण नथी पडतुं. सहेजे समभावमांज रहे छे. जे थाय ते जाणवानो आत्मानो धर्म छे. तेमां रही जाणी ले छे पण विकल्पो करता नथी. अज्ञानी जीवो छे ते लाभ नथी मलतो, त्यारे पारकाना दोष काढे छे. केटलाएक देवने दोष आपे छे. अहो देव तें आ शुं कर्युं ? में ताहरुं शुं बगाड्युं हतुं वली सामा माणस साथे लडे, चीडई जाय. वैदनी साथे काम पाड्युं होय ने सारुं थवानो लाभ न मल्यो तो तेना उपर द्वेष करे छे. एमज लाभ मलवाथी फुलई जाय छे अहंकार करे छे हुं केवो धनवान छुं. हुं केवो हुशीयार छुं के जे व्यापार करुं छुं तेमां पेदाशज करुं छुं. खोट जायज नहि. लाभज मले. राजा होय तो राजनो लाभ मल्यानो वा राजमां व्याजबी पेदाश थाय वा गेरवाजबी रीते लोक उपर जूलम करी पैसा लइ लाभ मेलवी तेनो अहंकार करे. वली कारभारी होय ते लोको पासे लांच लई लाभ मेलवी तेनो अहंकार करे, वा लोक उपर जूलम करे. राजा खुशी थई मान

आपे, इनाम आपे अथवा रावबहादुर प्रमुखना इलकाब आपे ते लाभ मेलवी अहंकार करे, जे अनीतिए चाल्यो तेनी पोतानी प्रशंसा करे. लुच्चाई करी मनमां विचारे, केम केवी तदबीर करी कोई-ना जाणवामां न आव्युं. ने में म्हारो लाभ मेलवी लीधो. ए-वा अनेक प्रकारना अहंकार करे. वली कोईनुं खरुं देवुं होय ते खोटी रसीदो बनावी सरकारमां पसार करी तेनुं लहेणुं खोटुं करी मनमां लाभ मल्याथी खुशी थाय. आवी खोटी वर्तना करवाथी जीव लाभांतराय कर्म बांधे छे. तेथी पाछो लाभ मलवो मुश्केल पडे. आत्मीक लाभ ते पूर्णतो त्यारे प्राप्त थशे के ज्यारे सर्व कर्म क्षय करी आत्मानुं अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत चा-रित्र, अनंत वीर्य, अव्याबाध सुख, अक्षय पदनुं, अजरा, अमरण, अजन्म, अगम, अगोचर, अगुरु लघु, आदि अनंता गुण प्रगट करे त्यारे आत्माने लाभ प्राप्त थयो. ते सर्वथा प्रकारे बारमे गुण स्थाने सत्तावंध उदयथी ए कर्म खपी जाय त्यारे थाय छे. हवे अंशे अंशे तो चोथा सम्यक्त्व गुण स्थानथी प्रगट थाय छे. जेटलो आत्मानो गुण प्राप्त थयो एटलो लाभ थयो एहवा गुणस्थानना गुण प्राप्त कर-वाना कारणरूप प्रवृत्ति थवाथी पण लाभ थाय छे. ते लाभ पण लाभांतराय तूटवाथी थाय छे. हवे ते शुं शुं थाय. ते दान, शी-ल, तप, भाव. हवे ए चारे वस्तु प्राप्त थवा रूप लाभ लाभांतराय तूटवाथी थाय छे.

प्र. १९. दान ते शुं?

उ. दानांतरायना स्वरूपमां कह्युं छे ते मुजब दान करी शके तो दान गुण प्रगट थयो तेज आत्माने लाभ थयो. तेमां जे जे अंशे गुण करी शके एटलो लाभ प्राप्त थयो समजवो.

प्र. २०. शील ते शुं ?

उ. शील कहेतां आचार ते पांच प्रकारनो छे तेमां प्रथम

ज्ञानाचार, ते ज्ञानाचार संपूर्ण तो अनंत ज्ञान प्रगटे त्यारे ते रूप लाभ मलशे. अने तेना कारण रूप मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान ए चार प्रगट थाय. त्यारे चारनो लाभ थयो. तेटलो लाभांतराय नथी तूटयो तो मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान प्राप्त थाय छे. अथवा मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, मनःपर्यवज्ञान थाय छे. तेवा पण लाभांतराय कर्म, नथी क्षय थयां ने थोमो क्षयोपशम थयो छे तो मतिज्ञान, श्रुतज्ञान बेज प्रगटे छे. तेटलो लाभ थयो. अने तेनी साथे समकितनो पण लाभ थाय. कारण जे समकित विनां मति श्रुत अज्ञान कह्यां छे. तेथी पण कमी क्षयोपशम थयो होय तो समकित रहित ज्ञान ते रूप लाभ थाय. तेथी बुद्धिमां कुशल होय, संसारी काममां हुंशीयार थाय पण आत्मीक ज्ञान न थाय. आत्माना कल्याणरूप ज्ञान तो सम्यक्त्वज्ञान छे ते काम लागे. सम्यक्त्वज्ञानरूप लाभ थाय. ते ज्ञान कोईने द्वादशांगरूप ज्ञान थाय छे; तेटलो लाभांतराय तुटे तो मुक्तिने घणा नजीक थाय. कोईने चौद पूर्वनुं ज्ञान थाय. ते चउद पूर्वनां नाम १ उत्पाद पूर्व, जेमां द्रव्यना पर्यायना उत्पादनुं स्वरूप छे. २ अग्रायणी पूर्व जेमां सर्व द्रव्य सर्व पर्यायनुं परिमाण दर्शाव्युं छे. ३ वीर्य प्रवाद पूर्व. तेमां कर्म सहित जीवना, कर्म रहित जीवना तथा अजीवना वीर्य एटले शक्ति तेनुं विस्तारे स्वरूप छे ४ अस्ति नास्ति प्रवाद पूर्व. ते मध्ये धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, जीवास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय, काल ए छए द्रव्य स्वस्वरूपे अस्ति पर स्वरूपे नास्ति आदे वर्णन छे. ५ ज्ञान प्रवाद पूर्व, जेमां पांच ज्ञाननुं विस्तारे वर्णन छे. ६ सत्य प्रवाद पूर्व. तेहमां सत्य संजम वचन ए त्रण वस्तुनुं विशेष स्वरूप दर्शाव्युं छे. ७ आत्म प्रवाद पूर्व तेहमां आत्माजीव तेनुं अनेक नय मत भेदे करीने वर्णव्युं छे. ८ कर्म प्रवाद पूर्व, तेहमां आठ

कर्म जे ज्ञानावर्णी, दर्शनावर्णी, वेदनी, मोहनी, आयु, नाम कर्म, गोत्र कर्म, अंतराय कर्म ए आठे कर्मनी प्रकृति बंध, स्थिति बंध, रस बंध, प्रदेश बंध. ए चारे प्रकारना बंधनुं स्वरूप अतिशय करी दर्शाव्युं छे. ए प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व, त्याग जोग्य वस्तुनुं तथा त्यागनुं स्वरूप कथन छे. १० विद्या प्रवाद पूर्व. तेहमां अनेक आश्चर्यकारी विद्यानुं स्वरूप छे. ११ पूर्वनुना कल्पा पूर्व छे पाठांतर अवंध्य पूर्व. एटले फल वांझीयुं नथी. ज्ञान तप संजमादिकनुं शुभ फल. प्रमादादिकनुं अशुभ फल एवा शुभाशुभ फल बताव्यां छे. १२ प्राणायु पूर्व, तेमां दशप्राण जे पांचइंद्रि, त्रण बल, श्वासोश्वास अने आयु ए प्राणनुं वर्णन छे. १३ क्रिया विशाल पूर्व, तेमां कायकी आदे क्रियानुं स्वरूप संजमक्रिया, छंदक्रिया, विगेरेनुं वर्णन छे. १४ लोक बिंदुसार पूर्व जेहमां लोकमां अक्षरोपर बिंदुसार भूत छे. तेम सर्वोत्तम सर्व अक्षरना मेलाप लब्धिनो हेतु तेनुं वर्णन छे. ए चौद पूर्वनां नाम कह्यां. एनो विस्तार एक एक पूर्वनी पदनी संख्यानुं मान एक एक पूर्वनुं ज्ञान लखवानी शाहीमां मेश केटली जाय. ए सर्व वर्णन नंदी सूत्रनी टीकामां छपेली प्रतमां पाने ४७१ मे छे त्यांथी जाणी लेवुं. पहेलुं पूर्व लखतां एक हाथीपुर मेशनो ढगलो जोईए. पछी बमणा बमणा लेवा. ते चौदमा पूर्वमां ८१९२ हाथीपूर काजलनो ढगलो थाय. तेमां पाणी रेडी साही करी लखे तो लखाय एटलुं चवद पूर्वनुं ज्ञान छे. पाछो तेना अर्थनो तो पार नथी. एक बीजा चवद पूर्वधर ज्ञानीना वचमां अनंतगुणी हानी वृद्धि होय छे. जे पुरुषने जेटलो लाभांतरायनो क्षयोपशम थयो होय एटला अर्थ ज्ञाननो लाभ थाय. कोइ मुनिने एटलो लाभांतराय न तूट्यो होय तो नवां पूर्वनुं ज्ञान थाय. कोईने एक पूर्वनुं, कोईने बे पूर्वनुं, कोईने त्रण एम जावत् चवद पूर्वनुं थाय. वर्त्तमान काले पूर्वनुं ज्ञान कोईने थाय नहि. बहु ज्यारे अ-

तिशय ज्ञानी थाय तो सूत्र जे पीस्तालीश आगम तेनुं ज्ञान थाय. तेमांना अग्यार अंग हालमां छे. बारमुं अंग विच्छेद गयुं छे.

आचारांग सुयगडांग ठाणांग समवायांग
भगवतीजी ज्ञातासूत्र उपाशक दशांग अंतगड दशांग
अनुत्तरोववाइ प्रश्नव्याकरण विपाकसूत्र.

ए अग्यार अंग गणधर महाराजे रचेलां छे जेम श्रीमत् महावीर स्वामीए प्ररुप्यां तेम गणधर महाराजे सांभलीने गुंथ्यां एटले गाथारूप बनाव्यां. पण त्यारबाद बार दुकाली घणी वखत पडी तेमां दरेक अंगमांथी घणो भाग विच्छेद गयो. ने जे थोडो भाग रह्यो ते देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण महाराजे लखाव्यो. तेथी नंदीजी समवायांगजीमां जेटली संख्या पदनी कही छे तेटली रही नथी. एक पदमां ५१०८८६८४० श्लोक होय ए एक श्लोकना अठावीश अक्षर कह्या छे. ए अधिकार सेन प्रश्नमां पाना ३२ मे छे तेमां अनुजोगद्वारनी टीकानी साख आपी छे तिहांथी जोई लेवुं. उपांग १२ (बार) तेनां नाम १ उवाईसूत्र. २ रायपशेणीसूत्र. ३ जीवाभिगमसूत्र. ४ पन्नवणासूत्र. ५ सुरपन्नतीसूत्र. ६ जंबुद्विपपन्नतीसूत्र. ७ चंदपन्नतीसूत्र नीरीयावलीसूत्रमां पाचते. ८ कप्पीया. ए कप्पवडंसीयासूत्र. १० पुप्फीआसूत्र. ११ पुप्फचुलीकासूत्र. १२ वन्हीदशांगसूत्र. ए रीते बार उपांग छे.

दश पयन्ना तेनां नाम.

१ चउसरण पयन्नो. २ आउरपच्चखाण पयन्नो.
३ महापच्चखाण पयन्नो. ४ भत्तपच्चखाण पयन्नो.
५ तंदुलवीयाली पयन्नो. ६ गणीवीज्ञ पयन्नो.
७ चंदावीजय पयन्नो. ८ देविंदस्तव पयन्नो.
ए मरणसमाधि पयन्नो. १० संस्थारक पयन्नो.
छ छेद चार मूल सूत्र वीगेरे.

१ दशाश्रुत स्कंध. २ बृहत्कल्पसूत्र.
३ व्यवहारसूत्र. ४ जीतकल्पसूत्र.
५ नीशीथसूत्र. ६ महानीशीथसूत्र. ए छ छेद ग्रंथछे.
१ आवश्यकसूत्र. २ दशवैकालीकसूत्र.
३ उत्तराध्ययनसूत्र. ४ पींडनिर्जुगतीसूत्र.
१ नंदीसूत्र. २ अनुजोगद्वारसूत्र.

ए पीस्तालीश आगम, ए शिवाय पण केटलाएक पयन्ना प्रमुख छे. तेहनां नाम पण नंदीसूत्रमां तथा समवायांग सूत्रमां छे. पखी सूत्रमां पण छे. पण पीस्तालीशनी मुख्यता थवानुं कारण वलभ्भीपुरे पुस्तक लखायां. तिहां एटलांज लखायां तेथी ते पीस्तालीश आगम कहेवायां. पण बीजा देशमां बीजां लखायां. ते पण हाल कालमां वर्ते छे एम दीपकवि एक चोपडीमा लखे छे. तेमांथी में पण केटलांएक जोयां छे.

रीसीभाषित सूत्र. पौरसी मंडल. वीतराग स्तव.
संलेखना सूत्र. अंगविद्या. ज्योतिष करंडक.
गछा चार. तिथोंदगारड. उपदेशमाला.
सिद्ध पाहुड. श्रावकनुं वंदीतु. शत्रुंजय कल्पलघु.
शत्रुंजय कल्पमोटो. शत्रुंजयकल्प. भद्रबाहुस्वामीकृत गाथा३५
शत्रुंजयकल्पवेरस्वामीकृत. शरावली पयन्नो.
वशुदेवहींड. श्रावक पन्नती. अंगचुलीआ.
वंगचुलीआ. आराधना पताका.

आटलां सूत्र वर्तमानमां देखाय छे. एम दीपकवि लखे छे पण बीजा घणा देशोमां वधे कांई जोयां नथी. तो विशेष पण होय केमके नंदीसूत्रमां देवर्द्धिगणीक्षमाश्रमण महाराजे जे नाम आप्यां ते ते वखते हाजर होवां जोईए ए आगमोमांथी दश सूत्रनी निर्युक्ति भद्रबाहु स्वामी महाराजे करी छे. जे चउद पूर्व-

धर हता, एटले निर्युक्ति पण पूर्वधरनी करेली माटे सूत्र जेवी ज माने, जेमां सूत्रनो अर्थ युक्तिए सिद्ध कर्यो छे; तथा भाष्य पूर्वधर एवा जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण महाराजजीए रची छे. तेमां निर्युक्ति करतां घणो विस्तारे अर्थ कर्यो छे. तेमज चूर्णी पण पूर्वधरे रची छे, तेमां तेथी विस्तारे अर्थ छे; तथा आ शिवाय घणा ग्रंथो तथा टीका पूर्वधर विगेरे बहुश्रुत पुरुषोना रचेला छे, ते पण आगम जेहवाज छे. एवां जैननां सर्व शास्त्रना तथा जे जे शास्त्रो बीजां दर्शनोमां रचेलां छे ते तथा व्याकरण, न्याय शास्त्र, वैदक शास्त्र, नीति शास्त्र, अष्टांग निमित्त शास्त्र, अष्टांग योगनां शास्त्र, ए सर्वे शास्त्रोनो बोध मेलवी सत्य असत्यनी परीक्षा करी, सत्यनी परीक्षा करी सत्यने अंगीकार करे तो एटलो ज्ञाननो लाभ थयो कहीए. एवा लाभवाला पुरुषो ज्ञानना आचारनो आठ प्रकारे लाभ मेलवे छे. ते काले कहेतां जे जे सूत्र जे जे काले भणवानां वांचवानां कह्यां छे तेज काले भणे, चार संध्या वर्जे, ते १सवारे सूर्य उदय थाय ते पहेली ने पछीनी अकेक घडी, एम २ मध्यान तथा ३ संध्या वखत तथा ४ मध्य रात्री ए चारे वखत बे घडी तजवी. ए वखत कोई पण सूत्र वांचे नहि. ए वखत दुष्ट देवो फरवा नीकले छे ते जैन मार्गना द्वेषी होय तो भणनारने छल करे तेथी ए वखत निषेध्य छे. विनय ते ज्ञानवंत पुरुषनुं मुख जुवे के नमस्कार करे, बेठा होय ते उभा थाय, ज्यां सुधी ज्ञानवंत पुरुष उभा रहे त्यां सुधी पोते बेसे नहीं, वली ज्ञानवंतने बेसवा आसन आपे. पछी उचित रीते वंदना प्रमुख करीने बेसे, पण गुरुथी उंचा न बेसे. तेम ज्ञानीनी आगल न बेसे, पाछा उभा थाय तो उभा थाय, चालतां पण तेमनी आगल न चाले एवी रीते जेम जेम नीतिमां उचित होय तेम तेम साचवे. तेमनुं जेम महत्त्वपणुं वधे तेम करे.

तेमनुं वचन उल्लंघन न करे. ज्ञानवंतनी जे जे रीते पोताथी बनी शके ते तन मन अने धने करीने भक्ति करे. बीजा पासे भक्ति करावे, तेमज ज्ञाननां पुस्तक तेनो पण विनय करे. पुस्तक पासे होय तो लघु नीति, वडी नीति न करे. तेम पुस्तक होय ते जगोए पण ए काम न करे; तेम स्त्री आदिकना भोगादिक न करे. तेम पुस्तकनी पासे बेसी जमवुं, पाणी पीवुं न करे. छेवट वस्त्रनो पण अंतर राखे, तेम पुस्तक उशीके मूके नहि. वली पुस्तक लखावी ज्ञाननो वधारो करे, पुस्तक होय तो तेनी संभाल करे, वली ज्ञान भणवानो उद्यम करे, पोते भणेलो होय तो बीजाने भणावे, एवी रीते विनय करे, ज्ञानवंतनुं बहुमान करे. ते बाह्यथी केवल नहि पण अंतरंग प्रेमथी मनमां विचारे जे अहो! आ पुरुषनां ज्ञाननां आवरण घणां खपी गयां छे तेथी एमनो आत्मा निर्मल थयो छे. ए पुरुष मने ज्ञान आपे छे ए ज्ञानना प्रभावे म्हारो आत्मा निर्मल थशे. माहारे चार गतिमां रोलावुं बंध थशे. जन्म मरणना दुःख एमना प्रभावथी मटशे, माटे आवा ज्ञानवंत पुरुषनां जेटलां बहुमान न करुं तेटलां उछां छे. जगत्ना जीवो जे उपकार करे ते पईसा आपे तो ते अल्प काल सुख थाय. शरीरने कोई शाता करे तो अल्प काल सुख थाय, अने ज्ञानी पुरुष तो ज्ञान आपे छे तेनुं सुख तो अनंतो काल पहोचशे, जेनो अंत नथी, तो एवा पुरुषनां केटलां बहुमान करुं. एवा भावथी बहुमान करे. उवहाणे केहेतां उपधान ते ज्ञान भणवा सारु नवकारादिकनां उपधान जे तप करवानो महानीशीथ सूत्रमां कह्यो छे, तथा सूत्र भणवाने जोग वहेवाना कह्या छे ते मुजब ते तपस्या करवी. जोगनी जे जे क्रियाओ छे ते करवी. हवे इहां कोईने शंका थशे जे ज्ञान भणवामां तपस्या तथा क्रिया शुं करवा करवी जोईए तेनुं समाधान पुद्-

गलन्नाव उपरथी मोह उतरे त्यारे तपस्या थाय, वली मोह उतरे त्यारे आत्मानी विशुद्धि थाय, ने आत्मानी विशुद्धिथी ज्ञानावरणी कर्म नाश थाय छे तेथी ज्ञान सुखे आवडे. वली क्रिया छे ते तंत्र जेवी छे तेथी सूत्रना अधिष्टायक साहाय्य करे. जेमके मल्लवादी महाराजजीने एक गाथा देवीए एवी आपी के ते गाथाथी द्वादश सार नयचक्र रच्यो, अने बौध लोको साथे जय मेलव्यो, अने सोरठ विगेरेमां ज्यां शिलादित्य राजानुं राज्य हतुं त्यांथी बौध लोकोने बाहार काढ्या. वली मुनिराजजी साहेब श्री आत्मारामजी महाराजजीने विशेषावश्यक नहि बेसतुं हतुं, तेथी पस्तावो करवा लाग्या. तेज रात्रे स्वप्नामां हेमचंद्राचार्य महाराज मळ्या ने जे जे अटकतुं हतुं ते सर्व समजाई गयुं. एमज कमलगछना आचार्य महाराज वर्धमान विद्या जणावी गया. एज रीते शासनदेवतानी सहायथी ज्ञाननो लाभ थाय छे ते सारु जोगवहननी क्रिया बतावी गया छे ते अति हितकारी छे. विशेष हेतु जेम कोई शास्त्रमां कह्यो होय ते प्रमाणे जाणी लेवुं. अनीन्हवणे ते गुरुने उलववा नहि. जे ज्ञानी पासे भण्या होय तेनुं नाम पालटी बीजानुं नाम देवुं नहि, ते पांचमो आचार. व्यंजन ते अक्षर शास्त्रमां लख्यो होय तेम शुद्ध बोलवो, अशुद्ध बोलवो नहि. अर्थ ते जेवो गुरु महाराजे आप्यो होय तेवोज राखवो फेरफार करवो नहि, ते सातमो आचार. आठमो व्यंजन तथा अर्थ बंने जेम शास्त्रमां कह्या होय तेम बोलवा. एवी रीते ज्ञाननो आचार व्यवहारथी मन, वचन, कायाए करी पाले एथी विपरित वर्ते तो ज्ञानाचारमां दूषण लागे; ने ज्ञानावरणी कर्म बंधाय. तेना भयथी सावधानपणे रहे. वली बहु भण्यानो अहंकार आवे तो मनमां भावे जे हे चेतन ! तुं अनंत ज्ञाननो धणी छे, जगतमां छ द्रव्य छे. धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय,

आकाशास्तिकाय, जीवास्तिकाय अने काल ए पांच द्रव्य अरूपी एटले वर्ण, गंध, रस, स्पर्श रहीत तथा छट्ठो पुद्गलास्तिकाय ते रूपी वर्ण, गंध, रस, स्पर्श सहीत, ए छए द्रव्यमां एक एक द्रव्यना अनंता गुणपर्याय छे, ते समय समय एक एक द्रव्यमां खटगुण हानी वृद्धि थइ रही छे. ते अनंत भाग हाणी, असंख्यात भागहाणी, संख्यात भाग हाणी, संख्यात गुण हाणी, असंख्यात गुणहाणी, अनंत गुणहाणी एम खट कहेतां छ प्रकारे हाणी तथा वृद्धि थई रही छे, तेवी छए द्रव्यनी वात गया कालनी आवता कालनी अने वर्त्तमानकालनी ते सर्वे केवल ज्ञानी महाराज एक समयमां जाणी रह्या छे, तेवीज आत्मा तारी शक्ति छे पण ते ज्ञान शक्ति ज्ञानावरणी कर्मे अवराई गई छे अने तने ज्ञान थतुं नथी, तो तारुं ज्ञान जतुं रह्युं ते लघुतानुं स्थानक छे, ते छतां महत्त्वता करे छे, ए तारी हे चेतन! केवी मूर्खता छे? वली पूर्वकाले चार ज्ञानी हता तेवां ज्ञान पण तने प्रगट थयां नथी, तो ए पण तारी लघुतानुं स्थानक छे, तो तुं शुं अहंकार करे छे. पूर्वे त्रण ज्ञानी हता तेवां ज्ञान पण तने प्रगट्यां नथी तो ते तने पण लज्जानुं कारण छे, तो तुं शुं अहंकार करे छे? वली बे ज्ञानी पण चउद पूर्वधर बार अंगना जाणकार हता, तेवुं ज्ञान पण तने नथी ते छतां शी बाबतनो तुं उत्कर्ष करे छे? वली उंगा ज्ञानी एक पूर्वधर हता, ते पण तने ज्ञान नथी, तो शी बाबतमां फुलाय छे? वली हालमां पण वर्त्तमानकालमां आगम, निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि, टीका, ग्रंथो वीगेरे छे, अने अन्य दर्शनीयोनां शास्त्र छे तेनुं पण तने ज्ञान नथी, तो हे चेतन! शी बाबत अहंकार करे छे? वली एमांथी जुज शास्त्र तुं भण्यो छे, ते पण बधुं याद नथी. वली गुरु पासे शास्त्र सांभल्या ते पण तने याद नथी, तो शी बाबतनी महोटाई करे छे? वली देश देशनी

भाषा तथा जूदी जूदी लिपि तेनुं पण तने ज्ञान नथी. वली सम्मति तत्वार्थ विगेरे न्यायनां शास्त्र छे, ते कोई ज्ञानी समजावे तो ते पण समजवानी तारामां शक्ति नथी, अने अहंकार करे छे, ते केवी अज्ञानता ? वली तुं जे जे धर्म क्रिया करे छे ते सर्वेना हेतुनुं ज्ञान पण तने नथी, ते छतां तुं फोकट शुं मद करे छे? अनेक प्रकारनी नीतिना ग्रंथो छे, अनेक प्रकारनी हिसाबनी रीती छे तेनुं तने ज्ञान नथी ते छतां जीव तुं अहंकार करे छे, ते अहंकार करवा जोग छे के कर्मनी निंदा करवा जोग छे ते तुं आत्मार्थी विचार कर. वली पूर्वे मुनिसुंदरसूरि महाराज जेवा पुरुषो एक हजार ने आठ अवधान करता हता ते शक्ति पण तारामां नथी. हालमां पण १०८ अवधानना करनार छे, ते पण शक्ति तारामां जागी नथी, तो शी बाबत तुं गर्व करे छे ? हाल कालमां आत्मारामजी महाराज थई गया ते रोजना ३०० श्लोक मुखे करता हता अने तने तो पांच गाथा पण मोढे करवानी शक्ति नथी, तो चेतन तुं बहु विचार कर ने खोटा गर्व न कर. पूर्व पुरुषो शास्त्रमांथी उद्धरीने अनेक ग्रंथ करी गया छे ने करे छे तो शुं एवी शक्ति तारामां छे ? तें नवा ग्रंथो केटला रच्या के फोगट भूलथी मनमां आनंद माने छे ? वली पूर्वना पुरुषोए सोनाना अक्षरे ज्ञान लखाव्यां तो तें शाहीना अक्षरथी पण सर्वे शास्त्र लखाव्यां के अहंकार करे छे ? तें भणीने आत्मविचारणा केटली करी ? वली बीजा जीवोने पूर्वनां शास्त्र केटलां भणाव्यां के मदोन्मत्त थई फरे छे. ताराथी घणा पुरुषो हालमां आत्म साधन करता थया के अहंकार करे छे? तारी लघुता थाय एवी करणी तुं करे छे माटे फोगट तुं ज्ञानावरणी कर्म बांधे छे. माटे एक अंशमात्र ज्ञाननो क्षयोपशम थयो तेथी मनमां ज्ञानी बनीने बेसे छे. आवी भावना भावी आत्मज्ञानमां मग्न था-

य छे. पोताना आत्मानो ज्ञान गुण छे ते प्रगट करवाना उद्यम-मां तत्पर रहे, ते ज्ञानाचार जाणवो. एवो ज्ञानाचार पाळवाथी परंपराए सर्वे ज्ञान प्रगट करे छे.

दर्शनाचार—दर्शन शब्दे देखवुं ते. जे जे पदार्थ जेवी रीते होय तेवीज रीते देखवुं एटले मानवुं. शुद्ध देवनेज शुद्ध देव मानवा. शुद्ध गुरुनेज शुद्ध गुरु मानवा. शुद्ध धर्मनेज शुद्ध धर्म मानवो. शुद्ध धर्म ते आत्मानो स्वभाव, तेज धर्म. भगवतीजीमां कह्युं छे जे "वत्थु सहावो धम्मो". एटले वस्तुनो स्वभाव ते धर्म. त्यारे आत्म स्वभावमां रहेवुं तेज धर्म अने तेनी श्रद्धा करे. आत्मा शरीरमां रह्यो छे त्यां सुधी जरूर प्रवृत्ति करे छे, ते पोतानो धर्म जाणे नहि. आत्मानो स्वभाव अवरायो छे ते प्रगट करवानां कारणोने कारण धर्म माने. धर्मना निमित्त कारणरूप देव गुरु तेने निमित कारण माने. व्यवहारनये धर्मना कारणने धर्म कह्यो छे ते अपेक्षाए धर्म माने. जे जे देव गुरु उपकारी पुरुष छे ते पुरुषनी सेवा भक्ति शास्त्रमां कही छे ते प्रमाणे प्रवर्ते, तेनो विस्तार प्रश्नोत्तर रत्न चिंतामणिमां कह्यो छे ते मुजब करे ते दर्शननो आचार. ए आचार आठ प्रकारे छे. निसंकीय कहेतां प्रथम जे अढार दूषण कह्यां छे तेथी रहित जे देव तेमना वचनमां शंका न करे, कारण के जे देवने राजा अने रंक बे सरखा छे, कोइनो पक्षपात नथी; जेने धननी, स्त्रीनी ममता नथी, जेने मान अपमान सम छे एवा पुरुषने असत्य बोलवानी जरुर रहेती नथी, एवां लक्षण छे के नहि. तेमना चरित्र जोवाथी खात्री थाय. ते खात्री करीने ज देव मानवा. पछी तेना वचनमां शंका करवी नहि. कारण के अरूपी पदार्थ छे ते चक्षुथी निरधार थतो नथी. कोइ कदेशे के बुद्धिथी निरधार करीए, पण संपूर्ण प्रगट थइ होय तो शास्त्र जोवानी जरुर पडती नथी. बुद्धिनी कसूर छे तेथी

शास्त्र जोइ गुरुनो समागम करी बुद्धि प्राप्त करवानो उद्यम क-
रीए छीए, माटे बुद्धिनी कसर सिद्ध थाय छे. केटलीएक बाबतो
नथी समजाती ते पण बुद्धिनी कसर छे ते कसर नीकळी जशे
एटले यथार्थ समजाशे. संसारी काममां बुद्धि प्रगट थवी सहेल
छे अने आत्मतत्त्व उलखवानी बुद्धि आववी कठण छे, माटे वी-
तरागना वचनमां शंका करवी नहि. निकंखा ते कुमतिनी वांछा,
कुमति ते कुबुद्धि आत्माने विषे अनादिनी छे, तेना प्रभावे वि
षयादिकना अभिलाष थया करे छे; जे जे दुःखनां कारण छे ते
सुखनां कारण भासे छे; आत्मानी स्वरिद्धि सामी दृष्टिज नथी.
वळी एवी कुबुद्धि वाळा देव गुरुनी वांछा थाय छे ते कंखा दूषण
कहीए ते जेहने टळ्युं छे, तेने जरा पण कुमतिनी वांछा थती नथी.

निर्वितिगिछा ते धर्मना फळनो संशय, ते संशयथी रहित
ते निर्वितिगिछा आचार जाणवो ए आचार लाभांतराय तूटवाथी
थाय छे. खरी आत्मिक वस्तुनी तथा आत्मिक वस्तु प्रगट थवा-
ना कारणोनी चोकस खात्री थाय छे तेथी फळनो शंसय रहेतो
नथी. अमूढदृष्टि ते मूढपणुं गयुं छे. मूढपणे वस्तुने अवस्तु
माने, जेमके दुनीयामां वेदीआ ढोर कहेवाय छे, ते आत्मानी वातो
करे पण विषय कषायमां मग्न रहे, कोइपण प्रकारे संसारथी
उदास थाय नहिं; देवगुरुनी भक्ति ने व्रत नियमने विषे प्रवर्ते नहि
एहवी जे दशा ते मूढ दृष्टीपणुं कहीए, ते न होय. जे जे रीते
प्रभुजीए जे जे अपेक्षाए धर्म बताव्यो छे ते प्रमाणे श्रद्धा करे.
विषय कपाय अव्रत जेटलां जेटलां उछां थाय ते करे. जे न टळे
ते टाळवानी वांछा बनी रही छे. एवो जे आचार ते अमूढ दृष्टि
कहीए. उववूह गुण ते साधु. साध्वी श्रावक श्राविका प्रमुख
उत्तम पुरुषना गुणनी प्रशंसा करवी ते. थीरीकरण गुण, ते साधु
साध्वी श्रावक श्राविका चतुर्विध संघरूप उत्तम पुरुष धर्मथी च-

ल्लायमान थता होय, तेमने धर्म समजावीने स्थीर करवा. तन, मन ने धन ए त्रणे प्रकारथी जे जे रीतनी एवा पुरुषने हरकत होय ते ते हरकत दूर करी स्थिर करवा ते स्थिरीकरण गुण. वच्छलता ते सरखा धर्मी, पोताथी गुणे अधिक वा उंगा पण गुणवाला होय तेनी, जेवी जेवी शक्ति होय ते शक्ति प्रमाणे आहार पाणी वस्त्र आभूषणादिके करी सेवा करवी. ज्ञान, दर्शन, चारित्र जेम वृद्धि पामे एवा प्रकारे भक्ति करवी ते वच्छलता गुण. प्रभावना गुण ते जिन शासननी वहुमानता बीजा लोक करे, अने वली ते कृत्य जोइ बीजा जीवो धर्म पामे, जेम के प्रभुना मंदीरमां उच्छव आदिक करवे करी, तथा तीर्थ जात्राए धनवान पुरुषो होय ते संघ काढीने जाय, अने संघनुं रस्तामां रक्षण करे, जेम संघना माणसो निर्विघ्नपणे पोतानो आत्मिक धर्म साधी शके एवी धर्मनी साहाय्य करे. जैनधर्म जेम दीपे एम करे. वली महंत पुरुषो आठ प्रकारे प्रभुनुं शासन शोभावे छे. प्रथम प्रवचनी ते प्रवचन जे आगम, प्रभुनां प्ररूपेलां अंग, उपांग, छेद, आदिक सूत्र, निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि, टीका ए सर्व शास्त्र वर्तमानकालमां वर्ततां होय ते सर्वे स्वसमय कहीए, अने परसमय ते खटे दर्शनना शास्त्र तेना पारगामी होय तेना प्रभावे जे शास्त्रनुं जेने समजवुं होय ते समजांवी शके, जे जे शास्त्रनो अर्थ पूछे तो ते बतावी शके, तेथी घणी जैन शासननी प्रशंसा थाय. बीजो प्रभावक धर्म कथी ते धर्मोपदेश देवामां अतिशय कुशल होय, जेना मुखमांथी वचन एवां नीकले के सांभलनारने तेमना वचनमां शंका पडे नहि. सांभलनारनुं मन संसारथी उदास थाय अने पोतानुं आत्मतत्त्व प्रगट करवा तत्पर थाय, मोहनी आधीनता अनादि कालनी छुटी जाय, मिथ्या हठवाद रहे नहि, संसारी सुख तो दुःख जेवां लागे, आत्मिक

सुख तेज सुख माने. ज्ञान, दर्शन, चारित्र, गुण आत्मानो ते प्रगट करवानां काम थाय, विषयादीकना अन्नीलाष शांत थइ जाय, कामन्नोगनी वांछाउनो नाश थाय, कुबुद्धि कुशास्त्रनी बुद्धि टली जाय, एवा उपदेशक पुरुष उपदेश करीने शासनने शोन्नावे. त्रीजो वादी प्रन्नाविक ते जे जे खोटा मतवादी वाद करवा आवे, अनेक प्रकारना कुतर्को करे तेहना जवाव एवा आपे के कुतर्को नाश थाय; जेमके मल्लवादीजी महाराजे बौद्ध साथे वाद कर्यो तेमां बौद्धवालाथी जवाव न देवायो तेनी फिकरमां ते बिचारो मरण पाम्यो. एवा वाद करवानी कुशलताथी जिन शासन शोन्ने. चोथो नैमित्तिकि ते निमित्त शास्त्र जे ज्योतिष शास्त्र तेनो पारगामी होय तेथी जे जे निमित्त कहे ते सत्य थाय; जेम न्नद्रबाहु स्वामीए राजाने कह्युं के सातमे दीवसे तमारो पुत्र मरण पामशे, तेज प्रमाणे थयुं अने वराहमिहिरे सो वर्षनुं आउखुं कह्युं हतुं ते खोटुं थयुं. एवा न्नद्रबाहु स्वामी जेवा निमित्त शास्त्रना जाण ते एवी शासननी प्रन्नावनाने अर्थे निमित्त प्ररूपी शासननी प्रन्नावना करे. पांचमो तपस्वी ते अहंकार ममकार रहित शांत स्वन्नावी आकरी तपस्याउ करे, पोताना आत्मानो अणाहारी गुण प्रगट करवाने मोटी मोटी तपस्याउ करे तेने जोइने बीजा पुरुषने तपस्या करवानी बुद्धि जागे. तपस्यानुं अजीर्ण क्रोध जगतमां कहेवाय छे ते जेनामां नथी, शांत रसनो समुद्र छे, तेने जोइने घणा लोक प्रशंसा करे, ते तपस्वी नामा प्रन्नाविक कहिये. छठो विद्याप्रन्नाविक ते जेम वज्र स्वामी महाराजे विद्याना प्रन्नावे श्री देवीना न्नुवन वगेरेथी फुल लाव्या, जेथी बौद्ध धर्मनो राजा चमत्कार पाम्यो ने जैन धर्म अंगीकार कर्यो. एवी रीते शासननी शोन्ना करे ते विद्याप्रन्नाविक. सातमो अंजनसिद्धि प्रन्नाविक जेम कालीकाचार्य म-

हाराजे अंजन योगथी आखो इंटोनो पजावो चुरण नाखी सुवर्णनो वनावी दीधो, अने गर्धन्नील्ल राजाने जीती पोतानी वेन सरस्वतीने गेमावी. एह्वां शासननां काम करी शासन शोन्नावे. आठमो नवां काव्य वगेरे रचवामां कुशल्ल ते कविनामे प्रन्नाविक; जेम सिद्ध्सेन दिवाकर माह्वाराजे वीक्रमराजा आगल्ल नवां काव्य रचीने चार दीशाए चार काव्य कह्यां ते एकेक काव्य केहेतां एकेक दिशिनुं राज आव्युं, एम चार दीशानुं राज आव्युं पण एतो निस्पृह्वी पुरुप ठे ते राज्य लीधुं नहि, पण एवी कुशल्लताथी शासननी प्रन्नावना थाय, घणा जीवो धर्म पामे अने पोतानुं आत्म तत्त्व साधे तेथी उपकार थाय. एवी रीते आठे प्रकारे शासननी प्रन्नावना निस्पृहीपणे करे, कोइ प्रकारे कंइपण वांछा राखी करे नहि, ते प्रन्नाविक गुण कहीये. ए आठ प्रकारे दर्शननो आचार पामे, ते लान्नांतराय टुटवाथी थाय ठे, अने जेने दर्शननो लान्नांतराय होय तेने ए आचारथी विपरीत वर्तना होय. देवगुरु धर्मनी निंदा करे, धर्ममां कुतर्क करी शंका करे खोटा मत सारा लागे, लोकोने खोटा धर्ममयी बुद्धि करे, जिनराजनी न्नक्ति करी तेनो अहंकार करे जे हुं विधि युक्त न्नक्ति करुं ठुं. हुं जिन न्नक्तिमां धन वापरुं ठुं तेवुं जगतमां कोइ वापरतुं नथी, हुं उत्साह सहित करुंठुं तेवुं कोइ करतुं नथी एवा अनेक प्रकारना अहंकार करे ते अनाचार जाणवो. तेवा अनाचार सेववाथी दर्शननुं लान्नांतराय कर्म उपार्जे.

चारित्राचार आठ प्रकारे ठे. इर्यासमिति ते चालवुं, वेसवुं, उठवुं, सुवुं, पासु फेरववुं ए सर्वे काम यतना पूर्वक करवां. प्रथम रजोहरण वा मुहपति वमे करी पुंजवुं वा द्दष्टिथी जोवुं. ने पठी चालवादिकनी वर्तना करवी. एम करवाथी कोइ पण जीवने डुःख थाय नहि. केमके परजीवने डुःख नहि करवाथी स्व-

दया ते पोताना आत्मानी दया थाय. केमके परजीवने दुःख दे-
वाथी कर्मबंध थाय, तेथी पोतानो आत्मा मलीन थाय, आवी
भावना सदा बनी रही छे तेथी कोइ जीवने दुःख थाय एवी
वर्तना करता नथी, तेथी सेहेजे परजीवनी दया थाय छे. भाषा
समिति ते प्रथम तो मुखे हाथ अथवा वस्त्र मुहपति राखीने बोले
छे जेथी मुखना श्वासथी जीव हणाय नही कारण उघाडे मुखे
बोलतां केटलीएक वखत मच्छर, मांख वगेरे जीव मुखमां आवी
जाय छे ते गलामां उतरी जवाथी बकारी वीगेरे पोताने कष्ट था-
य छे ने ते जीवनो विनाश थाय छे. ते सारु भगवतीजीमां गौ
तम स्वामी महारजना प्रश्नो उत्तर भगवाने कह्यो छे के हाथ
राखी बोले छे तो ते निरवद्य भाषा छे, ने उघाडे मुखे बोले छे
ते सावद्य भाषा छे. एम भगवतीजीमां छापेल पाना १३०२मे छे मा-
टे मुनि तो उघाडे मुखे नज बोले. वली गृहस्थने पण उघाडे
मुखे न बोलवुं जोइए. हवे मुख ढांकीने बोलवुं, ते पण सत्य
बोलवुं. वली कोईनुं छिद्र खुले, कोईनी निंदा थाय, एवुं वचन बो-
लवुं नहि. जे वचन बोलवाथी सामो जीव पाप प्रवृत्ति करे, जे
वचनमां मकार चकारनी भाषा बोलवाथी कोई जीवने दुःख
थाय, तेनुं मन दुभाय एवुं वचन न बोलवुं. अर्थात् साधुना वा
श्रावकना धर्ममां बोलवानी भगवंते मना करी होय एवुं वचन
बोलवुं नहि. जे वचन बोलवाथी सामा जीवने वा कोई पण
जीवने तथा आत्माने लाभ न थाय ते वचन पण बोलवुं नहि;
ते भाषासमिति कहिये. वली पुद्गलीक जे जे पदार्थ छे ते सारु
आत्मामां उपयोग करे, जे आ देह प्रमुख जे जे पुद्गलीक पदा-
र्थ छे ते मारा नथी पण मात्र वहेवारथी केहेवा मात्र कहुं छुं;
एवा उपयोग सहित बोलवुं ते भाषासमिति सदाकाल स्वदशा-
मांज उपयोग छे. जे बोलवाथी आत्मा मलीन थाय ते वचन

बोले नहि. एषणा समिति ते निर्दोष एटले बेंतालीश दोष रहित आहार पाणी वस्त्र पात्रां वीगेरे जे कांइ जोइए ते एवां ले के जे लेवाथी कोईपण आपनार तथा तेना कुटुंब आदिकने कोईने पण दुःख न थाय वली कोईने दुःख थाय, हिंसा थाय, एहवा आहार ले नहि; कोई पण जीवनी हिंसा करवी नथी तेथी पोते करीने खाय नहि, कोई पासे करावे नहि; कोईए मुनिने सारु आहार कर्यो एम जाणवामां आवे, ते पण ले नही; तेना बेतालीश दोष दशवैकालीक सिद्धांतमां घणे ठेकाणे कह्या छे. ते दोषनी मतलब एवी छे के आहार आपनारने तथा आहारना जीवने एमना निमित्ते कांई पण दुःख थाय एवा आहारने दोषित आहार कह्यो छे; तथा स्वाद करीने खावो नहि; तेम रांधेली वस्तु सारी होय तो राजी न थवुं, तेम नवली होय तो दीलगीर न थवुं, तेमज रांधनारे सारी रांधी होय तेनां वखाण करवां नहि, तेम नवली रांधी होय तेने वखोडवी नहि; दानना आपनार तथा नहि आपनार उपर राग द्वेष करे नहि, वधा उपर समवृत्ति राखे एवी रीतना दोषो विस्तारे बताव्या छे, ते टालीने आहार पाणी वस्त्र पात्र लेवां, ते एषणा समिति. आदानभंडनिक्षेपणासमिति, ते पात्र, पाट, पाटला वीगेरे जे कांइ चीज ले ते प्रथम दृष्टीथी जुए, पछी तेने पूजे, पछी ले, वली मुके, ते पण जमीन निर्जीव जोइ पुंजीने तीहां मुके. पारिठावणिया समिति ते मल, वडो, मात्रु, लींट, थुंक, शरीरनो मेल जे जग्याए नांखे ते जग्याए कोई पण जीव होय, तेम पछी पण तेमां जीव उत्पन्न थाय तो पण कोईथी विनाश न थाय, एवी जगोए परठवे. गंदकी वाली जग्याए वा गंदकी थाय एवी जग्याए परठवे नहि, तेम कोई पण माणसने दुःख थाय, दुगंछा थाय, तेवी जग्याए परठवे नहि, तेम माणस देखे एवी जगोए झाडे जवा बेसे नहि, ए

रीते पारिठावणिया समिति पाले, ए पांच समिति. हवे त्रण गुप्ति तेमां, मन गुप्ति ते मन कांई पण पापना काममां प्रवर्तावे नहि, वधारे शुद्ध पुरुषो तो पोताना आत्म तत्त्वमां मन प्रवर्तावे, तेवी शक्ति न जाणी होय तो जेथी पोतानो आत्मतत्त्व प्रगट थाय ने तेमांज रमण थाय तेवां शास्त्र वांचे, वंचावे, सांभले, संभलावे, अने तेमां मन परोवे; पण संसारी बाबतमां मन प्रवर्तावे नहि. ध्याननी शक्ति वाळा ध्यान करे, ते ध्याननुं स्वरूप प्रश्नोत्तर रत्नमालामांथी जोई लेवुं अने ध्याननो लक्ष वधारे करवो, तेथी मन गुप्ति थाय छे. आर्त्त रौद्र ध्यानमां मनने प्रवर्तावबुं नहि जोईए. तेथी मन गुप्तिवाळा मुनि महाराजने कोई पण रीतनी शरीरादिक तथा धनादिकनी इच्छा नथी, तेम कुटुंवनी पण इच्छा नथी, तेथी कोई वस्तु मळी वा न मळी ते संबंधी राग द्वेष नहि. तेथी मनथी आर्त्तरौद्र ध्यान सेहेजे थतुं नथी. पोताना आत्माना सहेज स्वरूपमांज सदा मग्न रहे छे, कोई पण रीतनी परपरणतिमां मनने वर्तावता नथी. सद्चिदानंद स्वरूपमां मनने प्रवर्तावे छे. आत्मानुं स्वरूप अरूपी, अक्रोधी, अमानी, अमायी, अलोभी, अशरीरी, अखंड, अगोचर, अलख, अविनाशी, अकल, अगम, अतींद्रीय, अजर, अरागी, अद्वेषी, अपर, अमदी, अणाहारी अनोपम, एवा स्वरूपमां मग्न थई रह्यो छे, तेमां शरीरे रोग थाय, कोई उपद्रव करे, कोई कडवां वचन कहे, कोई मारे, कूटे तो पण तेमां मनने प्रवर्तावता नथी ते मन गुप्ति कहीए. तेमज वचन गुप्ति पण पाळे छे. वधारे विशुद्धि करवा ध्यानादिक करे छे एटले कांइ पण बोलवुं पडतुं नथी. श्रीमत् श्री महावीर स्वामी भगवाने अभिग्रह धारण कर्यो हतो जे केवळ ज्ञान प्राप्त थतां सूधी कोई साथे वचन बोलवुंज नहि, तेम बोलेज नहि, तेवी शक्ति नथी

तो कोई पण जीवने दुःख थाय एवां वचननी गुप्ति करे, एवां वचन बोले नहि, वली बोले ते पण एवुं बोले के सांभलनारने वचन गुप्ति थाय. पोताने वचनगुप्ति थाय एवां वचन शास्त्र आधारे बोले, केमके मौनपणुं धारण करे ते मुनि, माटे जेम परभावमां मौनपणुं थाय एवो उद्यम करे. लाभ सिवाय फोगट वाद विवादमां वचन प्रवर्तावे नहि, केवल वचनरहितपणुं अजोगी गुणस्थानमां अने सिद्धपणामां छे. संसारमां रहेला जीवने आवा अवसरमां प्रभुनो मार्ग मळ्यो, तेथी जेम बने तेम वचन योगनुं गोपववुं थाय एम करे, ते वचन गुप्ति. काय गुप्ति ते कायानी प्रवृत्तिने रोकवी. बीलकुल कायगुप्ति तो चउदमे गुणस्थाने थाय छे, ते गुणस्थान नथी पाम्या त्यां सुधी पापना काममां कायाने प्रवर्ताववी नहि. कायगुप्ति थाय एवा कारणोमां काया प्रवर्ताववी. जेटली जेटली कायानी प्रवृत्ति रोकाय एम रोके, ते कायगुप्ति कहीए. जेम बने तेम आत्म भावमां वर्त्ते ने कायानी चपलता छोडे. स्वस्वभाव सन्मुख थाय तेमां जेटलो चेतन स्वभाव प्रगटे एटली गुप्ति थाय. ए रीते पांच समिति अने त्रण गुप्ति मली आठ चारित्रना आचार व्यवहारथी मन, वचन, कायानी प्रवृत्ति प्रभुनी आज्ञाए करवी, जेथी आत्माना स्वभावनो आचार शुद्ध थाय. निश्चे चारित्राचार शुं छे ? आत्मा आत्म स्वभावमां स्थिर थाय, देहना स्वभावमां वर्त्ते नहि, कर्मनो नाश थाय, आत्मा जेटलो जेटलो शुद्ध थाय तेटलो तेटलो चारित्राचार प्रगटे, ए चारित्राचार सर्व प्रकारे प्रगटे त्यारे सर्व कषाय जे क्रोध, मान, माया, लोभ छे ते नाश थाय, अने यथाख्यात चारित्र प्रगटे. ए लाभ चारित्राचारनो अंतराय तुटे छे त्यारे प्राप्त थाय छे, अने जे जीवो चारित्रवंत पुरुषनी निंदा करे छे, अने बोले छे के खावापीवा न मळ्युं, वेपार करतां न आवड्यो, त्यारे साधु थईने बेठा; एवुं

बोलवाथी, अथवा कोई दिक्षा लेनार पोतानो सगो छे तेना मोहथी साधुनी निंदा करे छे, तेने दीक्षा लेवा देता नथी; वली बोले छे के साधुपणामां पण शुं फायदो छे, आवुं बोले छे, जावे छे, केटलाएक नामज्ञानी वनो बोले छे, के ए करवाथी कांई लाज्ञ नथी, ज्ञानथी लाज्ञ छे एम कही विषय कषायनी प्रवृती छोरूता नथी; छोरूनारनी लघुता करे छे; एवुं करवाथी जीव चारित्रना लाज्ञनो अंतराय कर्म बांधे, माटे चारित्राचार जेथी प्रगटे एवां कारण सेववां, के कोई दीक्षा लेतो होय तेमां वनती मदद आपवी, तेना कुटुंबना माणसने आजीवीकानुं दुःख होय तो आपणी शक्ति होय ते प्रमाणे दुःख जागवुं के तेथी तेने दिक्षा लेवामां हरकत पमे नहि. कोई पण रीते संजमनी मदद थाय एम करवुं. संजम लेवानी सदा जावना जाववी. कोई संजमवंतनी निंदा करतो होय तो तेनी निंदा टालवानो उद्यम करवो, जेमके राजग्रही नगरीमां जीखारीए दीक्षा लीधी तेने सारु लोक निंदा करता हता, पछी अज्ञयकुमार मंत्रीश्वरे सवाक्रोम सोनैयानो वजारमां ढगलो कर्यो अने आखा शहेरमां ढंढेरो फेरव्यो के जे माणस पृथ्वीकाय ते माटी प्रमुख, अपकाय ते पाणी, तेउकाय ते अग्नी, वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय ते जे हालता चालता जीव, ए छ कायनी हिंसानो त्याग करे, तेने आ सवाक्रोम सोनैया आपुं. पछी काइए पण सोनैया लीधा नहि. सर्व माणसो विचार करे जे संसारि सुख हिंसा कर्या विना वनतुं नथी, तो पइसाथी शुं करवुं? एम विचारी कोई पण सोनैया लेवाने आव्युं नहि; पछी अज्ञयकुमार मंत्रीश्वरे वजारमां लोकने आवी एकछा कर्या ने पुछयुं जे आ सोनैया केम लेता नथी, त्यारे सर्वे कहे जे ए सोनैया लइने शुं करवुं ? संसारमां खावुं, पीवुं, पहेरवुं, उढवुं, गामी घोमा दोमाववा ते सर्वे काम हिंसा विना थतां नथी,

ने ए संसारी सुखनी इच्छा अमारी गइ नथी, एटले सोनैयाने शुं करीए? पछी अभयकुमारे कह्युं जे तमो सवाक्रोड सोनैया लइ हिंसानो त्याग करता नथी, तो आ भीखारीए तो वगर पैसे हिंसानो त्याग कर्यो तेनी तमे केम निंदा करो छो? एवुं सम-जाववाथी बधाए ते संजम लेनार भीखारीनां बहुमान करवा लाग्या. तेमज जे संजम ले तेनां बहुमान थाय एम करवुं. वली जे वखते थावच्चा कुमारे दिक्षा लीधी ते अवसरे कृष्ण वासुदेवे आखी द्वारिका नगरिमां उद्घोषणा करावी के जे कोई थावच्चा-कुंवर साथे दिक्षा लेशे तेनां छोकरां मा बाप वगेरे जे कोई हशे तेनी हुं प्रतिपालना करीश, अने पछी तेमज कर्युं. आम करवाथी सेहेज संजम लेनारनां संजम लेवामां विघ्न होय छे ते दूर थाय छे, माटे आवी रीते संजमनां बहुमान करवाथी संजमनो लाभां-तराय तूटे एवो उद्यम करवो. आ सर्वे अधिकार सर्व संजमनो कह्यो. तेमज देश चारित्र श्रावकना बार व्रत रूप, तेनो पण एज रीते आचार देशथी जाणवो. केमके व्रत देशथी छे, तेम आचार पण देशथी जाणवो, ते पण अंतराय कर्म होय त्यां सुधी देश विरति लेइ शकता नथी. सामायक पौषधमां तो मुनी जेवाज आठ आचार पालवा छे; ते पाली न शके अने ज्यारे अंतराय तुटे त्यारे पाली शके छे; जेमके सुव्रत शेठे पौषध लीधो हतो अने मकाननी पाछल आग लागी तो पण पौषधथी चलायमान थया नहि, अने ते मकानमांथी रात्रीए नीकल्या नहीं तो धर्म दृढता जोई देवताए सहाय करी, अने पोते जे मकानमां हता तेनी आ-गल पाछलनां मकान बली गयां, पण ए मकानने हरकत थइ नहि. माटे पौषध सामायकमां मुख्यपणे चारित्राचार पालवो, अने पालवानी भावना राखवी. जेम जेम चारित्राचार पालवानी उत्कंठा थाय छे, तेम तेम चारित्राचारना लाभनो अंतराय तुटे

छे. सदाकाल एज भावना भाववी के क्यारे आ संसाररूप बंदीखानामांथी छुटुं. आ संसारमां अज्ञानपणे सुख मान्युं छे, पण विचार करतां कांई पण सुख नथी. अग्निमां लोहनो गोलो जेवो तपी रह्यो छे तेवो आ संसारमां रात दिवस विकल्परूप ताप लागी रह्यो छे. धननो विकल्प, वेपारनो विकल्प, कुटुंबनो विकल्प, खावा पीवानो, पहेरवानो, उढवानो, सुवानो, सर्व कुटुंबनो विकल्प, एवा अनेक प्रकारना विकल्परूप तापे तपी रह्यो छुं, ते हुं क्यारे छुटीश, एम भावीने बने छे तो संसारने छोडे छे, नथी बनतुं तो संसार छोडवानी भावना रात दिवस भावी रह्या छे; एवी भावना भाववाथी जीव हलको थाय छे. वली कदापि चारित्र अंगीकार करी मनमां अहंकार धारण करे छे के माहारा जेवो चारित्रनो पालनार कोण छे? त्यारे भाववुं जे अरे जीव श्रीमान् महावीर स्वामीए केवा उपसर्ग सहन कर्या छे? बे पग वच्चे अग्नि सलगावी खीर रांधी ए आदे संगम देवताए हजारो मणनुं माथे चक्र मुक्युं, जेथी घुटण सुधी भूमीमां पेसी गया तो पण समभाव छोड्यो नहि. एवा तें कया उपसर्ग सहन कर्या? जे तुं अहंकार करे छे. अरे चेतन तें सूर्यनी आतापना लीधी? वा चार महिना सुधी कुवाना टोडा उपर काउस्सग्ग ध्यानमां पूर्वना मुनिउ रहेता तेम तें कर्युं छे? ढंढण मुनिने छ मास सूधी आहार न मल्यो तो पण पोतानो अभिग्रह छोड्यो नहि. एवुं तें शुं मोटुं संजम पाल्युं? के तुं अहंकार करे छे. एवा मुनिउना उत्कृष्ट कृत्य विचारी पोताना अहंकारनो नाश करे छे, अने आत्माने आत्म स्वभावमां स्थिर करे छे. परभावमां अनादिनी स्थीरता थई रही छे, ते खशेडीने स्वपरणतिमां स्थिर थाय छे ते लाभ लाभांतरायना क्षय थवाथी थाय छे.

तपाचार ते आत्मानो अणाहारी गुण छे. आहार करवो ते

आत्मानो धर्म नथी, ते छतां आहारमां अनादि कालनो पुद्गलनी संगे आहारनी आकांक्षा थयां करे छे, ते दशा छोडवाने सारु तप करे छे. आत्मानां छ लक्षण कह्यां छे. तेमां आत्मानुं तप पण लक्षण छे. ते तपनुं अंतराय कर्म बांध्युं छे, त्यां सुधी तपगुण प्रगट थतो नथी. तपनुं अंतराय जीव हमेश बांधी रह्यो छे. तपस्वी पुरुषोनी नींदा करे छे, तपमां कांइ गुण नथी, खावा न मले एटले तप करे, एवी रीते बोले, कुटुंबी माणस तपस्या करतां होय, तेने कंई शरीरे फेरफार थाय तो तपने दुषण दे, पण एम वीचारे नहि के पूर्वे अशाता वेदनीय कर्म बांध्युं छे तेथी रोग थयो. कंई पण रोग पूर्वना कर्मना उदय सिवाय थतो नथी, तो पूर्वे अज्ञानताए तपस्या करवाना भाव थया नहीं, अने तपस्या करी नहि, विषय कषायमां मग्न रह्यो, तेथी आ अशाता वेदनी कर्म बांध्युं, ते उदये आव्युं छे. तपस्यानो पण अंतराय करेलो तेथी अंतराय कर्मनो उदय थयो, तेथी तपस्या थती नथी, एवी वीचारणा न करे, वली तप करी अहंकार करे जे म्हारा जेवो तपस्वी कोण छे ? बीजाथी तपस्या न थती होय तेनी निंदा करे, पोते तप कर्यो छे तेनी महोटाई करवा लोक आगल पोतानी प्रशंसा कराववा तप करेलो जणावे, पण एम न विचारे के में शुं तप कर्यो छे ? पूर्वे मुनिओ तप करता हता ते इंद्रियोना विषय मंद पाडवा करता हता. शरीरनां हाडकां खखडतां हतां, तेनुं दृष्टांत भगवतीजीमां आप्युं छे के पातरानुं भरेलुं गाडुं होय ते चाले त्यारे खखडे. तेम जे मुनि महाराजे तपस्या करी पोतानुं शरीर गाली नांख्युं तेवी रीते शरीर गाली नांखवाना भाव नथी; कारण के शरीर नरम पडे छे तो शरीर पुष्ट करवानो उद्यम सदा करी रह्यो छे. पूर्वेना पुरुषो देहने विदेह मानता हता एटले देहने पोतानो मानताज नहोता तो तेवो भा-

व थयो नथी, त्यां सुधी तारो तप केहेवा मात्र छे. वली तपस्या करी खावानी कोई प्रकारनी इच्छा करता नहोता, ने तुं तो इच्छा करे छे. तारी इच्छाउ रोकाई नथी तो तुं तपनो शी बाबत अहंकार करे छे ? एवी नावना करे नहि, ने अहंकारमां मची रहे तेथी पण तपनुं अंतराय कर्म जीव बांधे छे. तेथी तप करवानो नाव थतो नथी. हवे जेने तपना लान्नो लान्नांतराय टुट्यो छे ते पुरुषोने तपस्या करवानो नाव थाय छे, ते रूमी रीतना तपनो आचार पाले छे, बारे प्रकारे तप करवामां अग्लान नाव करे. ग्लाननाव ते आ तप केम थाय, महाराथी थई न शके, छती शक्तीए उत्साह न करे, वली तप करे तो मांदा जेवा नाव धारण करे, एहवी रीतनी ग्लानता धारण करे नहि, जे जे तपस्या करे ते ते उत्साहे करे, मन पण प्रसन्न रहे के आज मारो धन्य दिवस के आत्मानुं तप लक्षण प्रगट करवानो माहारो नाव थयो, वली ए उद्यममां प्रवर्तवानो वखत मल्यो. हवे जेम मारा आत्मानो तपगुण प्रगट थाय एम हुं वर्तुं, एवी रीते करे. वली अणाजीवी ते तपस्याए करी आजीवीकानी इच्छा नथी, एटले हुं तपस्या करुं तो मने वधा लोक मान आपशे, वा धन आपशे, वा पुद्गलीक सुख आ लोक तथा परलोकमां मलशे एवी आजीवीकानी इच्छा नथी. केवल आत्माने कर्मथी मुक्त करवाने सारुज उद्यम करे. वली कुशलदीठी एटले तीर्थंकर महाराजे तप करवानो कह्यो छे, अने पोते करी वताव्यो छे, ने कर्म खपावी मोक्षे गया छे; तेम हुं पण तप करी कर्म खपावुं. एवी नावनाए ते तप करे, ते तपनो आचार. एवी रीते तपाचार कह्यो. जे शरीरने दुःख सुख थाय ते गणे नहि, तेथी शरीरनी संन्नाल रहे नहि. त्यारे शरीर पमी जाय तो धर्म साधन शी रीते करी शके ? आवी शंका थाय तेनुं समाधान ए के

पूर्वे जेमणे तपनुं अंतराय कर्म वांध्युं छे तेमनुं शरीर नरम पडे छे, ने धर्म साधन थई शकतुं नथी, तो तेउ शक्ति माफक तपनो उद्यम करशे. वली शरीर नरम हशे तो सर्वथा आहार छोडी नहि दे, पण विषय छोडवा तेमां कांई शरीरना वलनी जरुर नथी, तेथी शरीरे जेम टकाव रही शके तेटलो आहार लेशे; पण वत्रीशे रसोईना स्वाद लेवाना जाव न राखे, मात्र जे वस्तु निरवद्य एटले पाप रहित मली तेज चीजथी निर्वाह करे. एक चीजथी शरीर नजे छे तो वधारे वस्तु शुं करवा ले, एवा वीचारथी आहार करे छे, तो पण तेने आहारनी इछा नथी. तपस्वी छे अने तप करे ने तपने दीवसे तथा वीजे दीवसे खावानी जावनाउ करे, तो एने ज्ञानीए तप गण्यो नथी, कारण जे इछाना रोधने ज्ञानी तप कहे छे, माटे हरेक प्रकारे इछा रोकाय एम करवुं, वा रोज तप करुं, तपनो अन्यास करुं तो ते अन्यासथी मारी इछा रोकाशे, एवा विचारथी तप करे तो ते पण कोई दीवस इछा रोकशे, माटे इछा रोकवानो उद्यम करवो ते सारो छे. जे जे रीते आत्मानो गुण प्रगट थाय एवो उद्यम करवो. जेम बने तेम इंडियोना विषयनी वांछा घटवी जोइए तोज साचुं ज्ञान कहेवाय; केम के जे आत्मानुं स्वरूप जाणे छे के, जाणवुं देखवुं ए आत्मानो धर्म छे. तो जे जे खावानुं मल्युं ते फक्त जाणी लेवुं छे तेमां विषय बुद्धि करवी नथी ए आत्मानुं काम छे, तेवा विचारथी ते आहार करे छे तो पण तपस्वीज छे, केमके आत्मजाव कायम रह्यो. तप कांई आहारना त्यागमां नथी. इछाना रोधमां छे. इछा रोधनां साधनोने पण तप कह्यो छे तेथी बार जेद कह्या छे, माटे जे जेदनो तप करवाथी पोतानी स्वदशा प्रगट थाय ते तप करवो. बारे प्रकारनुं तप उपयोग सहीत करे तो ज्ञानी माहाराजे निर्जरानुं कारण

कह्युं छे, एटले कर्म खपाववानुं कारण कह्युं छे, कारण के जीवने गाढ कर्मनां दलीआं बंधायां छे माटे सर्वथी वेदनी कर्मने पुद्गल वधारे भाग आपे छे, केमके वेदनी- यनुं प्रगटपणुं छे. हवे जे जे तप करे तेमां अशाता वेदनी थया सिवाय रहेती नथी, ते अशाता तप गुणनो अंतराय तुट्यो हो- य तेटली समभावे भोगवे छे. समभाव रहेवानुं बीज कोणछे ? वीर्य छे. वीर्य अंतराय तुटवाथी फोरायमान थाय छे, ते वीर्य जे जे आचारमां जीव प्रवर्ते ते ते आचारमां फोरायमान थाय छे, ने जे जे वीर्यना फोरायमानथी तप थाय छे ते प्रसन्नताथी थाय छे, अहर्निश तेमां हरख थाय छे, अने ज्यारे कोइना आग्रहथी वा शरमथी थाय छे त्यारे प्रसन्नता न होय त्यां वीर्य फोरायमान न- थी थतुं, त्यारे अशाता अवसरे समभाव पण जीवनो रही शकतो नथी. जे पुरुषोने स्वपरनुं ज्ञान थयुं छे तेमनो भाव तो पोतानी आत्मदशामां रहेवानो बनी गयो छे, पण आत्मभावमां वरती शकतो नथी, केम के तप गुणना लाभनो लाभांतराय तुट्यो नथी. ते जेटलो जेटलो तुटतो जाय छे तेटलो तेटलो ढंगो थतो जाय छे, अने तेटली वर्त्तना करे छे. वर्त्तना करतां अशाता थाय छे त्यारे बालजीव विचारेछे के में तप कर्यो तेथी मने अशाता वेदनी थई, पण ज्ञानी पुरुष तो विचारे छे जे कर्म नाश करवा तप कर्यो छे, ने वेदनी कर्मना उदयथी वेदनी थई छे. वेदनी कंई तप करवाथी थती नथी. तप करवाथी भगवान् श्री महावीरस्वामी प्रमुखे वेदनी कर्म वीगेरे खपाव्यांछे, तेम खपेछे, ने निकाचीत कर्म तपस्यानी वखते उदये आव्यांछे, तो तें तपस्या समभावे आदरी छे, माटे समभावे ए कर्म पण भोगवाशे, तेथी कर्म निर्जरा विशेष थशे, तेम विचारी अशाता वेदनीथी बीहता नथी. अशाता वेदनीनी उदीरणाज करी छे तो उदये आवे तेमां बीहे नहि, एवा भाव जेम जेम वृद्धि पामे

छे तेम तेम वीर्यांतराय तुटतो जाय छे. अने वीर्य फोरायमान थतुं जाय छे. वली वधारे विशुद्धिवंतने तो आवा विचार करवा पम्-ताज नथी ते तो पोतानी आत्म दशा जाणवा देखवानी छे ते रूप वेदनीने जाण्या करे छे तेमां राग द्वेष करताज नथी. एवी समभाव दशा अप्रमादी मुनिने बने छे, ते तो पोतानी अप्रमाद दशामां रही आनंदमां वर्ते छे. हवे प्रमाद गुणस्थानवंत वीगेरे तो पोताने समभाव दशा केटलीएक थई छे, केटलीएक नथी थई, ते वधारवा सारु वारे प्रकारे तप करे छे. ते अनशन एटले अन् एटले रहित अने अशन एटले अनाज प्रमुख खावुं, ते अ-नशन तप कहीए. आहार करवो ते आत्मानो धर्म नथी, पण पुद्गलनी साथे संबंध थवाथी आहार जाणे आत्माज करे छे, एवी दशा अनादीनी बनी गई छे; पण ज्ञान थवाथी जाण्युं जे आहारना पुद्गल शरीरमां प्रणमे छे, आत्मा अरूपी छे तेमां कांई प्रणमता नथी, तेम छतां मह्यरे आहार करवो मानुं छुं, ते अ-ज्ञान दशा छे, पण माहारी तथा प्रकारे जोईए एवी विशुद्धि थती नथी. एटले आहारनी इच्छा थाय छे तो पण जेटली जेट-ली रोकाय तेटली रोकुं के अभ्यासथी सर्वथा रोकाई जाय. एम भावीने नवकारशी एटले बे घमी दीवस चम्ता सुधी, पोरशी एटले प्रहोर दीवस चम्े त्यां सुधी, साढ पोरसि ते दोढ पहोर दिवस चम्े त्यां सुधी, पुरिमढ्ढ ते बे पहोर दिवस चमे त्यांसुधी अवढ्ढ ते त्रण पहोर दिवस जाय तीहां सुधी, वा बे वार खावुं, वा एकासणुं ते दिवसमां एकज वार खावुं, वा आंबिल ते छए विगय रहीत एक वार खावुं, उपवास तो सर्वथा खावुंज न-हि, ते जेटला उपवास बने एटला दिवस आहारनो त्याग कर-वो; तेमां कोई चारे आहारनो त्याग करे, कोई त्रण आहारनो त्याग करी पाणी मोकलुं राखे, एहवी रीते तप करवो, वा मर-

ए वखते सर्वथा आहारनो त्याग करी सर्व वस्तुनो अने शरीरनो त्याग करवो, ते अनशन तप जाणवो.

हवे उणोदरी तप ते उणुं खावुं; एटले सर्वथा खावुं नही एवो आत्मानो धर्म छे, पण अनादी जडनी संघाते करी जीव जड कीयाने पोतानी मानी रह्यो छे तेम देहने पोतानुं माने छे, ते जोर अज्ञानतानुं छे, ते अज्ञानताना जोरथी मने भूख लागी छे, माहरे खावुं माहारे पीवुं छे एम कहे छे, वली देहमां रह्यो छे ते देह जड पदार्थ छे ते जड पदार्थनो धर्म शडण, पडण, विध्वंसण छे, एटले विनाश धर्म छे. आहारनो पुद्गल मले तोज टकी रहे. हवे आहारना पुद्गल बे प्रकारे मले छे, एक रोम आहार ते रुवे रुवे आहारना पुद्गलनो शरीरमां समये समये आहार करी रह्यो छे ते, तथा एक कवल आहार ते कोलीउ करी मुखमां मुकीए ते; हवे रोम आहार तो पोताना उपयोग सहीत तथा उपयोग रहीत पण लेवाय छे, ते तो जीहां सूधी शरीर छे त्यां सूधी लेवानो बंध जीवने थतो नथी; तो पण ते आहार शी शी रीते लेवाय छे? जे पवन आवे छे ते ठंडो आवे छे तो ठंडक लागे छे, गरम आवे छे तो गरमी लागे छे, वरसाद वखत होय त्यारे सरदी लागे छे, आ वधुं गरमी प्रमुख श्याथी जाणे छे? शरीरमां प्रणमे छे तेथी, तो तेज आहार छे. पण ते कंई स्ववशपणुं नथी, तेथी तेनो त्याग ग्रहणमां उपयोग रहे छे ने नथी रहेतो, एटले वीरती पण थती नथी तो पण ज्ञानी पुरुषो छे ते तेमां राग द्वेष नथी करता. फक्त आत्मानो जाणवानो धर्म छे तेथी जाणे छे के आ गरमीना पुद्गल, आ शीतना पुद्गल लेवानो कर्म उदय छे तेम लेवाय छे, एम उपयोग सदाकाल रहे छे, ते पुरुषने इच्छानो रोध थयो ते तप छे, पण एटलो गुण प्राप्त थयो नथी तेथी ठंडी गरमीमां जाणवा रूप रही शकतो

नथी, तो पण कंईक ज्ञान थयुं छे, ने कंईक फरस ज्ञान थयुं छे; तेना प्रभावथी कंईक समभाव राखे छे; तो जेटलो राग द्वेष उछो थयो ए पण उणोदरी तपनुं लक्षण छे, माटे जेम राग द्वेषनी परणती उछी थाय एम उत्तम पुरुषे करवुं. हवे बीजो कवल आहार छे, ते सर्वथा जेहनी इच्छा उठे छे तेनो त्याग करे छे, ते अनशन तपमां गणाय छे. हवे सर्वथा आहार विना तो शरीर रहेतुं नथी त्यारे आहार आपवो जोइए, पण आहार लेवानो धर्म नथी तेथी इच्छा थती नथी पण शरीरने टकाववा आहार आपवो. ते उणुं उछुं खाय तो पण शरीरनो टकाव, रहे रोगादीकनी उत्पत्ति न थाय तेथी आहार उछो ले अने इच्छा नथी वा इच्छा छे तो ते उछी थइ, एटलो आत्मा निरमल थयो ने इच्छाना रोधरूप उणोदरी तप सहेजे थयो. वली जेनी एटली विशुद्धि नथी थई ते पण हमेशना खोराक करतां पांच कोलीआ वा तेथी वधारे उछा खावानो अभ्यास करे, तेथी पछी सेहेजे इच्छानो रोध थई जाय. वली बीजी रीते खावानी वस्तुउ छे, तेमांथी जेटली वस्तु उछी ले तेटलो उणोदरी तप थाय. वली उछी वस्तु ग्रहण क्यारे थाय. के कंइक खावाना विषय घट्या होय तो वा विषय घटवानो अभ्यास छे. केमके आहार लेवानो आत्मानो धर्म नथी, तो जेम बने तेम पोतानो आत्म धर्म प्रगट करवानो जीवने अभ्यास करवो जोईए. जेम जे जे कला शीखवी होय ते ते कला अभ्यास करवाथी शीखाय छे तेम. आत्म धर्मनी वर्तना अनादी काल थयां जाणतो नथी, तथा वर्ततो नथी. ते अभ्यास करवाथी वर्तना थाय तो ते अभ्यासमां जेम बने तेम अयोग्यनो त्याग करवो. आहार बहु जातना छे, तेमांथी जे आहार लेवाथी घणा जीवनी हिंसा थाय छे ते आहार शाकादिक तथा अभक्षादिकनो न करे ते बावीश अभक्षनां नाम मारा करे-

ला प्रश्नोत्तर चिंतामणीमां छे, तथा जोगशास्त्रादिक ग्रंथोमां छे तेमांथी जोई त्याग करवो, ते पण ऊणोदरी तप छे; तथा जे आहार रसवती नक्ष्य छे ते रसवतीमांथी थोडी चीजोथी निर्वाह थाय छे, तो पण निर्वाह करतां वधारे चीजो जीव विषयने सारु वापरे छे तेथी आत्मा वधारे लेपाय छे. एम जेणे जाण्युं छे तो खाती वखत निर्वाह जेटली वस्तु ग्रहण करी बीजी वस्तु उपरथी इच्छा उतारवी ते पण ऊणोदरी तप छे; माटे जेम बने तेम निर्वाह उपर लक्ष आपवो. केटलाएक विषय घट्या नथी तेथी वधारे वपराय, तो ते वीषे पण जीव निंदा गर्हा सहित जो वापरे तो विषयनां कर्म आकरां न बंधाय, तो ते कर्मना रस जेटला ऊंग पड्या ते पण ऊणोदरी तपनुंज फल पामे. वृत्ति संक्षेप तप ते, जे वृत्तिउ वर्ती रही छे, तेनो संक्षेप करवो, एटले मरजादमां आववुं; जेम के श्रावकने चौद नियम धारवा, मुनिने द्रव्य, क्षेत्र, काल, नाव आ चारे प्रकारमांथी हर कोई प्रकारनी आहारादिक वस्तु संबंधी धारणा करवी, रोटली अथवा हरकोई पदार्थ धारे के ए वस्तु मले तो लेवी, वा फलाणुं माणस आपे तो लेवुं वा आटला कलाके मले तो लेवुं वा हाव नावे आपे तो लेवुं, एवी रीतना अन्निग्रह धारण करे. एहवी धारणा करवानी मतलब शुं छे के एवी रीतनो जोग न बने ने तप बने तो सारुं. पूर्ण चित्त तप करवानुं थतुं नथी, त्यारे आवा अन्निग्रह धारण करी आहारादिकनी इच्छाने शांत करे. पुद्गल नावमां वृत्ति ऊंगी थई रही छे ते आवा अन्यास करीने वृत्तिउने रोके, ए वृत्तिसंक्षेप तप कहीए.

रस त्याग तप केहेतां चारे महाविगय ते मध, माखण, मांस, मदीरा आ चार विगयनो श्रावक तथा मुनि महाराजने सदा त्याग होय, केमके ए वस्तुउ खातां त्रसकाय जीवनो वि॰

नाश थाय छे, ते वातनो योगशास्त्रमां हेमचंद्र आचार्य महाराजे विस्तारे निषेध करेलो छे. एटलुंज नहि, पण हरिभद्र सूरि महाराजे पंचाशक वगेरे ग्रंथोमां मांसादिकनो निषेध कर्यो छे. मांसाहारी जीव छे तेने निर्दयपणुं तो अवश्य होय. जो दयाना परिणाम होय तो जेमां घणा जीवनी हिंसा थाय एवी वस्तु वापरवाना भाव थायज नहि. पन्नवणाजीमां जघन्य श्रावक कह्या छे, ते ए चार महाविगयना त्यागीज कह्या छे, वली उपाशक दशांगमां आणंदजीए मांसादीकनो त्याग कर्यो छे. वली मांसना आहारथी मीजाज बीगडायेलो थाय, एवुं हालना डाकटरो पण कहे छे, वली मदीरा थकी आत्मानी ज्ञानशक्ति अवराई जाय छे. डाह्यो होय ते गांडो थाय अने ते गांडाइथी धन धान्यादिकना वेपारमां पण नुकशान थाय, वली जगतमां पण निंदानुं स्थानक थाय छे, वली परलोके नरकादिक गति पामे, तेथी उत्तम पुरुषो, साधु, तथा ग्रहस्थ एनो त्याग करे छे. वली हालना वखतमां इंग्रेजो तथा पारशीउ पण केटलाक मांसाहारनो त्याग करे छे, केटलाक उंची टेव थाय तेम करे छे, आम अनार्य लोक ज्यारे त्याग करे छे तो आर्य लोकने त्याग होय तेमां शी नवाईनी वात छे, माटे महाविगयनो त्याग कह्यो छे. बीजी छ विगय ते दुध, दही, तेल, गोल, पकवान तथा घी, ए छ विगयमांथी जेटली विगय त्याग थाय एटली करे; कारण के विगय खावाथी विकारनी वृद्धि थाय छे, तेथी काम दीप्त थाय छे, माटे मुनि महाराजो विगयनो त्याग करे छे. पण हाल कालमां विगय वापर्या विना शरीर टकी शके नही तेथी शरीर निभाव जेटली वापरी बाकीनी विगयनो त्याग करे. श्रावक छे ते पण रोज एक एक विगयनो त्याग करे, कारण के मुनि महाराज तो सर्व कामना त्यागी छे तेथी बने तो सर्वथा त्याग करे, पण

गृहस्थथी बनवुं दुर्लभ छे. गृहस्थ एने तो जेटली मूर्छा काम उपरथी उतरे ते मुजब विगयनो त्याग करे. भावथी जेटला पुद्गल ओछा ग्रहवामां आवशे एटलो कर्म बंध नहि थाय, एम भावी मुनि तथा गृहस्थ विगयनो त्याग करे. पोतानो अणाहारी गुण प्रगट करवारूप वीर्य फोरायमान थाय एज आत्मानो तप गुण प्रगट थाय, ते रसत्याग तप कहीये.

कायक्लेश तपः—ते जेटलुं जेटलुं समभावे कायानुं कष्ट भोगववामां आवे छे ते कायक्लेश तप. मुनिमहाराज लोचादिक कष्ट सहन करे छे, विहारमां चालवानां कष्ट सहन करेछे, सूर्यनी आतापना ले छे, ते मुनि महाराज शुं भावी कष्ट सहन करे छे के पोताना आत्मानुं स्वरूप जाण्युंछे, जडनुं स्वरूप जाण्युं छे तेथी जड जे शरीर तेने पोतानुं जाणता नथी, पोताना तेवा भाव रहे छे के नहि, एम विचारवुं. जे वखत लोच करे ते वखत कष्ट पडे छे ते कष्ट पडतां जे पुरुषोनुं मन बगडतुं नथी ने समभावमां रहे छे तो एवां कष्ट स्वभाविक रोगादीकनां आवे त्यारे पण समभावमां ते पुरुष रही शके छे; अने समभावे रहेवाथी ते कर्म भोगवाय छे तेज वखते आत्मानी अशुद्ध परिणती टले छे, ते निर्जरामां गणाय छे, अने आत्मा शुद्ध थाय छे. हवे जे माणसो जाणीबुजीने एवां कष्ट सहन करता नथी तेने रोग भोगवी वा बीजा कुटुंबनां वेपारनां काम करी कष्ट भोगववां जोइशुं. अनादि कालनो जीव संसारमां रोलाय छे तेमां मोहने वश अशाता वेदनी कर्म, अंतराय कर्म बांधेलां छे ते भोगव्या विना छुटको नथी, माटे उत्तम पुरुषो जे प्रमाणे समभावमां रही शके छे ते प्रमाणे कष्ट भोगवी पोतानां कर्म खपावे छे, ते कायक्लेश तप छे. समभाव सिवायनां कष्ट भोगवे छे ते निर्जरामां ज्ञानी गणता नथी, कारण जे एक कर्म भोगवी पाछां हजारो कर्म नवां उपार्जन करे छे, माटे ते दुःख

भोगवेलां काम लागता नथी. तेथी तेने सकाम निर्जरामां गण-
ता नथी. दरेक धर्ममां समजीने काम करवाथी लाभ वताव्यो
छे, तेमज जे जे कष्ट भोगववुं ते समजीने भोगववुं तेथी आ-
त्माने लाभज थशे. कष्ट भोगवतां आत्मानुं वीर्य जागे छे, तोज
समभाव रही शके छे, नहिं तो समभाव रहेतो नथी. ते आत्म
वीर्यना अंतराय टुटया विना वीर्य फोरायमान थतुं नथी. माटे
समभावमां रही जे जे बनी शके ते रीते कायाने कष्ट भोगवी
कर्म खपाववां ते कायक्लेश तप जाणवो.

संलीनता ते मुनि महाराज करी शके छे. जेम कुकडी
शरीर संकोचीने सुवे छे तेम मुनि महाराजो सुवे छे. एवी रीते
सुवाथी अंगोपांग वधाने जागृति आवे छे, अने निद्रामां लीन थ-
वातुं नथी, ने आत्मज्ञान अवराई जतुं नथी. जेम सख्त निद्रा
आवे तेम उपयोग लोपाई जाय छे तेथी जेम आकरी निद्रा न
आवे तेम मुनि महाराज सुवे. वली जोग संलीनता पण तपमां
कही छे, परंतु ते अभ्यंतर तप गणी शकाय. तेम वचन काया-
ना जोग जेम बने तेम आत्म स्वभावथी बहार वर्त्तता रोकीने
नीज स्वभावमां थीर करवा, ते जोग संलीनता तप छे, ए घणो
ज श्रेष्ट तप छे. ए रीते संलीनता तप कह्यो छे.

ए छ प्रकारे बाहाज तप कह्यो, तेनुं कारण जे ए तप कर-
नारने जोईने आ तपस्वी छे एम उलखी शके. बाकी वस्तुपणे
तो कर्म खपाववाना भावथी ए बाहाज तप करे, ते पण आत्मा
निर्मल करे. अने अभ्यंतर तपथी पण आत्मा निर्मल थाय. हवे
ते अभ्यंतर तप ते शाथी ? तो के बाहारथी देखीने तपस्वी कोई
नहि कहे, पण आत्मा निर्मल करे तेथी अभ्यंतर तप कह्यो. ते
पण छ प्रकारे छे.

१. प्रथम विनय तप ते देवनो, गुरुनो, धर्मनो, ए त्रणनो

विनय करवो. देव ते अरिहंत, जेमणे ज्ञानावर्णी कर्म क्षय करी केवलज्ञान उपार्जन कर्युं छे. जे ज्ञाने करी लोकालोकना भाव ते स्वर्ग, मृत्यु, पाताल ए त्रणमां जीव अजीव पदार्थ रह्या छे. ते पदार्थनी वर्णना थई रही छे, समे समे अनंता परजायनो उत्पात, व्यय, अने ध्रुव थई रह्यो छे; ने गया कालमां वर्त्तना थई, आवते काले थशे अने वर्तमानमां थाय छे, ते सर्व भाव एक समयमां जाणी रह्या छे तेनुं नाम केवलज्ञान, एवुं ज्ञान जेने प्रगट थई रह्युं छे. दर्शनावर्णी कर्म क्षय करी अनंत दर्शन गुण प्रगट थयो छे, तेथी (सामान्य बोधरूप) केवल दर्शन प्रगट थयुं छे. मोहनीय कर्म क्षय करी चारित्र गुण प्रगट थयो छे, ते आत्म स्वभावमां स्थीर थाय, ते चारित्र गुण जाणवो. अंतराय कर्म क्षय थवाथी अनंत वीर्यादीक गुण प्रगट थयो छे. एवा अरिहंत भगवाननो विनय करवो. केमके आत्मानुं स्वरूप अरूपी छे ते केवलज्ञान प्रगट थया विना प्रत्यक्ष थतुं नथी. ते केवलज्ञानथी सर्व जीवना आत्मानुं स्वरूप प्रत्यक्ष देखाय छे तेथी ते स्वरूपनुं वर्णन प्रभुए कर्युं, वली आत्मा मलीन शाथी थाय छे ते स्वरूप बताव्युं, वली आत्मा निर्मल शाथी थाय छे ते बताव्युं. पुन्य पाप बांधवानां कारण बताव्यां छे, तो तेथी आपणे आपणा आत्मानुं स्वरूप जाणी शकीए छीए: माटे प्रभु मोटा उपकारी छे तेथी तेमनो विनय जेम बने तेम करवो. शक्ती गोपववी नहि.

सिद्ध महाराज जेमने आठ कर्म क्षय थवाथी आत्माना संपूर्ण गुण निष्पन्न थया छे, शरीरथी रहित थया छे, मोक्ष स्थानमां रह्या छे, जेमने फरी संसारमां आववुं नथी, केवल आत्माना गुणमांज लीन छे, नथी राग, नथी द्वेष, नथी क्रोध, नथी मान, नथी माया, नथी लोभ, नथी विषय; अक्षय, अमर, अजर, अकल, अगोचर, अरूपी आदे अनंत गुण रह्या छे, ते सिद्ध

भगवाननुं रूप जोई आपणी सिद्ध दशा प्रगट करवानी बुद्धि जागवानो हेतु छे; वळी गुणवंतना गुण गातां आपणो आत्मा पण गुणी थाय अने अनादीनी भुलथी परवस्तु पोतानी मानी वर्ते छे ते भाव पलटाववानुं साधन छे, माटे सिद्ध महाराजनो विनय पण जेटलो बनी शके एटलो करवो. ए बंनेनो विनय करवो ते देवनो विनय जाणवो. हवे आ क्षेत्रमां अरिहंत सिद्ध महाराज कांई पण विचरता नथी, तो तेमनी मूर्त्तिउनो पण विनय करवो. कारण जे गुणवंत पुरुषोनी मूर्त्तिमां पण जे जे भगवाननी मूर्त्ति छे ते ते भगवानना गुणनो आरोप करवो छे, ने ते गुणनो विनय करवो छे, एटले भगवंतनोज विनय छे. हवे तेमां प्रथम शो विनय छे ? के ते पुरुषोए जे जे हुकम फरमाव्या छे ते ते हुकम अंगीकार करीने पोतानो आत्मा शुद्ध करवाना उद्यमी थवुं अने उद्यम करवाथी आत्मा शुद्ध थशे. जे जे अंशे प्रभुजीना हुकम प्रमाणे समभावमां रहीशुं ए मुख्य विनय छे. पछी तेना कारण रूप पांच प्रकारे विनय छे "भक्तिबाहाज प्रणीपतीथी" एटले पंचांग प्रणाम करवा जे खमासमणुं देईने पांचे अंग एकठां करी नमस्कार भगवंतने वा भगवंतनी मूर्त्तिने करवा. वळी अष्ट द्रव्यथी, सत्तर द्रव्यथी, एकवीश द्रव्यथी, वा १०८ द्रव्यथी भगवंतने पूजवा ते पण भगवंतनो विनय छे. "रुदय प्रेम बहुमान" हृदयमां भगवंतना गुण भगवंतनो उपकार अत्यंत विचारी हरखथी रोमराय विकस्वर थई जाय. आणंदनो पार रहे नहि. एवो अंतरमां हरख थाय, अने प्रभु उपर अतिशय प्रीति जागे. तेमज प्रभुनो परूपेलो जे धर्म जे आगममां कह्यो छे ते आगम सांभळी अहो प्रभुए शो मार्ग बताव्यो छे ते विचारीने हरख थाय. वळी प्रभुनां चरित्र सांभळी प्रभुजीनी वर्तना जोई अहो आश्चर्यकारी भगवंतनुं वर्त्तवुं छे ते जोई हरख थाय अने प्रभुना

उपकार संभारी अंतरंगमां राग उपजे ते पण प्रभुनो विनय छे.

"गुणनी स्तुति":—ते प्रभुना गुणनी स्तुति करवी ते स्तोत्र, श्लोक, दुहा, छंद इत्यादि प्रभु आगल उभा रहीने केहेवा; वा चैत्यवंदन, नमुथुणं, स्तवन, थोय विगेरे केहेवुं; वा प्रभुनां चरित्र सांभल्यां छे ते चरित्रमां जे गुण वर्णव कर्या छे ते गुण याद करी पोते स्तवी वा बीजा आगल कही प्रभुना रागी करवा ते पण गुण स्तुति छे. अवगुणनुं ढांकवुं:—ते प्रभुमां तो कोई प्रकारे अवगुण नथी पण कल्पित कोई अवगुण केहेतुं होय तो तेने समजावीने अवगुण बोलता बंध करवा. प्रभुजीनी प्रतिमाजी छे ते प्रतिमानी पूजा न करता होय तो तेमने समजावी प्रभुनी पूजा करता करवा जोइए. प्रतिमाजीना अवर्णवाद बोलता होय तो तेने पण समजावी अवर्णवाद बोलता बंध करवा जोइए. केमके प्रभु अने प्रभुनी स्थापना बे सरखी भगवंते कही छे. श्री अनुयोगद्वार सूत्रमां तथा आवश्यक सूत्रमां पण स्थापना निक्षेपो कह्यो छे. हालमां सामान्य गृहस्थनी पण यादगीरी कायम राखवा सारु पोटोग्राफ (छबी.) तो घणा लोक करावे छे, वली मोटा होद्देदारो वा राजानी वा शाहुकारनी मूर्तीउ (बावलां) पण मरनारना मान खातर बेसारुवामां आवे छे तो एवा माणसनां बहुमान करे, अने देवनी मूर्तिनां बहुमान कराववानो विचार न राखे, तो पोताना देव उपर पोतानो राग नथी एम खुल्लु समजाय छे; ने न्यायनी बुद्धि जेने थई होय तेने सेहेजे समजाय के भगवंतनी मूर्त्ति जोईने भगवान याद आवे अने भगवान याद आव्या के तेमनां चरित्र याद आवे, तेमनुं अद्भुत चरित्र याद आवे तो प्रभु केवा गुणवंत छे ते गुण संभारे, गुण संभारतां, प्रभुए मोक्ष मार्ग बताव्यो छे तेमां जीवने केम चालवुं, ते याद आवे, ते याद आवतां आपणे भगवंतना हुकमथी

विरुद्ध चालीए छीए ते याद आवे छे अने ते याद आववाथी आपणी भूल सुधारवानी बुद्धि थाय, वली भगवाननो उपकार याद आवे तो भक्ति करवाना भाव थाय, कारण के उपकारीनी जेटली भक्ति नहि करीए एटली उणी छे; माटे भगवाननी यथाशक्ति भक्ति करवानो भाव जागे ए प्रभुनो विनय छे. जे जे अवर्णवाद बोलता होय ते बंध थाय ते लाभ समजावनारने छे, ने तेज प्रभुनो खरो विनय छे.

"आशातननी हाण" एटले भगवान विचरता होय ते वखते छद्मस्थ अवस्थाए एटले जीहां सुधी केवलज्ञान पाम्या नथी, तेनी अगाउना वखतमां केटलीएक प्रशंसा थती होय ते अज्ञानी मत्सरी जीव सहन करी शकता नथी, तेवा जीव अवर्णवाद बोलता होय वा पीडा करता होय तो आपणी शक्ति फोरवीने ते पीडा टालवी. मुखेथी बोलतो होय तेने पण समजावीने तेने दूर करवो, वा प्रभुने केटलाएक देवता पण परीक्षा जोवा पीडा करे छे तो ते देवताने पण पोतानी शक्तिथी दूर करवो. वा मिथ्यात्वी जीव प्रभुनां प्ररूपेलां ज्ञान संबंधी वगर दूषणने दूषण कही निंदा करे तो ते पण प्रभुनी आशातना छे, तेने पण समजावीने थीर करवो. वली आपणामां शक्ति न होय तो बीजा कोई शक्तिवान होय तेने विनंती करी तेनी शक्ति फोरवी तेनी शक्तिथी आशातना दुर करवी. तेमज जिनबिंबनी एटले मूर्त्तिनी आशातना करतो होय ते टाले. हवे जिन भुवनने विषे चोरासी आशातना टाले तेनां नाम.

१ बलखो वा थुक नांखवुं. २ हींचोलो बांधीने हिंचका खावा. ३ कलेश करवो एटले लडाई करवी. ४ धनुर्विद्या शीखवानो अभ्यास करवो एटले बाण साधतां ताकेली जग्योए बाण जाय ते. ५ पाणी पीने कोगला करवा. ६ तंबोलादिक

पान सोपारी खावां वा खाईने जवुं. ७ तंबोल खावेलुं होय अने तीहां थुंकवुं. ८ सामाने गालो देवी, जदवा तदवा बोलवुं वा श्राप देवा. ए मूत्र विष्टानुं नांखवुं वा करवुं. १० शरीर धोवुं एटले नहावुं. ११ नीमाला देरासरमां नांखवा. १२ नख नांखवा. १३ लोही नांखवुं. १४ सुखमी प्रमुख खावुं. १५ शरीरनी चामभीनुं नांखवुं. १६ पीत्त वमन करवुं, एटले उकवुं. १७ सामान्य वमन करवुं. १८ दांत नांखे वा समारे. १ए थाक्या होय तो विसामो लेवो. २० गाय प्रमुख ढोरनुं बांधवुं. २१ दांतनो मेल नांखे. २२ आंखनो मेल नांखे. २३ नख उतारे वा उतरावे. २४ गंमस्थलनो मेल उतारे वा नांखे. २५ नाकनो मेल नांखे. २६ माथुं समारे. २७ काननो मेल नांखे. २८ शरीर समारे. २ए मित्रने मले. ३० नामुं लखे, वा कागल लखे, (पोतानुं संसारी.) ३१ कांई वेचवानुं करे. ३२ थापण मुके. ३३ माठे आसने बेसे. ३४ गणां थापे. ३५ लुगमां सुकवे. ३६ पापम सुकवे. ३७ वमीउ करे वा सुकवे. ३८ राजाना नयथी नाशीने देरासरमां संताई रहे. ३ए धान्य सुकवे. ४० देरासरमां संसारी सगा सांजरवाथी रुदन करे ते आशातना, पण नगवानना गुणनुं बहुमान करतां हरखनां आंसु आवे ते अशातना नथी. ४१ विकथा करे एटले राज कथा, देश कथा, स्त्री कथा, वा नोजननी कथा एवी वातो देरासरमां करवी ते आशातना. ४२ शस्त्र घमे एटले बनावे. ४३ जनावरो देरासरमां बांधवानुं करे. ४४ तापणी करी तापे. ४५ रसोई रांधे. ४६ रुपीया सोनैया पारखे. ४७ निसिहि कही संसारी काम देरासरमां करवा निषेध कर्यां बे, ते बतां करीने निसिहिनो नंग करे ते दोष व्रत नंग जेवो समजवो. ४८ देरासरमां बत्र पोताना उपर धरावे. ४ए खासमां देरासरमां मुके. ५० चामर धरावे. ५१ मननी एकाग्रता न करे. ५२ शरीरे तेल चोलावे. ५३ स-

चित्त भोग तजे नहि. ५४ अयोग्य अचित पदार्थ तजे नहि. ५५ शस्त्र मुके. ५६ प्रभु दीठे हाथ न जोडे. ५७ एक साडी उत्तरासन नांख्या विना देरासरमां जाय. ५८ मुगट पाघडी उपर पहेरी देरासरमां जाय. ५९ पाघडीनो अविवेक करे. ६० फुल तोरादीक खोशीने देरासरमां जाय. ६१ होड करे एटले सरत बके. ६२ दडे रमे वा दडाथी रमे. ६३ गेडीनी रमत करे. ६४ देरासरमां जुहार करे वा सलाम करे. ६५ कोईने टुंकारा करे, वा हलका शब्द कहे. ६६ लांघणे बेसे. ६७ कुडे एटले बाथाबाथी लडे. ६८ भांड चेष्टा करे. ६९ चोटला समारवानुं करे. ७० पलांठी आसने बेसे. ७१ पावडी पेहेरीने देरासरमां जाय. ७२ लांबा पग करीने बेसे. ७३ पीपुडी वगाडे. ७४ देरासरमां कादव करे. ७५ शरीरनीरज उडाडे. ७६ मैथुन सेवे वा ए संबंधी चेष्टा करे. ७७ जुगार (जुगटुं) खेले. ७८ पाणी पीए, भोजन करे. ७९ मल्ल युद्ध करे. ८० वैद्य कर्म करे एटले नाडी जुए, दवा आपे. ८१ वेपार हरकोई जातनो देरासरमां करे. ८२ सुवानी पथारी पाथरे. ८३ खावानी वस्तु देरासरमां मुके. ८४ देरासरमां नाहे (स्नान करे).

आ रीतनी चोराशी आशातना छे, ते कोईए पण करवी नहि, ने कोई करतो होय तो तेने रोकवो; ए सिवाय देरासरना पईसा खाई जवा, वा देरासरना पैसाथी नफो उपार्जन करवो, वा घरमां वापरवा, देरासरनी चीज लावीने वापरे, ते सर्वे आशातनामां समजवुं; ने देवद्रव्य भक्षणनुं दूषण लागे, माटे कोई पण चीज देरासरनी पोताना काममां वापरवी नहि. ए पांच प्रकारे देवनो विनय कह्यो; तेमज देवनो भाषेलो धर्म आगममां लख्यो छे, माटे आगमनो विनय करवो ते आगमनुं ज्ञान करवुं, आगम एटले शास्त्र तेने लखाववां, लखाववाना काममां पै-

सा खरचवा, जे आगम लेवुं ते नमस्कार अथवा खमासण दईने लेवुं, मुकवुं ते वखत पण नमस्कारादिक करवा; आगमनां पुस्तक होय त्यां वडीनीत एटले ऊाडो, लघुनीत ते पेसाब, ते करवां नहि, पग नीचे वा माथा नीचे मुकवुं नहि, तेमज आहार पाणी पण पुस्तक होय त्यां करवां नहि, तेम मैथुन तथा मैथुननी क्रीया पण करवी नहि, तेमज हास्यविनोद करवो नहि, ए प्रमाणे प्रभुना ज्ञाननो विनय करवो ते प्रभुनोज विनय छे. मुख्य विनय तो ए छे जे प्रभुनो हुकम छे के पोताना आत्मस्वभावमां रहेवुं. जे जे सुख दुःख थाय छे तेनां कर्म पूर्वे वा वर्त्तमानमां बांध्यां छे, ते प्रमाणे सुख दुःख थाय छे, अने आत्मानो स्वभाव जाणवानो छे ते जाणी लेवो; पण मने सुख थयुं तेवो हरख करवो, मने दुःख थाय छे एम मानी दिलगीर थवुं तेम करवुं न जोईए. एवा विचारमां रहेवाथी नवां कर्म नथी बंधातां, एम प्रभुजीए कह्युं छे. एम विचारवुं एज प्रभुनो विनय छे, आत्मानुं हित थवानुं कारण छे. ए आदे विनयनुं स्वरूप प्रभुजीए शास्त्रमां घणी रीते वताव्युं छे. विनय अध्ययन उत्तराध्ययनजीमां छे ते सांभली ते अनुसारे विनय करवो. गुरु महाराजनो विनय करवो, ते गुरु महाराज कोने कहीये ? जे पुरुषे सर्वथा हिंसानो त्याग कर्यो छे कोई पण जीवने हणवो नथी, तेम कोई जीवने दुःख देवुं नथी, तेमज असत्य एटले जूठुं बोलवुं नथी, तेमज कोई पण प्रकारनी चोरी करवी नथी, तेमज कोई पण स्त्री साथे मैथुन सेववुं नथी, तेमज स्त्रीने अडकवुं पण नथी, तेमने पांचमुं व्रत जे धन धान्यादिक नव प्रकारनो परिग्रह तेमां कोडी मात्र पण जेने राखवी नथी, एवां पंच महाव्रते करी युक्त मुनि महाराज जे प्रभुनी आज्ञा मस्तक उपर चडावीने विचरे छे, प्रभुजीनी आज्ञा बहार वर्तता नथी, पोताना आत्मगुणमां

आनंदितपणुं छे, विषय कषाय जेने सेववा नथी, एथी मुक्त थया छे, कांईक अंश रह्यो छे तेथी मुक्त थवाना कामी छे, शांत रसनाज उद्यमी छे, शत्रु अने मित्र तुल्य छे, एवा आचार्य, उपाध्याय अने साधुजी महाराज, पर जीवना उपकार करवा पृथ्वी उपर विचरे छे, ने धर्म उपदेश देईने जगतना जीवने अधर्मथी छोडावे छे. केटलाएक नथी छोडता, पण छोडवाने सन्मुख थाय छे; एवा उपकारना करनारा पुरुषो छे, तेज गुरु कहेतां मोहटा छे माटे तेमनो विनय करवो. गुरु पासे जवुं तो सचित पदार्थ लईने जवुं नहि, तेमज गुरु दीठे हाथ जोडी नमस्कार करवा. वली गुरुजीने वे खमासमण एटले पंचांग प्रणाम करी इछकार सुहराइ (सुहदेवसी) सुखतप शरीर निराबाध सुख संजम जात्रा निर्वहो छोजी स्वामी शाता छेजी भात पाणीनो लाभ देजोजी, पछी कहेवुं जे-इछाकारेण संदिसह भगवन् अभ्रुठिउंहं अभिंतरं देवसिअं खामेउं एम कही गुरुनी आज्ञा मागी गुरु आज्ञा आपे जे खामेह, पछी पंचाग प्रणांम पूर्वक अभ्रुठिउंहं अभिंतर खामवो एटले कहेवुं. प्रतिक्रमणनी चोपडीमां छे ते मुजब खामवुं. इछकार कही साता पूछी अभ्रुठिउ खामवाथी कंइ गुरुनी आशातना थई होय, तेनी माफी मागी हवे जेटला बोल अभ्रुठिउमां आवे छे, एटला बोल करवाथी गुरुनी आशातना थाय छे माटे एटला बोल वर्जवाथी गुरुनो विनय थाय छे, तेथी अभ्रुठिउ खमावी विचार राखवो, जे रखेने एहवी भूल थाय. वली द्वादशावर्त्त वंदन गुरुने करवुं, ए पण गुरु महाराजनो विनय छे, ते वंदन पण प्रतिक्रमणनी अर्थवाली चोपडीमां अर्थ सहित छे, माटे ते अर्थ समजीने ते प्रमाणे वर्तवुं. वली अरिहंत भगवंतनो विनय पांच प्रकारे बताव्यो छे तेज रीते करवो; एवीज रीते गुरु पासे जईने वंदन करवुं, पछी त्यां गुरु कथा करता होय ने

त्यां सन्ना नराई होय तो सन्नामां बेठेला श्रावक श्राविकाने प्रणाम करवा, तेमज सन्नामां बेठेला करतां आवनार विशेष गुणवंत वा धर्मी होय वा धनवंत होय तो तेने बेठेला लोक पहेलो प्रणाम करे, ने सामान्य होय तो आवनार प्रथम करे, एनी मतलब एज छे के चतुर्विध संघनो विनय करवानो छे, ते प्रथम विशेषनो सामान्य वालो विनय करे, अने विशेष होय ते पछी करे; आ मर्यादा समजवी. वली गुरु पासेथी जाय त्यारे पाछा गुरुने वंदन करीने जाय. वली गुरु घेर पधारे तो तेमनी सन्मुख जवुं, गुरुने बेसवाने आसन आपवुं, तेमज गुरु दीठे नमस्कार करवा, गुरुने जे कंई खप होय ते हाजर करवुं, कीमती चीज होय वा अल्प मुलनी चीज होय तो ते पण गुरुने अर्पण करवी, रस्तामां गुरु मले तो पण नमस्कार करवा. गुरुनी तेत्रीश आशातना छे ते वर्जवी ते नीचे मुजब.

१ गुरु महाराजनी आगल बेसवुं, २ गुरुनी आगल नन्ना रहेवुं, ३ गुरुनी आगल चालवुं. ४ गुरु महाराजनी पाछल नजीकमां बेसवुं. ५ तथा नन्ना रहेवुं. ६ तेमज चालवुं. ७ गुरु महाराजनी बे पासे नजीकमां बेसवुं. ८ गुरुनी बराबरीमां चालवुं. ए तेमज नन्ना रहेवुं आ नव आशातनानी मतलब एवी छे के नजीकमां बेसतां, नन्ना रहेतां, आपणी छींक बगासु अधोवानु सरवुं वगेरेनो तथा श्वासनो गुरुने स्पर्श थाय, माटे जेम स्पर्श न थाय तथा थुंक वगेरेना छांटा न नमे, तेम बेसवुं जोईए. आगल अने सरखाईमां बेसतां गुरुनी मोटाई शी रीते सचवाय ? माटे बराबरीमां तथा आगल बेसवाथी पण आशातना थाय छे. १० पोताथी विशेष पुरुषनी साथे थंमील जाय, ने तेमनी अगाउ आवे तो पण आशातना. ११ बहारथी आवेला गुरु साथे शिष्य गुरुथी पहेला रस्ताना दोष आलोवे तो आशा-

तना. १२ रात्रीए गुरुमहाराज बोलावे जे कोण सुतो छे, कोण जागतो छे, ने पोते जागतां छतां हुं जागुं छुं एम न कहे तो आशातना. १३ उपाश्रयमां श्रावक आवे तेने गुरु वा पोताथी अधीक पुरुषे बोलाव्या पहेलां बोलावे तो गुरु होय तो गुरुनी, वा अधीक होय तो अधीकनी आशातना. १४ आहार लावीने पोताथी अधीक साधुजीने आहार बताव्या विना बीजा साधुने बतावे तो आशातना. १५ आहारादिकनी निमंत्रणा गुरुने न करतां बीजाने पहेली करे तो आशातना. १६ गुरु महाराजने पुछ्या विना बीजा साधुने आहारनी निमत्रंणा करे तो आशातना. १७ गुरु महाराजने पूछ्या विना बीजाने आहार आपे तोआशातना. १८ सरस अने स्वादीष्ट आहार पोते वापरे ने गुरुने न आपे तो आशातना. १९ गुरुनां वचन सांभळ्या छतां गुरुने जवाब न आपे तो आशातना. २० गुरु जेवा वडीले बोलाव्या छतां आकरा वचनथी जवाब आपे, कंई पण अवज्ञा थाय एवो जवाब दे ते आशातना. २१ गुरुए बोलाव्या छतां पोताने आसने बेशी रहे ने जवाब दे पण तरत पासे आवे नहि ते आशातना. २२ गुरुए पुछ्या छतां आसने बेठां कहे जे शुं आज्ञा आपोछो ते पण आशातना. २३ गुरुने वा वडीलने टुंकारे बोलावे, एटले तुं कोण हमने कहेनार, आदे शब्द बोले ते आशातना. २४ गुरु कहे तेवीज रीतनुं अविनय वचन बोली जवाब आपे ते आशातना. २५ गुरु महाराज, साधु साध्वी ग्लान एटले रोगी, तेनी सार संभाळ करवा कहे त्यारे गुरुने कहे जे तमेज सार संभाळ करो, एम करी गुरुनी अवज्ञा करे ते आशातना. २६ गुरु महाराज धर्म कथा कहे ते शुन्य चित्ते सांभळे; कदापि सांभळे तो सांभळीने गुरुनां बहु मान करवां जोईए, के अहो गुरुजी शास्त्रना परमार्थ आप शुं बतावो छो ? एवी रीते बहु मान न करे ते

आशातना. २७ गुरु महाराज वा रत्नाधिक धर्म उपदेश कहे, त्यारेकहे जे आ अर्थ तमे बराबर करता नथी, तमने अर्थ करता आवडतो नथी, एवुं कहेवुं ते आशातना. २८ गुरु कथा करता होय ते कथानो भंग करी पोते बीजा सांभलनार आगल कथा कहे ने समजावे ते आशातना. २९ गुरु कथा करता होय अने ते कथा करतां गुरुने तथा सभाने कथाथी आनंद थई रह्यो छे, ने चित्त लीन थई गयुं छे तेवुं जाणया छतां शिष्य गुरुने कहे जे महाराज गोचरीनो वखत थई गयो छे माटे कथा बंध करो पछी गोचरी मलशे नहि, एवी रीते कहेवाथी चढती धारा होय ते टुटी जाय, ने व्याख्याननो छेद थाय ते आशातना. ३० गुरु महाराजे जे जे अर्थ कह्यो छे तेज अर्थ व्याख्यान उठ्या पछी शिष्य सभाने विस्तारी पोतानी बहादुरी जणाववा व्याख्यान करे ते आशातना. ३१ गुरु महाराजना संथाराने वा गुरु महा-राजना पगने पगे करी फरसीने पाछो गुरुने खमावे नही ते आशातना. ३२ गुरु महाराजना संथारा उपर वा आसन उपर उभो रहे, अथवा बेसवा सुई रहे ते आशातना. ३३ गुरु महारा-जथी उंचा आसने बेसे ते आशातना तथा गुरुना बराबरीना आसने बेसे ते आशातना.

आ बाबतनी गुरु महाराजनी तेत्रीश आशातना पोते क-रवी नहि, तेम कोई करतो होय तो तेनी पासे टलाववानो उ-द्यम करवो; आ आशातना पोतानामां अहंकार दशा हशे त्यां सुधी थशे, अने अहंकार टली गयो हशे तो सहेजे आशातना टलशे; माटे मुख्यपणे हुं गुरुथी बहु ज्ञानी छुं, एवो अहमेव होय ते टालवो, कारण जे वधारे ज्ञान पण वखते होय तो ते गुरु महाराजनी कृपाथी थयुं छे, तो जेमनी कृपा छे तेमनी मोटाई न आवे त्यां सुधी ज्ञान भणया होय पण फरश ज्ञान थयुं नथी;

फरश ज्ञान थयुं होय ते तो उपकारीनो उपकार भूले नहि, माटे कदापी उपकार भूली गयो होय तो याद करीने आत्मानी भूल सुधारवी, ने गुरु महाराजनी मोटाई चित्तमां लावीने विनय करवो ने आशातना टालवी, एज आत्माने हितकारी छे. वली गुरुने द्वादशावर्त वंदन करतां बत्रीश दोष लागे छे. छापेला प्रवचन सारोद्धारमां पाना ३ए मां छे ते उपरथी लखुं छुं, माटे ते दोष टालीने गुरु वंदन करवुं.

१ अणाढा दोष कहे छे. आदर विना गुरुने वंदन करवुं, जेमके पोताने वंदन करवानो हरख नथी, पण एक कुल मरजादथी करवानी रीती छे, ते करवुं पण वंदन करवाथी महानिर्जरा थशे, आवा महा पुरुषने वंदन करवानो मने वखत मल्यो, एहवा भाव आवे नहि त्यां सुधी आदर थाय नहि, माटे महा हरख सहित अने आदर सहित वंदन करवुं के अणाढा दोष टली जाय. २ स्तब्ध दोष. तेमां द्रव्यथी स्तब्ध ते, गुरु महाराजने वंदन करवानो भाव छे, पण शुल आदिक रोगनी पीडामां चित्त गुम थई जवाथी प्रफुल्लित चित्त थाय नही. भाव स्तब्ध ते द्रव्य थकी क्रिया करे छे पण अंतरगनो उपयोग बीलकुल वंदनमां नथी, ते भाव स्तब्ध कहीए, माटे द्रव्यने भाव बे प्रकारे स्तब्धता टालवी. ३ प्रवीध दोष. ते जेम भाडुत प्राणीने कोई पण कामे लगाड्या छतां भाडा उपर लक्ष राखी काम करे अने जेम तेम काम करीने चाल्यो जाय तेम वंदन करतां व्यवस्था रहित वंदन पुरु कर्या विना चाल्यो जाय ते. ४ सपींड दोष. ते आचार्य, उपाध्याय अने साधु सर्वेने एकठा वांदे तेनुं नाम सपींड दोष. ५ टोलक दोष-ते जेम तीड पक्षी अहीं-तहीं फर्या करे ने स्थीर न रहे, तेम वंदन करतां आघो पाछो फर्या करे, तेने पांचमो टोलक दोष कहीए. ६ अंकुश दोष ते जेम मदावत हाथीने अंकु-

श वमे पोतानी मरजी प्रमाणे फेरवे छे तेम गुरुने फेरवे. आचार्य ऊना होय वा वेग होय वा कोई कार्यमां होय, तेम छतां गुरुनुं कपडु पकडी आसन उपर वेसाडीने वंदन करे ते. ७ कच्छपदोष ते वंदन करतां काचवानी पेरे आगल पाछल जोतां वांदे, एटले केवल गुरु महाराजमां उपयोग नहि ते कच्छप दोष. ८ मच्छ दोष ते मच्छ जेम स्थीर न रहे तेम शरीरनी अस्थीरताए वंदन करे; विचित्र प्रकारे शरीरने चलाचल करे. ए मनप्रदुष्ट दोष ते पोताने अर्थे अथवा बीजाने अर्थे गुरु द्वारे कार्य सिद्धि न थवाथी तेना मनमां द्वेप छतां वांदे ते. १० वेदीका वंध दोष ते वे हाथ घुटण उपर मुकीने वंदन करे वा वे हाथनी वचमां पोताना घुंटण राखी वांदे, एक घुंटण वे हाथनी वच्चे राखी वंदन करे, खोलामां हाथ राखीने वंदन करे. वेहु हाथ खोलामां राखे, ए पांच प्रकारे वेदीका दोष. ११ जय दोपः—वांदणुं देतां जय राखे जे नहीं वांडु तो गुरु महाराजने द्वेप थशे, ने मने कहाडी मुकशे, एवा जयथी वांदवा ते जय दोप. १२ जजंत दोप ते बीजा साधुउ आचार्यने जजे छे ने हुं नही आवुं ते ठीक नहि, एवा विचारथी जजवुं ते जंजत दोप. १३ मित्र दोपः—गुरुने वांदीश तो गुरु साथे मित्रता थशे, एवुं धारीने वांदवा ते मित्र दोप. १४ गारव दोपः—मने समाचारी जाणवाथी लोक पंडीत कहेशे, वली वीनीत जाणशे, एवा हेतुए वंदन करवुं ते गारव दोप. १५ कारण दोपः—ते गुरु महाराजने वंदन करीश तो गुरु महाराज पासेथी कंवल वस्त्रादीक इच्छित मलशे. १६ स्तैन्यनामा दोप ते गुरुने छानोमानो वांदे प्रगट न वांदे कारण जे वधा देखतां वांदीश तो हुं एमनाथी नानो कहेवाईश, गुरुनी मोटाई थशे एवुं विचारी वंदन करे ते स्तैन्य कहेतां चोर दोष. १७ प्रत्यनीक दोष ते आहार पाणी गुरु करता होय ते वखते वंदन करे ते प्रत्यनीक दोप.

१७ रुष्ट दोषः—ते कषाए धम धमतो वंदन करे वली गुरुने कषाय उपजावे ते रुष्ट दोष. १९ तर्जीत दोष ते गुरु तो कोप पण करता नथी, तथा प्रसाद पण करता नथी, काष्ठनी पुतली जेवा छे, वा आंगलीए मस्तके करी तर्जना करवी ते तर्जीत दोष. २० शठ दोष ते गुरुने वंदन करीश तो गुरु तथा श्रावक मह्यारो विश्वास करशे, तो मारुं इछित थाशे. २१ हीलना दोष ते गुरुने कहे जे हे आर्य! हे जेष्ट! हे वाचक! हुं तने प्रणाम करुं छुं, एवी रीते हीलना करतो वांदे ते हीलना दोष. २२ कुंचीत दोष ते वंदन करतां वचमां विकथा करे. २३ अंतरीत दोष ते साधु प्रमुखने अंतरे रह्यो वांदे, वा अंधाराने विषे रही वांदे, एटले कोई देखे नहि एम वंदना करे. २४ व्यंग दोष ते गुरुनुं सन्मुखपणुं मुकीने डाबी अथवा जमणी बाजुपर वांदे ते. २५ कर दोषः—जेम राजानो कर आपवानो होय तेम मनमां विचारे के भगवाने कह्युं छे तेथी वांदवा पडशे; ए वेठ छे ते उतारवी, एवुं धारी वांदे ते कर दोष. २६ मोचन दोष ते संसारना करथी मुकाया पण अरिहंतना करथी मुकाया नथी, तेथी वंदन करवुं पडशे एम विचारी वांदे. २७ आश्लिष्ट अनाश्लिष्ट दोष ते वंदन करतां रजोहरणने हाथथी फरसे पण हाथ मांथाने फरसे नहि, मस्तके फरसे पण रजोहरणे फरसे नहि, रजोहरणे हाथ न लगाडे ने मस्तके पण न लगाडे ते दोष. २८ न्यून दोष ते वंदनना अक्षर उंगा बोले, वा बहु उतावलपथी वंदन करी ले, तेथी अवनमनादिक उंगां करे वा करे नहि; प्रमादे करी जेम तेम करे तेमां जे न्यून थाय ते न्यूननामा दोष. २९ चूलिका दोष ते वंदन कर्या पछी मोटा शब्दे करीने "मत्थएण वंदामि" कहे ते चूलिका दोष. ३० मूक दोष ते-मूगानी पेठे मुखेथी शब्द बोल्या विना वांदे ते. ३१ ढढ्ढर दोष ते मोटा स्वरवडे वांदणांनु सूत्र उच्चार करे ते ढढ्ढर दोष. ३२ चूड-

लिका दोष ते—रजोहरण झालीने आरुं अवलुं फेरवतो वांदे ते.

ए रीते ३२ दोष वंदनना टालीने गुरुने वंदन करवुं, ए विनय छे. गुरुनी आशातना करी विनय करवो ते योग्य नथी, माटे जेम बने तेम गुरुनी आशातना करवी नहि. गुरुनी निंदा करवाथी, हीलना करवाथी, गुरु ज्ञलववाथी, गुरुने पीमा थाय एटले मन डुन्नाय एवुं करवाथी ज्ञानावरणी कर्म बांधे, एम पहेला कर्मग्रंथमां कह्युं छे; माटे जेम गुरुनी आशातना न थाय एम वर्तवुं, ने जेटली मन वचन कायाए करी न्नक्ति थाय तेटली करवी, के जेथी ज्ञानावरणी कर्मनी निर्जरा थाय.

धर्मनो विनय ते—ज्ञान, दर्शन, चारित्र रूप धर्म अंगीकार करवो ते. तेमां जेटलो जेटलो धर्म अंगीकार करवामां आवे तेटलो तेटलो विनय थाय. ज्ञान अंगीकार करवुं ते आत्मानो ज्ञान गुण छे ते गुण प्रगट करवो, वा प्रगट करवानां कारणो सेववां. ज्ञान एटले जाणवुं, माटे जे जे वर्तना थाय ते जाणी लेवी, पण तेमां राग द्वेष न करवो, एवी ज्ञान दशा बनाववाथी संपूर्ण केवलज्ञान प्रगट थाय छे. हवे एवी दशा नथी थई त्यां सुधी एवी दशा प्रगट थाय एवा गुरुनी पासे ज्ञान न्नणवुं, सांन्नलवुं, निर्णय करवो, शक्ति होय तो पोते वांचवुं, पोताने जेटलुं ज्ञान थयुं होय ते बीजाने न्नणाववुं, ए पण ज्ञाननो विनय छे. वली पुस्तक लखाववां, ज्ञानवंत पुरुषनो ने ज्ञान जे पुस्तक तेनो विनय करवो, वंदन नमनादीक करवुं, तथा पुस्तकनी संन्नाल राखवी, ज्ञानवृद्धि थवाना काममां इव्य होय ते अनुसारे खरचवुं, शरीरनी शक्तिथी ज्ञानवृद्धि थाय एहवी महेनत करवी; बीजाने पण ज्ञाननो विनय करवामां जोमवा, ए सर्वे ज्ञाननो विनय छे. तेमज दर्शननो विनय करवो ते ते सम्यक्त्व अंगीकार करवुं, शुद्ध श्रद्धा करवी, वीतरागना वचनमां शंका न करवी, ए-

वा श्रद्धावंत पुरुषनो साधु, साध्वी, श्रावक, श्रावीका तेमनो उचित विनय करवो के जेथी उत्तम पुरुषनी कृपा थाय ने कृपाथी आपणी श्रद्धामां कसर होय ते नीकली जाय, ने शुद्ध थाय. एनो विस्तार गुरु विनयमां लख्यो छे ते प्रमाणे करवुं.

चारित्रनो विनय ते—मुख्यपणे आत्मानो चारित्र गुण छे, जे आत्माने आत्म स्वभावमां स्थिर थवुं. जे विभावमां अनादि कालनो आत्मा स्थिर थयो छे त्यांथी पलटावीने पोताना गुणमां स्थिर थवुं. जेटलुं जेटलुं परभावनुं प्रवर्तन रोकाशे तेटलो तेटलो चारित्र गुण प्रगट थशे, एज चारित्रनो विनय छे. हवे एवा गुण प्रगट नथी थया ते प्रगट करवाने सारु पंच महाव्रतरूप चारित्र अंगिकार करवुं. ते न बनी शके तो श्रावके बार व्रतरुप देशविरति चारित्र अंगिकार करवुं, ए अंगिकार करवाथी अंतरंग चारित्र प्रगटशे. वली तेटली दशा लाववा सारु एवा सर्व चारित्रवंत तथा देश चारित्रवंतनो विनय करवो, तेनी संगत करवी के उत्तम पुरुषना संगथी उत्तमता आवे माटे चारित्रवंत पुरुषनो विनय शास्त्रमां विस्तारे कह्यो छे ते मुजब करवो, ते चारित्र विनय. तेमज तप धर्मनो विनय करवो एटले तप अंगिकार करवो तथा तपस्वीनो विनय करवो ते पण धर्मनो विनय छे.

ए रीते देव, गुरुने धर्मनो विनय करवो ते विनयनामा अभ्यंतर तप कह्यो.

वैयावच्च तप ते—गुणवंत पुरुष जे अरिहंत महाराज सिद्ध महाराज, आचार्य, उपाध्याय, तपस्वी, साधुजी, कुल, गण, संघ, नवदीक्षित, ग्लान (जे रोगी साधु) ए आदे पुरुषोनी वैयावच्च करवी. आहार, पाणी, वस्त्र, पात्र, रहेवाने मकान, संथारा विगेरे पाट पाटलादि धर्म उपगरण आदे वस्तु उत्तम पुरुषने हीतकारी जे जे जोईए ते ते आपवुं, वा बीजा पासे अपाववुं तथा पोते

जाते एवा उत्तम पुरुषनी पगचंपी विगेरे करवी, तथा एवा उत्तम पुरुषनी स्थापना होय ते मुर्तिनी भक्ति, नमन, विलेपनादिकथी करवी, ते पण वैयावच्च छे. आ उपर कहेला पुरुषो उपगारी छे. ते उपगारी पुरुषोए आत्माने कर्मथकी मुक्त थवानो उपाय बताव्यो छे, वली जेम जेम सेवा भक्ति करीशुं तेम तेम आपणामां योग्यता आवशे, अने तेम तेम गुरु विशेष बतावशे, तेथी विशेष बोध थशे, तेमज गुण प्रगट थवामां सहायकारी थशे. आ उपगार करनार पुरुषनी जेटली वैयावच्च करी तेटलो आत्मा सफल थाय छे; केमके उपगारीनो उपगार भूलवो एज मिथ्यात्व छे; ने मिथ्यात्व गया विना आत्मानुं काम थवानुं नथी, माटे जेटली जेटली वैयावच्च करीशुं तेटलुं तेटलुं मिथ्यात्व टलशे, ने समकित शुद्ध थशे. सम्यक्त्व शुद्ध थयुं एटलो आत्मगुण प्रगट्यो, माटे वैयावच्चरूप लाभ थवानो अंतराय तुट्यो नथी त्यां सुधी वैयावच्च करवानुं मन थशे नही, अने एम करतां मन थशे तो पण अंतरायना जोगथी एवा पुरुषनो जोग बनशे नही, जोग बनशे तो आलस विगेरे वचमां विघ्न आवशे ने वैयावच्च बनशे नहि, पण उद्यम करतां करतां अंतराय तुटशे माटे बनती शक्तिये वैयावच्च करवामां वीर्य फोरववुं, एज कल्याणकारी छे.

सज्झाय तप ते—सज्झाय ध्यान करवुं ते पांच प्रकारे छे. वाचना ते गुरु महाराज शास्त्र वाचना आपे तेथी गुरुने वाचना आपवारुप वाचना तप थाय, शिष्यने ते वाचना लेवाथी वाचना तप थाय; पृछना ते पोते भणेला होय तेमां शंका पडे ते गुरुने पुछीने तेनो यथार्थ निर्णय करवो ते पृछना कहीए, पण कोई पुरुषने खष्ट करवा पुछवुं नही, ने पुछे तो ते पृछना तप न कहोये. परावर्त्तना ते भणेलुं फरी संभारवुं के जेथी भूली न जवाय, तेम खोट पडे नही, माटे जे भण्या होय ते हमेश संभा-

खवुं, रोज संभारवानो वखत न मले तो आंतरे आंतरे पण सं-
भारवुं, नवुं भणवुं थाय, ने जुनु भुली जवाय ते जाणी बुजीने
ज्ञानने आवर्ण लागवानुं थाय, माटे जेम भणेलुं भुली न ज-
वाय तेम करवुं जोईए. चोथी अनुप्रेक्षा ते भणेली वा सांभलेली
वस्तुनो तत्त्व विचार करवो, अने वस्तुना परमार्थनो अनु-
भव गम्य निर्णय करवो, एमां वधारे अनुमान शक्ति होय
तो थई शके छे, ने जेणे भगवंतनां वचननो अनुभव गम्य-
निर्णय कर्यो छे, ते माणसने पछी शंका रहेती नथी, तेमज
कुबुद्धिवाला तेनुं मन तत्त्वनिर्णयथी फेरवी शकता नथी, आ
अनुप्रेक्षा सद्याय ध्यान जेने सम्यक्त्व प्राप्त थयुं होय तेज
पुरुष करी शके छे, ने एज करवानी जरुर छे. अनुप्रेक्षा ज्ञानवा-
लाने आत्मा अरूपी छे तो पण ते साक्षात आत्मा देखतो होय
एवो निर्धार थई जाय छे. हरेक वांचीने विचार करवो तेज
अनुप्रेक्षा छे ने तेम कर्या विना वांचेला भणेलानुं फल बराबर
मली शकतुं नथी, पण ज्यारे ज्ञानावर्णी कर्मनो क्षयोपसम थाय
त्यारे बनी शके छे. घणाये भणेला जोईए छीए, क्रिया करता
जोईए छीए, पण आ शुं कह्युं, मारे शुं करवा केहेवुं ते जाणता
नथी. आ क्रिया शुं करवा करी ते जाणता नथी, तेनुं कारण
के निर्णय करवानी बुद्धि जागी नथी, पण ते बुद्धि जगाववानी
जरुर छे. दुनियामां कहेवत चाली छे के भण्या पण गण्या
नही, माटे तेम थवुं न जोईए. हरेक बाबतनो निर्णय कर-
वानो बुद्धि राखवी. एवी बुद्धि जागी छे तेथी हरेक वस्तु अनुभव
गम्य करे छे, ते अनुप्रेक्षा कहीये. एवा अनुभववाला पुरुषो
धर्म उपदेश करे छे, तेनुं नाम पांचमी धर्मकथा कहीये. धर्म
कथा करवाथी परजीव संसारनी उपाधीथी मुकाय, विषय क-
षाय शान्त थाय, तत्त्वज्ञान थाय, पोतानुं आत्मतत्त्व प्रगट कर-

वानो कामी थाय, वा प्रगट करे, एहवो उपदेश देवो, वा वार्ता करवी, वा सांभलवी तेनुं नाम धर्मकथा कहीये. जे कथा तथा वार्ता करवाथी विषयनी वृद्धि थाय, तृष्णानी वृद्धि थाय, मोहनी वृद्धि थाय, हिंसा, जूठ, चोरी, प्रमुखनी वृद्धि थाय तेनुं नाम धर्म कथा न कहीये, पाप कथा कहीये. आ पांचे प्रकारना सज्झाय ध्याननुं नाम तो ज्ञान छे, एनुं नाम तप केम कह्युं ? एम शंका थाय तेनो परमार्थ तो प्रथम अभ्यंतर तपनुं वर्णन कर्युं छे, त्यां दर्शाव कर्यो छे तेनो लक्ष देवाथी समजाशे. वली संदेज आ स्थले पण दरशाव करुं छुं. तप कोनुं नाम छे ? कर्मने तपावे तेने तप कहीये, तो वांचना प्रमुख करवाथी महा अज्ञानरूप जे कर्म ते कर्मनो नाश थई जाय छे, नाश करवानी सन्मुखता थाय छे, वली अज्ञानपणे कर्म खपतां नथी. ज्यारे ज्ञान दशा थाय त्यारेज कर्म खपे छे. बाह्य तप साथे पण ज्ञान होय तो कर्म खपे छे, तो ज्ञानमांज वर्त्ते तेमां कर्म खपे एमां कंई नवाई जेवुं नथी, माटे जेम बने तेम सज्झाय ध्यानमां काल काहाडवो, ए थकीज सर्वे वस्तुनी प्राप्ति थशे.

हवे पांचमो ध्यान नामा तप, ते ध्यान कोने कहीये. मन, वचन, कायानी एकाग्रता जेमां थाय तेहने ध्यान कहीये. तेमां धन, कुटुंब, वेपारादिक पुद्गलीक पदार्थमां एकाग्रता थाय तेहने अशुभ ध्यान कहीए, ते तजवुं जोईए ते तो सदाकाल जीवने थई रह्युं छे, ते ध्यान छोडीने आत्म तत्त्वने विषे एकाग्रता करी तेमां लीनपणे वरतवुं ते ध्यान तपमां गवेष्युं छे. ते ध्यान घणा प्रकारनुं छे, तेमां मुख्य—धर्म ध्यान शुक्ल ध्यान कह्यां छे, ने जे ध्यान ध्यावावुं ते अभ्यंतर तप छे. एनुं स्वरुप माहारा करेला प्रश्नोत्तररत्नचिंतामणि नामा ग्रंथमां विस्तारे छे त्यांथी जोई लेवुं. अहींआं सामान्य प्रकारे कह्युं छे.

प्रथम धर्म ध्यान तेना चार पाया छे. पहेलो पायो आज्ञा विचय ते, परमात्मानी आज्ञानुं वीचारवुं, जेवी जेवी आज्ञा छे तेम वर्त्तवानुं ज्ञाववुं.

वीजो पायो अपाय विचय ते—आत्मानुं जे स्वरुप छे ते स्वरुप नथी वर्ततुं तेनुं कारण जे मिथ्यात्वादीक ते त्याग करवामां एकाग्रता करवी.

त्रीजो विपाक विचय ते—कर्मनुं स्वरूप विचारवुं कर्मथी मुकाववानुं विचारवुं.

चोथो संस्थान विचय ते—चौद राज लोकनुं स्वरूप विचारवुं. आ रीते धर्म ध्यान तेमज शुक्ल ध्यानना चार पाया नीचे प्रमाणे.

(१) प्रथक्त्व वितर्क सप्रविचार. (२) एकत्व वितर्क अप्रविचार. (३) सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती. (४) उच्छिन्न क्रिया निवृत्ति. ए शुक्ल ध्यानना चार पाया मधेथी प्रथमना वे पाया केवल ज्ञान पामतां अगाउ प्रगट थाय छे, ने बीजा छेल्ला वे पाया केवल ज्ञान पाम्या पछी सिद्धि जवाना लगभग वखत प्राप्त थाय छे. पहेला पायामां. भेद ज्ञान थाय छे. वीजा पायामां अभेद ज्ञान थाय छे, त्रीजा पायामां बादर जोग रुंधाय छे अने चोथा पायामां सूक्ष्म जोग रुंधाय छे. एवी रीते वर्त्तना थाय छे.

आजना कालमां शुक्ल ध्यान तो थाय एम नथी, कारण के पूर्वनुं ज्ञान होय तेने थाय छे, पण हालमां धर्म ध्यान बनी शके छे. वली समाधि प्रमुख छे ते पण ध्यानने लगतां साधनो छे. ते समाधि छे ते हठ समाधि छे तेथी बाह्यनां घणां कारणो रोकाय छे; ने विषयथी विमुख थया वीना समाधि बनती नथी. ए कामनो अभ्यास करती वखतथी खाटा, खारा, तीखा विषय रूप स्वादनुं रोकाण करवुं जोईए छे, स्त्रीना विषयनो पण त्याग करवो जोईए छे तथा बाह्यनां गप्पां विगेरे नकामी वातो कर-

वानी तेनो पण त्याग करवो जोईए छे. ए आदी बधां कारणो रोकीने तथा श्वासोश्वास रोकीने एक परमात्म पदमां लीन थयो ने तेमांज उपयोग रहे छे माटे ए समाधि उत्तम छे. वली सहज समाधि थाय, ते तो बहु उत्तम छे. केमके सेहेजे बीजा जरू न्नावमां उपयोग रहेतो नथी, ने आत्मन्नाव स्थिर थई जाय छे, ए समाधी तो धर्म ध्यानना पेटामांज छे. वली केटलाएक अक्षरोनुं ध्यान करवानी रीत छे, ते पण योगशास्त्रमां हेमचंद्राचार्य महाराजे वतावी छे, ते उपरथी प्रश्नोत्तर रत्न चिंतामणिमां लखेली छे, तेथी अंहीयां विस्तार कर्यो नथी, पण मुक्तिनुं निकट साधन छे, माटे आत्मार्थीए ध्याननो लक्ष करवो बहुज उत्तम छे. जेम पाघमीने छेमे तोरो कसबनो शोन्ने छे, तेम सर्व धर्म साधनमां ध्यान छे ते तोरा रूप छे. माटे ते साधननो अन्न्यास करवानी घणी जरुर छे, पण ध्यानने अटकावनार उपाधीनां कारणो छे; ते कारणो ज्यां सुधी छे त्यां सुधी सेहेज समाधी बनशे नहीं, केमके एकांते विचार करवामां ते कारणो याद आवशे एटले जे ध्यानमां स्थिर थवुं हशे तेमां थवाशे नहीं, माटे ध्यान करवानी इच्छावालाए जेम बने तेम वाह्यना कारणोनो त्याग करवो जोईए, ने घणा माणसनो परिचय पण त्याग करी एकांतमां मुख्यत्वे करीने रहेवुं जोईए. त्यारे ए ध्यान बनवुं सुगम पमे छे, अने विशुद्धता थया पछी तो एकांतनी पण जरुर पमती नथी. जे पुरुषनुं चित्त जम न्नावथी खशी जाय छे, ने पोताना स्वन्नावमां स्थिर थई जाय छे, तेवा पुरुष तो सदाकाल जगतनो तमाशो जुवे छे. आत्मानो ज्ञान गुण छे ते जाणवानो छे, पण ज्यां सुधी मिथ्यात्व न्नाव गयो नथी त्यां सुधी राग द्वेष सहित जुवे छे, ने जे जे जुवे छे तेमां राग अथवा द्वेष बेमांथी एक थया विना रहेतो नथी, पण मिथ्यात्वनी वासनाज खशी

गई छे, ने जम अने चेतन बे पदार्थनुं यथार्थ ज्ञान थयुं छे, अने वस्तु धर्मनुं ज्ञान थयुं छे, तेना प्रभावे जे पदार्थनो जे स्वभाव छे ते जाणे छे, एटले पछी रागद्वेष थतो नथी; ए दशा पाम्या छे तेउने तो एकांत अने वस्ती बधुंए सरखुं छे. तेमने कंई ध्यान करवाने जूदुं स्थानक जोईतुं नथी. ए ध्यान तपनुं स्वरूप कह्युं.

छठो काउसगनामा तप. ते कायाने वोसरावीने एक स्थानमां रहेवुं ने जेटली वारनी स्थिरता होय तेटली वार प्रभुनुं स्मरण करवुं ते.

ए मुजब छ प्रकारनो अभ्यंतर तप कह्यो. बन्ने मलीने बारे प्रकारे तप कह्यो छे ते तपनो लाभांतराय मटवाथी तपना आचारनी प्राप्ति थाय छे, ते तपनो अंतराय शाथी थाय छे ? ज्यारे तप करतां कंई शरीर नरम पमे त्यारे माणसना मनमां एवुं आवे के तप कर्यो तेथी मने पीमा थई हवे तप नहीं करुं; आवो भाव आववाथी जीव तपनुं अंतराय कर्म बांधे छे तो फरी तप करवाना भाव थता नथी, पण खरुं कारण तो अशातावेदनी कर्म पूर्वे बांध्युं छे ते वेदनी कर्म उदय आवे छे, त्यारे शरीरे पीमा थाय छे. जेणे असातावेदनी कर्म बांध्युं नथी ते तो घणो तप करे छे, पण तेने रोग अथवा पीमा थती नथी, माटे तप कर्यो छे ने कदापी शरीरे वेदनी थई, तो ज्ञानी पुरुष तो विचारे छे के में कोई जीवने तप करतां अंतराय कर्यो हशे के मने वेदनी कर्मनो उदय तपस्यामां आव्यो, तेथी तपस्यानी वृद्धि बनशे नहीं; हवे तो हुं वेदनी कर्म खपाववाने तत्पर थयो छुं, माटे वेदनी कर्म समभावे भोगववुं के फरी नवुं कर्म न बंधाय, एम समभावमां रहीने तपस्यामांथी चित्तने खसेमता नथी, तेवा पुरुषने तपनो अंतराय तुटे छे, ने तप्पाचारनो लाभ थाय छे.

अने जे एम भावे छे के तप करवाथी शरीरे पीमा थई ते

आकरां कर्म बांधे छे. तेना दाखला तरीके (छपेली अर्थ दीपिकाना पाना ७४ मामां रज्जाआर्या[1])नी कथा छे ते नीचे मुजबः—

भद्र आचार्यना गच्छमां पांचसो साधुजी अने बारसो साध्वि छे, तेमना गच्छमां एक कांजीनुं पाणी, बीजुं भातनुं उसामण, त्रीजुं त्रण उकाळानुं पाणी, ए त्रण जातनां पाणी सिवाय बीजुं कोई जातनुं पाणी वापरता नथी, एम करतां कर्म जोगे रज्जा साध्वीनुं शरीर गळत कोढे बगड्युं, ते वारे बीजी साध्वीओए कह्युं के दुक्कर दुक्कर ! एवुं सांभळीने रज्जा साध्वीए कह्युं के—ए शुं मने कहोछो ? ए प्रासुक पाणीए करीनेज मारुं शरीर बगड्युं छे. एवां साध्वीनां वचन सांभळीने बीजां साध्वीजीओना मनमां आव्युं जे आपणने पण प्रासुक पाणीथी गळत कोढ थशे एवी बीक लागी, तेथी विचारवा लाग्यां जे आपणे पण प्रासुक पाणी पीवुं नही; पण तेमां एक साध्वीजीना मनमां आव्युं जे हमणा अथवा पछी मारुं शरीर शडीने कडका थई जाय तो पण मारे तो उष्ण जळज पीवुं. उष्ण जळ पीवाथी शरीरनो विनाश थाय नही, परंतु पूर्वभव कृत अशुभ कर्मना उदयथीज शरीरनो विनाश थाय छे, वा रोग थाय छे. एम विचार करी खेद करवा लाग्यां के धिक्कार होजो ए पापणीने के जे न बोलवा योग्य वचन ए साध्वी बोली जेथी पोते कर्मबंध कर्यो ? ने बीजाने कर्मबंधनी कारणीक थई; एम भावतां शुद्ध अध्यवसायनी गाथा चिंतवतां घाती कर्म नाश करीने केवळ ज्ञान पाम्यां, ने केवळ ज्ञानना प्रभावे सर्वे साध्वीओना संदेह टाळ्या. पछी रज्जा आर्यानो संदेह पूछ्यो जे एने शा थकी रोग थयो ते वारे केवळी साध्वीए कह्युं के ए बाईए करोळीया सहित स्निग्ध आहार कर्यो तेना प्रभावे रक्त पीतनो रोग थयो. वळी सचित

---

1 साध्वी

पाणी लइने श्रावकनी दीकरीनुं मुख धोयुं तेथी शासन देवीए ए रज्जा साध्वी उपर क्रोधायमान थइने शीखामण आपवाने आहारनी मांहे कोढ रोग थाय तेवुं चुरण नाख्युं तेथी कोढ रोग थयो; पण प्रासुक पाणीथी कोढ रोग थयो नथी. आवुं केवलज्ञानी साध्वीजीनुं वचन सांभलीने रज्जा साध्वीए कह्युं के, हे भगवती ! मुजने आलोयण आपो के शुद्ध थाउं, तेवारे केवलज्ञानी साध्वीए कह्युं के तुं शुद्ध थाय एवुं कोई प्रायश्चित नथी, कारण के तें क्रुर वचन कह्यां तेथी निकाचित कर्मनो बंध थयो छे, ते कर्मे करीने कुष्ट, भगंदर, जलोदर, स्वास, अतीसार, कंठमाल आदी महा दुःखो अनंता भव सुधी तारे भोगववां पडशे. एवी रीते कहीने बीजां साध्वीजीने आलोयणा आपी, तेथी सर्वे साध्वीओ शुद्ध थयां. आ साध्वी घणा भव भ्रमण करशे, तो जेम पाणीनुं दूषण काढ्युं तेमज तपनुं दूषण समजवुं. दुख सुख सर्व कर्म आधीन छे, ने तेमज कर्म आधीनता विचारवाथी एक साध्वी केवल ज्ञान पाम्यां. एक साध्वीए कर्म विचार न करतां पाणीनुं दूषण चिंतव्युं ने निकाचित अशुभ कर्म उपार्जन कर्युं. माटे आ कथा सारी पेठे लक्षमां राखवी. तप छे ते तो कर्म खपावनार छे, तेने अज्ञानपणे अवले रस्ते जोडवाथी अवलुं थाय छे, माटे तेम जीवे करवुं नहीं. शरीरना निर्बलपणाथी तप न थाय तो भाववुं जे मारुं तप अंतराय कर्म क्यारे तुटे के हुं तप करुं, एवी भावनाथी अंतराय कर्म तुटशे, अने तपाचारनो लाभ थशे ए रीते बार प्रकारे तपाचार कह्यो छे.

वीर्याचारनो अंतराय तुटवाथी वीर्याचारनो लाभ थाय, तेथी बीजा चारे आचारमां वीर्य फोरायमान थाय, तेथी जे जे धर्म करणी करे ते उत्साह सहित तथा हर्ष सहित करे, वेठरूप नही थाय, अने जेने वीर्यना लाभनो अंतराय होय, ते वीर्य श-

क्ति होय तो पण धर्म करणीमां वीर्य फोरवी न शके. धर्म करणी करती वखत कहेशे जे महारामां शक्ति नथी ने संसारी काम करवुं होय तेमां तत्पर थाय. जेम के तमासो जोवो होय तो बे कलाक उभो रही तमासो जुवे, ने प्रतिक्रमण उभा उभा करवुं कह्युं छे, तेम करवामां गलीयो बलद थई बेठां बेठां करे के मारी शक्ति नथी, ने शास्त्रमां तो बेठा बेठा पडीक्कमणुं करनारने आंबिलनुं प्रायश्चित कह्युं छे, ते जाणतां छतां पडिक्कमणुं बेठा बेठा करे छे. गुरु कहे तो पण प्रमाद छोडे नही. गुरुने वंदन करवुं, प्रभुने वंदन करवुं, खमासमण देवानां जेम कह्यां छे तेम न देवां, देवां तो तेमां सत्तर जग्याए पुंजवानुं पोताने अंगे कह्युं छे तेम पुंजवुं नही, पौषध सामायकमां ध्यान करवुं ते न करे, पडिक्कमणुं भणाववुं होय तो कहेशे जे बधुं माराथी भणावी नही शकाय, एवी रीते प्रमाद करे. वली ज्ञान अभ्यास करवो होय तो प्रमाद करे अने भणे नही, वांचे नही, वा कोई संभलावे तो सांभले नही. ए सर्वे वीर्याचारना लाभना अंतरायनो उदय छे. वली एवी रीते प्रमाद करवाथी अथवा बीजो धर्मनो उद्यम करतो होय तेने रोकवाथी पण अंतराय कर्म नवुं बंधाय छे, तेमज देरासर, धर्मशाला, स्वामीवत्सल, विद्याशालानां काम करवां होय तेमां प्रमाद करे, अने संसारी काममां तत्पर थाय, ए पण अंतरायनांज फल छे, ने जेने अंतराय तुट्यो छे ते तो जे जे काममां आत्मानुं कल्याण थाय, आत्मगुण प्रगटे, तेमां वीर्य फोरवे, अने अति प्रसन्नताये जेम देव गुरुनो हुकम होय तेम धर्म करणी यथार्थ करे, वीर्य शक्ति गोपवे नही, जे जे काम करवां छे तेमां मननी बलीष्टतानी जरुर छे. तपस्या करवी ए दुक्कर काम छे, केमके तपस्यामां शरीर ओछुं के घणुं नरम पड्या विना रहेतुं नथी, पण तपस्या करवामां वीर्य शक्ति फोरायमान थाय छे तो तेथी मन बलीष्ट

रहे छे. तेथी कष्ट उपर लक्ष जतुं नथी. सुखे तप थाय छे, माटे मननी बलीष्टता होय तो जे जे तप करवो होय ते ते करी शकाय छे. मन जो निर्बल होय ने शरीर बलवान होय तो पण ते माणस तपस्या करी शकतो नथी; पण ए सर्वे क्यारे थाय छे के वीर्याचारनो लाभांतराय तुट्यो होय तोज धर्म कार्यमां वीर्य फोरवी शकाय छे. कदापी वीर्य शक्ति होय पण ते संसारी काममां फोरवे छे, केमके धर्मकार्यना लाभनो अंतराय तुट्या विना धर्म कार्यमां वीर्य फोरवातुं नथी. हवे ए लाभांतराय सद्‌गुरुनी संगतथी तुटे छे, माटे प्रथम तो उत्तम पुरुषोनी संगत करवामां वीर्य फोरायमान करवुं जोईए, ते प्रथम तो घुणाक्षर न्याये थशे. जेम के केटलेक ठेकाणे लाकडामां अक्षर कोतरेला जोवामां आवे छे, पण ते मनुष्यना कोतरेला नथी, पण स्वाभाविक घुणा नामना जीवो लाकडामां उपजे छे, ने तेने योगे अक्षर जेवो आकार पडे छे, तेम सहेजे एवा पुरुषोनो भवितव्यताने योगे संजोग बने छे, ने कंई पण कारणसर जतां आवतां प्रथम तो बाह्यनी प्रीति थाय छे, पछी तेमनी अमृत जेवी वाणी सांभलतां जो मिथ्यात्व मार्ग आपे छे, तो विशेष प्रीति उत्पन्न थाय छे, अने एवी प्रीतिथी शीथील अंतराय होय तो ते तुटी जाय छे; वली संसारमां वीर्य फोरवतो होय त्यांथी प्ररावृतमान थई जाय छे, ने धर्ममां वीर्य फोरवाय छे, तेम तेम अभ्यासथी कर्म पण तुटे छे. एवी रीते वीर्याचारनी वृद्धि थाय छे. ते प्रमाणे वीर्याचारनुं स्वरूप कह्युं. आ पांच आचारमां जे जे आचारनो लाभांतराय तुटयो होय, ते आचारना लाभनी प्राप्ति थाय छे. संपूर्ण आचारनी प्राप्ति ज्यारे क्षायक भावे सर्व प्रकारे अंतराय कर्म तुटे त्यारे प्राप्त थाय छे, ने केवल ज्ञान पामे छे. तेनी पहेलां क्षयोपशम भावे अनुक्रमे बार गुण-

स्थाननी प्राप्ति थाय छे, अने तेमां अनुक्रमे आचारनी वृद्धि पामे छे.

दान अने शील ए बेनुं स्वरूप कह्युं. हवे तप ते तपनुं स्वरूप तपाचारमां विस्तारे कह्युं छे, एटले अहींयां फरी दर्शाव करतो नथी.

चोथो नाव ते नाव पांच प्रकारे छे.

उपशम नाव, क्षयोपशम नाव, क्षायक नाव, परिणामिक नाव, ऊदयीक नाव, आ पांच नाव छे, तेना ५३ नेद छे ते. मारा करेला प्रश्नोत्तररत्नचिंतामणिमां पाना १४० मामां कहेला छे, त्यांथी जोई लेवुं. वली ए नावप्रकरणनामा ग्रंथ छे तेमां गुणस्थानमां फोरवेला छे तेमां जोवा. इहां तो नाम मात्र कर्मग्रंथना आधारथी तथा अनुयोगद्वार सूत्रमां पण एनो विस्तार छे ते सर्वे उपर लक्ष राखी लखुं छुं.

प्रथम उपशम नाव ते मिथ्यात्व तथा अनंतानुबंधी कषायनां दलीयां उदय आवेलां खपावे, उदय नथी आव्यां ते कर्मनां दलीयां उदीरणा करी उदय लावीने खपावे. उदीरणाथी पण उदय आवे नहीं, एवां कर्मने अध्यवसायनी विशुद्धिथी उदय नहीं आवे एवां करी मुके छे. हवे प्रथमना त्रणे नावमां कर्मनां दळीयां उदय आवेलां खपाववां, उदीरणा करी उदय लावी खपाववां, विशुद्धिथी उदय नही आववा योग्य करवां, उपसमाववां ए सर्वे बाबतोनुं थवुं कृत्रिम नथी, पण स्वनाविक आत्मानी विशुद्धताथी सेहेजे बनी जाय छे. खपवा जोग्य वीगेरे बाबतो आत्मानी विशुद्धि थवाथी थई जाय छे. परमात्माना बनावेला नव तत्वनी श्रद्धा थईने जम नाव उपरथी मोह जेम जेम उतरे छे, तेम तेम आत्म स्वरूपनुं ज्ञान थाय छे, ने ते ज्ञानने प्रनावे आत्माना सुखनुं आस्वादन थाय छे, अने ते सुखनुं आस्वादन थवाथी धन कुटुंब स्त्री शरीर उपरथी मारापणानो

ममत्वभाव हठी जाय छे. शत्रु मित्र उपर पण समदृष्टी थई जाय छे. विषयथी उदास वृत्ति थाय छे, एवी विशुद्धि थवाथी मिथ्यात्व अनंतानुबंधीनो उपसम थाय छे, एटले अंतरंग शुद्धि थई जाय छे. आत्म विचार सिवाय बीजी वस्तु उपर राग थतो नथी. आत्मामां रमवुं ते सिवाय बीजुं सुख मनने रुचतुं नथी. मन अति निर्मल थई जाय छे, ते उपशम भावना समकितनो काल अंतर मुहूर्त्तनो छे. उपशम भावनुं चारित्र पण थाय छे, ते आठमाथी ते अगीआरमा गुणस्थानमां थाय छे. तेनो पण काल अंतर मुहूर्त्तनो छे, पछी उपशम चारित्र रहेतुं नथी. एटलीवार वीतराग दशाने पामे छे. राग द्वेष रहित थाय छे. एवा जे स्वभाविक विशुद्ध भाव ते उपशम भाव एवा पण शुद्ध भाव भव चक्रमां पांचवार थाय छे. एवा भावनी प्राप्ति लाभांतराय कर्मना क्षयोपशमथी थाय छे.

बीजो क्षयोपशम भाव ते पण जे जे कर्म उदय आव्यां छे ते खपावे छे, ने उदय नही आवेलां पण उदय आववा जेवां होय तेने उदीरणा करी उदयमां लावीने खपावे छे. जे उदीरणाथी पण उदय आवी शके नही, एवां छे तेने उपशमावे छे. एनुं नाम क्षयोपशम भाव. ए क्षयोपशम भाव चार कर्म (ज्ञानावरणी कर्म, दर्शनावरणी कर्म, मोहनी कर्म अने अंतराय कर्म)नो क्षयोपशम थवाथी आत्मानी विशुद्धि थाय छे; जेम वादलथी सूर्य ढंकायो होय छे ने जेम जेम वादल खसे छे, तेम तेम प्रकाश थतो जाय छे; ए रीते ज्ञानावरणी कर्मनां आवरण जेम जेम खसतां जाय छे, तेम तेम ज्ञाननो प्रकाश विशेष उपयोग रूप थतो जाय छे, तेमज दर्शनावरणी कर्मना आवरण खसवाथी सामान्य उपयोगरूप दर्शन तेनो उपयोग निर्मल थाय छे. मोहनी कर्मनी बे प्रकृति छे. दर्शन मोहनी अने चारित्र

मोहनी. तेमां ज्यारे दर्शन मोहनीनो क्षयोपशम थाय त्यारे समकीत जे शुद्ध यथार्थ श्रद्धा थाय छे, अने तेने आवरण लागवाथी विपरीत श्रद्धा थाय छे, ते आवरण जेम जेम खसे छे तेम तेम शुद्ध श्रद्धा थाय छे. वस्तुनो निर्णय पण यथार्थ थाय छे. वली चारित्र मोहनीनो क्षयोपशम थवाथी इच्छाउ रोकाती जाय छे, कषायनी परिणति शांत थाय छे, विरति प्रमुखना भाव जागे छे, जे जे वस्तु त्याग करे छे तेना उपरथी इच्छा खशी जाय छे, अंशे अंशे आत्म भावमां स्थीरता थाय छे, यावत् पांचमा गुणस्थानथी ते दशमा गुणस्थान सुधी क्षयोपशम भावनुं चारित्र छे. ए रीते मोहनी कर्मनो क्षयोपशम थाय छे, त्यारे अंशे अंशे वीर्यादी शक्ति आत्मानी जागे छे. तेना प्रभावे आत्मानुं वीर्य आत्मधर्म प्रगट करवाना काममां फोरायमान थाय छे, मलीन क्षयोपशमथी संसारी काममां शक्ति फोरवाय छे, ए रीते ज्यारे कर्मनो क्षयोपसम भाव थाय छे, ते क्षयोपसम शुद्ध थवाथीज आत्मानी परणती जागे छे अने ते जागवाथी जे जे धर्म करणी थाय छे ते भाव सहित थाय छे. वली भावना भेद घणा छे संजमना असंख्याता स्थानक छे तेमांथी जेटलो जेटलो क्षयोपसम भाव थाय तेटलां संजमस्थानक प्रगट थाय छे. ए रीते अल्प मात्र क्षयोपशम भावनुं स्वरूप लख्युं.

क्षायक भाव ते तो कर्मनो बंध, कर्मनो उदय, कर्मनी सत्ता ए त्रणे प्रकारे कर्मनो नाश करे छे, ए क्षायक भावनुं प्रथम समकित ज्यारे प्राप्त थाय छे, त्यारे अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ, समकितमोहनी, मिश्रमोहनी, मिथ्यात्वमोहनी ए साते प्रकृतिउ सत्ता, उदे अने बंधमांथी नाश पामे छे, त्यारे क्षायक भावनुं समकीत प्रगट थाय छे ने ते आवेलुं जतुं नथी, पण तेवी वीशुद्धि तो उपशम भाव तथा क्षयोपशम भाव ए बंने भावथी विशुद्ध छे. त्या-

रवाद ज्यारे केवल ज्ञान पामवाना होय त्यारे ते पुरुष क्षपकश्रेणी एटले कर्म क्षपक करवानी पंक्ति, एक पछी बीजी प्रकृति खपावी अनुक्रमे चारे कर्मनो नाश करवो ते श्रेणी कोई चोथे, पांचमे, छठे, सातमे, आठमे गुणस्थानकथी करे, ते बारमा गुणस्थानक सुधी क्षायक भावथी कर्म खपावता जाय छे. क्षयोपशम भाव तो चलायमान थाय छे ने पाछां कर्म बंधाय छे. क्षायक भाव एटले जे कर्म खपाव्यां ते पाछां फरी बंधाय नहि. तेवी क्षायिक भावनी विशुद्धि छे. माटे हरेक प्रकारे क्षायक भाव थाय तो कल्याण थाय. क्षायक भाव चार कर्मनो नाश करे छे, त्यारे केवलज्ञान प्रगट थाय छे. आठ कर्म नाश थाय छे त्यारे कर्म रहित थईने सिद्धिने विषे बिराजमान थाय छे. फरी संसारमां जेनुं आववुं थतुंज नथी, एवा शुद्ध पदने पामे छे. ए त्रण प्रकारना भावमांथी जे कोई भाव प्रगट थाय ते ज्यारे ए भाव पामवानो लाभांतराय तुट्यो होय त्यारे प्रगट थाय, अने जेने ए गुण प्रगट थवानो लाभांतराय छे त्यां सुधी ए भावमांनो भाव प्रगट थशे नहि. जो एमांनो कोई पण भाव आव्या विना जे जे धर्म करणी करशे ते द्रव्य क्रिया छे अने ते द्रव्य क्रियाने प्रभावे पुन्य बांधशे. संसारी सुख पामशे, पण मुक्तिरूप महेलमां रमवानुं तेनाथी नहि बने. ज्यारे क्षायक भाव आवशे त्यारेज मुक्तिरूप स्त्रीने आलींगन करशे. क्षयोपशम भाव क्षायिक भावना कारणरूप छे तेथी पण कर्म नाश थशे ने उपसम भावथी पण कर्मक्षय थशे. ए बेमांथी एक पण भावनुं समकीत आववाथी मुक्ति तो निश्चे थशे ए भाव वालाने छेहे क्षायक भाव पण आववानो खरो, माटे ए भाव पण प्रगट थाय तो कल्याण थाय. ए त्रणे भावोमां समकीत पाम्या वीना पूर्व काले मेरु पर्वत जेटली होगा मुहपती धारण करी पण जीवने जे मुक्तिरूप कार्य करवुं हतुं ते थयुं नहि. वली ए

भाव विना शुभ भावथी पण जीव नव ग्रैवेयक सुधी जाय छे ने पुद्गलीक सुख भोगवे छे. माटे पुद्गलीक सुख भोगववाना भाव आवे, पण मुक्ति सुख भोगववाना भाव आववा दुःकर छे. हवे मुक्ति सुख भोगववारूप भाव आव्यो के नहि तेनी नक्की परीक्षा तो नहि थई शके, पण आत्मीक भाव आववावालानां लक्षण शास्त्रमां वताव्यां छे ते जोवाथी अनुमान थई शकशे.

आ त्रण भाव छे ते आत्माने निर्मल करनार छे. हवे चोथो उदयिक भाव छे, ते कर्मना उदयथी प्राप्त थाय छे, तेना एकवीश भेद छे. ए भावथी अशुभ कर्म वंधाय छे. ने आत्मा मलीन थई मीथ्यात्व, अज्ञान, कषाय, लेश्या, अव्रत ए सर्व थाय छे. ते भावनुं इहां प्रयोजन नथी. परिणामीक भाव छे, ते तो स्वभावीक छे, ते सुख के दुःख कंई करतो नथी. भावनी संपूर्ण प्राप्ति तेरमे गुणस्थाने आत्माने संपूर्ण लाभांतरायनो क्षय थयाथी थाय छे. ए प्राप्ति न थवानां कारण के, जीव पोताना अहंकारमां म्हाली आत्मीक गुण प्रगट करवानी इछा करतो नथी. ने जे जीव आत्माना गुण प्राप्त करवाने सनूमुख थया छे तेमने रोके छे, तेमनी निंदा हीलना करे छे. एवा जीवो लाभांतराय कर्म बांधे छे. वली संसारमां धन वीगेरे कोई दातार कोईने आपतुं होय तेने आपवा न दे. लेनारनां दूषण छतां अछतां बतावीने तेने आपवामां अंतराय करे तेथी लाभांतराय कर्म उपार्जे. जेम भीखारी मुठी जुवार सारु घेर घेर फरे छे, पण लाभांतरायथी मली शक्ती नथी, तेवीज रीते जे माणस एवा माणसने आपतां अंतराय करे छे तेमने भीख मागतां पण लाभ मलशे नहि, माटे हरेक प्रकारे कोई पण जीव दुःखी होय तेने सुखी करवानी इछा करवी, ने जेटली शक्ति होय ते प्रमाणे तेने आपीने संतोष पमाडवो. वली बीजा आपणा मेलापीने कहेवाथी तेनुं

दुःख ज्ञांगतु होय तो तेने कहीने तेनी पासे अपाववुं. वली सुपात्र पुरुष विषे दाननो उत्साह धरवो ने आपवुं, जेथी लाभ मलवो बहु सुलभ थाय छे. एक राजा देखीए छीए ने एक रंक देखीए छीए ते फेर थवानुं कारण एटलुंज छे के तेणे पूर्व भवने विषे सुपात्रने देखीने दान दीधां छे तेथी मळ्युं छे, ने जे जीव रंक फरे छे तेणे पाछले भव लाभांतराय कर्म बांध्युं छे, तेथी लाभ मलतो नथी. केटलीएक वखत दातारना भाव, आपवाना थया छे, तो पण लेनारे लाभांतराय कर्म बांध्युं छे, तेना प्रभावे लेवामां विघ्न आवे छे. ने लाभ मली शकतो नथी ए लाभांतराय कर्मनुं फल छे; माटे जेम बने तेम लाभांतराय तूटे एम करवुं, पण नवो बंधाय एम न करवुं.

३. हवे त्रीजा भोगांतरायनुं स्वरूप लखुं छुं.

भोगांतराय कर्म जीव अनादीनो बांधतो आव्यो छे तेना प्रभावे आत्माना स्वभावमां रहेवुं ते रूप भोग भोगवी शकतो नथी, ते भोगांतराय कर्म बारमे गुणस्थानना अंतेज क्षय थाय छे, त्यारे सदाकाल आत्मानाज भोगने भोगवे छे, तेना सर्वथा प्रकारे भोग अंतरायनो त्याग थई जाय छे. केमके विभाव वासना रहेती नथी. इहां कोईने शंका थशे जे केवलज्ञानी महाराज समोसरणमां बिराजमान थाय छे, देवकृत वीगेरे अतीशय प्राप्त थाय छे, आहार करे छे, सुंदर पवन वीगेरे आवे छे ए भोग छे के शुं छे? ते विषे जाणवुं जे तीर्थंकर महाराजे तीर्थंकर नाम कर्म बांध्युं छे ते पुन्यना प्रभावथी घणी वस्तुनी प्राप्ति थाय छे, पण तेमां भगवानने राग पण नथी ने द्वेष पण नथी. ज्ञानथी जाणे छे के शुभाशुभ कर्मनो उदय छे ते उदयना प्रभावथी थाय छे. ते मात्र कर्म भोगवी लेवा रूप छे, ए वस्तुमां अंशमात्र पण राग नथी. फक्त चार कर्म रह्यां छे ते भोगवीने निर्जराववा छे. माटे तिर्थं-

कर महाराजनो तथा केवलज्ञानी महाराजनो जे ज्ञोग ठे ते ज्ञोग नहि जेवो ठे अने ठद्मस्थ जीवने जे जे पुद्गलना ज्ञोग करवा ठे ते राग द्वेष सहित ठे, तेमां तेमने कर्मबंधनुं कारण रह्युं ठे. तेथी आत्मीक ज्ञोग ज्ञोगवी शक्ता नथी. आत्मीक ज्ञोग ज्ञोगववानो अंतराय कर्मनो उदय पण टाळ्यो नथी, त्यांसुधी आत्मीक ज्ञोग ज्ञोगवी शक्ता नथी. संसारी जीवने रात दीवस ज्ञोगनी इच्छाउ एटली वधी ठे के जे जे पदार्थो जगतमां रूपी देखे ठे वा सांज्ञले ठे तेनी इच्छा थाय ठे. पण ते पामवानुं अंतराय कर्म वांधेलुं ठे एटले मली शक्ती नथी, अने जेने अंतराय कर्मनो क्षयोपसम थयो ठे तेने ते मले ठे, अने ज्ञोगवे ठे. पण जो ते पर अतिराग धरे ठे, ने अतिरागे ज्ञोगवे ठे, तो तेथी पाछुं नवुं ज्ञोगनुं अंतराय कर्म वांधे ठे, तेथी पाठा मलवामां हरकत आवशे. केवी रीते? के ज्ञोगनी वस्तु हाजर ठे पण कृपणता आववाथी ते वस्तु ज्ञोगवी नहि शके, अथवा तो शोक पमशे,तेने बदले ज्ञोगवी शके नहि, अथवा रोग थशे ने वैद ते वस्तु खावानी मना करशे ने ज्ञोगवी शकशे नहि, वा हरकोई प्रकारनुं कारण आवशे, जेथी इच्छा ठे, वस्तुठे,पण ज्ञोगांतराय कर्मना उदयथी ज्ञोगवी शकशे नहि. पण सम्यक् ज्ञानी पुरुषो ठे ते पुरुषो तो एवा अंतराय आववाथी विचार करे ठे के पूर्वे ज्ञोगांतराय कर्म बांध्युं ठे ते उदय आव्युं ठे, ते समज्ञावे ज्ञोगवीश तो कर्म बंधाशे नहि. एवी ज्ञावना प्रगट थइ ठे तेना प्रज्ञावे ते तो ज्ञोगांतराय कर्मनी निर्जरा करे ठे, नवुं वांधता नथी. ने जेने एहवी दशा नथी जागी, ते जीवो बीचारा बीजाने ज्ञोग ज्ञोगवतां जोई अनेक प्रकारनां कर्म बांधे ठे ए अज्ञानतानां फल ठे. आ ज्ञवमां ज्ञोग मलता नथी, ने वली ज्ञोग ज्ञोगववाना विकल्प करी नवां कर्म वांधे ठे तेने आवते ज्ञवे पण ज्ञोग मलशे नहि, एवा जी-

वनो मनुष्य जन्म पामेलो व्यर्थ जाय छे. वर्तमान भव अने आवतो भव बंने भव बगडे छे. विकल्प करवाथी, कोईनी अदेखाई करवाथी, कांई भोग तो मलतो नथी. ने फोकट मात्र कर्म बांधी दुर्गति जवानुं थाय छे, जो के रामचंद्रजी बलदेव, अने लक्ष्मण वासुदेव जेवाने पण भोगांतरायथी वनवास रहेवुं पड्युं, पांडव जेवाने पण वनवास रहेवुं पड्युं, ब्रह्मदत्त चक्रवर्तिने पण अंतराय हतो त्यांसुधी न्हासता फरवुं पड्युं;माटे कर्मछे ते कोईने मुकतुं नथी. जे जे कर्म उदे आव्युं ते जीवने भोगव्या विना छुटको नथी. समभावे पण भोगववुं ने विकल्प करीने पण भोगववुं, तो समभावे भोगवाशे तो नवां कर्म नहि बंधाय. वली समभावना जोरथी शिथिल अंतराय कर्म हशे तो सेहजे नष्ट थई जशे तो आ भवमां पण भोग मलशे, ने आवते भवे पण सेहेजे भोग मलशे. वली जेम जेम विशुद्धि थशे तेम तेम बाहिर जडना भोगनी इच्छा खससे. ने पोताना आत्म स्वभाविक भोगनी इच्छा थशे, ने तेना साधन पण करशे, ने संसार छोडी संजम लेशे तेमां पण तप संजम रुडी रीते पाली आत्मज्ञान मेलवी आत्माना ध्यानमां वर्त्ति धर्म शुकलध्यान पामशे, तेने पामीने सर्वथा अंतराय कर्म नाश करी केवलज्ञान पामशे. ते निज गुण भोगी थशे, त्यारे ज आत्मानुं कल्याण थशे. "उपभोगांतराय" ते जे जे वस्तु वारंवार भोगववामां आवे" ते उपभोग कहीए. घर, हाट, खाटला, पाटला, कोच, खुरशी, गादी, तकीआ, तलाई, पहेरवानां, ओढवानां कपडां सोना रुपाना आभूषण, हीरा, माणेक, मोती, स्त्री प्रमुख सर्वे वस्तुने पामवामां अंतराय कर्म बांध्युं होय, ते उदय आवे, त्यारे ए सर्व उपभोगना पदार्थ मली शके नहि. आ जीव अनादिना उपभोगांतराय बांध्या करे छे ने भोगव्या करे छे, ज्यारे जीव शुभ काम करे छे, शुद्ध अध्यवसाय थाय छे, त्यारे कांई अंतराय क-

र्मनो क्षयोपसम थाय छे, त्यारे तेटली वस्तु मले छे. धर्मनी वर्त्तना थया शिवाय कर्म तुटतुं नथी.वली ए अंतराय कर्म बंधाय छे शाथी? तेनुं समजवुं के अधर्म प्रवर्तिथी, अधर्ममां पण मुख्य कोई जीव उपभोगनी वस्तु कोईने आपतो होय, ते नही आपे एवी वातो करवी, वा तेने समजाववो के नहिं आप. वा आपनारनी हांसी मश्करी करवी, तेनी निंदा करवी, वा उपभोग करतो होय तेने बीजुं कांई काम सोंपी ते काममां भंग करवो, एवां कारण करवाथी, वा हिंसादीक काम करवाथी जे जे जीवना प्राण गया तेने आ भव संबंधी उपभोगांतराय थयो. एवी रीतनां काम करवाथी उपभोगांतराय कर्म जीव बांधे छे. माटे प्रथम उपभोगांतराय न बंधाय एवी जीवने वर्तना करवी, अने पछी पूर्वेना बांधेलां क्षय थाय तेवो उद्यम करवो. हवे ते उद्यम शो करवो ते जणावुं छुं. पूर्वे तीर्थंकर महाराजे जे जे उद्यम पोते कर्यो छे ते आगममां बताव्यो छे. जो बनी शके तो संजम लेवुं तेम बनी न शके तो श्रावक धर्म अंगीकार करवो, ते नहि बने तो सम्यक्त्व अंगीकार करवुं, ते नहिं बने तो मार्गानुसारीपणुं आरंभवुं, जेटलो धर्म अंगीकार करशे ते प्रमाणे तेना कर्म तुटशे. उपभोग बे प्रकारना छे. १ पुद्गलीक अने २ आत्मिक. ए बंनेना अंतराय छे, तेमां पुद्गलीक मलवा तो सेहेला छे पण आत्मीक मलवा दुःक्कर छे ने तेना साधन पण मलवा दुःक्कर छे अने ज्यां सुधी संसारी उपभोगनी लालसा छे त्यां सुधी आत्मीक भोग मलवानो नथी. माटे आत्मीक धर्म शुं छे ते जाणीने ज्यारे संसारी उपभोगनी इच्छा उठशे, त्यारे आत्मीक उपभोगनी इच्छा थशे, अने प्रगट करवानुं मन थशे. एनो उद्यम तप, संजम आदिकनो एवो छे के इच्छा तो आत्मीक भोगनी छे, पण संसारमां रह्या छो, त्यां सुधी पुद्गलीक अने

आत्मीक बंने उपभोग मलशे, अने पुद्गलीक भोगनी इछाथी बे नहि मले, पुद्गलीकज मलशे, अने आत्मीक उपभोगनो अंतराय थशे, पोताना आत्मीक सुख गेमी जम सुखनी इछा करे एज विपरीत दशा ठे; वली संसारीक उपभोग बांधीने जेम जेम आनंदीत थाय तेम तेम आत्मीक अने पुद्गलीक बंने उपभोगनो अंतराय थाय, माटे संसारी उपभोगमां आत्मार्थी जीवो आनंदीत थता नथी, ने ते भोगनी इछा पण करता नथी. पुद्गलीक सुखने तो ज्यारथी जीव समकित पामे ठे त्यारथी सुखरूप मानता नथी. पूर्वेनी पुण्यप्रकर्तीथी मळ्युं ठे ते समभावे भोगवी ले ठे, पण तेमां राग धरता नथी एवी रीते तीर्थंकर महाराज विगेरे वर्त्तिने आत्मार्थीने वर्त्तवानी आज्ञा फरमावी गया ठे, ते प्रमाणे वर्त्तवुं के जेथी प्रथम उपभोगांतरायनो क्षयोपशम थाय, ने पठी वधारे विशुद्धिथी क्षय थाय ने केवलज्ञानादीक पोतानी आत्मीक रिद्धि प्रगट थाय, तेनाज उपभोग सदा अवस्थित थाय. उपभोगांतराय कर्म सत्ता बंध उदयथी क्षय थाय, त्यारे सहज स्वभावीक उपभोग थाय. जेनुं वर्णन करवा कोई शक्तिमान थाय नहीं. पांचमुं वीर्यांतराय कर्म तेना प्रभावथी जीवनी अनंती वीर्य शक्ति ठे. ते अवराई गई ठे तेथी जीव आत्म वीर्य, फोरवी शक्तो नथी. वीर्यांतरायना क्षयोपशमथी बाल वीर्य अने बालपंडीत वीर्य ए बे वीर्य प्रगटे ठे. तेमां बाल वीर्य प्रगटे ठे तेना प्रभावे संसारमां प्रवर्तवानी शक्ति आवे ठे, संसारी काम करी शके ठे. ए वीर्यनो क्षयोपशम पण विचित्र प्रकारे ठे. जेमके कोई लडवामां वीर्य फोरवी शके ठे, कोई वेपारमां वीर्य फोरवी शके ठे, कोई विषयमां वीर्य फोरवी शके ठे. कोई नाचमां फोरवी शके ठे, कोई गावामां फोरवी शके ठे, कोई लखवामां फोरवी शके ठे, एवा अनेक प्रकारनी जुदी जुदी वीर्य शक्ति

प्रगटे छे. तेमां जेने जे बाबतमां वधारे आवरण छे ते माणस ते बाबतमां वीर्य फोरवी शकतो नथी. जे काम संबंधी आवरण टळ्यां छे, ते काममां शक्ति फोरवी शके छे. हवे तेमां पण केटलाएक जीवो मद करे छे के मारा जेवो कोण बलवान छे. दश माणसने हुं एकलो मारी नांखु. एवो मद करीने वीर्यांतराय कर्म पाछुं बांधे छे, ते जीवने फरी एटली पण वीर्य शक्ति नहि प्रगटे. वळी जे जे कळामां जेनी शक्ति चाले छे ते ते बाबतनो मद अज्ञानी जीव करे छे, तेना प्रज्ञावथी वीर्यांतराय कर्म बंधाय छे; अने एवी रीते अनादिकालथी जीव वीर्यांतराय कर्म बांध्याज करे छे ने ते कर्म ज्ञोगव्या करे छे, पण ज्यारे जीवनी ज्ञवस्थिति परिपाक थाय छे त्यारे मोक्ष पामवानो नजीक वखत आवे छे, त्यारे सारी नीतिमां वर्तवा सत्संग सद्गुरु प्रमुखनो जोग थाय छे ने धर्म सांज्ञलवानी जोगवाई मळे छे. ते सांज्ञलवामां जीव वीर्य फोरवे छे अने ते ज्ञान ग्रहण करे छे. वीतरागना ज्ञान ज्ञपर प्रीति जागे छे अने धर्म सन्मुख थाय छे. संसारमां वीर्य फोरववानी बुद्धि ढंढी थाय छे त्यारे धर्ममां बुद्धि फोरवाय छे अने सम्यक् गुण तथा श्रावकपणाना गुण प्रगट करवा ज्जमाळ थाय छे त्यारे वीर्यनो क्षयोपशम थाय छे. सम्यक्तपणामां तथा श्रावकपणामां जे जे छांमवा जोग छे ते ते छांमे छे, आदरवा जोग जे आत्म धर्म ते आदरवामां वीर्य फोरायमान थाय छे. श्रावकनां बार व्रत श्रावकनी अगीयार पमीमा अंगीकार करे छे, ते पाळवामां वीर्य फोरवे छे, तपस्या प्रमुखमां पण वीर्य फोरवे छे अने क्षयोपशमथी जेटलुं वीर्य प्रगट्युं छे तेने अनुसारे धर्ममां वीर्य फोरवे छे, पण संजम पाळवा जेवो वीर्यनो क्षयोपशम नथी थयो त्यां सुधी संजम लेइ शकतो नथी, ने संजममां वीर्य फोरवी शकतो नथी; अने संसारमां रह्यो छे तेथी संसारमां वीर्य फोरवे छे माटे तेने

बाल पंमीत वीर्य कहीए. पंमीत वीर्य ज्यारे प्रगट थाय छे त्यारे तो पुद्गलीक सर्वे वस्तु उपरथी मोह उतरी जाय छे अने सर्वथा संसारथी नीकली एक आत्मगुण प्रगट करवामांज वीर्य फोरवे छे अने निजस्वन्नावीक सुखमांज वर्तवानो कामी बनी सर्वथा प्रकारे वीर्यांतराय कर्मनो क्षय करी केवलज्ञान केवल दर्शन प्रगट करे छे, तेमने वीर्यांतराय कर्म सत्ता, बंध, उदये, कोई रीते पण रहेतुं नथी. निज स्वन्नावमांज अनंत वीर्य गुण छे ते प्रगट थाय छे. न्नगवंते एवी रीते सर्वथा वीर्यांतराय कर्मनो क्षय करी आत्मीक गुण प्रगट कर्या अने मारो आत्मा तो वीर्यांतराय सहीतज रह्यो; माटे हे चेतन! जेम न्नगवंते वीर्यांतराय क्षय कर्युं तेमज क्षय करवाने तेउए बताव्युं छे माटे ते प्रमाणे हुं वर्तुं, एवी न्नावना लावीने आत्मगुण प्रगट करवानां कारणो (ज्ञान, दर्शन, चारित्र ने तप) उत्साह सहित मेलववां. उत्साहे धर्मकरणी सफल थाय छे अने वीर्यनां आवरण खपे छे. वीर्य फोरायमान थाय छे. जेम मुनि महाराज उत्साहे तप संजमादीक पाले छे, तो तेना प्रन्नावे अठावीश लब्धी उत्पन्न थाय छे, ते वीर्यांतरायना क्षयोपशमथी थाय छे, एम योगशास्त्रमां हेमचंद्र आचार्य कहे छे तेमज प्रवचन सारोद्धारना बालावबोधमां पाने ५३९ में अठावीश लब्धीउ वीर्यना क्षयोपशमथी थायछे ते बतावी छे तेम आ ग्रंथमां नीचे बतावुं छुं.

प्रथम आमर्षौषधि लब्धीः लब्धी शब्दे शक्ति जाणवी. आ लब्धी जे मुनिने प्रगट थई छे, तेना प्रन्नावे ते मुनि हाथनो फरस रोगीने करे के रोग नाश पामे, सर्वे रोगनी शांति थाय.

बीजी विप्रौषधीनामा लब्धी. तेना प्रन्नावे मुनिमहाराजनी विष्टाथी ने मूत्रथी पण रोगीना रोग शांत पामे छे. आ तपना प्रन्नावनी शक्ति छे.

त्रीजी खेलौषधिनामा लब्धी. तेना प्रभावे मुनिनुं श्लेष्म ते थकी रोगीना रोग जाय.

चोथी जलौषधिनामा लब्धी ते जे मुनिने उत्पन्न थई छे तेना प्रभावे दांतनो, कानना, नासिकानो, नेत्रनो, जीभनो अने शरीरनो जे मेल ते मेल सुगंधीदार होय अने ते मेलथी रोगीना रोग जाय.

पांचमी सर्वौषधीनामा लब्धी. जे लब्धीने प्रभावे लब्धी-वंतना संग थएल नदीना पाणीथी सर्व रोग शांत थाय. लब्धि-वंतने फरसेलो पवन जेहने फरसे तेना पण रोग जाय. वली ए पवनथी विषे करी मुर्छित थएला प्राणीनुं विष जाय तथा विष संयुक्त अन्न होय ते पण निर्विष थाय. वली लब्धीवंत-ना वचन सांभलवाथी वा तेनुं दरशन करवाथी पण रोग विष जाय ने नीरोगी थाय. आवी प्रबल आत्मानी वीर्य शक्ति तप-स्याथी थाय छे.

छठी संभिन्नश्रोत लब्धी. ते लब्धीवालाने पांचे इंद्रीउना जुदा जुदा विषय छे ते छतां लब्धीना प्रभावथी एक इंद्रिये करी पांचे इंद्रियोना विषय ग्रहण करे एटले जाणी शके. जेमके आंखो जो-वानुं काम करे छे पण बीजी चार इंद्रियोनुं काम करी शकती नथी, पण लब्धीवंतनी आंखो पांचे इंद्रीउनुं काम करी शके छे. ते रीते बधी इंद्रियोए समजवुं. वली चक्रवर्त्तिनी सेनाना कोला-हलना शब्द थई रह्या होय तेमां पण एकी वखत जे जे जात-नो शब्द थतो होय ते सरवेने जुदा जुदा जाणी शके.

सातमी अवधीज्ञान लब्धी. तेना प्रभावथी इंद्रीयोना बल सिवाय रूपी पदार्थनुं ज्ञान आत्माथी करी शके छे. नजरे जो-वानी जरुर पडती नथी.

आठमी ऋजुमती मनःपर्यव लब्धी. ते उपजवाथी अढी द्वी-

मां न्यून संज्ञी पंचेंडीना मनना चिंतवेला नावने सामान्य जाणे. पण घट चिंतवेलाना ड्रव्य खेत्र, काल, नावथी विशेषे न जाणे.

नवमी विपुलमती मनःपर्यव ज्ञान लब्धी. ते लब्धीथी अढी द्वीपना संज्ञीना मनना चिंतवेला ड्रव्य क्षेत्र काल नाव सरवे जाणे ने तद्नव मुक्ति पामे.

दशमी चारणनामा लब्धी. ते वीद्याचारण तथा जंघाचारण लब्धी; ए लब्धीने प्रनावे आकाश मार्गे जइ शके. तेमां विद्याचारण लब्धी विद्याना बलथी प्राप्त थाय ठे ते लब्धीवंतने धीरे धीरे लब्धी वधे ठे, तेथी पोताना स्थानथी प्रथम उतपाते मनुष्योत्तर पर्वते जाय ठे, ने बीजे उतपाते आठमा नंदीश्वर द्वीपे जाय ठे, अने त्यांथी पाठा आवतां एकज उतपाते पोताना स्थानके आवे ठे; अने जंघाचारण लब्धी तपस्या तथा शुद्ध चारित्र पालवाथी उत्पन्न थाय ठे. ए लब्धीवंतने प्रथम शक्ति वधे ठे. पठी आवतां घटे ठे. पहेले उतपाते तेरमा रुचकद्वीपे जाय ठे. आवतां शक्ति घटे ठे तेथी आवतां पहेले उतपाते नंदीश्वरद्वीपे जाय ठे. तीहां वीसामो लइ बीजा उतपाते पोताना स्थानके जाय ठे, आ लब्धीनो महिमा ठे. वली ए लब्धिवाला मुनियो प्रतिमा वांदे ठे ते बाबत नगवती सूत्रमां ठे.

अगीयारमी आसीविष लब्धी. ते लब्धीना प्रनावे श्राप दे ते तेम थई शके.

बारमी केवलज्ञान लब्धी. जेथी सर्वे नाव जाणे.

तेरमी गणधर लब्धी. जेथी तीर्थंकर महाराज त्रीपदी कहे एटले द्वादशांगीनुं ज्ञान थई जाय अने नगवाननी पाटे तेज पटोधर थाय.

चउदमी पूर्वधर लब्धि. जेथी पूर्वधर पदवी पामे.

पंदरमी तीर्थंकर लब्धी. जेथी तीर्थंकर पदवी पामे.

सोलमी चक्रवर्त्तीनी लब्धी. जेथी छ खंडनो स्वामी थाय.

सत्तरमी वलदेवनी लब्धी.

अढारमी वासुदेवनी लब्धी. जेथी त्रण खंडनुं राज करे.

उगणीशमी खीराश्रव लब्धी. ते खीराश्रव लब्धीना प्रभावे वचन बोले ते दूध जेवुं लागे, तथा मध्वाश्रव लब्धी तेना प्रभावे ए पुरुषनुं वचन साकर जेवुं मीठुं लागे.

वीशमी कोष्ट बुद्धि लब्धी. तेना प्रभावे जे जे परोपदेशे सूत्र अर्थ धार्या छे तेनुं विसरी जवुं थाय नहि, वगर संभार्ये पण याद रहे ए लब्धीनो प्रभाव छे.

एकवीशमी पदानुसारीणी लब्धी. ए लब्धीना प्रभावथी आखा श्लोकनुं एक पद आगलुं वा पाछलुं जाणवामां आवे तो बीजा त्रणे पदनुं ज्ञान थाय. जेम अभय कुमार प्रधान भगवानने वांदीने आवता हता ने विद्याधर आकाशे चडतो पडतो हतो, त्यारे अभयकुमारे पूछयुं के केम आकाशे उडातुं नथी? त्यारे कह्युं जे विद्यानुं एक पद जतुं रह्युं छे. पछी अभयकुमारे कह्युं जे विद्यानो पाठ बोलो. ते पाठ बोल्यो एटले खुटतुं पद पोते पूर्ण करी आप्युं. पोते प्रथम भणेला पण नहि हता, तो पण पोते पदानुसारीणी लब्धीना प्रभावथी पद पूर्ण कर्युं अने विद्याधर आकाश मार्गे चाल्यो गयो. आ लब्धीनो प्रभाव जाणवो.

बावीशमी बीजबुद्धि नामा लब्धी. ते बुद्धिना प्रभावथी जेम बीज एक वावे छे ने घणा दाणा उत्पन्न थाय छे, तेमज ज्ञानावरणी कर्मना क्षयोपशमथी एक अर्थरूप बीजने सांभलवे घणा अर्थनुं ज्ञान थाय. जेम गणधर महाराजने भगवाने त्रीपदी कही एटले उतपात व्यय-ध्रुव ए त्रण पद सांभली आखी द्वादशांगीनुं ज्ञान थयुं तेम ए लब्धीथी ज्ञान थाय. पदानुसारीणीमां एक पद जाणवाथी बीजा पदोनुं ज्ञान थाय अने बीज बुद्धिवा-

लाने एक पदार्थनुं ज्ञान थाय तो तेथी घणा पदार्थनुं ज्ञान थाय आ फेर छे.

तेवीशमी तेजोलेश्या लब्धी. तेना प्रभावथी कोई जीव उपर खेद आवे ने तेजुलेश्या मुके तो सामा जीवने बालीने भस्म करे.

चोवीशमी आहारक लब्धी. तेना प्रभावे आहारक शरीर मुंढा हाथ प्रमाणे करी श्रीसीमंधर स्वामी पासे वा वीचरता तीर्थंकर पासे पूछवा मोकले ने ते जवाब एटली शिघ्रताथी आपे के वाख्यान करता होय तेमां संशय पडे तो ते भगवान्‌ने पूछी आवे ने तेनी अंदर कहेवामां आवे ए आहारक लब्धीनो प्रभाव छे.

पचीशमी शीतलेश्यानामा लब्धी. ए लब्धीना प्रभावथी कोईये तेजोलेश्या मुकी छे तेना उपर शीतलेश्या मुकी शीतल करे. ने तेजोलेश्या हणाइ जाय.

छवीशमी वैक्रिय लब्धी. तेना प्रभावे पोतानुं शरीर नानुं मोटुं जेवुं करवुं होय तेवुं करी शके. देवताने भव प्रत्ययी होय अने मुनिने तप चारित्रना प्रभावथी थाय छे.

सत्तावीशमी अक्षीण माहानसी लब्धी. तेना प्रभावे अल्प वस्तु होय, जेमां एक माणस जमी शके एटलो पदार्थ होय तेमां हजारो माणस जमी शके. जेम गौतम स्वामी महाराज एक पडघो खीरनो लाव्या तेमां पंदरसें तापसने जमाड्या ए लब्धीनो प्रभाव.

अठावीशमी पुलाक लब्धी. तेना प्रभावे कोई संघनुं कार्य होय तो चक्रवर्तीने पण चुरण करी नाखे.

आ मुख्यपणे अठावीश लब्धी कही छे. वली बीजी पण तपना प्रभावथी लब्धीउ थाय छे. प्रकृष्ट ज्ञानावरणी वीर्यांतरायना क्षयोपशमे करी समस्त श्रुत समुह एक अंतर मुहूर्तमां अवगाहे तेने विषे जेनुं मन होय ते मनोबल लब्धी कहीये. तेमज

अंतरमुहूर्त्तमां सर्व श्रुतनो विचार करवानी जे शक्ति तेणे करी जे
सहित होय, वली पद वचन अलंकार सहित वचनने ऊंचे स्वरे
नीरंतर बोलतां थकां पण तेनो घांटो रही जाय नहिं. ते वचन
बल लब्धी, तेमज वीर्यांतरायना क्षयोपशमथी प्रगटपणे थयुं जे
बल तेथी बाहुबल वरस दीवस सुधी काउस्सग्गे रह्या तो पण श-
रीर थाक्युं नहिं, तेम ए लब्धीवंत कायबल लब्धीना प्रभावथी
थाके नहिं, ते कायबललब्धी. तेमज घणा कर्मोना क्षयोपशमथी
प्रज्ञानो प्रकर्ष होय. जेथी चउद पूर्व भण्या विना पण कठण
विचारोने विषे निपुण बुद्धि होय, अने तेने यथार्थ विचार थाय.
ए आदे घणा प्रकारनी लब्धीउ योग शास्त्रमां हेमचंद्र आचार्य
महाराजे दर्शावी छे. हालमां इंग्लांड, अमेरिका तथा जर-
मनीमां घणा युरोपियनो योग शास्त्र वांचे छे ने हेमचंद्र आ-
चार्यने सर्वज्ञनु बिरुद आपे छे ए पण ज्ञाननो क्षयोपशम छे. वली
हेमचंद्र आचार्य पण एक वखत कुमारपाल राजर्षिनी स-
भामां त्रण बाजठ मुकी तेना उपर बेशी देशना देता हता.
राजानुं आववुं थयुं त्यारे बाजठ काढी नांखी अधर बेशीने धर्म
देशना दीधी. आ पण योग साधननी शक्ति छे एवी अनेक प्रका-
रनी शक्तिउ वीर्यांतरायना क्षयोपशमथी थाय छे, ने ते शक्तिउ
आत्माना हितना काममां वापरे. उपगार अर्थे वा शासन उन्नत्ति
अर्थे फोरवे छे. पूर्ण वीर्यांतरायनो क्षय थाय छे, त्यारे पूर्ण वीर्य
प्रगटे छे; तेने केवल ज्ञान प्रगटे छे. जेथी सर्व लोकना भाव एक
समये जाणे छे. अतीत, अनागत अने वर्त्तमानना भाव पण जा-
णे छे. आवी आत्मानी पूर्ण शक्ति जागे छे, माटे हरेक प्रकारे
वीर्यांतरायनो क्षयोपशम वा क्षय थाय एवो उद्यम करवो. वीर्यनी
रीत एवी छे के अभ्यास करतां करतां वीर्य फोरायमान थाय छे,
माटे वीर्य फोरववानो हमेश अभ्यास करवो. एक माणसने त्या

गाय विआइ. तेनुं वाछरडुं तेणे रोज एक वखत माळ उपर लइने चढवा मांड्युं. एम रोज अभ्यास करवाथी बळद थयो तो ते पण उपाडीने चढवानी शक्ति थई तेम अभ्यास करवाथी शक्ति वधे छे. तप, संयम अने ज्ञाननो अभ्यास हमेश करवो, के वीर्यांतरायनो क्षयोपशम थशे, ने वीर्य वृद्धि पामशे अने जे जीव संसारमां वीर्य फोरवशे, ने धर्मना काममां प्रमाद करशे, तो वीर्यांतराय कर्म नवुं बांधशे ने आ भवमां वीर्य छे तेटलुं पण आवता भवमां मळी शकशे नहि, अने अनादि काळनुं वीर्यांतराय बांधेलुं छे तेथीज आत्माना गुण प्रगट थता नथी, ते मोटो दोष छे. ए रीते पांचे प्रकारनां अंतराय कर्म भगवंते क्षय करी पोताना आत्मगुण प्रगट कर्या छे, ने आपणा जीवे तेवो उद्यम न कर्यो तेथी अनादिनो संसारमां रोळाय छे, अने जन्म मरणनां दुःख भोगवे छे ते दुःखथी मुकावा सारु भगवंतनी आज्ञा प्रमाणे वर्त्तवुं के जेथी आत्माना गुण प्रगट थाय. ए रीते पांच दूषण कह्यां.

छठुं हास्यनामा दूषण तेथी रहित भगवान छे अने संसारी जीव ए दूषणे सहित छे. ए सेववाथी अनादिकाळनो जीव संसारमां रोळाय छे, अने ज्यां सुधी हास्यथी मुकाशे नहि त्यां सुधी आत्मानुं काम थवानुं नथी. हास्य थकी संसारमां पण केटलां दुःख छे ते सघळा माणस जाणे छे, तो पण जागृत करवा लखुं छुं. केटली एक वखत हास्य करवाथी पोतानां डाचां दुःखे छे. हास्यने रोकवा मागे छे तो रोकी शकातुं नथी. वळी जेनुं हांसुं करीए ते वखते मुखे न बोले पण अंतरमां तेने केटलुं दुःख थाय छे! ते जो माणस पोते विचार करे के मारी हांसी करे छे, ते वखत मने अंतरंगमां केटलुं दुःख थाय छे? तेवी रीते सामा धणीने पण दुःख थाय माटे परने दुःख देवुं तेथी वधारे बुराइ शी

छे? वली ते माणस जोरावर होय तो लमाई नन्नी थाय अने मारामारी वा गालागाली थाय तेथी नवुं वेर बंधाय. आ डुःख प्रत्यक्ष छे. वली जेटली वार हास्यमां प्रवर्त्तियें एटली वार सात आठ कर्मनो बंध थाय, ते नदय आवे त्यारे तेनां डुःख नोगववां पमे छे. जेमके कुमारपाल राजानी बेहेन तेमना नर्तारनी साथे सोकटां बाजी रमतां हतां तेमां सोकटी मारतां एटलुं बोलवुं थयुं के कुमारपालना मुंमीआने मार, तेथी कुमारपालनी बेहेनने रीस चढी, ते रीसाइ कुमारपालने त्यां आवी, ने कुमारपालने हकीकत कही ते नपरथी कुमारपाल राजाने रीस चढी के मह्रारा गुरुजीने आवुं कह्युं, माटे जे जीन्ने बोल्यो छे ते जीन्न कढावुं त्यारे छोमुं. एम निचारी युद्ध कर्युं ने बनेवीने हराव्या. छेवट प्रधानोए समजाव्या त्यारे जीन्न काढवी रहेवा देई जामानी पाछल जीन्ननो आकार काढवो ठराव्यो. ए विना पण हास्यथी केटलुंएक नुकशान छे. हास्य करवानी टेववाला लोकमां मश्करा कहेवाय छे. वली आत्म स्वरूपनो विचार करतां ए आत्म गुणथी विपरीत प्रवृत्ति छे. ए प्रवृत्तिमां वर्तवाथी आत्मा मलीन थाय छे. वली आत्मा निर्मल करवानां कारण व्रतादीक तेमां अनर्थ दंम व्रतनां दूषण आवे. माटे जेम बने तेम आत्मा निर्मल करवावालाने हांसीथी मुक्त रहेवुं, के जेथी आत्मा निर्मल थवानो नद्यम थाय. सर्व हास्य मोहनीनो क्षय नगवाने कर्यो छे ते दशाने पामीए एवो नद्यम करवो.

६ रतिनामा दूषण; ते दरेक पुद्गलीक पदार्थने विषे जेने अनुकुल मले तेमां राजी थवुं, प्रतिकुल मले तेमां दीलगीर थवुं ए अनादिनो जीवने जमनी संगतथी अन्यास छे, तेथी जीव तेवी रीते वर्ते छे, अने कर्मबंध करे छे, अने तेज कर्मबंधथी अनादिनो जीव जन्म मरणनां डुःख नोगवे छे. जे जे पदार्थने

जीव अनुकुल माने छे तेज अज्ञानता छे, कारण जे जे जड़ प-
दार्थ छे ते विनाशी छे, आत्मा अविनाशी छे, ते आत्मा अने जड़,
बंने भीन्न पदार्थ थया तो भीन्न पदार्थने पोताना मानवा
एज मूढता छे. वली जे वस्तु जोई रति करे छे, ते वस्तु सदा-
काल रहेवी नथी. केटलाएक खावाना पदार्थ छे ते खावामां रति
करे छे, पण तेज पदार्थथी पुद्गलने उपाधी थाय छे, ने रोग थाय
छे, ने कर्मबंध थाय ते तो जूदो. एवीज रीते आभूषण पहेरीने
खुशी थाय छे, पण शरीरने भार लागे छे तेनो विचार नथी क-
रता, ए अज्ञानतानां फल छे. कुटुंबना संजोगथी राजी थाय छे,
पण एज माणसनी इच्छा प्रमाणे नहि वर्ताय तो शत्रुपणुं करशे
तो एवा अनित्य स्नेहथी राजी थवुं ते मूढता छे, तेमज धन छे
ते जोई राजी थाय छे, पण ए धन केटला काल थीर रहेशे तेनो
लक्ष करशे तो रति नहि थाय, केमके धन आपणुं केटली वखत
गयुं ने आव्युं. वली कदापी कोई माणसनुं हाल गएलुं न होय
तो बीजा केटलाएकनुं गएलुं जोवामां आवे छे, ते जोईए छीए.
माटे एना स्वभाव उपर लक्ष देवो जोईए. अथिर पदार्थ उपर
राजी थशे ने ते ज्यारे नष्ट थई जशे त्यारे दीलगीर थवुंज पड़शे;
ने जे माणस धनना स्वभाव उपर लक्ष देशे ते राजी नहीं थाय,
अने तेथी ज्यारे जशे त्यारे तेने दीलगीर थवुं नहीं पड़शे. धनने
आपणे मुकीने जईशुं, वा धन आपणने मुकीने जशे आ धननो
स्वभाव छे, माटे जे ज्ञानी पुरुषो छे ते धननो त्याग करी संजम
ले छे. संजम लइने धन कुटुंबादीक पदार्थनो त्याग करे छे; वली
शरीरमां रहे छे पण शरीरने मारुं जाणता नथी. तेथी शरीरना
सुख दुःखमां रति अरति नथी करता, तेमज वस्त्रादीक धर्म उपगर-
ण पुस्तकादीमां पण रति अरति न धरतां, एक पोताना आत्म
तत्त्वमां रमी, रति मोहनीनो नाश करी पोताना आत्माना गुण

प्रगट करे छे, अने अनुक्रमे सिद्ध सुखने भोगवे छे, तेमज आत्मार्थीए रति मोहनीनो नाश करवो एज कल्याणकारी छे.

७ अरति मोहनी, ते पण रति प्रमाणे छे, माटे आ जगोए जूदो विस्तार नथी लखतो. जेम रति सारु तेमज अरति सारु पण एमज विचार करी कोई रीते पण अरति न करवी. जे जे अरतिनां कारण मले छे ते ते जड पदार्थ छे, अने पूर्व भवे विषय कषाय तथा अरतिमां वर्तवाथीज कर्म बांधेलां छे, तेथी अरतिनां कारण उत्पन्न थयां छे. हवे ज्ञानी पुरुषोए तो कर्मनुं स्वरूप जाण्युं छे, तेथी जाणे छे जे पूर्व भवे अशुभ कर्म बांध्यां छे, तेथी अरतिनां कारण मल्यां छे, पाछो विकल्प करीश तो एथी पण आकरां कर्म बंधाशे, ने अरति उत्पन्न थशे. जेम कोईनुं देवुं होय ने ते नहि आपीए तो ते फरियाद करे तो वधारे दुःख भोगववुं पडे. माटे जे अशाता वगेरे दुःखनां कारण उत्पन्न थयां छे ते समभावे भोगववां, एवो विचार करी समभावमां रहे छे, ने तेथी वधारे विशुद्धि थाय छे, ने अरति मोहनीनो नाश करी पोताना आत्मस्वभाविक गुण प्रगट करे छे, तेज भगवान् थाय छे, अने तेवीज रीते थयेला छे; अने जेवी रीते भगवान् वर्त्या तेवीज रीते जे आत्मार्थी पुरुष वर्त्तशे ते भगवान् थशे अने अरति नाश थशे.

८ भयनामा दोष. ए भय सात प्रकारे छे. आलोक भय, परलोक भय, आदान भय, अकस्मात् भय, आजीविका भय, मरण भय, अपकीर्ति भय, ए सात भयथीज भयभित संसारी जीव सदा रहे छे, अने परमात्माए तो पोते पोताना आत्मानुं स्वरूप जाण्युं छे के आत्मा अरूपी छे. आत्मानो विनाश थवानो नथी, तेथी कोई प्रकारनो भय राख्यो नहि, तेथीज पोतानुं आत्मपद पाम्या छे. हवे संसारी जीव सात प्रकारनो भय धा-

रण करी रह्या छे. आलोक भय एटले जे जीव जे गतिमां होय तेज गतिना बीजा जीवोथी भय ते आ लोक भय, जेमके पोते मनुष्य छे तो बीजा सरवे मनुष्य आ लोक गणवा.

बीजा मनुष्य मने मारशे, वा मारी नांखशे, वा झेर देशे, शस्त्र मारशे, वा मंत्रथी मारशे, वा मने रोग उत्पन्न करशे, एवी रीतना भय धारण करवा ते मनुष्यने आ लोक भय जाणवो. ए भय जीव अज्ञानपणे करे छे. जो ज्ञान थयुं होय तो समजाय के आत्मा अविनाशी छे. विनाश थशे तो पुद्गलनो थशे, ते पुद्गल मारुं नथी, तो मारे शी बाबतनो भय करवो? बीजी रीते पुद्गलनी स्थिति तथा विनाश पण कर्मना उदय प्रमाणे बनवानुं छे, माटे भय शी बाबत करवो. वली संसारमां पण जे माणस भयभीत थाय छे तेनाथी उद्यम बनी शकतो नथी, ने भयनां कारण हठावी शकतो नथी, पण जेनुं वीर्य फोरायमान थयुं छे ते वीर्यना बलथी हींमत राखी पोतानो आत्म धर्म साधी शके छे. माटे उद्यम करी जेम बने तेम भय संज्ञा हठाववी, केमके उद्यमथी हठी शके छे. आठ दृष्टीमां बीजी दृष्टी प्रगटे छे त्यारे चार संज्ञानो विष्कंभ थाय छे, एटले थंभी जाय छे; एम योगदृष्टि समुच्चयमां हरिभद्रसुरि महाराज कहे छे, माटे भयनी शांति थाय तेम करवुं. अनुक्रमे जेम जेम विशुद्धि थशे तेम तेम सर्व प्रकारे भय रहित थशे, एटले दूषण टलशे.

२ परलोक भय. ते तिर्यंचनो देवतानो भय. ते संबंधीनी चिंता फीकरमां रहे. रखे सर्प, वींछी, वाघ, तथा व्यंतरादि देव, पीडा करे, ए भयनुं स्वरूप उपर प्रमाणे आत्मार्थी पुरुष भावीने भय रहित थई, निज निर्भय गुण उत्पन्न करे छे.

३ आदान भय. ते पोताना घरमां जे जे पदार्थ, धन, आभूषण, वस्त्रादीक वस्तु छे, ते वस्तु रखे कोई लई जशे, चोर

आवी चोरी जशे, वा विनाश पामशे, वा कोईने व्याजे आपीश ते पाण रुपीआ आपशे के नहि, वा वेपारमां खोट जशे, एवी रीतना नयनी चिंता करवी ते आदान नय. एवो नय करवो तेनुं चिंतवन करवुं, तेने ज्ञानी पुरुषो आर्त्त ध्यान, तथा रौद्र ध्यान कहे बे, अने ए ध्यानथी जीव नरक, तिर्यंचनी गति बांधे बे, माटे ज्ञानी पुरुष होय ते तो विचार करे के, ए वस्तु मारी नथी. कर्मना संजोगथी अज्ञान दशा थई बे, ते अज्ञान दशाए करी ए वस्तु उपर ममत्व नाव थयो बे. ते ममत्व नावथी नय थयां करे बे, ए मारे करवा जोग नथी. एवी नावना नावी, नय संज्ञा उतारे बे, के ए धनादीक वस्तुनो स्वनाव अथीर बे, ज्यां सुधी पुन्य बलवानबे त्यां सुधी जवानुं नथी, अने ज्यारे पापनो उदय थयो त्यारे राखी मुकेलुं धन रहेवानुं नथी, माटे जीव शा सारु ममत्व नाव करे बे, एवी रीते नावी, नय संज्ञाथी निर्नय थाय बे. विशेष ज्ञान थाय बे, त्यारे संसारनो त्याग करे बे, संजम ले बे. तेथी एवी वस्तु त्याग करवी, एटले नय रहेवानो नथी. अने पोतानी पासे धर्म उपगरण तथा पुस्तक होय बे, तेनो पण नय राखता नथी. पोताना आत्माने नावे बे, ने पोताना आत्माने नाववाथी सर्वथा नय संज्ञानो नाश करे बे, अने आत्माना गुण संपूर्ण प्रगट करे बे.

४ अकस्मात् नय. ते बाह्य कारण विना, अकस्मात् मनमां नयभ्रांत थाय, मर लागे, ए कर्मना उदयना प्रनावथी बे. एवा नय पण कर्मनी बोहोलताथी थाय बे. जेने आत्म गुण प्रगट थया बे तेमने एवा नय लागता नथी.

५ आजीवीका नय समवायांगजीमां कह्यो बे, अने गणांगजीमां वेदना नय कह्यो बे माटे ते नयनुं स्वरूप लखुं बुं. पोतानी पेट पुरणी पुरी थवा संबंधी नय करी रहो बे पण

दुनियामां गरीब अने धनवान कोई पण अन्न खाधा विना रहेता नथी. आजीवीका पुरी थवी छे ते तो पूर्वना कर्मने अनुसरतुं बनवानुं छे, पण ते कर्मनुं ज्ञान नथी तेथी फीकर करे छे. हरेक काम उद्यमथी बने छे माटे उद्यम करवो पण जय धारण करवो ते मूढता छे, अने ए मूढताए करी काम करवानुं करी शकतो नथी, अने नवा नवा विकल्प करी कर्मबंध करे छे. वली धनवान पुरुष छे तेमने आजीविकानी कांई कसर नथी, तो पण आगला काल संबंधी विचित्र प्रकारनी चिंता कर्या करे छे. वरसाद तणायो तो शुं खाइशुं? वरसाद न आव्यो तो शुं खाइशुं? रसोईयो जतो रह्यो तो शुं खाइशुं? कोई चीज मोंघी थई तो शुं खाइशुं? एवा विचित्र प्रकारना आजीवीका संबंधी जय धारण करी कर्म बांधे छे. धनवान माणसने नवली वखतमां ने सारी वखतमां धने करी सर्व चीज बनी जाय छे, ते छतां पण अज्ञानताने लीधे जयजीत रहे छे, ने ज्ञानवंत पुरुषोने तो थोडुं ज्ञान थयुं छे पण स्वपर ज्ञान थयुं छे. ते ज्ञानने प्रजावे प्रथम तो कर्मनी खातरी छे, तेथी तेमने जय रहेतो नथी. बीजी रीते अशुन कर्मनो उदय थयो, अने आजीविकामां हरकत पडे छे, तो विचारे छे के पूर्वे कर्म बांध्यां छे तेनां फल छे. विकल्प करवाथी शुं फायदो छे? एम विचारी जय राखता नथी, अने बनतो उद्यम करे छे, अने अतिशे विशुद्ध छे ते तो जरा पण जय राखता नथी. पोतानी आत्म जावना विचारे छे. जेम ऋषजदेव स्वामीने वर्ष दिवस सूधी आहार मल्यो नहि, पण तेनो विकल्प नथी, तेने करी वरसी तप थयो, अने अंते जय मोहनी क्षय करी निर्जय गुण प्रगट कर्यो, तेम आत्मार्थी पुरुषे करवुं, के जय मोहनी नाश थाय. हवे वेदनी जय ते रोग आवेथी दुःख सहन न थाय एटले अनादिनो जय छे ते प्रगट थाय, जे रोग वधे नहि, रोग

न होय तो रोग आववानो भय, एवा भय वदल तपस्या प्रमुख करे नहि. तपस्या करवाथी नवुं वेदनी कर्म उदय आववानुं ते क्षय थाय छे अने ते वदल अवला विचार करे ते मूढतानुं लक्षण छे, अने आत्मार्थी जीवो तो वेदनाथी बीता नथी. वेदना थाय तो विचारे छे, के पूर्वे जे जे वेदनी कर्म वांध्यां छे ते आवा वोधना (ज्ञानना) वखतमां उदय आवशे तो समभाव भोगवीश, अने घणा काल दुःख भोगववानुं ते थोडा कालमां भोगवई जशे. नवो कर्म वंध थशे नहि. वली विशेष विशुद्धिवंत तो जाणे छे के वेदना थाय छे ते शरीरने थाय छे, मारा आत्माने थती नथी, एवीज रीते महावीर स्वामी भगवानने सखत उपसर्ग संगम देवे तथा व्यंतरीए कर्या पण जराए भय धारण कर्यो नहि, ने वेदनानुं दुःख धारण कर्युं नहि, तो पोताना आत्मानो केवल ज्ञान गुण प्रगट कर्यो, तेमज जेने पोताना आत्मानुं कल्याण करवुं छे तेणे पण महावीर स्वामी भगवाननो मार्ग धारण करवो, के पछी कोई तरेहनो भय रहेशे नहि, ने निर्भय दशा प्रगट थशे.

६ मरण भय ते प्रसिद्ध छे. अनादि कालनी मरण थवानी संज्ञा चाली आवे छे, तेने प्रभावे देवता पण आवता भवनो, छ मास अगाउ वंध करे त्यारथी झूरे. तेमज मनुष्यनी समजणनी उमर थाय त्यारथी मरण भयनी विचारणा थया करे छे. हवे जे ज्ञानी पुरुषो छे ते अंश मात्र पण मरणनो भय करता नथी, कारण के आत्मा मरतो नथी. मरे छे ते पुद्गल छे. तो जेटली आउखानी स्थीति छे त्यां सुधी आ शरीरमां रहेवुं छे, तो भय शा माटे करवो. कदापी संज्ञाथी चित्तमां आवे तो विचारे जे आउखानी चंचलता छे. तो धर्म साधन करवामां प्रमाद न करवो, कारण जे धर्म साधन मोक्षनुं करवुं छे तेतो मनुष्यनी गतिमां थई शके छे. वीजी गतिमां एवुं साधन थवानुं

नथी, माटे जेम बने तेम अप्रमादपणे धर्म करवामां तत्पर रहेवुं. आवते काले करवानो विचार करीश, पण आवते काले शुं थशे ते खबर नथी, माटे जेम उत्तराध्ययनजीमां कह्युं छे के हे गोयम! समय मात्र प्रमाद म कर, ते उपदेश धारण करी जेम आत्मानी निर्मलता थाय तेम उद्यम करवो, ने तप संजम साधतां शरीर नरम पडे छे वा देवतादिकना उपसर्ग थाय छे तो पण मरणनो जय करता नथी, आत्माने जावता विचरे छे. परिसहनी फोजथी बीता नथी. पोतपोताना ध्यानमां तत्पर रहे छे. तेवीज रीते आत्मार्थीए रहेवुं. जगवंत ए जय क्षय करी सिद्धि सुखने पाम्या छे, तेम तेमनी आज्ञा छे. तेवीज रीते वर्त्तिशुं तो मरणनो जय नाश थशे.

७. सातमो अपकीर्त्ति जय. ए शक्ति उपरांत कीर्त्तिनी इच्छा करे, काम अपकीर्त्तिनां करे छे, कीर्त्ति ते क्रियाथी थाय. जो लुच्चाई, दोंगाई, चोरी, जूठु बोलवुं, परदारा गमन, पारकी निंदा, परने दुःख देवुं, पारकुं खाई जवुं, वेपारमां अन्यायथी बोलवुं, वांकु बोलवुं, आ कृत्यो जे नहि करे, अने दुःखीने सुखी करवो, पारकुं काम करवामां तत्पर रहेवुं, धनने अनुसरतुं दान देवुं, वली केटलाएक तो दान एवी रीते करे छे के पोते खाय नहि, बीजाने आपवा तत्पर थाय, एवी वर्तना करे तो सहेजे कीर्त्ति थाय. पण छतुं धन होय ने जीखारी बूम पाडीने मरे तो जराए दान न आपे, अने अपकीर्त्तिनो जय करे. अपकीर्त्तिनो जय राखी माठी आचरणा न आचरे तो उत्तम छे. अज्ञानताए अपकीर्त्ति थाय एवुंज कारण सेवे, पण ज्ञानी पुरुषो तो पोताना आत्माना दानादीक गुण छे, ते प्रगट करवामां उद्यमवंत थया छे. केटलाक गुण प्रगट थया छे, तेमां पण कीर्त्तिनी इच्छा नथी, अने अपकीर्त्तिनो जय नथी. तेमज जेम उत्तम पुरुषे कोई जीवने दुःख थाय एवी वर्त्तना करी

नथी, तेवीज रीते कोई जीवने दुःख थाय एवी वर्त्तना करवी नहि के सहेजे अकीर्त्तिनो नय टली जशे. आ रीते साते नयने जाणीने जेम महात्मा पुरुषोए निर्नय दशा प्रगट करी तेम करवुं. आत्म गुण प्रगट कर्यो के ते गुण जवानो नय राखवो पमशेज नहि, ते नित्य गुण छे. अनित्य गुणनो मोह छे त्यां सुधी जीवने नय रहेशे वास्ते त्याग करवो, एटले सहेजे नय टली जशे.

१० शोकनामा दूषण. ते संसारी जीवने रात दिवस लागी रह्युं छे. कुटुंबमांथी मांदु थाय वा कोई मरी जाय तो माणस शोक एटलो करे छे के, केटलाएक माणस अती शोके मरी जाय छे, वा मांदा पमे छे, शरीर सुकाइ जाय छे, केटलीएक स्त्रीउ गतीमांथी लोही काढे छे, केटलीएकनी छातीमां दरद थाय छे, आवी उपाधि शरीरने थाय छे, तेना उपर लक्ष न देतां ते काम कर्यां जाय छे, आवां फल पामवानुं कारण अज्ञानता छे. वली वजारनी अंदर महोटा चकला उपर पण एवी तरेहथी कूटवाथी वीजा जीवने पण ए दुःख जोई दीलगीरी थाय छे. हालना राजकर्त्ताउने ते वात पसंद नथी. तेमज राजद्वारीना अधिकारीउने पण ते वात पसंद नथी, तेम छतां आ काम करे छे. वली केटलीएकना मनमां तो एवुं पण रहे छे के, आपणे कूटशुं नहि तो लोकमां शोना नहीं रहे, एटले कूटीने पण लोकमां शोना लेवी छे.आ केटली वधी मुर्खता? विद्वानोने पण वहु दीलगीरि आवे छे.आ नुकशान तो आ लोक संवंधी छे, वली परनवने विषे ए पापने लीधेज नरक, तिर्यंचनी गतिने पामे छे, तो आवां काम करवाथी आलोक तथा परलोकमां वे ठेकाणे दुःख नोगववानां थाय छे. वली ज्ञानवंत पुरुषो तो एटलो विचार करे छे के, जे चीजनो संजोग तेनो वियोग छे ज. कांतो आपणे कुटुंवने मुकीने जइए, अथवा कुटुंव आपणने मुकीने जाय, आ वेमांथी एक रीते

विजोग थवानो छे. जे जे वस्तुनो जे जे स्वन्नाव छे, ते जाणीने जराए शोक करता नथी. वली धन जाय छे, गुमास्तो जाय छे, वस्त्र जाय छे, घर जाय छे, एवी इच्छित वस्तुना जवाथी शोक करे छे, तेमां विचारवानुं के इच्छित वस्तु पूर्वना पुन्यथी थीर रहे छे, पुन्य पुरुं थयुं के विजोग थाय छे. पछी गत वस्तुनो शोक करवाथी कांई फायदो नथी. केटलाएक माणसने अपमान थवाथी शोक थाय छे, पण अपमान तो नहि करवा योग काम करवाथी वा नहि बोलवा योग बोलवाथी थाय छे, वा पुन्यनी खामीथी अपमान थाय छे, माटे ते काम तजे तो अपमान थाय नही, शोक करवाथी फायदो नथी, ते छतां शोक करे छे, एवी रीते जे जे बाबतनो शोक करे छे ते ते बाबतथी पाप कर्म बंधाय छे, शोक थकी शरीर नरम थाय छे, बुद्धिनी पण हानि थाय छे, शोकनां कारण टळवानो पण उद्यम थतो नथी, तेथी वधारे शोक उत्पन्न थाय छे. आ प्रमाणे प्रत्यक्ष फलने पण अज्ञानपणे जीव विचारता नथी, अने जे ज्ञानी पुरुष छे तेमने शोकनां कारण उत्पन्न थाय छे, तो तेमां न्नावे छे के मारा आत्मा शिवाय बीजो मारो पदार्थ नथी. जे पुद्गलीक वस्तु छे ते तो संजोग विजोग संजुक्त छे, एटले मारे शी बाबतनो शोक करवो. जे जे बने छे ते पूर्वे कर्म बांध्यां छे, तेने अनुसरतुं बने छे. माटे जे जे कर्म उदय आव्यां ते ते समन्नावे न्नोगववां, एटले ते कर्मनी निर्जरा थाय अने आत्मा निर्मल थाय, एवी दशा बनी जाय तो जीवने शोक थाय ज नहि. न्नगवान तो आत्मगुण सिवाय बीजी परन्नाव दशा जे जे जरुन्नावनी वर्त्ते तेमां रागद्वेष करे ज नहि, तेमणे शोक मोहनी कर्मनो नाश करी पोताना आत्माना गुण प्रगट कर्या. वली जेने आत्माना गुण प्रगट करवा होय तेणे तेमज वर्त्तवुं के आत्माना गुण प्रगट थाय.

११ दुगंछा. ते कांई खुशबोवाली चीज जोईने प्रसन्न थाय ने खराब खुशबो जोई दीलगीर थाय, वली जे जे पदार्थ पसंद नहीं आवे ते पदार्थ दुगंछनीक लागे छे. ए प्रवृत्ति जीवने अनादिनी बनी छे, पण ज्ञानवंत पुरुषे तो वस्तुनो स्वभाव जे जे रह्यो छे ते ते जाण्यो छे, एटले कोई पण वस्तुनी दुगंछा करता नथी. जे जे कारण मले छे ते पूर्वना कर्मना उदय प्रमाणे मले छे, तेथी समभावमां रही तेना विकल्प करता नथी, तेमना मनथी तो जे जे जड पदार्थ आत्माने घात करता छे, तेना उपर सेहेजे दुगंछा थाय छे अने अज्ञानी जीव जेने जे पसंद पडे तेमां राजी थाय छे, खुशी थाय छे, पण विषयादिकनां फल विचारता नथी, के नरकमां एनां केवां दुःख भोगववां पडशे? तेवी ज रीते जन्म मरणनां केवां दुःख भोगववां पडशे? प्रत्यक्ष ढेढनी जातीने जुवो के तमे जेनी दुगंछा करो छो, तेवी वस्तु लई माथे मुकीने ज्यां फेंकवानी जगा होय त्यां फेंकवी, आ काम शाथी करवुं पडे छे के पाछले भवे जे काम नहीं करवा योग, ते काम कर्यां तेनां फल छे. तो आपणने पण विषय नहि सेववा भगवंते कह्युं छे ने जो भोगवशे, तेने एवां दुःख भोगववां पडशे, तो ए विषयादि दुगंछनीक जाणी त्याग करवाने आत्माना गुणमां वर्त्तवुं. भगवंते एवी रीते वर्त्ती दुगंछा मोहनीनो नाश करी पोताना सहज स्वभाविक गुण प्रगट कर्या, तेम आपणा पण प्रगट थाय.

१२ कामदोष. ए दोष सर्व मांही सरदार छे. कामने वश पडीने जीव महा पुरुष थवाय एवी तक पामीने पाछा पडी जाय छे. संसारी जीव अनादि कालना कामने वश पड्या छे, तेनी संज्ञा चाली आवी छे, बालक अवस्थामां पण कामनी चेष्टा करे छे संसार भ्रमणनुं कारण काम छे. कामने वास्ते मातानो, पितानो, भाइनो, छोकरानो, मित्रनो नातीनो

सर्वेनो संबंध जीव तोडे छे. धननो पण ए विषयादिक कामने वश पडवाथी नाश थाय छे, शरीर पण निर्बल थाय छे, आयुष्य-नी पण हानी थाय छे, आटला दुःखनो जीवने प्रत्यक्ष अनुभव थाय छे पण जीव अनादि कालनो कामने आधीन रहेवाथी कामांध थयो छे, ते अंधपणे करी कोई पण नुकशान के दुःख जो-तो नथी. केटलाएक राजाउ कामने लीधे राज भ्रष्ट थाय छे, ते नजरे जोवामां आवे छे, पण जीवने भान थतुं नथी. केवी आश्चर्यनी वात छे! के कर्म केवा प्रकारे नचावे छे, कामांधपणे केटलाएक पोतानी छोकरी, पोतानी बहेन, पोतानी मा, तेनो पण विचार राखता नथी, तो बीजी स्त्रीनो तो शुं विचार रा-खे. केटलीएक माता कामने वश पडी पोताना पुत्रनो नाश करे छे, पोताना धणीनो नाश करे छे, आवी कामनी दशा पीडे छे, ने तेथी आ लोकनां दुःख आवी रीते अनेक प्रकारे भोगवे छे अने परलोकनां दुःख सांभलवां होय तो सुगडांग सूत्रथी जोई लेवुं. भवभावना ग्रंथथी जुउ नरकने विषे परमाधामी लोढानी धगधगती पुतलीए वलगाडे छे, नरकमां पग मुकवानी जगो छे ते एवी छे के जेवी रीते तरवारनी धार उपर पग मुकवो तेवी रीते छे, उष्ण वेदना एवी छे के हजारो मण बलता काष्ठनी चेहमां सूवे ते करतां पण वेदना वधारे थाय छे सीत वेदना एवी छे जे टा-ढनो जोडो नथी, मने एटली अग्नीए करी शरीर शेके तो पण टाढ नीकलती नथी. जन्मनी जगा एवी छे के राइ राइ जेवा क-कडा करीने उपजवानी जगोमांथी बाहार काढे. वैक्रिय शरी-रनो स्वभाव एवो छे के, बधा ककडा एकठा थया के पारो जेम मली जाय छे तेम शरीर भेगुं थाय, एटले पाछा परमाधामी अनेक प्रकारनी वेदना करे छे. आवां दुःख टुंकां आउखां मनु-ष्यनां तेमां अल्प काल सुख मानीने, मोटा सागरोपमना आउ-

खां सुखी डुख नोगववानां छे, एवुं केटलाएक जीवो जाणे छे पण कामांधपणे डुःखनो लक्ष न आवतां ए काममां अंध थई रहे छे. जे पुरुष अथवा स्त्रीने ते नव स्थिती परिपक्व थई छे, ते पुरुष संसारनो त्याग करी पोताना आत्म स्वरूपमां आणंदपणे रहे छे. केटलाएक बाह्यथी स्त्रीनो त्याग करे छे पण अंतरंगमांथी चित्त खसतुं नथी, तो पाछा संसारमां आवे छे केटलाएक संसारमां आवता नथी पण चित्त वगमेलुं रहे छे, केटलाएकने राग रहे छे, ने ज्यारे स्त्रीनुं मुख जोवे त्यारे शांत चित्त रहे छे, एवी अनेक प्रकारनी कामनी विटंबना छे पण दृढ अनुराग आत्मतत्त्वमां जेनो थई गयो छे, एवा सुदर्शन शेठ जेने अन्नयाराणीए शरीरे विचित्र प्रकारे फरस कर्यो. अवाच्य प्रदेशने बहु विटंबना करी तो पण काम दीप्त न थयो. राजाए जेने शूलीए नोंकवा मोकल्या तो शीलना प्रन्नावथी शूली मटी सिंहासन थयुं, आ महिमा काम जीतवानो छे. चक्रवर्त्ती राजा जेने एक लाख वाणुं हजार स्त्री छे तेना नोगना करनार पण ज्यारे ज्ञान दशा जागे, त्यारे स्त्रीना सामुं पण जोता नथी, एवी रीते काम जीते छे तेमज नगवाने सर्वथा कामने जीत्यो, तेथी कामनामा दूषण नष्ट थयुं. ने नगवान् थया छे, तेम जेमने आत्माना गुण प्रगट करवा होय, तेमणे कामनी इछाथी मुक्त थवानो अन्यास करवो. अन्यासथी सर्व चीज बने छे, काम सेववो ए जम धर्म छे, आत्म धर्म नथी. आत्माना स्वन्नावथी बहार वर्त्तवुं नही, एवा नाव आववाथी सहेजे काम जीताई जाय छे. कामने जेणे जीत्यो तेणे डुनीयामां सर्व जीत्युं. पछी सर्व जीतवुं सुलन्न थाय छे. जे जे पुरुषोए काम जीत्यो छे, तेना चरित्र वांचवानो उद्यम करवो. शीलोपदेशमाला वांचवाथी काम जीतवाना लान्न समजाशे. नीकट मुक्तिनो उपाय काम जीतवो एज छे.

१३ अज्ञाननामा दोष. ए अज्ञान दोष पण अनादीनो छे तेथी करी आत्मा शुं चीज छे, शरीर शुं चीज छे, सुख दुःख शाथी आवे छे तेनुं ज्ञान यथार्थ थतुं नथी. शरीरना दुःखे दुःखीउ थाय छे, कुटुंबना दुःखे दुःखीउ थाय छे, सुगुरुने कुगुरु माने, कुगुरुने सुगुरु माने, कुदेवने सुदेव, ने सुदेवने कुदेव, सुधर्मने कुधर्म, ने कुधर्मने सुधर्म माने छे. शातानां कारणने अशातानां कारण माने छे, अशातानां कारणने शातानां माने छे. जे जे प्रवृत्ति जरूनी करे छे अने पोतानी माने छे, धर्म प्रवृत्ति करे तो अधर्म थाय एवी करे छे. धन कुटुंब मले छे, ते पर वस्तु छे. ते छतां ते पोतानी मानी आनंद थाय छे, ज्ञानवंतने ज्ञानवंत जाणतो नथी, तत्त्वज्ञान थाय एवो उद्यम करतो नथी, अज्ञानना जोरथी पांच इंद्रिना त्रेविश विषय तेमां लुब्ध वर्त्ते छे. ज्ञानी पुरुषे बतावेल खट द्रव्य पदार्थ तथा तेना गुणपर्याय, तेनुं ज्ञान करतो नथी. नव तत्त्व तेनुं ज्ञान थतुं नथी, अष्ट कर्मनुं पण स्वरूप जाणतो नथी, केटलाएक धर्मवाला कर्म माने छे पण कर्म शुं पदार्थ छे, ते जाणता नथी. कर्म केम आवी बंधाय छे, कर्म केम उदय आवे छे, कर्म केम निर्जरी आत्मा निर्मल थाय छे, ते अज्ञाने करी जाणी शकतो नथी. आ माहात्म्य अज्ञाननुं छे. केटलांएक खोटां कर्मनां जोर प्रत्यक्ष छे, तो पण अज्ञानना जोरथी ते लक्षमां आवतां नथी. कोई पण जीवने मारी नांखे छे तो सरकार फांसी दे छे, ते प्रत्यक्ष जुए छे तो पण केटलाएक माणस फांसीए जवानी बीक राखता नथी अने एवां कृत्य करे छे. मृषा बोलवाथी खोटी प्रतिज्ञानुं काम चाले छे, चोरी करवाथी केदमां जाय छे, आवा प्रत्यक्ष दाखला बधा माणसना समजवामां छे. जार कर्मथी पण केदमां जाय छे पण अज्ञानपणे ते बाबतनो लक्ष थतो नथी, ने एवां खोटां काम कर्यां जाय छे. अज्ञानताए राज विरुद्ध आचरण पण

करे छे, ए अज्ञान खसेडवाना जाव थाय तो ज्ञान अभ्यास करवो. शास्त्र जणवाथी, सांजलवाथी, खट ड्व्यनुं ज्ञान थाय छे ते खट ड्व्य कहीए छीए.

१ धर्मास्तिकाय. ते अजीव ड्व्य, अरूपी, अचेतन, अक्रिय, चलन साह्य गुण ते जीव तथा पुद्गल चाले तेने सहाय करवानो धर्म छे. इहां शंका थशे के चाले तेने सहाय शुं करवी छे, ते विषे समजवुं के माछलुं पाणीमां तरे छे. हवे तरवानी शक्ति तो पोतानी छे पण पाणीनी सहाय जोईए छीए, पाणी विना तरी शकतुं नथी. तेम जीव तथा पुद्गल चाले तेने धर्मास्तिकायनी सहाय जोईए.

२ अधर्मास्तिकाय. एनो स्वजाव धर्मास्तिकायथी विपरीत छे, स्थिर रहेवाने सहाय करे छे. मनुष्य पाणी होय छे ने तरतां आवडतुं होय तो तरे छे पण ते थाकी जाय, तो कोई टेकरी अथवा ठवारानी सहाय मली आवे छे, तो स्थिर रही शके छे, पण जो एवी सहाय न मले तो स्थिर रही शकतो नथी. वली तडकेथी आवतां जो थाक्या होय तो, फाड अथवा विसामानुं स्थानक मले छे तो बेसे छे. तेमज अधर्मास्तिकायनी सहायथी जीव पुद्गल थीर थाय छे, ए ड्व्यना पण चार गुण छे. अमूर्ति एटले रूप नहि, अचेतन एटले जीवरहित, अक्रिय एटले विजावीक कांई पण क्रीया करवी नहि, अने स्थीर सहाय गुण ते उपर प्रमाणे स्थिर पदार्थने सहाय करे छे.

३ आकाशास्तिकाय. ते लोक जेमां छ ड्व्य पदार्थ रह्या छे तेने लोक कहीए. अलोक जेमां आकाश सिवाय पदार्थ नथी. एवा लोकालोकमां व्यापीने आकाश ड्व्य रह्युं छे, तेना पण चार गुण छे अरूपी एटले रूप नथी, अचेतन ते जीव रहित, अक्रिय ते कोई जातनी क्रीया करवी नथी अने अवगाहना गुण

ते जीव पुद्गल पदार्थने रहेवाने जगो आपे छे. कारण आखा लोकमां जीव पुद्गल भरेला छे, तेमां जगो नथी ते आकाश जगो करी आपे छे. ईहां शंका थशे के जगो नथी, ते केवी रीते करी आपे छे, ते विषे जाणवुं जे भींतमां जरा पण जगो नथी होती पण खीलो मारीए तो दाखल थई शके छे, तेम आकाशास्तिकाय जगो करी आपे छे.

४ कालद्रव्य तेमां प्रथम वर्त्तना काल सूर्यनी चाल उपरथी गणाय छे, जेमके सूर्य अस्त थाय छे अने उदय थाय छे, तेना उपरथी गणत्री थाय छे, ते गणत्री संबंधी काल छे. तेनुं माप सात श्वासोश्वासे एक स्तोक थाय, सात स्तोके एक लव थाय छे, सत्योतेर लवे एक मुहूर्त्त बे घडीरूप थाय छे, एवा ३० मुहूर्त्ते दिवस थाय छे, त्रीश दिवसे एक मास थाय छे, एवा बार मासे एक वर्ष थाय छे एवां पांच वर्षे युग थाय अने वीश युगे एकसो वरस थाय. दश सोए एक हजार थाय, एवा सो हजारे लाख थाय. एवा ८४ लाख वर्षे एक पूर्वांग थाय. एवा ८४ लाख पूर्वांगे एक पूर्व थाय. एक पूर्वना आंक ७०५६०००००००००० एवां चोराशी लाख पूर्वे करी एक त्रुटिटांग थाय अने ८४ लाख त्रुटिटांगे एक त्रुटित थाय. चोराशी लाख त्रुटिते एक अडडांग थाय. चोराशी लाख अडडांगे करी एक अडड थाय अने चोराशी लाख अडडे एक अववांग थाय. चोराशी लाख अववांगे एक अवव थाय. चोराशी लाख अववे करी एक हुहुकांग थाय. चोराशी लाख हुहुकांगे एक हुहुक थाय, चोराशी लाख हुहुके एक उत्पलांग थाय. चोराशी लाख उत्पलांगे करी एक उत्पल थाय, चोराशी लाख उत्पले करी एक पद्मांग थाय. चोराशी लाख पद्मांगे एक पद्म थाय, चोराशी लाख पद्मे करी एक नलीनांग थाय. चोराशी लाख नलीनांगे करी एक नलीन थाय. चोराशी लाख

नलीने करी एक नीपुरांग थाय. चोराशी लाख नीपुरांगे एक अर्थ नेपुर थाय, अने चोराशी लाख अर्थ नेपुरे करी एक अयुतांग थाय अने चोराशी लाख अयुतांगे करी एक अयुत थाय. चोराशी लाख अयुते करी एक प्रयुतांग थाय अने चोराशी लाख प्रयुतांगे एक प्रयुत थाय. चोराशी लाख प्रयुते एक चुलीकांग थाय. चोराशी लाख चुलीकांगे एक चुलीका थाय. चोराशी लाख चुलीकाए करी एक शीर्ष प्रहेलिकांग थाय. तेने चोराशी लाख गुणा करीए त्यारे शीर्ष प्रहेलीका थाय. ए गुणाकारनो आंक १९४ अक्षरनो थाय. ते नीचे प्रमाणे. ७५८२६२२५३०७३०१०२४११५७९७३५६९९७५६९६४० ६२१८९६६८४८०८०१८३२९६०००००००००००००००००००००००
००
००
००००००००००००००००००००००००० आ प्रमाणे अनुयोगद्वार सूत्रनी टीकामां छापेली चोपडीना पाना २४५ मामां छे ते उपरथी लख्युं छे. १९४ अक्षरनी संख्या छे एथी अधिक संख्या गणवी मुश्केल पडवाथी वधारे आंक दर्शाव्या नथी पण बीजी रीते संख्या मनमां समजी शकाय. मोढे बोली शकाय नहि. वली वत्तुं ओछुं समजाय ते सारु वताव्युं छे के एक कुवो चार गाऊ ऊंडो, चार गाउ पहोलो, चार गाउ लांबो एवो एक कुवो तेमां जुगलीआना सात दीवसना बालकना नीमाला ते नीमाला एकना असंख्याता ककडा करवा, अने तेवा ककडाए करी आ कुवो भरवो ते एवो सज्जड भरवो के ते नीमाला उपरथी चक्रवर्तीनी स्वारी जाय तो पण कुवाना नीमाला दवाय नही, पाणी अंदर प्रवेश न करी शके, एवो सज्जड कुवो भरवो; तेमांथी सो सो वर्षे एक एक नीमालो काढवो. एवी रीते सो सो वरसे नीमाला काढवाथी कुवो खाली थाय त्यारे एक पल्योपम थाय. एवा दश

कोमाकोमी पल्योपमे एक सागरोपम थाय. एवां सागरोपम नां नरक तथा देवतानां आउखां छे. बीजी पण गणत्रीज काम लागे छे. आ कालनुं स्वरूप, जगत्‌ना जीवना आउखा वगेरेनी गणत्रीमां आवे छे, ए चंद्र सूर्यना आधारथी काल केहेवो छे तेने काल द्रव्यमां स्वाभावीक गणता नथी. हवे काल द्रव्य कोने कहे छे के छए द्रव्यना अगुरु लघु पर्यायनी वर्तना थाय छे, ते वर्तना एकथी बीजी थवी तेनुं नाम समय छे. तेज कालद्रव्य उपचरित छे. पदार्थ रूप नथी. कारण जे द्रव्यनी वर्तना अपेक्षित छे तेथी पदार्थ रूप नथी. कालनो गुण नवी वस्तुने जुनी करवानो छे. काले जे वस्तु बनी ते आजे जुनी कहेवाशे, आजे करी ते नवी कहेवाशे, ए काल अपेक्षित कहेवाय छे. काल छे ते अरूपी. अचेतन अक्रिय नवा पुराण गुण छे ए रीते कालद्रव्यनुं स्वरूप जाणवुं.

५ मो द्रव्य पुद्गलास्तिकाय. तेना चार गुण. मूर्त एटले देखाय छे. अचेतन एटले जीवपणुं नथी, सक्रिय एटले मलवा वीखरवा रूप क्रिया करे छे वली जीवनी साथे रहीने क्रिया करे छे माटे सक्रिय छे. तथा मलन विखरण गुण छे. जे पुद्गल परमाणु ने पुद्गल द्रव्य कह्यो छे ते परमाणु केवो सूक्ष्म छे ? बाल्यो बले नहि, छेद्यो छेदाय नहि, दृष्टिने अगोचर छे. एवा बे परमाणु मली खंध थाय छे, तेने द्वीप्रदेशी खंध कहे छे. एम त्रण चार आदे परमाणु मली खंध थाय छे, ते खंध दृष्टीगोचर आवता नथी. अनंता परमाणु मलीने जे खंध थाय छे ते दृष्टीने गोचर आवे छे ते व्यवहार परमाणु कहेवाय छे, निश्चय नये तो खंध कहीये. व्यवहारथी परमाणु कहेवानुं कारण ए छे के ए पण बाल्या बले नही शस्त्रथी छेदाय नही अने एक परमाणुमां एक वर्ण, एक गंध, एक रस अने बे फरस रह्या छे. वर्तना प्रमाणे अने सत्ता प्रमाणे तो पांच वर्ण, बे गंध, पांच रस, आठ फरस रह्या छे तेथी परमाणुना

पर्यायनुं पलटनपणुं थाय छे ते पलटनपणे सत्तामांथी वर्त्तनारूप कालानो पीलो थाय पीलानो लाल प्रमुख थाय, एम फेरफार थाय छे. आ अधिकार अनुयोगद्वार सूत्रमां छापेली प्रतमां पाने ३७० मे छे त्यांथी जोवो. एवो परमाणुनो स्वभाव छे. तेथी एक छुटा परमाणुने निश्चय परमाणुं कह्युं छे अने बीजाने व्यवहार परमाणु कहेवाय छे. निश्चय नये तो खंध कहीए. व्यवहारथी परमाणु कहेवानुं कारण एटलुं छे के दृष्टिने अगोचर छे ए पण बाल्या बले नहीं, शस्त्रथी छेदाय नहीं. ए व्यवहारीक परमाणु अनंताए उतश्लक्ष्ण श्लक्ष्णिका ते आठे करीने श्लक्ष्ण श्लक्ष्णिका कहीए तेथी आठ गुणानुं नाम उर्ध्वरेणु तेवी आठ उर्ध्वरेणुए एक त्रसरेणु थाय, जे सूर्यना प्रकाशथी छापराना होरीयामांथी देखाय छे ते, एवी आठ त्रसरेणुए एक रथरेणु थाय, रथ चाल्ये जे आकाशे रज उडे ते, आठ रथरेणुए एक देवकुरुना युगलीआ मनुष्यनो वालाग्र थाय, एवा आठ वालाग्रे एक हरिवर्षना मनुष्यनो वालाग्र थाय, आठ ए वालाग्रे हेमवंतना मनुष्यनो वालाग्र थाय, एवा आठ वालाग्रे महाविदेहना मनुष्यनो वालाग्र थाय, एवा आठ वालाग्रे भरतक्षेत्रना मनुष्यनो वालाग्र थाय, एवा आठ वालाग्रे एक लीख थाय, आठ लीखे एक जू थाय, आठ जूए एक जवमध्य थाय. आठ जव मध्ये एक आंगुल थाय, छ आंगुले एक पाद थाय, बार आंगुले वेंत थाय, चोवीश आंगुले एक हाथ थाय, एवा चार हाथे एक धनुष्य थाय, एवा बेहजार धनुष्ये एक गाउ थाय, एवा चार गाउए एक जोजन थाय, एनां त्रण प्रकारनां मान छे, ते अनुयोगद्वार सूत्रमां पाने ३९५ मे जोइ लेवुं. आ मापनी वचमांना खंधो तथा एथी मोहोटा खंधो अनेक प्रकारना थाय छे, विचित्र संस्थान विचित्र मापनां थाय छे. परमाणु घणा अने अवगाहना नानी; परमाणु एथी ओछा ने अवगाहना मोटी, केटलाएक खंध

दृष्टिए देखाय, हाथमां पकडाय नही, केटलाएकना फरस जणाय पण नजरे देखाय नही, केटलाएक गंधथी जणाय पण नजरे गंध देखाय नही. एम विचित्र स्वभावना पुद्गलना खंध थाय छे, तेमना मलवाथी पुद्गलना खंधना विचित्र स्वभाव थाय छे, तेम स्वभावथी विचित्र रीतना पदार्थ बने छे, पाछा वीखरी पण जाय छे, ते जोवामां आवे छे, ने काम पण विचित्र प्रकारे करे छे. जेटला पदार्थ देखाय छे ते पुद्गल छे. आपणे जीव कहीए छीए, पण जीवने देखता नथी. जीवनां ग्रहण करेलां शरीर देखाय छे, ते सारु समाधि तंत्रमां जशविजयजी महाराज कहे छे केः—'देखेसो चेतन नहि, चेतन नांहि देखाय; रोष तोष कीनशुं करे, आपो आप बुजाय. माटे कहेवानी मतलब एटली छे के चेतन देखातो नथी, देखो छो ते चेतन नथी पण जड छे, एटले पुद्गल छे, पुद्गलनां लक्षण नव तत्त्वमां दश कह्यां छे. वर्ण, गंध, रस, फरस, शब्द, अंधारु, उद्योत, ताप, प्रभा, छाया, आ दश लक्षणमांथी कोइ पण लक्षण देखाय तेनुं नाम पुद्गल जाणवुं. बीजां पांच द्रव्य छे ते देखातां नथी. आवुं पुद्गल पदार्थनुं ज्ञान होय तो विचारे छे के माहरो आत्मा अरूपी, आ रूपी पदार्थ, तेने जे मारुं कहुं छुं एज अज्ञानपणुं छे, अने ते अज्ञानपणुं गयुं नथी, त्यां सुधी पुद्गलीक पदार्थनी इच्छा मटती नथी, अने जड पदार्थनी इच्छा छे, त्यां सुधी जीव कर्मथी मुक्त थतो नथी. आ पुद्गल पदार्थनुं ज्ञान घणुं विस्तारे भगवतीजी, अनुयोगद्वार विगेरे सूत्रमां छे ते सांभलशो तो विस्तारे समजण पडशे. कर्म जे बंधाय छे ते पण पुद्गल पदार्थ छे. पवन देखातो नथी, पण फरस थाय छे, ते पवनना पुद्गलनो थाय छे. एवी रीते केटलाएक सूक्ष्म पदार्थ दृष्टीए नथी देखाता; जेमके अंधारुं अजवालुं ए वस्तु पकडीए तो पकडाती नथी. पण रूप देखाय छे माटे पु-

द्गल पदार्थ समजवो. बादर पदार्थना जाणयाथी सूक्ष्म पदार्थ-
नो अनुमाने निर्णय करवो.

६ जीव द्रव्य ते अरूपी एटले जीवनुं रूप नथी, सचेतन
एटले चेतन शक्ति छे, चेतन एटले चेतवुं ते जाणवुं. जाणवानी
शक्ति जीव विना बीजा कोई पदार्थमां नथी. अक्रिय एटले क्रि-
या कोई पण करवानो चेतननो धर्म नथी. जे क्रिया थाय छे ते
अनादिकालना जीवनो कर्मनो संजोग छे, ते कर्मना संजोगथी
पोताना आत्मानुं स्वरूप भूली गयो छे; जेम मदिरा पाननो
पीनारो मदिरा पीईने मस्त थाय छे, एटले शुं करवा योग्य छे,
शुं नहि करवा योग्य छे, ए ज्ञान रहेतुं नथी, ने पोतानी जाति
स्वभाव नीति छोडीने वर्त्ते छे, तेम आत्मा पोतानो स्वभाव
छोडी विभाव वर्त्तनानी क्रिया करे छे. स्वभाविक वर्त्तनानुं ना-
म क्रिया नथी. विभावमां वर्त्ते तेने क्रिया कहेवी छे, माटे स्वभा-
विक धर्म अक्रिय छे, पण अज्ञान दशाने योगे जीवनो स्वभा-
वज भुली गयो छे. शरीर छे ते हुं छुं एम जाणे छे. शरीरना
दुःखे दुःखीड थाय छे, शरीरना सुखे सुख माने छे, धन पुत्र
परिवार जोईने आणंदित थाय छे, ए वधा पदार्थ आत्माथी
भिन्न छे, पण अज्ञानपणे जाणी शकतो नथी. आत्मानां छ ल-
क्षण कह्यां छे, ते आत्मा जाणी शकतो नथी. ते छ लक्षण कहुं छुं.
अनंत ज्ञान एटले जगतमां अनंता जीव छे, अनंता पुद्गल प-
दार्थ छे, एक एक पदार्थमां अनंता गुण पर्याय रह्या छे, तेनी
त्रिकाल वर्त्तना थाय छे ते सर्वे एक समये जाणी शके, एटली
शक्ति आत्मानी छे, पण जड संगे करी अवराई गई छे. तेथी
जीव जाणी शकतो नथी. पोताना शरीरनी अंदर सर्व व्यापी
ने आत्मा रह्यो तेने पण प्रत्यक्षपणे जाणी शकतो नथी, तथा
शरीरना अंदरना भागमां शा शा पदार्थ रह्या छे, ते पण आत्मा

जाणी शकतो नथी. ते ज्ञान अवराई गयुं छे तेना फल छे. ज्यारे जीवनो भाग्य उदय थाय छे त्यारे सर्वज्ञना वचननी प्रतीति थाय छे, अने आवर्ण खपाववानो उद्यम करे छे, तो कर्म खपी जाय छे, त्यारे ते सर्व प्रत्यक्ष जणाय छे. ए ज्ञान गुण सर्वघातो ज्ञानावरणी कर्म क्षय थाय छे त्यारे प्रगटे छे, अने थोमां थोमां कर्मनो क्षयोपशम एटले केटलांएक क्षय पाम्यां छे, केटलांएक उपसमाव्यां छे, एटले सत्तामां हाल उदय न आवे एवां कर्यां छे, तेने उपसम कहीये, एवी रीते क्षयोपसम थवाथी मतिज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधी ज्ञान, मनःपर्यव ज्ञान ए चार ज्ञान थाय छे, पछी विशेष विशुद्धिथी सर्व प्रकारे कर्मनो क्षय थवाथी केवल ज्ञान थाय छे. हवे एवुं ज्ञान प्रगट नथी थयुं तेथी अज्ञानपणुं रह्युं छे, एवीज रीते आत्मानो दर्शन गुण छे, दर्शन अने ज्ञानमां भेद शुं छे ? ज्ञाननो विशेष उपयोग, दर्शननो सामान्य उपयोग, ए रीते दर्शन लक्षण, एनां पण आवरणने लीधे दर्शन गुण प्रगट थतो नथी; जेमके चक्षुनो विषय १ लाख जोजननो छे. तो एटला दुरथी देखी शकता नथी. ते आवरणनुं जोर छे. ए प्रमाणे पांचे इंद्रीयोनी शक्ति शास्त्रमां छे, तेम चालती नथी ते आवरणनो प्रभाव छे. वली केवल दर्शनथी सामान्य बोध सर्व पदार्थनो थाय छे ते केवल दर्शनने आवरण लागवाथी दर्शन गुणनुं लक्षण वर्ततुं नथी, ते लक्षण आवरणनो सर्वथा क्षय थवाथी प्रगटशे. हवे चारित्र लक्षण ते आत्मा आत्माना स्वभावमां स्थीर रहे ते. हवे ते स्थीरता अवराईने विभावमां स्थीरता थई छे, ने मोहनी कर्मनो नाश थशे त्यारे आत्मस्वभावमां स्थीरता थशे. तेनां कारणरुप पांच चारित्र छे ने जेटलो जेटलो कषाय क्षय थशे तेटलो तेटलो चारित्र गुण प्रगट थशे. संपूर्ण क्षये संपूर्ण चारित्र लक्षण प्रगट थशे. तप लक्षण ते अवरावाथी तपस्या थती नथी,

ने विचित्र इच्छाउ वर्त्ते छे. अने अंतराय कर्म क्षय थवाथी सर्वथा पुद्गल पदार्थनी इच्छाउ नाश थशे, तेनी अगाउ अंशे अंशे इच्छाउ रोकाशे, एटलुं एटलुं तप लक्षण प्रगट थशे, पांचमुं वीर्यनामा लक्षण ते आत्मानी अनंती वीर्य शक्ति छे, पण ते अवराई गई छे. जेटलो जेटलो वीर्यांतरायनो क्षयोपशम थाय छे तेटली तेटली आत्मानी वीर्य शक्ति शरीरमां रहीने चाले छे. जेमके श्रीमत् महावीर स्वामी भगवाने एक दीवसनी उमरमां टचली आंगलीए मेरु कंपाव्यो एटली शक्ति शाथी जागी छे ? तो के कोई पण जीवोने दुःख दीधां नथी, ने पोताने कोई दुःख दे छे तो सहन करे छे, ने तेनी पण दया चींतवे छे के मने दुःख दईने आ जीव कर्म बांधे छे, एवी तेनी दया चींतवी तेने प्रतिबोध करे छे; जेमके चंडकोशी सर्पे डंश दीधो तो तेने प्रतिबोध दई अनशन करावी देवलोके वैमानीक देव बनाव्यो. आवी रीते दयाना प्रणामथी शक्तिउ प्रगट थई छे. आपणी शक्ति हणाई गई छे, ते दयाना प्रणाम नष्ट थई हिंसानी प्रवृति करवाथी वीर्य बल नष्ट थई गयुं छे, ते पाछा दया भावमां वर्त्तीए तो वीर्य शक्ति जागे; ते दया बे प्रकारे करवी जोईए. एक द्रव्य दया ते एकेंद्री जीवथी ते पंचेंद्रि जीव सुधी कोई पण जीवने हणवो नहि, तेम कोई पण प्रकारनुं दुःख देवुं नहि, ते द्रव्य दया छे. बीजी भाव दया एवा जीवने दुःख देवानी वर्त्तना करवी, ते आत्मानो धर्म नथी. आत्माने आत्माना स्वभावमां रहेवुं, ते न रहेवाथी आत्माना भाव प्राणनी हानि थाय छे. आत्माना भाव प्राण ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्य ए चार कह्या छे, ते जेटली विभाव दशानी वर्त्तना थशे, तेटली हणाशे. जेटली जेटली विभाव दशा त्याग थशे, तेटली भाव दया थशे; ते एवी भाव दया जेटली प्रगट थशे तेटली तेटली वीर्य शक्ति जागशे. अने संपूर्ण वीर्य गुण

सर्व प्रकारे कर्म नाश थशे त्यारे प्रगट थशे तेज वीर्य लक्षण.

६ छठुं उपयोग लक्षण:—उपयोग शुं छे ते जाणवानी शक्ति छे पण जाणवामां चित्त घालवुं ते रूप उपयोग करता नथी त्यां सुधी जाणी शकता नथी, ते रूप उपयोग ज्ञान दर्शनना भेदे करी वार प्रकारे छे ते कर्मग्रंथथी जाणवा.

आ छए लक्षण जीव द्रव्यनां छे, ते जीव जाणतो नथी त्यां सुधी जीवने पोतानी पारकी चीजनी खवर पडती नथी, ते सर्व अज्ञानतानां फल छे. जीव छे ते सदा अविनाशी छे, ते पोतानुं स्वरूप न जाणवाथी सदाकाल मरवानो भय राखे छे, एवा अनंत गुण आत्माना छे ते केवलज्ञानी महाराज सिवाय वीजा जीव जाणी शकता नथी. जीवना भेद १४ तथा ५६३ वताव्या छे, ते कर्म संयोगे करी शरीर, इंद्रीयो वगेरेना फेरफारना छे. वाकी कर्म रहित सत्ताए वधा सरखा छे. भेद नथी तो पण भेद जाणवा, ते अधीक उंगा व्यवहारमां छे ते समजवा लखुं छुं.

१ एकेंद्रि सुक्ष्म ते चर्म चक्षुए देखाता नथी २ एकेंद्रि वादर ते चक्षुए करी देखी शकाय. ३ वेइंद्रि वे इंद्रिवाला. ४ तेइंद्रि ते त्रण इंद्रिवाला. ५ चोरेंद्री एटले चार इंद्रिवाला. ६ असन्नि पंचेंद्रि ते मन रहित. ७ सन्नि पंचेंद्रिय ते मन सहित.

ए सात जातना पर्याप्ता एटले पर्याप्ती पूर्ण करेली, अपर्याप्ता ते पोतानी पर्याप्ती पूरी करी नथी; एटले सात पर्याप्ता अने सात अपर्याप्ता मली १४ भेद जीवना थाय छे. हवे विस्तारे एना ५६३ भेद कहे छे.

१९८ देवताना थाय ते नीचे मुजव.

१० भुवन पति. १५ परमाधामीना देवता. १६ व्यतंर जातिना देव. १० तिर्यग जृंभकना देव. १० ज्योतसीनी जातिना देवता. १२ देवलोक वैमानीकनी जातिना देव. ३ किल्विषियानी

जातिना देव. ढेढ जेवा. ए लोकांतिक जातिना देव एकावतारी. ए ग्रैवेक जातिना देव. ५ अनुत्तर विमानना देवता. ए कुल एए जातना देवता, ते पर्याप्ताने अपर्याप्ता मली १एए थया. ए देवोने कवल आहार नथी. पोतानी इच्छा प्रमाणे आहारनो स्वाद आवे छे. केटलाएक उंग पुन्यवाला होय तेमने इच्छा परमाणे न पण वनी शके. देवतानी जातिने वैक्रिय शरीर छे. तेथी रोगादी उपजता नथी. मनुष्यना आउखाने उपक्रम लागे छे, तेवुं देवताने उपक्रम न लागे. पूरे आउखे मरे. एक बीजानी रुद्धिमां घणो फेरफार रहे छे. वेपार रोजगार करवानी जरुर पमती नथी. ए सामान्यपणे देवतानी जाति कही.

३०३ मनुष्य गणावे छे, ते त्रण जातिना थाय छे.

१५ कर्मजूमिना मनुष्य. कर्मजूमि कोने कहे छे ? ज्यां असि कहेतां हथीआर, तरवार, जाला, छरी, कोश, कुहामा, ए वस्तुनुं नाम असि कहीये, ते ज्यां वपराय छे. मशी कहेतां नामुं, चोपमा लखवामां आवे छे. कृषि कहेतां ज्यां कर्षण (खेतीवामी) करवानुं थाय छे, ए त्रणजातिना कर्म जे क्षेत्रमां करवानुं थाय छे, तेने कर्मजूमिनां मनुष्य कहीए. ते क्षेत्रनां नाम.

३ जंबुद्वीपमां मनुष्य. १ जरतक्षेत्र. १ ऐरवृतक्षेत्र. १ महाविदेहक्षेत्र.

६ धातकीखंम द्वीपमां मनुष्य. २ जरतक्षेत्र. २ ऐरवृतक्षेत्र. २ महाविदेहक्षेत्र.

६ पुष्करावर्त द्वीपने विषे मनुष्य. २ जरतक्षेत्र. २ ऐरवृत क्षेत्र. २ महाविदेह क्षेत्र.

ए १५ क्षेत्रमां वसनारा मनुष्य पंदर जातिना, एमां जरतक्षेत्र तथा ऐरवृतक्षेत्रना मनुष्यनी रीति सरखी छे, कालस्थिति पण सरखी छे, छए आरानी हकीकत सरखी छे. पांच म-

हाविदेहक्षेत्रमां सदा तीर्थंकर महाराज विचरता लाभे छे, उ-
छामां उंछा एक महाविदेहमां चार तीर्थंकर महाराज होवा
जोईए, एम जंबुद्वीप पन्नत्तिमां अधिकार छे. कोई ग्रंथमां बे पण
कहे छे, एम प्रवचन सारोद्धारमां कहेलुं छे. तत्त्व केवलीगम्य. वली
उत्कृष्ट कालमां एक महाविदेहमां बत्रीश विजय छे, ते सर्वे वि-
जयमां एक एक तीर्थंकर महाराज होय तेथी एक महाविदेहमां
बत्रीश तीर्थंकर विचरता लाभे; वली केवलज्ञानी सदा काल ला-
भे, मोक्षमार्ग सदाकाल वर्त्ते; जेम भरत, ऐरवृतमां मोक्षमार्ग
त्रण आरामां वर्ते छे, ने बीजा आरामां बंध थई जाय छे, तेम
त्यां नथी. आउखा विषे पण भरत ऐरवृत्तमां उछुं वत्तुं छे, तेम
त्यां नथी. सदा क्रोड पूर्वनुं आउखुं छे. शरीरमान पांचसें धनु-
ष्यनुं छे, आ फेरफार छे, बीजो पण फेरफार शास्त्रथी जोवो.

३० त्रीश अकर्मभूमि तथा छपन्न अंतर द्वीपना मनुष्य
जुगलीआं छे ते मनुष्यने वेपार, रोजगार, रांधवुं, खेतीकाम, को-
ई पण जातनां उजार बनाववां, वस्त्र पहेरवां, ए कांई पण कर-
वानुं नथी; टुंकामां असि, मशी अने कृषि ए त्रण कर्मभूमिना
मनुष्यने छे तेम एमने नथी. फक्त कल्पवृक्ष फल आपे ते खावां
छे. कल्पवृक्षथी घर बनी गयां छे, तेमां रहे छे. जेनी जेटली म-
रजादा छे ते प्रमाणे आहारनी इच्छा थाय ते वखते कल्पवृक्ष
एनी मरजी प्रमाणे आपे, आयुष्य शरीर पण मोटां छे, ते दरेक
क्षेत्र अपेक्षित छे, ते आगल आवशे. तेम वली त्यांथी मरीने देवता
थाय, बीजी गतिमां जाय नहि. केमके सरल स्वभावी छे, आ-
करा राग द्वेष नथी.

१० हेमवंत अने ऐरण्यवृत जुगलीआनां क्षेत्र. २ जंबुद्वीप-
मां तेमज ४ धातकीखंडमां ४ पुष्कलार्द्धमां.

ए दश क्षेत्रमां जुगलीआं मनुष्य थाय छे तेमनुं शरीरमान

एक गाउनुं, एक पल्योपमनुं आउखुं. एकांतरे आमला प्रमाणे आहार करे, आयुष्यना ठेमाउपर एक जोमलानो स्त्री गर्भ धरे तेनो जन्म थया पठी ७ए दिवस सुधी तेनी प्रतिपालना माता पिता करे. पठो माता पिता मरीने देवता थाय आ स्थिति ठे.

१०. हरिवर्ष अने रम्यक ए बे क्षेत्र नीचेना द्वीपमां ठे. २ क्षेत्र जंबुद्वीपमां. तेमज ४ पुष्कलार्द्धमां, ४ धातकी खंमनां.

ए दश क्षेत्रनां जुगलीआंनुं देहमान बे गाउनुं, आउखुं बे पल्योपमनुं, बे दीवसने आंतरे आहार बोर प्रमाणे करे, चोशठ दीवस ठोकरांनी प्रतिपालना करे.

१० देवकुरु. उत्तरकुरुनां जुगलीआंनां क्षेत्र. २ जंबुद्वीपमां ए बे क्षेत्र. तेमज ४ पुष्कलार्द्धमां. ४ धातकी खंमनां.

१० ए दशे क्षेत्रना जुगलीआंनुं देहमान त्रण गाउनुं, आउखुं त्रण पल्योपमनुं, त्रण दीवसने आंतरे तुवेर प्रमाणे आहार कल्पवृक्षना फलनो करे, ४ए दीवस ठोकरांना जुगलनी प्रतिपालना करीने काल करे.

३० ए त्रीश क्षेत्रना मनुष्यने अकर्मभूमिना मनुष्य कहीये.

५६ ठप्पन अंतरद्वीपनां मनुष्य ते अंतरद्वीप जंबुद्विपनी जगतीना कोटनी नजीक हेमवंत तथा शीखरी पर्वत ठे. बंने पर्वतमांथी दाढाउ नीकली ठे ते कोटना उपर थइने समुद्रमां गई ठे. ने चार चार दाढाउ नीकले ठे ने अकेक दाढा उपर सात सात द्वीप ठे, ए प्रमाणे ५६ अंतरद्वीप थया. अंतरद्वीप केम कह्या? लवण समुद्र उपर अधर रह्या तेथी अंतरद्वीप कहीए अने ए द्वीप उपर वसनार जुगलीआं मनुष्यने अंतरद्वीपनां मनुष्य कहीए, ए मनुष्यनुं शरीर आठसें धनुष्यनुं होय, आयुष्य पल्योपमना असंख्यातमा जागनुं होय, तेने पण कल्पवृक्षथी आहार होय. ए कुल १०१ क्षेत्रनां मनुष्य ते पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता ए बे ज्ञेदे

गर्भजना गणतां ३०२ भेद थया, तेमां १०१ भेद समूर्छिम मनुष्यना. समूर्छिम मनुष्य कोने कहीए ? मनुष्यना मलमूत्र, लींट, वमन, थुंक, लोही, मांस, वीर्य, चामडी विगेरे माणसना अंगना पदार्थमां उत्पन्न थाय, आयुष्य अंतर्मूहुर्तनुं. अपर्याप्ति अवस्थाएज मरण पामे. ए मनुष्यो पर्याप्ति पुरी करेज नहि. शरीर पण अंगुलना असंख्यातमा भागनुं होय, एटले देखवामां आवे नहि, ए सात आठ प्राण बांधतो मरण पामे. ए कुल भेद ३०३ मनुष्यना जाणवा.

हवे तिर्यंचना ४८ भेद ते नीचे मुजब.

एकेंद्री ते जेमने एक फरस इंद्रि छे तेना भेद.

४ पृथ्वीकाय ते माटी, पाषाण, रत्न, सोनुं, धातुउ, मोतीने पण अनुयोगद्वारनी टीकामां पृथ्वीकाय अने अचित कह्यां छे. ए बाबतमां माणसना मनने शंका थाय के छीपना शरीरमां पृथ्वीकाय केम थाय. ते विषे जाणवुं जे मनुष्यना शरीरमां पथरी थाय छे, तो ते पृथ्वीकाय छे तेम ए पण जाणवुं. ए पृथ्वीकायना पथरा प्रमुख मोटा मोटा देखाय छे, तो पण ए असंख्याता जीवनो पींड छे. एक आमला जेटली माटी वा पत्थर लीधो होय तेमां असंख्याता जीव छे. एक जीवनुं शरीर अंगुलना असंख्यातमा भागनुं छे ते बधानो पींडभूत छे. ए जीवनां शरीर कल्पनाथी कबुतर जेवडां करीए तो एक लाख जोजननो जंबुद्वीप छे तेमां माय नहीं. एवी पृथ्वीकायना शरीरनी सूक्ष्मता छे. ए पृथ्वीकायनुं उतकृष्ट आयुष्य बावीश हजार वर्षनुं छे, ते बादर पृथ्वीकायनुं छे. ते देखवामां आवे छे तेनुं स्वरूप कह्युं. हवे पृथ्वीकायना एथी पण सूक्ष्म जीव छे ते चर्मचक्षुने अगोचर छे. केवलज्ञानी महाराजे पोताना ज्ञानमां जोइने कह्या छे, ते चउद राजलोकमां बधे छे. तेनुं आयुष्य

जघन्य अने उतकृष्ट अंतरमुहूर्तनुं छे. ए पृथ्वीकायना बे भेदने पण पर्याप्ता जेणे चार पर्याप्ति पुरी करी छे ते, तथा अपर्याप्ता जेणे चारे पर्याप्ति पूरी करी नथी, वा अपर्याप्ति अवस्थाएज मरे छे, ते अपर्याप्ता सूक्ष्म तथा बादर पृथ्वीकाय एटले चार भेद थया.

अपकायना च्यार भेद. ते पाणीना जीव, तेमां कुवानुं, तलाव, समुद्र, वरसाद, धुमर प्रमुखनुं पाणी. ए पाणीना जीवनुं शरीर पण अंगुलना असंख्यातमा भागनुं. ए पाणीनो पींड देखाय छे, तेना एक बींदुमां पण असंख्याता जीव छे. ए जीवनुं आयुष्य जघन्य अंतर मुहूर्तनुं, उत्कृष्टथी त्रण हजार वर्षनुं छे. ए बादर अपकाय, तथा सूक्ष्म अपकाय ते देखवामां आवता नथी एटले बे भेद थया. ते पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता बे मेलवतां अपकायना चार भेद थया.

तेउकायना चार भेद ते. सूक्ष्म तेउकाय तथा बादर तेउकाय. ए बे पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता. एनुं शरीर अंगुलना असंख्यातमा भागनुं. आउखुं उत्कृष्ट त्रण दिवसनुं. एमां पण सूक्ष्म तेउकाय अगोचर छे.

वाउकायना च्यार भेद ते सूक्ष्म वाउकाय तथा बादर वाउकाय. ए बे पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता एम चार भेद. वाउकायनुं शरीर अंगुलना असंख्यातमा भागनुं, आयुष्य बादर वाउकायनुं उत्कृष्ट त्रण हजार वरसनुं अने सूक्ष्म वाउकायनुं अंतमुहूर्तनुं.

वनस्पतिकायना छ भेद-तेमां प्रत्येक वनस्पति ते एक शरीरे एक जीव होय ते; जेम के एक फलनी मांहे जेटलां बीज छे तेटला जीव छे. फलनी छालनो एक जीव, फलना गर्भनो एक जीव, वृक्षनी शाखानो एक जीव, मूलनो एक जीव, थडमां एक जीव, पत्रमां एक जीव, एवी रीते जूदा जूदा जीव होय. कोई कहेशे जे आखा झाडमां एक जीव तो फलना, बी-

जना जूदा जूदा जीव केम ? ते विषे समजवुं के, स्त्रीना आखा शरीमां एक जीव छे. पण तेना शरीरमां गर्भ जेटला रहे छे ते गर्भना जीव जूदा जूदा होय छे. तेम बीजना जीव जूदा जूदा होय. एवां जे फलादिक तेने प्रत्येक वनस्पति कहीये. मोटां झाड वड, पीपला, नालीएरी विगेरे तथा घउं प्रमुख अनाजनां झाड तथा शाक, फल, चीभडां प्रमुखना वेलादिक ए सर्वे प्रत्येक वनस्पति जाणवी. ते बे प्रकारे पर्याप्ता अने अपर्याप्ता. वनस्पतिकायना जीवने च्यार पर्याप्ति कही छे, ते पुरी करी नथी त्यां सुधी अपर्याप्तो, पूरी करे त्यारे पर्याप्तो. अपर्याप्ति अवस्थाये पण केटलाएक मरण करे छे. पर्याप्ति प्रत्येक वनस्पतिना झाड, वेला मोटामां मोटा एक हजार जोजन अधीकना थाय छे, ए वेलाउ निराबाध जगामां लांबा जाय छे ते जाणवुं. अने अपर्याप्तानुं शरीरनुं मान अंगुलना असंख्यातमा भागनुं कह्युं छे. उत्कृष्ट आयुष्य दश हजार वरसनुं कह्युं छे. जघन्य अंतर्मुहूर्तनुं कह्युं छे, अने अपर्याप्तानुं जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्तनुं छे. एक पर्याप्तानी निश्राये असंख्याता अपर्याप्ता रह्या छे. ए अधिकार पन्नवणाजीमां विस्तारे कह्यो छे. लीली वनस्पतिमां ए अपर्याप्ता संभवे छे, हवे साधारण वनस्पतिकाय ते एक शरीरमां अनंता जीव रह्या छे, तेने अनंत काय कहीये, अने निगोद पण कहीये. ते निगोद बे प्रकारे छे. एक बादर निगोद ते वनस्पति दृष्टिए देखवामां आवे छे. आदू, मूला, गाजर, सूरण, रतालु, आदे कंदनी जातो जे कंद काप्या छतां पण पाछा उगे ते तथा झाडोमां उगता अंकुरा जे जे पत्र फल प्रत्येकने योग्य नथी थयां, जेनी नस बीज परव देखाय नही, भाग्या छतां सरखुं भागे, कापेला जेवुं देखाय, भागेली जगोये पाणीना मोतीआ बाजे, एवी वनस्पतिने अनंतकाय कहीये, ने साधारण वनस्पति तेनेज बादर निगोद कहीये. ते जीव पण बे

प्रकारे, पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता एमनुं शरीर अंगुलना असंख्यातमा भागनुं छे, आयुष्य अंतर्मुहूर्तनुं. हवे सूक्ष्म निगोद ते चउदराज लोकमां सर्व ठेकाणे भरेली छे, सूक्ष्म निगोद विनानी कोइ जगो खाली नथी. एनी सूक्ष्मता एवी छे के अंगुलना असंख्यातमा भागमां निगोदना असंख्याता गोला छे, तेमांना एक गोलामां असंख्याती निगोद छे, ते एक निगोदमां अनंता जीव छे, ते जीवोनुं आयुष्य एक श्वास लइने मुकीए तेटलामां सत्तर भव झाझेरा थाय, एटले एटली वार मरवुं उपजवुं थाय, ए जीव पण पर्याप्ता अने अपर्याप्ता बे प्रकारे छे. ए बे भेद प्रत्येकना, बे भेद बादर निगोदना, बे भेद सूक्ष्म निगोदना—ए त्रणना मली वनस्पतिना जीवना छ भेद थया.

२ बेइंद्री जीव ते शंख, कोडा, गंडोला, अलसीयां, मेहेर, कर्मीया, शर्मीया, आदे जेने शरीर ते फरस इंद्रि तथा मुख ते रस इंद्रि ए बे इंद्रि छे ते बे इंद्रि जीव जाणवा. ए पण पर्याप्ता अने अपर्याप्ता बे भेदे छे. ए जीवनुं शरीर मोटामां मोटुं बार जोजननुं होय, एवा शरीरवाला जीव विशेषे करीने चोथा आरामां थाय छे, ते कालमां मनुष्यनुं शरीर पण मोटुं होय छे, केटलाएक जीवने भगवंतना वचननी प्रतीत नथी होती. तेने व्यामोह थाय छे के आटलुं मोटुं शरीर केम होय. पण बुद्धिवानने तथा भगवंतना वचननी श्रद्धावालाने शंका थती नथी. कारण जे हालमां एक पेपरमां वांचवामां आवेलुं हतुं के एक गीलोडीनां हाडकां सवा गजनां हतां. ने देखीती तो हालमां चार तसुनी देखाय छे. हाडकां आटलां मोटां देखाय छे. कोई काले एवी मोटी पण थती नीश्चे थाय छे तेम हालमां देश फेरथी पण मोटा नानानो फेर देखाय छे. काकरेजी बलदीया जेवा मोटा थाय छे तेवा मोटा बलदीया आ देशमां थता नथी. घोडा वि-

लायती एटला मोटा आवे छे के तेवा मोटा गुजरातमा थता नथी. माणसो पण पंजाबमां ऊंचां मजबूत थाय छे तेवां गुजरातमां थतां नथी.एनुं कारण एटलुं छे के हवा पाणीना फेरफारथी थाय छे. तेम कालना फेरफारथी फेरफार थाय एम जाणी बुद्धिवानने शंका थती नथी. ए बेइंद्रि जीवनुं आयुष्य बार वरसनुं उत्कृष्ट थाय छे.

१ तेइंद्रि जीवना बे नेद छे ते पर्याप्ता अने अपर्याप्ता, ते जीव—मांकण, कीमा मंकोमा वीगरे जाणवा ए जीवनुं शरीर मोटामां मोटुं त्रण गाउ सुधीनुं थाय छे, तथा आयुष्य उत्कृष्ट उगणपचास दीवसनुं कह्युं छे. ए पर्याप्तानुं जाणवुं, अने अपर्याप्तानुं तो अंतर मुहूर्तनुं होय.

१ चौरेंद्रि जीव पण बे प्रकारे पर्याप्ता अने अपर्याप्ता ए जीवने पांच पर्याप्ति छे ते पूरी करे त्यारे पर्याप्ता अने तेमांथी अधुरी पर्याप्ति होय ते अपर्याप्ता. माखी, मछर, वींछु, प्रमुख जीव जाणवा. ए जीवने फरस इंद्रि, रस इंद्रि, घ्राण इंद्रि, चक्षु इंद्रि ए चार इंद्रि होय. आयुष्य उत्कृष्ट छ मासनुं होय, शरीर उत्कृष्ट एक जोजननुं होय.

२० पंचेंद्रि तिर्यंचना वीश नेद ते नीचे प्रमाणे जाणवा.

१ जलचर ते पाणीमां चाले ते मछ,ते माछलां,सुसुमार वीगरे.

२ थलचर ते जमीन उपर चाले ते गाय, नेंस, बलद, हाथी, घोमा वीगरे.

३ खेचर ते आकाशे उमे ते पंखीउनी जाति.

४ उरपरिसर्प ते पेटे चाले तेमां सर्प प्रमुख जाणवा.

५ नुजपरिसर्प ते नुजाए चाले ते नोलीया खीसकोली प्रमुख.

ए पांच प्रकारना तिर्यंच ते गर्नथी उत्पन्न थाय ते, गर्नज

ए स्त्री पुरुषना संजोगथी उत्पन्न थाय छे, ए जीवनां शरीरनां मान तथा आयुष्य, क्षेत्र, काल, जीव अपेक्षाये जूदां जूदां छे, ते पन्नवणाजी जिवाभिगमथी वा जीव विचारथी जाणवां. ए जीव कर्म भूमिमां तथा अकर्म भूमिमां उत्पन्न थाय छे. बीजो भेद समूर्छिम तिर्यंच ते स्त्रीना संजोग विना उत्पन्न थाय छे. जेम के देमको मरी गयो होय ने तेनुं कलेवर होय ते कलेवरमां वरसादनो छांटो पमे के-पाछा तेमां देमका उत्पन्न थाय; वीछुनुं कलेवर होय तेमां वीछु उत्पन्न थाय छे; छाणमां पण वीछु उत्पन्न थाय छे, तेम केटलीक वस्तुना प्रयोगमां जीवो उत्पन्न थाय छे, ते जीवने समूर्छिम कहीये. ए पण पांच प्रकारे थाय छे. एटले गर्भज अने समूर्छिम मलीने दश भेद थया, ते गर्भजने छ पर्याप्ति छे, समूर्छिमने पांच पर्याप्ति छे. ते प्रमाणे पर्याप्ति करे तेने पर्याप्ता कहीये. पर्याप्ति पुरी नथी करी त्यां सुधी अपर्याप्ता कहीये. ए प्रकारे बे भेदे गणतां वीश भेद थाय, ते वीश प्रकारना तिर्यंच पंचेंद्रि जाणवा. एकेंद्रिथी तिर्यंच पंचेंद्रि सुधीना भेद एकठा करतां अमतालीश भेद सर्व तिर्यंचना थाय.

हवे नरकना जीव चउद प्रकारे नरकना नामना भेदथी थाय छे.
रत्न प्रभा नरकना नारकी १ शर्करा प्रभा नरकना नारकी २
वालुका प्रभा नरकना नारकी ३ पंक प्रभा नरकना नारकी ४
धुम प्रभा नरकना नारकी ५ तमः प्रभा नरकना नारकी ६
तमतमा प्रभा नरकना नारकी ७.

ए साते नरकमां जीव उपजे ते नारकी कहीये. पेहली नरकना करतां बीजी नरकमां दुख वधारे, आयुष्य वधारे, शरीर मोटुं एम अनुक्रमे सातमी नरक पर्यंत एक एकथी वधारे दुख, आयुष्य शरीर पण वधारे छे. ए नरकमां दुख एवां छे जे दुखनो जोमो मनुष्य लोकमां नथी. केटलीएक नरकमां परमाधामीनी

करेली वेदना छे. केटलीएक नरकमां स्वभाविक क्षेत्र प्रभावे वेदना छे. जे जे आकरां पाप करे तेनां फल नरकमां भोगववानां छे. आयुष्य वधारेमां वधारे तेत्रीस सागरोपमनुं छे, तेमां असंख्याता काल जाय, तेटला काल सुधी दुख भोगववानुं छे अने मनुष्यमां विषयनुं अल्प काल सुख मानेलुं माणवुं. वस्तुपणे तो विषयमां सुख नथी, पण अज्ञानपणे सुख मानी विषय भोगवे छे अने तेनां फल जीव नरकमां भोगवे छे. ए नरकना जीवने दश प्राण छे, छ पर्याप्ति छे, ते बांधी न रह्यो होय त्यां सुधी अपर्याप्तो कहेवाय ने पूर्ण बांधे एटले पर्याप्तो. ते पर्याप्ता अने अपर्याप्ता एम बे भेद गणतां चउद भेद थाय, एटले चउद प्रकारना नारकी.

ए एकेंद्रिथी पंचेंद्रि सुधीना सर्वे भेद भेगा करीये त्यारे चारे गतिना कुल ५६३ भेद थाय ते नीचे प्रमाणे.

१९८ भेद देवताना ३०३ मनुष्यना भेद.
४८ तिर्यंचना भेद १४ नारकीना भेद.

एम बधा मली सामान्यथी जीवना ५६३ भेद थाय छे विस्तारथी तो जीवना भेद तथा जीवनां स्वरूपनुं वर्णन करतां आयुष्य पण पहोचे नही एटलुं वर्णन शास्त्रमां करेलुं छे, माटे विस्तार रुची जीवोए शास्त्र अभ्यास करी जाणी लेवा, पण ज्यां सुधी अज्ञाननुं जोर छे त्यां सुधी जीवने वीतराग भाषित शास्त्र जोवानुं तथा सांभलवानुं मन थशे नही, एम करतां जबराइथी वा शरमथी सांभलशे तो श्रद्धा करशे नहीं तेनुं कारण एटलुंज छे के पूर्व भवनी विपरीत श्रद्धानी संज्ञा चाली आवे छे, तेना जोरथी साची वस्तु रुचे नही. उन्मार्गनी रुची थाय. विपरीत वस्तु उपर कल्पित न्याय जोडी तेनी श्रद्धा करे. बीजा जीवने पण कुयुक्ति करी समजावी उन्मार्गमां पाडे अने तेवीज रीते अनेक जूदा जूदा धर्मो थइ गया छे, अने जे माणस जे ध-

मेंने माने छे, ते धर्ममां शुं कह्युं छे ते पण जाणता नथी. पोते जेने देव माने छे ते देव शा कारणथी मानुं छुं, ते देवमां देवनां लक्षण छे के नथी ते जोता नथी. केटलाएक ब्राह्मणोए क्रीश्चियन धर्म अंगीकार करी वेद धर्म छोडी दीधेलो, तेने वेद धर्ममां शी भूल छे ते जाणता नथी. तेम वेदमां कह्याथी विपरीत चालीए छीएं ते पण जाणता नथी. एक क्रीश्चियनने पूछएलुं तो संतोषकारक भूल पण बतावी शक्यो नहीं, तेनुं कारण एटलुंज छे के स्त्री अने धनना लोभे धर्म अंगीकार करे छे, तेने कांई पछी धर्म जाणवानी जरुर पडती नथी, अने अज्ञानना जोरथी सत्य खोलवानुं चित्त थतुं नथी. केटलाएक ब्राह्मणो जैननी निंदा करे छे ते एटला सुधी के वेश्याना घरमां पेसवुं पण जैन मंदिरमां न जवुं, आ केटलुं भूल भरेलुं छे ते नीचेनी हकीकतथी सहेज समजाशे. महाभारत शास्त्रमां नीचे प्रमाणे श्लोक छे.

युगेयुगे महापुण्यं, दृश्यते द्वारिकापुरि ।
अवितीर्णो हरि र्यत्र, प्रभासे शशि भूषणः ॥१॥
रैवताद्रौ जिनो नेमि र्युगादिर्विमलाचले ।
ऋषीणामाश्रमा देवः मुक्ति मार्गस्य कारणम् ॥२॥

आ मुजब महाभारतमां श्लोक छे—ए श्लोकमां जैननुं तीर्थ जे रैवतगिरि हालमां गिरनारजी कहेवाय छे, तथा त्यां नेमिनाथजी महाराज बावीसमा तीर्थंकर तेनोज महिमा जैनीयो माने छे, तेज तीर्थनुं तथा नेमिजिननुं बहुमान पूर्ण कर्युं छे. वली विमलाचल जे हालमां शत्रुंजय कहेवाय छे, त्यां युगादिजिन एटले ऋषभदेवजीने युगादिज जैनशास्त्रमां कह्या छे, तेम भारतमां पण कह्या छे. ए बे तीर्थने मोक्षनुं कारण आ श्लोकमां बता-

ञ्युं छे, तो ज्ञारतना माननारने ए जैनना तीर्थने अने देवने मोक्ष कारणज्नूत सेववा जोईए के निंदा करवी जोईए ! ज्ञारत तो हमेश वंचाय छे, ते उतां आ वात ध्यानमां न रहेतां अवलो रस्तो पकमे छे ते अज्ञानना राजधानीनुं फल छे. पण जेने कांईक अज्ञान पातलुं पम्युं होय तेना कान खोलवा सारु आ बाबत जणावी छे. हजु बीजा पण स्थानमां छे ते नीचे लखीए छीए.

॥ ऋग्वेदनो मंत्र ॥

ॐ त्रैलोक्य प्रतिष्ठितान् चतुर्विंशति तीर्थंकरान् ऋषज्ञाद्यान्वर्धमानांतान्सिद्धान् शरणं प्रपद्ये ॥

॥ यजुर्वेदनो मंत्र ॥

ॐ नमोर्हतो ऋषज्ञाय ॐऋषज्ञपवित्रं पुरहुतमध्वरं यज्ञेषु नग्नं परममाह संस्तुतावारं शत्रुंजयं तं सुरिन्द्रमाहुतिरिति स्वाहा ॥

॥ यजुर्वेदनो बीजो मंत्र ॥

ॐत्रातारमिन्द्रऋषज्ञंवदंतिअमृतारमिन्द्र हवेसुगतं सुपार्श्वं मिन्द्रहवे सक्रमजितंतद्वर्द्ध मानपुरहुतमिंद्र माहुतिरिति स्वाहा ॥

॥ त्रीजो मंत्र ॥

ॐनग्नं सुधीरं दिग्वाससं ब्रह्मगर्ज्नंसनातनं उपैमिवीरं पुरुषमर्हंतमादित्यवर्णं तमसः पुरस्तात् स्वाहा ॥

पुनः ऋग्वेद. मं. १ अ. १४ सू. १०

स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्ट नेमिः ॥

आ रीतना वेदोमां मंत्र छे; ते दयानंद छलकपट दर्पण नामनी चोपडीमां में वांच्या पाने ३१ए ते उपरथी वेदना जाणकार शास्त्रीने वताव्या, अने पूछ्युं के आ मंत्रो तमारा वेदमां छे? त्यारे ते शास्त्रीये सत्य दशा धरीने कह्युं जे अमो नित्य वेदनुं अध्ययन करीये छीएं, तेमां आवे छे. आ शास्त्रीना कहेवाथी खात्री थई के वेदमांनाज छे, तेथी आ चोपडीमां दाखल कर्या, जे हठ विनाना होय तेने समजाय के जैनना देवने पण वेदवालाए मान्य कर्या छे. तो तेमनी निंदा केम करुं—वली जैनधर्म नवीन छे एवुं जेना मनमां होय तेने समजाय के जैनना ऋषभदेवजीथी ते चोवीशमा महावीर स्वामी पर्यंत चोवीस तीर्थंकरनां बहुमान नमस्कार कर्या छे, तो ए जैनधर्मना देव थया पछी वेद थया के केम? जो वेद अनादि होत तो ए देवनुं स्मरण थात नही. माटे जैनधर्म अनादि छे ए निश्चे वेदथीज थाय छे. पण आ वात जेने मिथ्यात्व पातलुं पड्युं हशे तेने समजाशे. पण जे हठ कदाग्रही छे, अज्ञाननु जोर पूर्ण छे तेवा माणसने विचार करवानी बुध्दिज जागती नथी अने खरुं समजातुं नथी. करता आव्या ते करवुं एटलुंज समजी राख्युं छे, अने ज्यारे अज्ञान खसशे त्यारे खरुं खोटुं खोलवानी बुध्दि जागशे, अने खरुं अंगीकार करशे. जे जे माणस पोताना देव माने छे, अने ते देवोए धर्म वताव्यो छे, ते प्रमाणे ते देवो धर्ममां वर्त्या छे के नही, ते सारु देवोनां शास्त्रमां चरित्र छे ते जोवां जोईए, अने ते चरित्रमां जेम आपणने चालवा कहे छे तेम ते पुरुष चालेला नथी अने सर्वज्ञपणुं माने छे ते चरित्रथी सिध्द थाय छे के नही, अने ते सिध्द न थाय तो पछी तेमने देव शा सारु मानवा एवो विचार अज्ञान खसशे त्यारे थशे. त्यांसुधी थशे नही. वली गुरुपणुं धरावे छे, अने लोकने धर्म उपदेश दे छे के अहिंसा धर्म सर्वमां मुख्य छे एम समजावे छे पण पोते हिं-

सानो त्याग करता नथी. असत्य बोलवुं नहीं ए छये दर्शनवालाने मान्य छे, तेम छतां गुरु थइने असत्य बोलतां डरे नही, चोरी करवी नही, कोईने ठगवुं नही, ए जगत निंदनीक छे. सर्व धर्ममां निषेध छे. ते छतां गुरु नाम धरावे अने चोरी ठगाइ कपटनां काम करे. पर स्त्रीनो त्याग सर्व धर्ममां ने जगतमां निंदनीक छे, तेम छतां गुरु थइ सेवकनी स्त्री, बेन, मा, छोकरीनी साथे मैथुन सेवतां डरे नहि. साधुने धन राखवुं नहि जोईए ए आर्य धर्मनी मर्जादा छे तेम छतां सेवक पासेथी धन ले. वली कपट लुच्चाइ करी धन मेलवे. सेवको उपर जुलम करीने धन ले. आवी वर्तणुकना करनारने गुरु माने, हजारो रुपीआ आपे आ अज्ञानदशानी प्रबलता छे. आवाने गुरु मानवानो विचार जेने नथी, ते बीजा सत्य असत्य धर्मने ते शुं तपासे ? अज्ञानपणे एवा अज्ञानी गुरुथी ठगाय छे एटलेथी बस नथी. आवते भव खरा धर्मनी निंदा करवाथी जे कर्म बंधाय छे तेथी भवोभव जीव दुर्गतिनां दुख भोगवशे, अने जे पुरुष आत्मार्थी थयो छे, एटलुं अज्ञान खस्युं छे तेना प्रभावथी न्यायनी बुद्धि जागे छे तेथी सत्य असत्य मार्गनी परीक्षा करी खोटो मार्ग त्याग करी सत्य मार्ग अंगीकार करे छे. जेम गौतमस्वामी महाराज श्रीमन्-महावीर स्वामी भगवानकी महत्त्वता सांभली घणाज रोशमां तथा अहंकारमां व्याप्त थया हता, अने भगवान साथे वाद करवा समोसरणमां आव्या हता, पण भगवंते वेदनाज अर्थ समजावी खरो मार्ग गौतमस्वामी महाराजने समजाव्यो. ते न्यायनी बुद्धिथी विचारी सत्य जाणी ग्रहण कर्यो अने पोताना असत्य धर्मनो त्याग कर्यो, अने भगवान सर्वज्ञ छे एवुं दृढ करी पोते भगवानना शिष्य थया. भगवंते वास क्षेप कर्यो. एटलामां भगवानना प्रभावथी आवर्ण खपवाथी द्वाद-

शांगीना जाण थया. अनुक्रमे शुक्ल ध्यान धरी घातीकर्म खपावी केवलज्ञान पाम्या अने मोक्षे पोहोंच्या; तेम आत्मार्थी जे जे पुरुषोए अज्ञान खपावी ज्ञान पामीने अज्ञान खपाववानो मार्ग दर्शाव्यो छे, ते मार्ग अंगीकार करीने वर्तवुं के सहेजे अज्ञान खपी जशे. जे पुरुषने विषे अज्ञाननो अंश पण रह्यो नथी तेज सर्वज्ञपणाने पामे छे अने भगवान् पण तेज कहेवाय छे.

१४ मिथ्यात्वनामा दोष ते मिथ्यात्व कोने कहीये. खरी वस्तुने खोटी माने, खोटी वस्तुने खरी माने; सत्यने असत्य माने, असत्यने सत्य माने; धर्मने अधर्म माने, अधर्मने धर्म माने; देवने अदेव माने, अदेवने देव माने; चेतनने अचेतन माने, अचेतनने चेतन माने; जे जे पदार्थ छे तेना जे जे धर्म रह्या छे तेथी विपरीत धर्म तेना माने; न्यायने अन्याय माने, अन्यायने न्याय माने; आवी विपरीत बुद्धि थाय ते मिथ्यात्वनी राजधानी छे. इहां कोइने प्रश्न थशे के अज्ञाननामा दूषण कह्युं तेमां अने मिथ्यात्वमां शो फेर छे ते विषे जाणवुं जे अज्ञाने करी जड बुद्धी थाय छे अने मिथ्यात्वे करी विपरीत बुद्धी थाय छे. आ फेर छे. मिथ्यात्व जेने छे तेने अज्ञान पण छे अने जेने अज्ञान छे तेने मिथ्यात्व पण छे. ए बे साथेज रहे छे एटले एकाकार लागशे पण बे शब्दना अर्थ जुदा छे तेम भाव पण जुदा छे. ए मिथ्यात्वनी बुद्धिवालाने बहु प्रकारे छे. ते समजवा सारु सिद्धांतकारे पचवीस भेद कह्या छे अने ते पचवीस प्रकारे श्रावकनां बार व्रत अंगीकार करे छे त्यारे सम्यक्त्व अंगीकार करे छे त्यारे पचीस प्रकारे त्याग करे छे ते स्वरूप किंचित इहां लखुं छुं.

१ अभिग्रह मिथ्यात्व ते कुगुरु कुदेव कुधर्मनो खोटो हठ पकडेलो छे ते मिथ्यात्वना जोरथी गर्दभ पुंछनी परे मुके नही. एटले कोईक पिताए पुत्रने समजाव्यो के जे पकडवुं ते मुकवुं

नहीं ते वातनुं विशेष स्वरूप समज्या विना ते वात चित्तमां निश्चित आपी राखी पछी कोईक वखत बजारमां जाय छे त्यां गधेडुं दोडतुं आव्युं तेने रोकवाने पुंछडुं पकड्युं, त्यारे तेणे लातो मारवा मांडी ते लातो खाया करे पण पुंछडु मुके नही. ते जोई लोकोने दया आववाथी तेने समजाव्यो जे ए पुंछडुं मुकी दे नीकर मरी जइश त्यारे एकज जवाव आप्यो जे महारा बापे शिखामण आपी छे के-जे पकड्युं ते मुकवुं नहीं, माटे हुं पकडेलुं छोडीश नहीं; एम कही मुक्युं नही अने लातो खाईने दुखी थयो. तेम आ मिथ्यात्वना जोरथी सुगुरु साचो मार्ग वतावे, घणी रीते समजावे, तो पण सुगुरुनुं वचन माने नहीं अने कहे जे बापदादा करता आव्या तेम करवुं, घरडा शुं गांडा हता? एम हठ पकडीने खरी वात समजे नहीं अने प्रत्यक्ष कुगुरु पोतानी स्त्री वा मा बेन साथे खोटी रीते वर्तता होय तो पण बापदादानो हठ पकडी कुगुरुने मुके नही ते अभिग्रहीक मिथ्यात्व.

२ बीजु अनभिग्रही मिथ्यात्व ते साचा देव अने खोटा देव कुगुरुने सुगुरुने सत्य धर्मने असत्य धर्मने वधाने सरखा माने. सुदेवने पण नमस्कार करे अने कुदेवने पण नमस्कार करे. खराखोटानो भेद नथी. मुखे पण बोले के सर्व देवने नमस्कार करवा पण तेनो परमार्थ नथी जाणतो के देवने तो नमस्कार करवा योग्य छे पण देवपणुं नथी ने तेमां देवपणुं केम मानवुं तेवो विचार नथी तेथी गुणी निर्गुणी सर्वेने सरखा माने छे, तेमां भाग्य उदयथी सुगुरु मले तो कल्याण, पण ते मली न शके. जो मले तो एवी बुद्धि रहे नहीं ने एवी बुद्धि रही छे तेथी जणाय छे के कुगुरु मल्या छे. अने तेनी संगतथी तत्त्वने अतत्त्व माने तेथी शुद्ध आत्मधर्म, अने आत्मधर्म प्रगट करवानां कारणो मली शके नही. अने भवनो निस्तार थाय नहीं माटे आत्मार्थी स-

त्य असत्यनी परीक्षा करी शुद्ध देवगुरु धर्म अंगीकार करवो के अनभिग्रहीक मिथ्यात्व टली जाय.

३ अभिनिवेशिक मिथ्यात्व ते सत्य देवगुरुने जाणे पण मिथ्यात्वना जोरथी तेने आदरे नहीं. कोई समजावे तेने कहे जे बापदादा मानता आव्या ते केम मुकाय. जो मुकीये तो नाक जाय बाकी अमे जाणीये छीए जे सारा तो नथी एवो जवाब आपे अने ममत्वे करी खोटी प्ररूपणा करे, खोटी खेंच करे, उन्मार्ग वर्त्तावे, आत्माने कर्मबंधनो भय नथी वीतरागनो मार्ग साचो जाणे तो पण ते रीते पोताना अहंकारने लीधे प्ररूपे नही, पोते वर्त्ते नही ने साचा उपर द्वेष धारण करे. एवा हठवादी, पार्श्वनाथजी महाराजनी परंपरामां थएला साधु, ते गोशाला भेगा रहेला तेमने श्रीमत् महावीर स्वामी महाराजना श्रावके जइने कह्युं जे आपे श्री पार्श्वनाथजी महाराजनो पण उपदेश सांभळ्यो छे अने गोशालानो उपदेश सांभळ्यो छे, तेमां सत्य शुं छे? त्यारे जवाब दीधो जे महावीर स्वामी महाराज जेम पार्श्वनाथजी महाराज उपदेश देता हता तेमज दे छे, पण हमारे ममत्व बंधायो छे माटे वीरनो मरोड उतारीशुं. हमो दुर्गति जतां बीता नथी एवो जवाब अभिनिवेशिक मिथ्यात्वना जोरथी दीधो, तेम आज पण साचु जाण्या छतां आवा आग्रहथी उत्सूत्र बोलतां डरता नथी. बीजा जीवोने उन्मार्गनो उपदेश दइने तेमने पण उन्मार्गने विषे जोडे. वीतरागना सत्य मार्गनी निंदा करे. आवी दशा छे ते ए मिथ्यात्वना जोरनी छे. एवी दशा छे त्यां सुधी पोताना सहज स्वभावने ओलखशे नहि, विभाव स्वभावने छांडशे नही. तेम शुद्ध तत्त्वनी श्रद्धा पण करशे नही, माटे ए मिथ्यात्वनो परिहार करवो.

४ संशय मिथ्यात्व ते वीतरागना वचनमां संशय पडे. जेम

केशास्त्रमां रीखवदेवजी महाराजना वखतमां शरीर पांचसें धनुष्यनां हतां, आयुष्य क्रोम पुर्वनुं हतुं, एवुं शास्त्रमां सांभलीने शंका करे जे आटलुं मोटुं शरीर, आयुष्य होय नही, एम मानी प्रभुना वचन सर्द्दहे नहीं, पण विचार करे नहीं के आवी गया कालनी बाबतो तथा अरूपी पदार्थनी श्रद्धा आप्त पुरुष जे सर्वज्ञ तेमना वचननी प्रतीत करवाथी थाय छे, माटे आप्त पुरुषनी खातरी प्रथम करवी. ते खातरी करवानुं साधन हालमां एटलुं छे के जे जे लोक जे जे देवने माने छे ते ते देवने ते सर्वज्ञ माने छे, तो ते देव सर्वज्ञ छे के नहीं ते मध्यस्थ बुद्धिथी तपासवा सर्वे देवोनां चरित्रो जोवां; तेमां सर्वज्ञतानी खामी जणाय छे के नहीं. जेम के महादेवजीए पार्वतीना बनावेला पुत्रने पुत्र न जाणतां जार पुरुष जाण्यो. वली तेनुं माथुं क्यां गयुं ते ज्ञानमां जणायुं नहीं तेथी हाथीनुं माथुं लावीने पेला पुत्रने चोंटाड्युं. एवा दाखला जोवाथी सर्वज्ञ छे के नथी ते खात्री थशे. तेमज श्रीमत् महावीर स्वामी भगवान् केवलज्ञान पामी सर्वज्ञ थया त्यार बाद सर्वज्ञतानी खलना कोइ पण ठेकाणे थती नथी, तो जे पुरुषमां सर्वज्ञतानी खामी नथी जणाती तेवा पुरुषना वचनमां संशय करवो नहीं जोइए. युक्ति करवानी शक्ति होय तो ते युक्तिये तपास करवी. हालमां पण हवा फेरफारथी मजबूत माणस देखाय छे, तेम ते कालनी हवा एवी अनुकुल तेथी एवा बनी शके. एवा विचारो करवाथी अमने तो कोइ पण संशय वीतरागना वचनमां थतो नथी ने बीजाना चरित्रो जोयां तेमां सर्वज्ञतानी खामी जणाय छे. हालमां चरित्र चंद्रिका नामनी चोपडी छपाइ छे तेमां घणा देवोनां चरित्र छे ते में वांची छे. तेम परीक्षकोये मध्यस्थ बुद्धिए वांचवी. ते चोपडीमां महावीर स्वामीनुं पण चरित्र छे ते बराबर लख्युं नथी, तो पण तेमां स-

र्वज्ञतानी खामी पमती नथी. हवे जैननां द्विजवचनचपेटा हेमचंद्राचार्यनुं करेलुं तथा धर्मपरीक्षानो रास जोशो तो केटलाएक देवोनां चरित्र जणाशे अने तेमनी सर्वज्ञतानी खामी जणाशे माटे जे पुरुषमां खामी नथी ते पुरुषनां वचन प्रमाण जेने ए मिथ्यात्व खरयुं हशे ते करशे. जेने परमात्माना वचनमां कोइ पण बाबत माटे संशय तेने संशय मिथ्यात्व जाणवुं.

५ अनाभोगीक मिथ्यात्व ए मिथ्यात्ववालाने धर्म कर्मनी खबर नथी, तेनी खोजना नथी, मुढतामांज रहे छे, धर्म सनमुख दृष्टीज नथी, जेम के एकेंद्री प्रमुख जीवो अव्यक्तपणामांज काल गुमावे छे तेने अनाभोगीक मिथ्यात्व कहीये.

हवे दश प्रकारे मिथ्यात्व ठाणांग सूत्रमां कह्यां छे. तेने अनुसरीने लखुं छुं.

१ धर्मने अधर्म माने ए मिथ्यात्व. हवे धर्म छे ते बे प्रकारे छे एक निश्चय धर्म ते आत्म स्वभावमां रहेवुं ते. अने तेथी विपरीत जे जम धर्म छे, तेमां प्रवर्तवुं अने तेने धर्म मानवो ते अधर्म. पुद्गल प्रवृत्ति बे प्रकारे छे. एक पुद्गल प्रवृत्ति आत्म धर्म प्रगट थवाना कारणरूप छे, ते पण आदरवा योग्य छे, तेने व्यवहार धर्म कह्यो छे. ए बे धर्मने जे जे रूपे छे ते रूपे मानवा ते धर्म अने तेथी विपरीत मानवुं ते मिथ्यात्व व्यवहार धर्म, जे जे गुणस्थाने गुणस्थान मर्यादा प्रमाणे न आदरे अने धर्म माने ए पण मिथ्यात्व छे. हृदयमां निश्चय धर्म धारण करवो ते न करे अने व्यवहार वर्त्तनानेज निश्चयरूप माने तो ते पण मिथ्यात्व छे. जे जे अंशे आत्मा निर्मल थाय, कषायादिकथी मुकाय, तेने निश्चय धर्म कहीए, ते प्रगट थाय एवां कारण अंगीकार करवां. कारणने कारणरूप मानी वर्तता ए मिथ्यात्व टली जशे.

२ अधर्मने धर्म माने एटले अनादिकालनो जीव अधर्मने

सेवी रह्यो छे. वली अधर्मीना कुलमां जन्म पाम्यो छे तेथी तेनी वार्ता सांभली ते रीतनी श्रद्धा करे अने हिंसा करीने धर्म माने; जेमके केटलाएक लोक वींछी, सर्प, वाघ, सिंह एवा हिंसक जीवने मारवा ते धर्म छे एम माने वली बकरीइदमां बकरा मारवा ते धर्म छे आवी रीते अज्ञानपणे जीव हिंसा करीने धर्म माने ते अधर्मने धर्म मान्यो कहीए वली लोकमां आर्य लोक कहेवाय, दयालु कहेवाय ते छतां केटलाएक बकरा घोडा विगेरे यज्ञ करीने तेमां होमे अने तेने धर्म माने; कोइ पण जीवने दुःख थाय तो तेनुं फल एज छे के ते पापथी आपणे दुःख भोगववुं पडे एवुं सर्व धर्मवाला माने छे. तेम छतां आवा प्राणीने दुःख देवामां पाप मानता नथी एज अधर्मने धर्म मान्यो कहीए, माटे जे जे माणस कोइ पण जीवने दुःख देवुं, जूठुं बोलवुं, चोरी करवी, स्त्री गमन करवुं, धननी तृष्णा ए वस्तुमांथी कोइ पण वस्तु करीने धर्म माने, ते अधर्मने धर्म मान्यो समजवो. अहीआं कोइ प्रश्न करशे जे तमारा जैनीउ गाडी घोडा उपर बेसनारा, सारा आभूषण घरेणाना पहेरनार, खाटला उपर सारी तलाइउ नाखी सुनारा, रोज सारा मिष्टान्न भोजनना करनारा तेवा सुखीआ माणसने संसार छोडावी दिक्षा आपी उघाडे पगे चलावोछो, उघाडे माथे फरवो छो, भोंय उपर सुवाडोछो, घेर घेर फरीने भिक्षा मंगावोछो. जेवो आहार मले तेवो खवरावो छो अने सुंदर विगयो खावाना बंध करावोछो तो ए शुं ? तेने दुःख देइ धर्म मान्यो न कहीये, ए विषे समजवुं के अमारा जैनी मुनि महाराजो कोइने पण जबराइथी एवी रीते करता नथी, ने जबराइथी एमांनुं कंइ पण कोइने करावे ने धर्म माने तो तमो कहोछो तेम थाय. पण अमारा मुनियो तो संसारमां शुं शुं दुख छे, वली संसारमां दुखने सुख मानवाथी शुं फल थाय

छे मोक्ष साधन शी रीते थाय छे तेनो धर्म उपदेश दे छे. ते धर्म उपदेश आत्मार्थी सांभली जड जे शरीर तेमां रही जे जे अज्ञानपणानी प्रवृत्ति अनिष्ट लागे छे अने आवते भव विषय कषायनां कडवां फल जाणवामां आवे छे ते जाणीने संसारनो त्याग करी एवी प्रवृत्ति पोतानी प्रसन्नताये करे छे ने तेम करवाथी संसारमां जे जे धन कमावानां दुख, रांधवानां दुख, वस्तु लाववानां दुख, आभूषणनो भार उचकवानां दुख, विषय भोगवी शरीर खराब करवानां दुख, केमके विषय भोगवती वखत शरीरने केटली मेहेनत पडे छे; वली विषय भोगवी रह्या पछी पण शरीरनी स्थिति केवी थाय छे! एवां दुखो टली जाय छे. करोडपतिने पण धन संबंधी केटली फीकरो करवी पडे छे. कुटुंब होय तो कुटुंबना झगडानां केटलां दुख ? तेने अज्ञानपणे दुख मानता नथी पण जो बुद्धिथी विचार करे तो संसारमां सवारथी उठे त्यारथी ते रात्रे सुवे त्यां सुधी केटलां दुख भोगववां पडेछे. तेमानुं एक पण दुख साधुपणामां नथी. सदाकाल आणंदमां जाय छे. नवुं नवुं ज्ञान थाय छे तेथी बुद्धिवानो महा प्रसन्नतामां रहे छे. माटे जैनीउ कोइने दुख देइने धर्म मानता नथी. तेम जे जे आत्मार्थी होय तेने उपर कहेला पांचे, अधर्ममांथी कोइ पण अधर्म प्रवृत्ति करीने धर्म मानवो नही ने जे माने ते अधर्मने धर्म मान्यो कहीये.

३ मार्ग जे मोक्ष मार्ग जे मार्ग साधी वीतरागपणाने पाम्या छे, आत्माना ज्ञान दर्शन चारित्र रूप गुण प्रगट कर्या छे, केवल ज्ञाने करी जगतना भाव एक समयमां जाणी रह्या छे, तेवा पुरुषे देखाडेलो मोक्ष मार्ग एटले मोक्षना साधन ते साधनने उन्मार्ग माने अने तेनुं आराधन न करे, आराधन करनारनी निंदा करे ते मार्गने उन्मार्ग मानवारूप मिथ्यात्व जाणवुं.

४ हिंसा करवानी बुद्धि आपे, जुठुं बोले, लोकने ठगता बीहे नही, स्त्री गमन करे, पैसानो ममत्व लोभ मटयो नथी, एवा गुरुनी सेवा करी धर्म माने; एवा खोटा मार्गे चालेला देवनो बतावेलो धर्म माने; जगतना पदार्थनुं ज्ञान जेने नथी, ते छतां पदार्थनुं स्वरूप विपरीत बतावे अने कहे जे आ मोक्ष मार्ग छे. पांच यम तो जगत प्रसिद्ध छे. ते यम पालवा सारा कहे ने पाले नही; अणगल पाणी वापरे, तेमां त्रस थावर जीवनी हिंसा थाय अने नदीमां नहावामां पुन्य माने, जुओ के महाभारतमां गरणुं बेवडुं करी पाणी गालवानुं कह्युं छे, तो नदीनुं पाणी शी रीते गालशे ? नही गलाय तो हिंसा थशे ने पाग कहे छे जे नदीमां नहावानुं महा पुन्य छे. यज्ञ करो जीव हिंसा करवानो उपदेश आपे, तेने मोक्ष मार्ग कहे; वली जैनी भाइओ पण जे धर्म करणी छोकरानी इच्छाए पैसानी इच्छाए परलोकमां राजा थाउं देवता थाउं एवा सुखना अर्थे करे अने तेने मोक्ष मार्ग माने, ए पण उन्मार्गने मार्ग मानवारूप मिथ्यात्व छे. वली मानने सारु, जशने सारु, लोकने सारु देखाडवाने सारु, आत्महितनी बुद्धि विना वीतराग मार्गनी अश्रद्धानपणे जे धर्म करणी करे ते उन्मार्गने मार्ग मानवारूपज छे. वली जे मार्ग वीतरागे शास्त्रमां निषेध कर्यो छे तेवी धर्मनी प्रवृत्ति करी मार्ग माने, अविधिमां प्रवर्त्ती बीजाने प्रवर्तावे ते उन्मार्गने मार्ग मानवारूप मिथ्यात्व जाणवुं.

५ जीवने अजीव माने ते मिथ्यात्वः—जेमके केटलाएक नास्तिक मति तो जीवज मानता नथी. पांच भूत मली आ शरीर बने छे ते जीव छे, ते सिवाय जीव जुदो नथी. पांच भूत वीखरी जाय एटले कंइ नथी. परजीव पण नथी ए जीवने अजीव माननार सर्वथा प्रकारे जाणवा. केटलाएक पंचेंद्रि तिर्यंचने

जीव माने पण पांच थावरने जीव मानता नथी. ए पण जी-
वने अजीव मानवानुं मिथ्यात्व जाणवुं. जैनीओ पांच थावरने तो
जीव माने छे, पण केटलीएक शास्त्रना बोधनी खामिथी सचित
वस्तुने अचित मानवी थाय छे, जेमके गुलाबजल केटला वख-
तनुं तेने केटलाएक सचितना त्यागी अचित मानीने वापरे छे.
शास्त्रमां सौथी वधारे काल चुनाना पाणीनो छे. चुनाना पाणी
करतां गुलाबमां कंइ वधारे गरमी नथी के तेथी वधारे काल रहे-
वाथी सचित न थाय. एवो विचार करवाथी सचित थाय एम लागे
छे, तेम छतां अचित मानवुं तेमज जे जे जिव पदार्थने अचित
मानवाथि जीवने अजीव मानवारूप मिथ्यात्व लागे; माटे सर्वज्ञ
महाराजे जेने जीव कह्या छे तेने जीव केहवाथी ए मिथ्यात्व टले छे.

६ अजीवने जीव मानवो ते मिथ्यात्व ते वधां शरीर छे
ते अजीव छे, ते हुंज छुं करीने ममत्व भाव करवो, वली अ-
णसमजथी शास्त्रमां जे वस्तु अचित कही होय तेने सचित करी
मानवुं थाय, तो पण मिथ्यात्व लागे.

७ साधुने असाधु मानवा ते मिथ्यात्व. जे मुनि महाराज
पंचमहाव्रत पाले छे, प्रभुनी आज्ञा प्रमाणे वर्त्ते छे, मोक्ष मार्ग-
मां उजमाल थइने वर्त्ते छे, जेने स्त्रीनी धननी ममता नथी, सा-
वद्य वचन मात्र बोलता नथी, एवा साधु मुनिराजने असाधु मा-
ने. पोते संसार धन, स्त्रीना अभिलाषी एवा गुरुनो संग कर्यो छे,
तेणे बुद्धि अवली करी नाखी छे. तेथी खरा साधुने असाधु माने
ए मिथ्यात्व. खरा खोटानी परीक्षा ज्ञान थयेथी थाय छे. ते विना
जे जे वाडामां जे पड्या छे ते बीजा वाडाना साधुने खोटा
माने छे, ने दरेक वाडामां बंधारण पण एवां थइ गयां छे, एटले
एम मानी जे उत्तम पुरुषनी निंदा करे छे; पण एटलो विचार
करे जे पांच यम तो वधा दर्शनवाला माने छे. तेम यथार्थ प्रा-

णातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह ए पांच व-
स्तुना संपूर्ण त्यागवाला कया साधु छे. एवुं जो तपासे तो ज-
लदी समजवामां आवी जाय अने उत्तम पुरुषनी निंदा करवा-
मां नही आवे.

८ असाधुने साधु मानवा ते मिथ्यात्व. असाधु जे साधु
नाम धरावे छे. पण धननो अने स्त्रीनो त्याग कर्यो नथी जीव
हिंसादिक आरंभने तो छोड्यो नथी, वेपार रोजगार करे छे, मंत्र
जंत्र करी आजीविका करे छे, लोकने विपरीत समजावीने पै-
सा ले छे, एवाने साधु मानवा ते तथा केटलाएक लोकने ठगवा
सारु बाह्यथी धननो त्याग देखाडे छे, पण चित्तमां पैसानी इच्छा
ते पण असाधु कहीए, केटलाएक साधुपणुं पाले छे, पण वीत-
रागना वचननी श्रद्धा नथी, केटलाएक परलोकना संसारिक सुख-
नी इच्छाए साधुपणुं पाले छे. पण मोक्षने अर्थे उद्यम नथी कर-
ता, वली केटलाएक पंचांगी जे शास्त्र ते मानता नथी, जिन
प्रतिमा भगवंते मानवी कही छे, गृहस्थने पूजवी कही छे, ते
छतां गृहस्थने उपदेश करे के जिन प्रतिमा पूजवी नही, पूजवाथी
पाप थाय छे, एवी प्ररूपणाना करनार पण असाधुज कहीए;
एमने साधु माने ते असाधुने साधु मानवारूप मिथ्यात्व जाणवुं.
बीजी रीते पोतानी विभाव परिणति मटी नथी, विभावमां
(विषय कषायमां) मग्न रहे अने पोताना मनथी हुं रुडुं करुं
छुं, एम माने पोतानी प्रशंसा करे ते पोताने विषे असाधुपणुं छे,
ते छतां पोतामां रुडापणुं साधुपणुं मानवुं ते असाधुने साधु
मानवारूप मिथ्यात्व छे.

ए सिद्ध भगवान जे अष्टकर्म जे ज्ञानावर्णी कर्म क्षय करी
अनंत ज्ञानरूप जे केवल ज्ञान प्रगट कर्युं छे. दर्शनावर्णी कर्म
क्षय करी सामान्य उपयोगरूप केवल दर्शन प्रगट कर्युं छे, मो-

हनी कर्म क्षय करी चारित्र गुण जे पोताना आत्मस्वभावमांज स्थिर रहेवुं ते रूप चारित्र गुण तथा क्षायक समकित प्रगट कर्युं छे; अंतरायकर्म क्षय करी अनंत वीर्यादिक गुण प्रगट कर्या छे; नाम कर्म क्षय करी अरूपी गुण प्रगट कर्यो छे; गोत्र कर्म क्षय करी अगुरु लघु गुण प्रगट कर्यो छे; वेदनी कर्म क्षय करी अव्याबाध सुख प्रगट कर्युं छे; आयुष्य कर्म क्षय करी अक्षय स्थितिने पाम्या छे; एवी रीतें आठे कर्म क्षय करी आठ गुण प्रगट कर्या छे एवा सिद्ध महाराजने सिद्ध न माने, भगवान न माने अने एवा पुरुषनी निंदा करे, एवा देवने देव मानता होय तो तेने ऊंधु चत्तुं समजावी एवा देव उपरथी आस्था उठावे ए मिथ्यात्व सेववाथी आत्माना शुद्ध गुण प्रगट पण कोइ दिवस नहीं थाय, कारण के एवा गुणनी इच्छा होय तो एवाज पुरुषना गुणग्राम करत, पण ते करतो नथी अने निंदा करे छे तेज मिथ्यात्व जाणवुं.

१० असिद्ध जेमने आठे कर्म रह्यां छे, जे नवां पण कर्म बांध्यांज करे छे, विषय कषायमां आसक्त छे ते तेमनां चरित्रथी सिद्ध थाय छे; तेम छतां तेवा देवने सिद्ध मानवा, भगवान मानवा, तेमनी आज्ञाए वर्तवुं, तेज संसार वृद्धिनुं कारण छे, आत्माना गुणनुं घात करनार छे, माटे मिथ्यात्व त्यजवानो उद्यम एटलोज करे के आपणने धर्म करणी करवा बतावे छे ते करणी देवे करीने देवपणुं पाम्या छे के आपणने विषय कषाय त्याग करवा कहे छे, अने पोते विषय कषायमां वर्त्ते छे, त्यारे तो एक ठगाइ जेवुं काम बन्युं एम बुद्धिवानने सहेलाइथी समजाइ जशे, अने जेमनामां गुण प्रगट थया छे ते पण समजाशे, माटे आठ कर्म क्षय कर्यां होय तेमनेज सिद्ध, वा भगवान वा देव वा ईश्वर मानवा. एवुं करवाथी ए मिथ्यात्व टलशे; ए दश मिथ्यात्व.

१ तेमज बीजी रीते छ मिथ्यात्व छे तेमां प्रथम लोकीक

देवगत मिथ्यात्व ते उपर दशमां असिद्धने सिद्ध मानवानुं मिथ्यात्व लख्युं छे तेवा देवने देव मानवा वा संसार अर्थे मानता मानवी ते लोकिक देवगत मिथ्यात्व.

२ बीजुं लोकिक गुरुगत मिथ्यात्व ते गुरु नाम धरावी पंच अव्रत रात दीवस सेवी रह्या छे; एवा सन्यासी, फकीर,. पादरी विगेरेने गुरु मानवा ते.

३ त्रीजुं लोकिक धर्मगत मिथ्यात्वः—जे पर्वने विषे धर्मनो परमार्थ रह्यो नथी, मात्र केटलाएक पाखंमीउए उन्नां करेलां पर्व जे होली, बलेव, नागपांचम, रांधनछठ, सीलसातेम आदि एवा पर्वने धर्म पर्व मानवां तथा जे हिंसामय, विषय कषायमय प्रवृत्तिने धर्म प्रवृत्ति मानवी, पुद्गल न्नावनी प्रवृत्तिने धर्म प्रवृत्ति मानवी ते लोकिक धर्मगत मिथ्यात्व.

४ लोकोत्तर देवगत मिथ्यात्वः—देव जे तीर्थंकर महाराज तेमने मुक्तिने अर्थे मानवा ए तो योग्य छे. मुक्ति अर्थे मानवाथी सर्व कार्यनी सिद्धि थाय छे, ते छोमीने संसार अर्थे मानवा, मारे दीकरो आवशे तो सो रुपीया चमावीश एवी मानता मानवाथी ते लोकोत्तर मिथ्यात्व लागे छे; कारण के न्नगवंतनी यथार्थ श्रद्धा होय तो सहेजे थशे; थशे तो चमावीश एम मानेज नही. ते तो एमज जाणे छे के जेटली बने एटली न्नगवंतनी न्नक्ति करवी; न्नक्ति सर्व कार्यनी सिद्धिने आपनारी छे. न्नगवंतनी न्नक्ति कर्या छतां कदापि कार्य न थाय तो जाणे छे के जे बने छे ते पूर्व कर्मना उदयथी बने छे अने निकाचित उदय कोइ टालवा समर्थ नथी. न्नगवान महावीर स्वामीने पण कर्म उदय आव्यां ते न्नोगववां पम्यां एम विचारी श्रद्धा भ्रष्ट थाय नहीं अने जेनी मजबुत श्रद्धा नथी ते माणस आवी मानता करे छे, अने पूर्वना निकाचित कर्मना जोरथी कार्य न थयुं तो पछी तेनी सर्व बाबत-

मां अज्ञानपणे श्रद्धा उठी जाय छे अने धर्म भ्रष्ट थाय छे; माटे एवी मानता करवी नही. अने करे तो लोकोत्तर मिथ्यात्व लागे. वली जे पुरुषने मिथ्यात्व नष्ट थयुं छे तेमने तो भगवंते मोक्ष मार्ग वताव्यो छे ते अंगीकार कर्यो छे, तेथी एक मोक्ष सिवाय पुद्‌गलीक सुखनी इगाज नथी. फक्त आत्म तत्त्वनीज सनूमुख थया छे. जे जे कर्म उदय थाय ते खुशीथी भोगवे छे के मारे उदय आवेलां कर्म समभावे भोगवाय तो नवां कर्मनो बंध थाय नहीं एवी भावना वर्त्ते छे, तेथी स्वप्नामां एवी माननानी इच्छा नथी, फक्त सहेज सुखना कामी छे, ते लोकोत्तर मिथ्यात्व सेवताज नथी.

५ लोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्व ते जैनना गुरु महाराज मोक्ष मार्गना दातार तेमने मोक्ष अर्थे मानवा योग्य छे, ते गोर्जीने संसारना स्वार्थे मानवा ते लोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्व; अने जैनना साधुनो वेष पहेरे छे पण प्रभुनी आज्ञाथी वहार वर्त्ते छे, उत्सूत्रप्ररूपणा करे छे, उन्मार्ग वर्तावे छे, एवा वेषधारी धोला कपडावाला वा पीला कपडावाला साधु नामधारीने गुरु मानवा ते लोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्व छे.

६ लोकोत्तर धर्मगत मिथ्यात्व वा पर्वगत मिथ्यात्व ते जैननां पर्वो संसार अर्थे करवां, जेमके फल पांचम करीए तो छोकरां थाय, आशापुरीनां आंविल करीए तो आशा पुरण थाय; एवी इच्छाए जे जे पर्व आराधन करवां ते पर्वगत मिथ्यात्व; अने जो तपस्या कर्म क्षय करवा ते करे, तो ते निर्जरारूप फलने आपनार छे, ते कंइ दोषित नथी. संसारनी आशाए करवुं ते पर्वगत मिथ्यात्व छे. धर्म साधन करी आ लोक पर लोकनी इच्छा करवी, ते सर्व कर्म आववानुं कारण छे, केमके एक माणसे देवलोकनी वा राजा थवानी इच्छाए संसारनो त्याग कर्यो; हवे ए त्याग

इछा सहित छे. एने देवता वा मनुष्यना सुखनी तथा भोगनी इछा छे, तो एवी इछाए तप करीए तो संसारनी वृद्धिज थाय, माटे एवी इछानो त्याग करवो, ने आत्मगुण प्रगट करवानी इछाए धर्म करणी करवी, के सेहेजे ए मिथ्यात्व टली जशे.

ए छए मिथ्यात्व थयां.

हवे त्रीजी रीते चार मिथ्यात्व छे ते कहीये छीये.

१ प्रवर्तना मिथ्यात्व ते मिथ्यात्वनी मांहे प्रवर्तवुं जेमके कोइ मिथ्यात्व सेवे छे. तेनी साहाज्यमां वा मिथ्यात्वीना वरघोडामां जवुं,वा पधरामणीमां जवुं, वा कुटुंबी अन्य देवनी सेवा करता होय तेनी साथे वर्तवुं वा मिथ्यात्वीनां पर्व करवां ए प्रवर्तना मिथ्यात्व.

२ प्ररूपणा मिथ्यात्व ते जिनेश्वर महाराजे आगममां पंचांगीमां वा पूर्वाचार्यना ग्रंथमां जे जे रीते धर्म प्ररूप्यो छे तेथी विपरीत पोतानी मतिथी प्ररूपणा करवी, जेमके दिगंबर मार्गना चलावनार जैनी छे, ते छतां वीतरागना आगमो जे वर्ते छे ते मानता नथी, अने कल्पित् सास्त्र रची जुदोज मार्ग वर्तावे छे. केटलाएक ग्रंथनी रचनामां निःकारण श्वेतांवरमत दोषित कर्यो छे. जेमके संजमथी भ्रष्ट वर्तनारने वांदवा पूजवा श्वेतांबरी पण निषेध करे छे, ते छतां एवा साधु श्वेतांवरी मतना छे तेथी ए मत खोटो छे. आ लखवुं केवुं भूल भरेलुं छे. पण उत्सूत्रनो भय नहीं ते बोलावे छे. दिगंबर मत चलावनारे साधुने वस्त्र नहीं राखवां वताव्यां तेथी शुं थयुं के वस्त्र रहीत साधु थवा वंध थइ गया, अने साधुनो मार्गज बंध थइ गयो, नाम मात्र कोइक थाय छे तो ते पण उपरथी वस्त्र ओढी राखे छे, एटले मार्ग प्ररूपेलो रह्योज नहीं. प्रभुने एक अंगे पूजे छे. आभूषण भगवंतने पहेरावता नथी ने कहे छे जे प्रभुए आभूषणनो त्याग कर्यो छे, तेथी चडाववां नहीं, तो प्रभुए स्नाननो पण त्याग कर्यो छे, तो प्रभुनी मूर्तिने पखाल

केम करो छो ? जो पखाल करतां, एक अंगे पूजा करतां, तमारा अभिप्रायमां हरकत आवती नथी, तो विचारो के ए पण निषेध करेलुं तमे करो छो; तेमज सर्वे अंगे पूजा करो, आभूषण चडावो, तो शुं हरकत थाय ? पण वगर विचारथीज ए वात वर्तावी छे. श्वेताम्बर रीत खर वर्ते छे, जेम मेरु शिखर उपर भगवंतनो जन्माभिषेक इंद्र महाराजे कर्यो ते वखते आभूषण भगवंतने पेहेराव्यां हतां ते भाव लावी ए सर्वे कर्तव्य करवुं छे. भगवंतनी मूर्त्ति आरोपित छे, तेमने जे जे अवस्था आरोपी भक्ति करीए ते थाय, आ विचार न करतां अछ द्रव्ये भक्ति करनारनी निंदा करे छे, तेज विपरीत प्ररूपणा छे. वली स्त्रीने मुक्ति नथी मानता ने गोमट सार दिगंवरनो करेलो छे ने ते तेओए मानेलो छे, ए नामांकित ग्रंथ छे. तेमां एक समये दश स्त्री मोक्ष जाय एम कहेलुं छे, ते छतां ते वावतपर लक्ष न राखतां स्त्रीने मुक्ति नहीं एम विपरीत प्ररूपणा करे छे. दिगंवर मतनी चरचा विशेष प्रकारे अध्यात्ममतपरीक्षामां उपाध्याय महाराजजी श्री जसविजयजी महाराजे दर्शावी छे एटले इहां विशेष लखतो नथी; एमज ढुंढीया तेरापंथी विगेरे आगमथी जेटली विपरीत प्ररूपणा करे छे ते प्ररूपणा मिथ्यात्व जाणवुं. ए प्ररूपणा मिथ्यात्व, ज्ञान थया विना टलवानुं नथी, माटे वितरागना वचननी श्रद्धा सहित ज्ञाननो अभ्यास करवो के प्ररूपणा मिथ्यात्व टले. वोध विना जेम करता आव्या तेम करवुं, एम करवाथी मिथ्यात्व टली शके नहीं माटे ज्ञान, निःपक्षपातथी करवुं.

३ प्रणाम मिथ्यात्व ते मिथ्यात्व मोहनीनो ज्यां सुधी उदय छे, त्यां सुधी प्रणाम मिथ्यात्व टलशे नहीं. व्यवहारथी प्रभु पूजा प्रमुख करशे, अंतरंगमांथी मिथ्यात्वनो क्षयोपशम अथवा उपशम थयो नथी त्यां सुधी प्रणाम मिथ्यात्व टलशे नहीं. ए

ज्यारे उपशम समकित वा क्षयोपशम समकित पामशे त्यारे प्रणाम मिथ्यात्व टलशे, माटे ज्ञानमां तथा ज्ञानी पुरुषनी उपासनामां तत्पर रहेवुं, ने ज्ञानीनां वचन प्रमाणे चालवानी अति उत्कंठा राखवी, देवगुरुनुं अतीशे आराधन करवुं, तेथी ए मिथ्यात्व दूर थशे. हवे ए मिथ्यात्व दूर थयुं छे के नहीं तेनी परीक्षा समकितना लक्षण समकितनी सज्झायमां जशविजयजी महाराजे कह्यां छे ते प्रमाणे पोतानामां छे के नहीं ते मेलवी जोवाथी जणाशे,अने अनुमानथी धारी शकाशे;निश्चय तो अतिशय ज्ञानीनां वचनथी थाय, ते तो आ कालमां विरह छे एटले उपाय नथी; तेम अतिशय ज्ञानीने पुछ्या विना निरधार न थाय तेनो दाखलो जे इशान इंद्र महाराजे पण जगवानूने प्रश्न पुछ्या के हुं जवी छुं के अजवी छुं? समकिती छुं के मिथ्यात्वी छुं? आवा त्रण ज्ञानना धणीथी मुकरर थयुं नही तेथी पुछवुं थयुं, तो आपणे शुं मुकरर करी शकीए. तो पण शास्त्राधारे उद्यम करवो, मार्गानुसारीना गुण हरिजद्रसूरि महाराजे धर्म बिंदुमां बताव्या छे तेनी साथे मिलान करवुं अने मिलान करतां लक्षण न मले तो मिथ्यात्व गयुं नथी एम समजवुं.

४ प्रदेश मिथ्यात्व ते मिथ्यात्वनां दलीयां आत्म प्रदेश साथे क्षीर नीरनी पेरे एकमेक थइने रह्यां छे ते ज्यारे क्षायक समकित थाय छे त्यारे टले छे. मिथ्यात्व बंध उदय ने सत्ता त्रणे प्रकारे टली जाय छे त्यारे क्षायक समकित थाय छे, माटे ते समकित प्रगट करवानो जाव राखवो के प्रदेश मिथ्यात्व टली जाय.

आ बधां मलीने पचीश प्रकारना मिथ्यात्व शास्त्रोमां दरशाव्यां छे. एमां केटलाएक जेद एक बीजाने मलता छे, तेनुं कारण एटलुंज समजवुं के साची वस्तुने खोटी कहेवी ए मि-

थ्यात्व छे तो सारी बुद्धिवालाने तो एक शब्द बस छे पण विषम कालमां मारा जेवा मंद बुद्धिना धणीउने रूपांतरे भेद दरशावेला जोवामां आवे तो मन सुधरे, माटे जुदा जुदा भेद छे; ते समजीने दरेक प्रकारे विभाव दशाथी मुक्त थवाना कामी थवुं. केटलाएक जैनी नाम धरावे छे, पोषध पडिक्कमणां करे छे, जिन भक्ति करे छे, गुरुनी सेवा करे छे, परदेशथी धर्म बोध गामना लोकने करवाने साधुजीने तेडी लावे छे, पण गुरुजी स्याद्वाद मार्ग दर्शावे छे तेथी कोइक भव्य जीव प्रतिबोध पामे छे अने दिक्षा लेवाने तत्पर थाय छे, त्यारे तेनां माता पिता अने लागता वलगता गुरुनी निंदा करवा तत्पर थाय छे, लडवा तैयार थाय छे अने गालो देवानी फीकरज नहीं, आटली हदे पहोचे छे. जरा पण पापनी बीक राखता नथी. आ वात केवी अन्यायनी छे के जेमने उपदेश देवा लाव्यो, ते तो दरेक प्रकारे संसारथी उदास थाय एवोज उपदेश आपे, तेथी कोइक उत्तम जीव दिक्षा लेवा तैयार थया, तो तेमां साधुजी महाराजे शी कसुर करी के तेमनी निंदा करवा लडवा जीव तैयार थाय छे साधुजी कदापि कंइ फेरफार युक्तिए करीने बोले, तो श्रावको कहेशे जे साधु थइने जूठुं बोल्या, अने विचित्र प्रकारे निंदा करे छे, ए सर्वे जोर मिथ्यात्वनुं छे माटे ए वर्तना नहीं करवी. वली शास्त्रनी श्रद्धा छे एम बधा माणस कहे छे, पण पोताने फावती वात नहीं आवी तो शास्त्रपर पण लक्ष देता नथी, एकोना फल छे, के अंतरंगमांथी मिथ्यात्व गयुं नथी तेनां फल छे, जो मिथ्यात्व गयुं होत तो आ दशा थात नही, साधुजी दिक्षा लेवा नीकले तेनी केटलीएक हकीकतनो धर्म बिंदुमां हरिभद्रसूरि महाराजे दरशाव कर्यो छे, ते ग्रंथ टीका तथा बालाबोध सहित छपायो छे, तेमां दिक्षा लेनारने मातापितानी रजा लेवानो अ-

धिकारज कह्यो छे, ते केवी रीते कह्यो छे, तेनो सार लखुं छुं. दिक्षा लेनारे मातापिताने समजावीने रजा मागवी, ने रजा न आपे तो जोशीने समजावे के तमे महारां मातापिताने कहो जे आयुष्य टुंकुं छे माटे एने रजा आपो, पछी जोशी एवी रीते जूठुं कहे, ते सारु त्यां तर्क कर्यो छे जे दिक्षा लेवा नीकले ने आवुं जूठुं बोलवुं केम घटे? तेना जवाबमां कहे छे जे धर्म अर्थे जूठुं बोलवुं ते जूठुं नथी; आ वात पाने १७१ मे छे. आ उपरथी विचारो जे जूठुं बोलवानी पण आवा कारणसर छुट मुके छे के जेथी जावजीव जूठानो त्याग थाय, ए सारु आ परवानगी आचार्य महाराजे आपी छे, तो श्रावको निंदा करे तो शास्त्रथी विरुद्ध खरुं के नहीं? ते विचार करवो जोइए, पण मिथ्यात्वनी प्रकृति खशी नथी त्यां सुधी शुद्ध मार्गनी श्रद्धा थवानी नथी, अने श्रद्धा विना आत्मतत्त्वनुं ज्ञान पण थवुं नथी, केमके आत्मतत्त्वनुं ज्ञान श्रद्धा गम्य छे, प्रत्यक्ष नथी माटे वीतरागना प्ररूपेला शास्त्र उपर श्रद्धा राखी आत्मतत्त्व प्रगट करवाना कामी थवुं. केटलाएक श्रद्धा राखे छे तो रागी द्वेषीनी श्रद्धा राखे छे तेथी धर्मनुं नाम अने अनेक प्रकारना मत ममत्व करे छे. धनादिकनी, स्त्रीनी कामनामां आसक्त थाय छे. ए पण जोर मिथ्यात्वनुं छे. माटे जे पुरुषना वचनथी संसार उपर प्रीति वधी शरीरादिक पदार्थ उपर राग वधे, मोहनुं जोर वधे, काम क्रोध दीपे, एवो धर्म बतावेलाने धर्म नहीं मानवो, एथी विपरीत एटले संसार कुटुंब धन ए परथी राग खसे, पोताना आत्मतत्त्व प्रगट करवामां सन्मुखपणुं थाय, ज्ञानमां चित्त लीन थाय, पांचे इंद्रियो वश थाय, मन वश थाय, पोताना आत्म स्वरूपमां लीनता थाय, यथार्थ, वस्तु धर्मनुं ज्ञान थाय, एवा प्ररूपेला शास्त्र उपर श्रद्धा करवी, ने एवा गुरु उपर श्रद्धा करवी एज मिथ्यात्वना

नाशनुं चिन्ह छे, प्रभुजीए राज ऋद्धि कुटुंब देह उपरथी म-
मत्वभाव छोडीने संजम लीधुं, कोइना उपर राग द्वेष नहि एवी
रीतनी वर्त्तना करी केवलज्ञान केवलदर्शन प्रगट कर्युं, ने मिथ्या-
त्व सत्ता, बंध, अने उदय ए त्रणे प्रकारे नाश कर्युं तेम आपणे
पण करवुं एज कल्याण छे.

१५. पंदरमो निद्रानामा दोष. ए दोष दर्शनावर्णी कर्मना
उदयथी प्राप्त थाय छे. निद्रा पांच प्रकारनी छे. पहेली निद्रा ते
अतीशे उंघ न होय. कोइ जगाडे तो सुखे जागे जागतां दिलगी-
री न थाय, जगाडनारपर गुस्से थाय नही. बीजी निद्रानिद्रा ते
जगाडवाने बहु महेनत पडे, वली जगाडनार उपर गुस्सो आवे.
पोतानुं मन डुभाय त्यारे जागे. ए निद्रा प्रथम निद्राथी वधारे
आवर्णवाली छे. त्रीजी प्रचला ते बेठा बेठा उंघे ते. चोथी प्रचला
प्रचला ते चालता चालता उंघे. घोडो छे ते उंघतोज चाले छे.
एवी रीते माणसो पण उंघमां घणा चाल्या जाय छे. उंघमां
घेरायेला चाले छे ए पण वधारे आवर्ण दर्शनावर्णी होय तेथी
आवे छे. पांचमी थीनद्धि निद्रा ते छ मासे एक वखत आवे छे.
ते उंघतो होय ते वखत हालना कालमां पोताना बलथी बेवडुं बल
थाय छे. जागता नही करी शकाय तेवां बल फोरववानां काम
निद्रामां करे. दहाडे जे काम चिंतव्युं होय ते निद्रामां करे. एक
साधुजीने निद्रा आववाथी रातमां उठीने हाथीना दंतुशल का-
ढी लाव्या हता. आवा थीनद्धि निद्रावाला जीव नर्कगामी होय.
आ साधु पण संजमथी पडी नरके गया छे. ए पांचे निद्रानो
त्याग थाय त्यारे मोक्षे जाय छे. अज्ञानपणे निद्रा आववामां सुख
माने छे पण सुख मानवा लायक नथी. सुख मानवाथी, आल-
सुपणाथी अने बहु निद्रानी इच्छा करवाथीज ए दर्शनावर्णी कर्म
बंधाय छे. निद्राथी आत्मानो उपयोग अवराइ जाय छे. जीवनुं

माणस मुवेली अवस्थाने पामे छे. निद्रासक्तवाळा आगळ बोले चाले शरीरे कंइ करे तो पण तेने खबर पडती नथी, त्यारे उपयोग अवराइ गयो ए प्रत्यक्ष नुकशान थयुं, माटे हरेक प्रकारे जाग्रत दशा थाय एम इच्छवुं. भगवान श्री महावीर स्वामी महाराज जेमने बार वरसमां बे घडी निद्रा आवी छे. बाकी बधो काळ अप्रमाद दशामांज गयो छे. आत्मतत्वना विचारमां गयो. तेमणे पोते स्वभाविक आत्मगुण प्रगट कर्या. माटे जेम भगवंते दर्शनावर्णी कर्म खपाव्युं तेम खपाववानो उद्यम करवो के जेथी आपणुं पण दर्शनावर्णी कर्म क्षय थाय अने केवलज्ञान केवलदर्शन प्रगट थाय. वली आ संसारमां पण बहु उंघवानी टेववाळाने दलद्री कहे छे. पोतानुं काम करवा पण शक्तिवान थतो नथी. अभ्यासु माणसने निद्रा वधारे होय तो अभ्यास करी शकतो नथी; वली गुरु महाराज पासे वाख्यान सांभलवा जाय तो त्यां पण बेठे बेठे उंघे एटले वाख्याननी धारणा करी शकतो नथी. वली एहवा प्रमादीना घरमांथी चोर चोरी पण सुगमताथी करे छे ते आ लोकनुं नुकशान थाय छे, अने परलोकना नुकशानमां दर्शनावर्णी कर्म उपार्जन थाय छे. एम भगवंते जाणी नीद्रानी इच्छानो नाश करी केवल दर्शन प्रगट कर्युं छे जेमां सर्वे दर्शनगुण रह्या छे तेम आपणे पण भगवंतनी आज्ञा प्रमाणेज दर्शनावर्णी कर्म खपाववानो उद्यम करवो ने निद्रानो नाश करवो.

१६. अव्रतनामा दोष. ए दोष आत्मामां रह्यो छे तेना प्रभावे अनेक प्रकारनी इच्छा थाय छे. हिंसाथी जुठुं, बोलवाथी, चोरी करवाथी, मैथुननी वांछाथी, परिग्रहनी ममताथी, ए पांच अव्रतथी चित खसतुं नथी. ए पांच अव्रत एहवां छे. एक अव्रत सेववाथी बीजां अव्रत सहेजेज वर्ती जाय छे. वली ए अव्रत से-

ववाना निमित्तभुत पांचे इंद्रीना तेवीश विषय तथा मननी चपलता ज्यां सुधी पांचे इंद्री अने छठुं मन मोकलुं छे, तेनी कामना वनी रही छे, त्यां सुधी छकायनी हिंसा रोकाती नथी. हवे ए विषय छे ते आ लोक अने परलोक बंनेमां दुखना आपनार छे जेमके आपणने कोइ सोय शरीरने अडकाडे छे तेथी केटली पीडा थाय छे. वली दाक्तर कंइ गुमडुं वीगेरे थयुं होय ने कापवाने नसतर मुके छे ने कापे छे तो आंखमांथी आंसु जरे छे, वली बुम पण एटली पडे छे के तेथी बीजाने वास्ती लागे. सर्वेने अनुभव एनो छे तेथी लखवानी जरुर नथी. तो जेम आपणने दुख थाय छे, पीडा थाय छे, तेमज बीजा जीवने कापीए तो तेहने केम दुःख न थाय? अवश्य दुख थायज. ते दुखथी तेनुं मन पण दुभाय तो. ते सरकारमां फरीयाद करे तो आपणने शिक्षा पण थाय. वखते फरीयाद न करे ने जबरो होय तो मार मारे तो प्रत्यक्ष दुख भोगववुं पडे छे. कोइ माणसने ते वखत तेने साहाजकारी न होय तो पछी पण साहाजकारी मलेथी दुख दे छे तो ए प्रमाणे बीजा जीवने दुख देवाथी दुख आ लोकमां भोगववुं पडे छे. तेमज जे जीवनी हालमां शक्ती न होय तो आवते भव ते जीवने शक्ती मलेथी दुख देशे वा नर्कादीकमां परमाधामी वीगेरे दुख देशे माटे एकेंद्रीथी ते पंचेंद्री सुधीना जीवोमां कोइ पण जीवने दुख देवुं नही एवी बुद्धि प्राप्त थशे तो हिंसा करवानी बुद्धि थशेज नही. जुठुं बोलवाथी पण बीजा जीवने दुख थशे तेमज चोरी करवाथी पण ते जीवने दुखनो पार रहेतो नथी, कारण के गरीब वा करोडपति कोइने पण धननी इच्छा शांत थइ नथी अने ते धन लइ जाय तो केम दुख न थाय? अर्थात थायज. जेम कुमारपाल राजा एक उंदर मोहरो काढी तेनी साथे गेल करतो हतो ते जोयो, ते उपरथी मनमां आव्युं

जे आ तिर्यंचने धन उपर प्रेम समजथी छे के वगरं समजथी छे तेनो तमाशो जोवा सारु उंदरनी सोना मोहर उचकी लीधी एटले थोडीवार तरफडीयां मारी उंदर कालधर्मने पाम्यो. पछी कुमारपाल बहु दलगीर थया ने तेहना पायछित्तमां पोते उंदरीयो प्रासाद बांध्यो. ए उपरथी जुओ के तिर्यंचने पण धननी केटली तृष्णा छे तो मनुष्यने तो धनथीज बधो कारजार चाले छे. तेनुं धन कोइ चोरी जाय तो ते धनवालाने दुख थवाने बाकी रहेतुं नथी. दुनीयामां शरीरनी पीडा करतां मननी पीडा वधारे थाय छे. केटलीएक वखत धन जाय छे के माणस मरी जाय छे तो तेनाथी माणसनुं शरीर सुकाइ जाय छे तो ए शरीर सुकाय छे ते मननी पीडाथी सुकाय छे, वास्ते तेथी पण सामा प्राणीने दुख थाय छे. मैथुन पारकी स्त्री साथे करवाथी तेहना धणीने तथा तेना मातापिताने केटलुं दुख थाय छे ते प्रसिद्ध छे. कोइ वखत जार पुरुषनो जीव जाय छे. केटलीएक वखत ते स्त्रीनो जान जाय छे. केटलाक वखत स्त्रीना धणीनो जीव जाय छे. कदापि जीव न जाय तो रात दीवस एहनी पीडा साले छे. वली स्वस्त्रीनी साथे भोग करवाथी योनिमां समुर्छिम जीव असंख्याता हणाय छे तो ते जीवने दुख थाय छे. वली पोतानुं शरीर पण नरम पडे छे, पोताना शरीरे दुख थाय छे, एमज परिग्रहनी इछा होय त्यां सुधी हरेक प्रकारे धन मेलववुं तेमां लुच्चाइ ठगाइ करतां बीहता नथी. जुठुं बोलतां बीहता नथी कोइनो प्राण लेतां बीहता नथी. पोते पण विचित्र प्रकारे दुखी थाय छे. ए परिग्रहनी मुर्छानां फल छे ए पांचे अव्रत एहवां छे के एक सेवतां बीजुं सेवाइ जाय तेथी भगवंते पांचे अव्रतनो त्याग कर्यो छे, अने एज उपदेश भगवाननो छे के हरेक प्रकारे अव्रतनो त्याग करवो जोइए. जो विशेष विशुद्धि थाय ने सर्व

प्रकारे अव्रतनो त्याग थाय तो ते करवो ने सर्व प्रकारे त्याग न थाय तो देशथी त्याग करी श्रावकनां वार व्रत धारण करवां एवी रीते श्रावक धर्म वा साधु धर्म वाहजथी अंगीकार करी अंतरंग शुद्ध नथी थयुं तो अव्रत टलतुं नथी माटे अंतरंगमांथी कषायनी परिणति त्याग थवी जोइए. वाहारथी प्रवृत्ति न करे पण अंतरमां इच्छाउ थयां करे तो पछी कर्मवंध थतो रोकातो नथी. पुदगल भावथी अनादिनी इच्छाउ, हिंसानी, जुठनी, चोरीनी, मैथुननी, धननी ए पांचे पदार्थनी इच्छा छुटे त्यारे आत्मानुं काम थाय छे. जुओ तंडुलीउ मछ छे, ते मछनी पांपणमां थाय छे ते जे मछनी पापणमां थाय छे ते मछनुं मुख मोहटुं छे तेथी केटलाएक मछ तेहना मुखमां पेसे छे ने नीकले छे ते पेलो तंडुलीउ मछ जुवे छे ते जोइने विचारे छे जे माहरुं एहवुं मुख होय तो एक जीवने पाछो जवा न देउं एवो विचार करवाथी त्यांथी मरीने सातमी नरके जाय छे. एणे खाधुं पीधुं कंइ नथी पण शकर्त इच्छाथी दुष्ट ध्यान थाय छे तेना प्रभावथी नरके जाय छे. एमज दुनीयांमां चीजो छे ते वधी कंइ मलती नथी पण इच्छाउ खावानी थयां करे छे. केटलाक वखत पैसानी खामीथी मली शकती नथी वा पैसा छे पण कृपणताथी पैसा खरचवा नथी तेथी मली शकती नथी. केटलीएक वखत शरीरने प्रतिकूल ते वस्तु होवाथी खाइ शकाती नथी पण अव्रतना उदयथी इच्छाउ थयां करे छे ते प्रभाव अज्ञानतानो छे. पोतानी शी वस्तु छे, पोताने पोताना आत्म भावमां केम वर्तवुं तेनुं ज्ञान नथी तेथी इच्छाउ थयां करे छे. दुनियांमां हजारो स्त्री छे ते कंइ मोंपर थुंकवानी नथी पण जे जे स्त्री नजरे पडे के चित्त दोडे वा काने सांभले के फलाणी स्त्री वहु रूपाली छे के मन दोडे, आ वात अज्ञानना जोरनी छे तेना जोरथी इच्छाउ वन्यां करे छे, पण ते

न थवुं जोइए. वली धन जो समुलगुं न होय तो हजार रुपीया मले तो सारुं पण ज्यारे हजार मळ्या त्यारे लाखनी इच्छा थाय छे. लाख मळ्या त्यारे करोडनी इच्छा थाय छे. करोड मले त्यारे अवजनी इच्छा थाय छे तेथी वधारे मले छे तो राजनी इच्छा थाय छे. राज मले तो वासुदेवना राजनी इच्छा थाय छे. वासुदेवपणुं मळ्युं तो चक्रीपणानी इच्छा थाय छे. चक्री थाय तो इंद्र थवानी इच्छा थाय छे हवे आवी इच्छाउ करे छे तेथी मलतुं कंइ नथी, पण तृष्णा जीवने शमती नथी ए अव्रतनी राजधानी छे. वली केटलाएकने दश वीस हजार मले छे के वेपार बंध करे छे के आ मलेला रखे जता रहे एवा विचारथी वधारे धन पेंदा करवानो उद्यम नथी करतो तेथी तेनी तृष्णा रोकाइ छे एम समजवुं नहीं माटे हरेक प्रकारे इच्छा रोकवी जोइए. कदापि संसार त्याग कर्यो अने चेलानी, पुस्तकनी, माननी इच्छा न गइ वा इंडीयो वश न थइ तो पण अव्रत टलतुं नथी. कदापि आ लोकना विषय रोक्या पण परलोकनी इच्छा करे. जे हुं मरीने राजा थाउं, धनवान थाउं, देवता थाउं, देवतानी इंद्राणीना सुख जोगवुं. आवी इच्छा छे ते पण अव्रत छे उपाध्यायजी महाराजे मंडुक चुरण न्याय कह्यो छे. एटले मरी गएला देडकाना चुरणमां वरसाद पडे तो घणां देडकां थइ जाय. तेम आ जवना विषय छोड्या, ने परजवना घणा विषयनी इच्छा करी एटले अव्रत कंइ टळ्युं नही. शुन्न क्रिया छे ते कारणरूप छे ते कारणरूप धर्म जाणी करवी पण तेहने आत्मधर्म न जाणवो. आत्मधर्म तो जेटली जेटली इच्छाउ थती बंध थशे ते कार्त्रिम नहीं, स्वान्नावीक धन, स्त्री, पुत्र, शरीर कोइनी पण इच्छा व्रर्ते नहीं अने पोताना स्वन्नावमांज आनंदित थाय अने स्वन्नावमां स्थिर रहेवुं. जे जे पुद्गलने थाय ते जाणवा देखवाना स्वन्नाव छे ते स्वन्नावमां रहेवुं. तेमां राग द्वेष करवो

नहीं एज आत्मानुं काम छे. ए दशामां रहे एटले अव्रत सहेजे टली जाय. अव्रत सर्वथा कषायनो नाश थवाथी सर्वथा टली जाय छे. अंशे अंशे देश विरति गुणस्थान पामे छे. त्यांथी टलवुं शरु थाय छे. भगवंतने सर्वथा अव्रत टल्युं छे तेथी भगवान थया छे.

१७ राग नामा डुषण. ए रागना घरनां माया अने लोभ छे. ए राग परिणति अनादि कालनी छे, धन उपर राग, कुटुंब उपर राग, स्त्री पुत्रपर राग, स्वजन उपर राग, घर हाट बाग बगीचा उपर राग, राग मलेली वस्तु उपर थाय छे, अने नहीं मलेली वस्तुपर पण राग थाय छे. दीठेल वस्तु उपर, अण दीठेली वस्तु उपर राग थाय छे. सांभलेली वस्तु उपर, वांचेली वस्तु उपर राग थाय छे. एम अनेक प्रकारे राग दशा छे, अने राग दशाने प्रभावेज पापी जीवनो संजोग मले छे ने एवा खराब माणसनो संग मलवाथी पाछो द्वेष जागे छे. पर वस्तु उपर राग थवानाज कारणथी जीव अनादिनो रोलाय छे. अनेक प्रकारे जन्म मरण करवां पडे छे. पर स्त्री उपर राग होय ते पोते मरे तो पण तेनी इछा तुटे नहीं. एवा अधर्मी जीवने मनुष्य जन्म तो आवे नहीं पण तेना शरीरमां कीडो वा करमीयो शरमीयो थाय एवा भवने पामे ए रागनो प्रभाव छे. जे जे कर्मबंध थाय छे ते राग द्वेषथीज थाय छे. ने जीव संसारमां रोलाय छे. द्वेष पण रागथी थाय छे पोतानी वस्तु मानी छे ते वस्तु कोइ लइ जाय तो आ वस्तु उपर राग छे तेथी लइ जनार उपर द्वेष थाय छे. द्वेष करनारने कोइ कहेनार मले के तमो समजु थइने कषाय करो छो पण रागनी बाबतमां मुनि महाराजजी सीवाय कोइ समजावनार नथी. आ जड पदार्थ उपर राग करवाथी आत्माना गुणनो राग थतो नथी. तेम तेनां कारण जे ज्ञान दर्शन चारित्र तेना उपर पण राग थतो नथी. रागना बशे जीव लज्जाने मुकी-

ने निर्लज्ज कर्म करे छे. ऊंची जातना माणसने धन पण होय कुटुंब होय, स्त्री रूपाली होय ते छतां ढेडनी जातनी स्त्री उपर राग थयो होय तो आ धन कुटुंब छोडी तेनी साथे संबंध करे छे. आ रागनी विटंबना छे. जे वस्तु खावाथी शरीरने उपाधि थाय छे. धर्म भ्रष्ट थाय छे, तो पण रागना बंधनथी ते वस्तु खाय छे ने एवी वस्तु खावाथी केटलीएक वखत माणस मरी जाय छे, ते जुवे छे तो पण एवां काम करे छे. धनना रागे करीने लोभ थाय छे ते गमे एटला पैसा मले छे पण संतोष पामतो नथी, अने असंतोषे लांबा वेपार करवाथी असल पैसा होय ते पण जता रहे छे तो पण लोभ छोडता नथी; अने केटलाएकने देवालां काडवां पडे छे. केटलाएक खोटी दानतथी पैसा होय तो पण लोकना पैसा आपता नथी. ते लोक एम नथी विचारता के आम करवाथी जन्म पर्यंत दुनियांमां गेर इजत थशे, अने छोकराने पण कहेशे जे तारा बापे देवालुं काढ्युं छे. आवी बावतो बने छे तो पण धनना रागे एवी खोटी दानत करे छे. वली पासे पैसा राखी केद पण जवुं कबुल करे छे. आ दुख राग दे छे. धनना रागे सामा जीवना ने पोताना भाइना, बापना, माताना, प्राण पण ले छे तो बीजाना प्राण ले एमां तो कहेवुंज शुं. आ विटंबना रागनी छे. चोरी करतां, ठगाइ करतां पण रागे करी जीव बीहतो नथी, विश्वास घात करतां पण बीहतो नथी. कदापि गृहस्थपणुं छोडीने दीक्षा ले छे पण जड पदार्थ उपरथी राग गयो नथी तेथी पाछा साधुना वेषमां गृहस्थनी प्रवृत्ति करे छे. गृहस्थनी पेठे धन मेलवे छे. छोकराना रागनी पेठे चेलानो राग जागे छे. पुस्तकनो राग जागे छे, अने एवी वर्तना करी संजमथकी भ्रष्ट थाय छे. आत्म भावमां वर्तता नथी. शास्त्रनो बोध पण नकामो थाय छे. ज्ञाननो बोध तो जेम ज्ञानमां जाण्युं तेम वर्तना

करे त्यारे ज्ञाननुं फल थाय. जेम कोइ माणसे जाण्युं जे आ झेर छे, पण ते खाधा विना रहेतो नथी तो ते अवश्य मरे, तेम ज्ञान जणी राग बंध तो छुटे नहीं, एटले कर्म बंधाया विना रहेतां नथी, अने जेने निराग दशा प्रगटी छे तेना प्रभावे कोइ कंइ लेइ जाय छे, कोइ मारे छे, कूटे छे, पीडे छे, निंदा करे छे, कोइनो वियोग थाय छे, तो पण पोताने खेद थतो नथी; मरवानी पण फिकर थती नथी; पोते पोतानुं आत्म स्वरूप जाण्युं छे, तेथी जाणे छे के मारो आत्मा मरवानो नथी; मरे छे ते जड छे; आत्मा अविनाशी छे. शरीरने पीडे छे ते पण पूर्वे जडनी संगते बीजा जीवने पीडा करी छे, तेथी पीडे छे, तो ते कर्म जेवुं जेवुं जड संगते बांध्युं छे तेवुं तेवुं जोगववुं छे. कोइ लइ जाय छे ते वस्तु मारी नथी, पण जडनी संगते मारी मानी छे,अने मारी मानी पारकी वस्तुन लीधी छे तो मारी लइ जाय छे. पूर्वे जेणे कोइनी वस्तु लीधी नथी, तेनी वस्तु रस्तामां पडी होय तो पण कोइ लेइ जतुं नथी. आवा ज्ञानना प्रभावे जरा पण खेद धारण करता नथी, पोताना आणंदमां वर्त्ते छे. ज्ञानी पुरुष तो समवृत्तिए करीने जे जे सुख डुख प्राप्त थाय छे, तेमां रागद्वेष करता ज नथी. आत्मानो जाणवानो स्वभाव छे ते रूप जे जे बने छे ते जाणी ले छे. कर्मनुं स्वरूप जाण्युं छे, तेथी कर्मना उदय प्रमाणे बनी रह्युं छे, एम जाणी कोइ पण अनुकुल चीज उपर राग दशा धारण करता नथी, तेमज भगवाने राग द्वेष क्षय करीने आत्माना पोताना गुण प्रगट कर्या छे, तेमने पगले तेमनी आज्ञा प्रमाणे चाले तो पोताना आत्माना गुण प्रगट करी परम पदने पामे.

१८ द्वेषनामा दूषण—ए द्वेषनी प्रकृति जगतमां पण निंदवा योग्य छे. द्वेषना बे पुत्र छे, क्रोध अने मान. क्रोध करवाथी सा-

माने दुःख करुंछुं एम माने छे, पण पोताने प्रत्यक्ष दुःख थाय छे. पोतानुं शरीर फेरफार थइ जाय छे, शरीर लाल लाल थइ जाय छे, गातीमां गन्नराट थाय छे, लोही शरीरमांथी उछली जाय छे, तेथी लोही सुकाइ जाय छे अने निर्बल थइ जाय छे. आ बनाव क्रोधथी बने छे. क्रोधी माणस नोकरी रहेवा जाय तो कोइ नोकरी राखे नहीं, कोइने त्यां व्याजे नाणुं लेवा जाय तो ते पण खुशी थइने आपे नहीं, वली दुकान मांडी होय तो शांत माणसने त्यां जेटलां घराक आवे, एटलां घराक क्रोधीने त्यां आवे नहीं, कन्या जोइती होय तो खुशीथी मले नहीं, वली क्रोधी माणस पोताने हाथे पोतानुं माथुं फोडे छे, कूवादिकमां पडे छे, वा झेर खाय छे, फांसो खाय छे, पोताने हाथे पोतानी घात करे छे, जगतमां अपजश पामे छे. क्रोधी माणस कदापि संसार छोडी साधु थाय छे तो कषाये करी तेमां पण शोभा पामता नथी, तेम आत्मानुं कल्याण थतुं नथी पण संसारवृद्धि थाय छे; जेमके चंडकोशिया सर्पे पाछला भवमां साधुपणामां क्रोध कर्यो, तो मरीने पाछा क्रोधी थवानो वखत आव्यो, पाछो त्यां पण क्रोधथी मरण थयुं ने सर्प थवानो वखत आव्यो, तेमज जे जे माणस क्रोध करे तेने आ लोकमां दुःख थाय अने परलोकमां नरकगतिमां जवुं थाय छे; माटे हरेक प्रकारे क्रोध छोडवानो उद्यम करवो. अग्निशर्मा तापस मास मासखमणनां पारणां करतो हतो, तो पण दुर्गतिए जवानो वखत आव्यो. एनी विस्तारे हकीकत समरादित्यकेवलीना रासमां जुओ. केटला भव सुधी द्वेष रह्यो छे, अने केवां केवां दुर्गतिनां फल मल्यां छे. क्रोधथी प्रत्यक्षमां मार खाय छे, वखते प्राण पण जाय छे, माटे जेम बने तेम क्रोधने जीतीने समतामां रहेवाथी आ लोकमां पण सुख थाय छे. क्रोधीने संसारमां सुख नहीं तेम परलोकमां पण सुख नथी. न-

रकादिकनी आकरी वेदनाउ ज्ञोगववी पमशे. वली मान करवाथी पोते एम समजे छे के मारी मोटाइ थाय छे, पण ते न थतां लघुताने पामे छे. मद करवाथी मोटा मोटा राजाउ पण दुःखमां पम्या छे, तो बीजाउनुं तो कहेवुंज शुं? माटे जेम बने तेम अहंकारने तजवो. अहंकार क्रोधनुं बीज छे. अहंकार नाश पामे तो क्रोध आवेज नहीं. जगतमां जेटली चीज छे तेमां जम छे ते देखाय छे, तो पोते चेतन छे तो जम चीज प्रिय अप्रिय करवाथी अप्रिय चीज उपर द्वेष थाय छे. पण जे परवस्तु एटले पोतानी वस्तु छे नहीं, तेना उपर द्वेष करवाथी फक्त कर्मबंध सिवाय बीजो लाज्ञ नथी; माटे जे जे वस्तुना जे जे धर्म छे ते जाणी लेवा; जे जे अवसरे जे जे वस्तु ग्रहण करवानो उदय थयो ते वस्तु ग्रहण करवी; तेमां द्वेष करी ग्रहण करवाथी कर्मबंध सिवाय बीजो कांइ फायदो नथी. आत्मा मलीन थाय छे. मुनि महाराजाउए तथा तीर्थंकर महाराजे द्वेषनो त्याग कर्यो ने केवलज्ञान पाम्या, माटे बीजा पण आत्मार्थी जीवे तेमनी रीत प्रमाणे द्वेषनो त्याग करवो. खावानी, पीवानी, पेहेरवानी, उढवानी, पाथरवानी, सुवानी, चालवानी कंइ पण वस्तु प्रतिकुल मले तेमां द्वेष धारण करवो नहीं. कोइ धन लेइ जाय, कोइ मारी जाय तो पण कर्मनो विचार करवो के पूर्वना पुन्यनी खामी पमे छे त्यारे बने छे, माटे रागथी जीव उपर द्वेष करवो ते नकामो छे, एम विचारी समज्ञाव दशा धारण करवी. द्वेषनो अंश पण जागे नहीं, एम प्रवृत्ति करवी, ने सत्ता, बंध, अने उदय ए त्रणे प्रकारे नाश करवो के केवलज्ञान, ने केवलदर्शन गुण प्रगट थाय.

आ मुजब अढार दूषण ज्ञगवंते क्षय कर्यां छे, तेथी आत्माना संपूर्ण गुण उत्पन्न थया छे, तेणे करीने त्रण जगतना ज्ञाव एक समयमां जाणी शके एटली शक्ति प्राप्त थइ छे. एक एक

द्रव्यने विषे समय समय अनंता पर्याय परावर्त्तमान थइ रह्या छे, ते एक एक द्रव्यमां पूर्वकाल एटले जे कालनो छेडो नथी तथा आवता कालमां पर्याय थवाना ते सर्वे एकी वखते जाणी शके एवुं ज्ञान जेमने प्राप्त थयुं छे, आत्मानी अनंत वीर्यशक्ति प्राप्त थइ छे; एवा आत्माना समस्त गुण प्रगट थया छे, तेना प्रभावेज देवताओ फटिक रत्नमय समवसरणनी रचना करे छे, त्रण गढ रचे छे, तेमां त्रीजा गढमां देवता सिंहासन थापे छे, ते सिंहासन उपर बेसीने भगवान देशना आपे छे, ते देशना केवी छे ? के जेमां पोतानो कंइ प्रकारनो लाभ रह्यो नथी, कोइ प्रकारे धन के स्त्रीनी स्वप्नामां पण इच्छा नथी. जेने धनादिकनी तथा माननी इच्छा रही छे ते धर्म उपदेश आपे तेमां स्वार्थ राखीने आपे छे, अने स्वार्थ ज्यां आव्यो त्यां खरा धर्मना स्वरूपनो दर्शाव थतो नथी, तेम सांभलनारनुं ध्यान पण उपदेशकना स्वार्थ उपर जवाथी तेमनो उपदेश सांभलनारने लाभकारी थतो नथी, कारणके हमेश जे धर्म उपदेश देनार जेवो उपदेश दे ते रीते ते पोते वर्त्तता नथी, त्यारे सांभलनार विचारे के गुरुजीथी वा भगवानथी पण ए रीते चलातुं नथी, तो आपण शी रीते चालीए, एम विचारीने पोते जे स्थितिमां छे तेमांज कायम रहे छे, पण आत्माना गुण प्रगट करवाने उत्सुक थता नथी; अने जेने अढार दूषण गयां छे, तेमने तो वीतराग दशा प्रगटी छे, कोइ पण वस्तु उपर रागद्वेष रह्यो नथी, केवल जगतना जीवने तारवा सारु पृथ्वी उपर विचरी धर्म उपदेश दे छे, तेथी सांभलनारनुं पण कल्याण थाय छे. सांभलवा बार पर्षदा बेसे छे. ए अधिकार श्राद्धशतक नामना प्रश्नोत्तरमांथी लखुंछुं.

केवलज्ञानी महाराज पूर्व द्वारेथी प्रवेश करे, जिनने त्रण प्रदक्षिणा करीने "नमोतीथ्थस्स" कहीने पूर्व अने दक्षिण वच्चे

वेसे, तेमना पछी मनः पर्यवज्ञानी, अवधिज्ञानी, चौदपूर्वधर, दशपूर्वधर, नवपूर्वधर, अने लब्धिवंत मुनि पूर्व द्वारे पेसे. भगवंतने त्रण प्रदक्षिणा देइ नमस्कार करी नमोतीर्थाय, नमोगणधरेभ्यो, नमो केवलिभ्यः एवी रीते नमस्कार करी केवलज्ञानीनी पाछल वेसे. पछी वीजा सर्व साधुजी पूर्वने द्वारे प्रवेश करीने त्रण प्रदक्षिणा देइ नमस्कार करी "नमस्तीर्थाय," नमोगणभृद्भ्यो, नमः केवलिभ्यो, नमोऽअतिशयज्ञानिभ्यो एवी रीते नमस्कार करीने पूर्वे वेठेलानी पाछल ते साधुजी वेसे. पछी वैमानिकदेवी पूर्वद्वारे प्रवेश करीने भगवंतने त्रण प्रदक्षिणा देइ नमस्कार करी, नमस्तीर्थाय, नमः सर्वसाधुभ्य एवी रीते नमस्कार करीने साधुजीनी पाछल वेसे. पछी साधवीजी पूर्वद्वारे प्रवेश करीने भगवंतने त्रण प्रदक्षिणा देइने नमस्कार करीने वैमानिक देवीनी पाछल रहे. भवनपतिनी, व्यंतरनी, ज्योत्सीनी देवीउ दक्षिण द्वारे प्रवेश करे. भगवंतने वैमानिकनी देवीनी पेठे प्रदक्षिणादि करीने दक्षिण पश्चिमनी वचमां रहे ते अनुक्रमे रहे. त्यारवाद भवनपति, ज्योत्सी, वाणव्यंतरना सुर पश्चिमद्वारे प्रवेश करी भगवंतने प्रदक्षिणादिक दइ नमस्कार करीने पश्चिम अने उत्तर वच्चे यथाक्रमे वेसे. वैमानिकदेव तथा मनुष्य अने मनुष्यनी स्त्री ए त्रण उत्तरद्वारे प्रवेश करे, भगवानने प्रदक्षिणादि देइ नमस्कार करीने पूर्वने उत्तर वच्चे यथाक्रमे वेसे. आ मुजव वार पर्षदा समवसरणमां सांभलवा वेसे छे. त्यां भगवानना अतिशयना प्रभावथी त्रण पासे भगवाननुं प्रतिविंव समवसरणमां देवता करेछे, तेथी चारे पासे वेठेला भगवंतनेज जुए छे ने चारे मुखे देशना दे छे, एम वधाना समज्यामां आवे छे. देशनानी एवी खुवी छे के जेना जेना मनमां जे जे शंका पडे छे, ते ते भगवान जाणी लेइ ज्ञानथी उत्तर आपे छे, कोइने प्रश्न

पूछवो पमतो नथी. आवी जेनी शक्ति छे. कोइना मननो संदेह दूर करवो मुश्केल नथी, एवी ज्ञगवंतनी वाणी सांज्ञलीने निकट ज्ञवी जीवतो तेज वखत प्रतिबोध पामी संजम ले छे, अने तेवी विशुद्धि न होय ते श्रावक धर्म वा सम्यक्त्व अंगिकार करे छे, ने आत्मानुं कल्याण करे छे. ए वे प्रकारना धर्मनुं वर्णन विस्तारे प्रश्नोत्तररत्नचिंतामणिमां छे, एटले अहींआं लखतो नथी, पण सार ए छे के हरेक प्रकारे संसारना मोहनी, स्त्री पुत्रादिकनी, अने धनादिकनी राग दशा अनादिनी छे, ते राग दशा उतारवी, अने आत्म दशानी सनमुख जेम जेम विकल्प खसे ए उद्यम करवो, अने विकल्पनां कारण छोमवां. ज्यां सुधी संसारमां मग्न छे त्यां सुधी आत्मानी दशा जागवानी नथी, ते सारुज संसार छोमी साधु थवानी जरुर छे. साधुजी थाय छे त्यारे वेपारादिकनां कारण हठी जाय छे, स्त्री प्रमुखनां कारण खशी जाय छे, एटले आत्मज्ञान केम करवुं तेनां शास्त्र जोवानो निवृत्तिए वखत मले छे. शास्त्र केटलांएक तो एवां छे के वांचवाथीज मोह खशी जाय छे, ने आत्मज्ञाव प्रगट थाय छे. आत्मज्ञाव प्रगट थाय एवां घणां शास्त्र छे, तेना अभ्यासमां मग्न थाय, पछी अनुज्ञव ज्ञान प्रगट थाय छे. त्यारे तो शास्त्रनी पण जरुर नथी. पोताना प्रबलज्ञाने ध्यानादिकथी कर्म खपावे छे, अने केवलज्ञान तथा केवलदर्शन प्रगट करे छे. एटली विशुद्धि नथी होती तो मरीने देवता थाय छे. त्यां देवतानां सुख ज्ञोगवी पाछा मनुष्य थइ धर्म आराधन करी मुक्तिने पामे छे. माटे एवा अढार दूषण रहित देवने देव मानवा, तेमनी ज्ञक्ति करवी, तेमनी आज्ञाए वर्त्तवुं. जे मोक्ष पाम्या छे तेमनो बतावेलो मार्ग अंगिकार करीए तो मोक्ष पामीए. त्यारे कोइने प्रश्न थशे के जैन धर्मनाज देव अढार दूषण रहित छे? शुं बीजा देव एवा नथी? तेने समजा-

चवुं के अमे कांइ एम केहता नथी. ए विषे जैन धर्म सिवायना. होय तेमणे पोतानी मेले पोताना देवनां चरित्र लखेलां होय ते जोइ लेवां, ने ते चरित्र जोतां जो अढार दूषणमांनुं कोइ पण दूषण न होय तो तेमने खुशीनी साथे देव मानवा, अने तेवा देवने अमे पण नमस्कार रात दिवस करीए छीए. वांचनारने देवनुं चरित्र जोतां जो अढार दूषणमांनां दषण देवमां देखाय छे तो दूषण वालाने देव कोण मानशे. जेने ए दूषण तजवां नहीं होय—ते मानशे. ने जो तजवां हशे तो विचार करशे जे, जेणे पोताना आत्माने तार्यो नथी तो आपणो पण केम तारशे? एम विचार करीने सहेजे सत्य देवनीज आज्ञा धारण करशे.

प्रश्न.—मोटा मोटा पंम्तितो थइ गया ने मोटां मोटां शास्त्र रच्यां तेमणे शुं देवनुं ओलखाण नहीं कर्युं होय? न्यायनां शास्त्र, व्याकरण शास्त्र, जैनीओने पण ब्राह्मण पासे भणवां पमे छे, माटे एवा विद्वाने कांइ जोवुं वाकी राख्युं हशे? ते विषे जाणवुं जे ए वात पोतपोतानुं मन जाणे एवी छे. केटलाएक अन्य दर्शनना विद्वानो साथे वात थइ छे, ते विद्वानो पोताना धर्मनी पुष्टी करे छे, पण खानगीमां तेथी बोलवुं उलटुं थाय छे; जेमके आचार्य. महाराज श्री आत्मारामजी महाराज प्रथम ढुंढक मतमां हता ते वखतमांज ढुंढीआ पासे भणवा गएला, ते ढुंढके शीखामण आपी जे प्रतिमाजीनी निंदा तमो करो छो माटे नहीं भणावुं, केमके आगममां जोतां प्रतिमाजी पूजवानुं व्याजवी जणाय छे, अने ते स्थलो वतावी प्रतिमाजीनी श्रद्धा करावी. त्यारे आत्मारामजी महाराजे कह्युं जे तमे केम खोटा मार्गमां पमी रह्या छो? त्यारे कह्युं जे हवे नीकलवानी लज्जा आवे छे. आवी रीत छे. माटे वीजानो जोवानो विचार करवो फोगट छे. पोते पोतानी मेले शास्त्र जोइ निःपक्षपातथी तपास करवी के खरुं शुं छे?

तो सेहेजे समजाइ जशे. जैनीउ व्याकरण न्याय जणे छे ए तो कक्को शीखवा जेवुं छे, एमां कांइ मार्गनुं ज्ञान करवानुं नथी. मार्गनुं ज्ञान कोइ ब्राह्मण पासे लेवा जता नथी. मार्गनुं ज्ञान तो मार्ग पामेलो माणस बतावी शके छे, तो मुनि महाराजाउतो एक संसार त्याग करवानुं काम करी चुक्या छे. व्याकरण जणावनार तो संसारमां फसेला छे, ते शुं बतावी शके? माटे ए सर्व विचार पारका छोडी पोतानुं काम करवुं होय तेणे पोताना आत्मानो उद्धार करवा पोते शास्त्र अभ्यास करी देवगुरुनी तजवीज करवी. अनादिनी टेव तो एवी छे केजे वाडामां पड्या तेज कर्या करवुं, पण ते रीत छोडी पोतानी बुद्धिथी सूक्ष्म विचार करी जे जे देवनाम धरावी आपणने जे धर्म करवा कहे छे ते धर्ममां ते वर्त्त्या छे? तेम स्वभावमां रही विभावथी मुक्त रहेवा कहे छे तेम रह्या छे? आ जोवानुं मुख्य काम छे, अने आपणे पण मनुष्य जन्म पामी एज करवानुं छे, माटे अंशे अंशे जडनी प्रवृत्ति उछी थाय, आत्म स्वभावमां स्थिरता थाय ए उद्यम करवो.ए उद्यमथीज वर्त्तमाने वा कालांतरे आत्मगुण अनुक्रमे संपूर्ण उत्पन्न थशे, माटे जेम बने तेम आत्मतत्त्वनी शुद्धि छए दर्शनमांथी जे दर्शनमां विशेष मले ते दर्शन ग्रहण करी ते दर्शननी श्रद्धा राखी स्वगुण खोजवाना कामी थवुं.

प्रश्न—तमारा जैन दर्शनमां व्यवहार क्रियामां वर्त्ते छे, पण कोइ आत्म खोजना करवी, आत्म गुणमां वर्त्तवुं, तेवा तो देखता नथी.

उत्तर—सर्व जीव कंइ आत्माना खोजी होता नथी, तेम आत्मगुणमां वर्त्तनारा पण होता नथी, कारण जे आ दुषम कालमां ज्ञानीउए ज्ञानमां प्रथमथीज जोयुं छे के हालमां कोइ मोक्ष आ क्षेत्रमांथी जशे नहीं. एटले मोक्षे जाय एवा ध्यानादिकना

करनार क्यांथी होय ? पण आ कालने योग्य साधन करी शके एवा उत्तम जीवो तो वर्त्तता नीकली शके. ध्यानादिक करीने समन्नाव दशा लाववी बे, विषय कषायथी मुक्त थवुं बे, कोइ मारी जाय कोइ पूजा करी जाय ते बंने उपर तुल्य दशा करवी जोइए, ते करवाना उद्यमी तो नीकलशे, पण केटलाएक धर्मवाला ध्यान करवानुं नाम देइ गांजानी चलमो फुंके बे, न्नांग पीए बे, तेथी ज्ञान नष्ट थइ जाय, अने कषायादिक वधे बे, एवा उद्यम करीने कहे जे अमे ध्यान करीए बीए ते केम मनाय ? अन्य दर्शनमां पण केटलाएक वेदीया ढोर कहेवाय बे ते कोने कहे बे ? के जे वेदांतनी वातो करे, तेनी कथा करे, अने विषय कषायमां वर्त्ते त्यारे कहे जे ए जमनुं काम जम करे बे तेमां अमारे शुं ? जे खावानुं मन थयुं ते खावुं, न्नोगनी इच्छा थइ ते न्नोग करवा, कंइ पण जम कर्त्तव्य रोकवुं नहीं. आवो धर्म पाली पोतानी इच्छा प्रमाणे विषय कषायमां वर्त्ते अने कहे जे अमे ध्यानी बीए, तेने डुनियामां वेदीया ढोर कह्या बे. पातंजली योगशास्त्रमां अष्टांग जोग साधवा कह्या बे तेमां प्रथम जोग यम बे, ते पांच वस्तुना त्यागथी कह्या बे. जीवहिंसा, जूठ, चोरी, मैथुन, परिग्रह ए पांच वस्तुनो त्याग थाय त्यारे यमनामा जोग प्रगटे. त्यारवाद बीजो जोग नियमनामा कह्यो बे, तेमां शौच, संतोष, तप सज्झाय ध्यान, अने ईश्वरध्यान आ पांच वस्तु करवानी कही, तो ए जेम जैनमां व्यवहार कह्यो बे, तेमज योगशास्त्रमां कह्यो. वली त्रीजा जोगमां आसननो जोग करवो बे, स्थीर आसन करवुं, ए त्रण जोग थया पबी चोथो प्राणायाम जोग थाय, तेमां रेचक, पुरक, कुंन्नक करवुं कह्युं बे. आ हठ समाधियोग बे. त्यारवाद पांचमो जोग प्रत्याहार बे, तेमां पांचे इंद्रिना विषयनो संवर थाय बे, संसारथी तथा जम न्नावथी विमुख थाय बे, तत्त्ववोध

थाय छे, सूक्ष्मज्ञान थाय छे. छठो ध्याननामा जोग, सातमो धारणानामा जोग, आठमो समाधि जोग ए त्रण जोग केवल सहज समाधिनी प्राप्तिनां साधन छे ते थाय. हवे विचारो के अष्टांग जोगना साधनवालाए पण प्रथमना जोगमां व्यवहार शुद्धि बतावो, ते व्यवहार शुद्धि करे नहीं, ने कहे जे ध्यान करीए छीएं, ते ज्ञानवंत केम मान्य करशे ? अनुक्रमे चढवानो जैनशास्त्रनमां पण गुणस्थाननो क्रम बताव्यो छे, ते मुजब तेमां पण योग्यता प्रमाणे ध्यानादिक छे, अने क्रम रहित गुणस्थानमां पण चढनारो पडे छे, ते संयम श्रेणीनी सज्झायमां कह्युं छे. ने वली वृहत्कल्पनी शाख आपी छे, माटे अनुक्रमे जेम कह्युं छे तेवी रीते ध्यानादिकनी रीत कही छे. अष्टांग जोगनी व्याख्या पण योग दृष्टी समुच्चयमां हरिभद्राचार्य महाराजे विस्तारे कही छे तेमां विशेष फेरफार समजातो नथी, अने जैनीओ जाणता नथी, खोजना करता नथी, ए कहेवुं जैन धर्मना शास्त्रना अजाणपणाने लीधे छे जैनमां क्रमे गुणस्थान चढवानुं कह्युं छे, तेमां योग्य थाय छे, त्यारे ध्यान करे छे. योग्यता ना आवे त्यां सुधी भावनाओ भावे, ए भावनाध्याननुं स्वरूप ध्यानशतक, योगशास्त्र, ध्यानमाला, षोडशकजी वगेरे ग्रंथो जोशो तो सारीपेठे समजाशे. में पण अंशमात्र प्रश्नोत्तररत्नचिंतामणिमां दर्शाव्युं छे. तेथी अहीं लखतो नथी माटे त्यांथी जोवुं. तमारुं प्रश्न एटलुं स्वीकारीए छीएं के मार्गमां दर्शाव्या प्रमाणे माराथी वर्त्तातुं नथी ते प्रमाद दशा छे. बाकी जे महापुरुष थया छे ने थवाना छे ते पुरुष तो आत्मतत्त्वनी खोजनामांज वखत गाले छे. निज स्वरूप विचारे छे, पोताना गुण पर्याय विचारे छे, पोतानुं स्वरूप विचारतां पोतानी विपरीत दशा देखाय छे, ते टालवाने व्यवहारमां वर्त्ते छे. व्यवहारमां वर्त्ततां जेटलो जेटलो आत्मा कर्मथी मुक्त थाय

छे, अने निर्मल थाय छे, तेने ज धर्म माने छे, तेमांज आनंदित थाय छे. पोताना आत्मानी परीक्षा करवा कष्ट पण सहन करी जुए छे, कारण के केटलाएक वातो करवारूप जड पदार्थ मारो नहीं एम कहे छे, पण ज्ञानी तो कष्ट सहन करती वखत परीक्षा करे छे के जे शरीरने कष्ट पडे छे, त्यारे ते कष्ट मने थयुं मनाय छे के नहीं ? जो दुखमां चित्त लेपाय छे त्यारे तो कहेवारूप थयुं, ने जो शरीरने कष्ट थाय छे तेमां समभाव रहे छे त्यारे साचुं ज्ञान थयुं स्वीकारे छे, एवी स्वभाविक दशाज स्वस्वरूप परस्वरूप ज्ञान थवाथी थइ छे, तेना प्रभावे जे जे दुख थाय छे तेमां जराए खेद पामता नथी. पोते पोताना आनंदमां रहे छे. कर्म फलनी पतीज छे तेमां वधारे पतीज थती जाय छे के पूर्वे पाप कर्यां छे, तेनुं आ फल भोगवुं छुं, हवे पण पाप करीश तो तेनां फल भोगववां पडशे. आ विचारो ठशी गया छे, तेथी कर्म खपाववाना उद्यम जे जे प्रभुए बताव्या छे, तेमां व्यवहारमां वर्ते छे, निश्चय स्वरूप हृदयमां भावे छे. तेनी विचारणा करे छे. वधारे विशुद्धिवंत ध्यानादिमां लीन थाय छे. एवा उद्यमी पुरुष मोक्ष पामशे ए निरधार छे, पण जेणे उद्यम छोड्यो तेने तो कंइ पण बनवानुंज नथी.

प्रश्न—धर्मनो उद्यम तो वधा धर्मवाला पोतपोताना विचार प्रमाणे करे छे, तो जैन धर्मनुं विशेष शुं ?

उत्तर—जैन धर्मना मार्गमां निश्चयने व्यवहार वे प्रकारनो मार्ग छे, तेणे करीने वस्तुधर्मनो यथाथ निर्णय थाय छे, अने यथार्थ प्रवृत्ति पण करी शके छे. जैन थइने पण केटलाएक एकलो निश्चय ग्रहण करे छे, केटलाएक एकलो व्यवहार ग्रहण करे छे अने निश्चय उपर दृष्टि नथी. ए वेमां यथार्थ जैनीपणुं नथी. ए सारु जशविजयजी महाराज कही गया छे के "स्यादवाद

पूर्ण जो जाणे ॥ नयगरभीत जस वाचा ॥ गुणपर्याय द्रव्य जो बुझे ॥ सोइ जैन हे साचा ॥" आवी रीते कह्युं छे, ते मुजब वर्ते तेने जैन कहीए; तो जेम जैन नाम धरावी एक पक्ष ग्रहण करे तेने जैनमां गण्या नहीं. तेनुं कारण के ते यथार्थ आत्म साधन करी शके नहीं, तेम अन्य दर्शनीमां पण एकांत पक्ष ग्रहण करे तेने वस्तु धर्मनुं यथार्थ ज्ञान नहीं थइ शके, अने वस्तु धर्मना बोध विना आत्मधर्मने आत्मधर्मना रूपे जाणे नहीं, जड ध-र्मने जड धर्मना रूपे जाणे नहीं. जेवुं आत्मानुं लक्षण छे, तेवुं लक्षण जाणे नहीं. परमात्मानुं जेवुं लक्षण छे तेवुं जाणे नहीं. ते कदापि परमात्मानुं ध्यान करे तो पण सफल शी रीते थाय? केटलाएक कहे छे जे ईश्वर सिवाय कोइ पदार्थ छे नहीं. जड पदार्थ छे एवुं जे कहीए छीए ते भ्रांति छे. हवे प्रत्यक्ष पदार्थने भ्रांति कहे छे ते माणस तेने अनुसरतुं ध्यान करे तो आत्मकार्य शी रीते थाय? माटे जे जे वस्तु जेवे रूपे रही छे ते रूपनुं ज्ञान करी ध्यान करे तो कल्याण थाय; बाकी जे जे जीवने पो-ताना आत्मानुं कल्याण करवानीज बुद्धि छे, ने ते बुद्धिथी जे उद्यम करे छे ते परंपराए हितकारी छे, कारण जे आत्म धर्म पामवाना सन्मुख थया छे, तेने सदगुरुनो जोग बने तो ज्ञान थतां वार लागे नहीं; माटे सन्मुख भाव करवो ए सारो छे, तेथी परंपराए कल्याण थशे अने एक पक्षनी बुद्धि मुकी नि-श्चय दृष्टि हृदयमां स्थापी निश्चय प्रगट थाय, एवां कारणो से-ववां तेथी कल्याण थशे; अने परंपराए इच्छित सुख थशे, तेमां मुख्य शास्त्रज्ञान करवानो वधारे उद्यम राखवो ते ज्ञानने अनुसरता परभावथी मुकावानां साधन करवां एटले सर्वे श्रेय थशे.

प्रश्न—जैनमां वस्तु केटली कही छे?

उत्तर—जड अने चेतन बे पदार्थ छे, एनी व्याख्या प्रथम

घणी करी छे, एटले अहींआं लखतो नथी. हवे एटलुंज लखवानुं छे के जड जे शरीर, घर, हवेली, कपडां, आभूषण विगेरे प्रगट पदार्थ छे, तेने अद्वैतवादी कहे छे के भ्रांति छे पदार्थ नथी, अविद्याना प्रभावथी मानो छो. आ जे कहेलुं छे ए बाबतना ग्रंथ पण घणाज लखाया छे अने न्याय पण जोडाया छे. पण मारा विचारमां सर्वज्ञ पुरुषे शुं बताव्युं छे ? आ पदार्थ जड छे, तेथी ए पदार्थ मारा नहीं, ए पदार्थमां मारापणुं मानुं छुं ते भ्रांति छे, अविद्या छे; आत्मानो चेतन स्वभाव छे, माटे पर स्वभावने मारो कहेवो ते भ्रांति छे, ने ए भ्रांतिए अनंतोकाल थयो संसारमां रोलायो, माटे संसारमां जेने रझलवुं न होय तेणे ए पदार्थ उपरथी मारापणानो ममत्त्व छोडवो; आ रीते परमात्मानुं कहेवुं छे, तेनुं रूपांतर थइ गयुं छे, वली जैनमत स्याद्वाद छे तेने अजाणपणे एम जाणे छे के हा ने ना ए केम बने ? पण जे जे पदार्थ रह्या छे तेमां बे बे धर्म रह्या छे तो ते न मानतां कार्यनी सिद्धि शी रीते थाय ? तेनो दाखलो के, स्त्री छे तेने छोकरां थाय छे हवे एक पक्ष लइने कहीए जे छोकरां स्त्रीने थायज तो शुं दूषण आवे छे के जे स्त्री वंझा छे तेने थतां नथी, हवे वंझाने थायज नहीं एम मानीए तो तेमां पण दोष आवे छे, केमके वंझाने औषध खावाथी वंझा दोष टले छे ने छोकरां थाय छे. हवे एम कहीए जे औषधथी वंझा दोष टलेज छे, तो ते पण खोटुं थाय छे, कारणके केटलीएक बाइउने वंझादोष उसडथी नथी पण मटतो, तो ए पण एकांत कहीशुं त्यां दूषण आवशे. शरीरनी नीरोगता सारी संभालथी रहे छे, एम जो एकांतथी कहीशुं तो महाराणी साहेबने मांदगी भोगववी पडी अने देहनो त्याग करवानो वखत आव्यो, तेमणे कांइ संभाल राखवामां कचाश राखी नथी, पण पूर्वकृत कर्म जोर करे त्यां माणसनुं कंइ चाली

शकतुं नथी. हवे अहीं एवो सवाल थशे के शरीरनी संभाल राखवानी जरुर नथी, कर्मथी थाय छे ते थशे, ए पण एक पक्ष नथी, संभालथी पण बचाव थाय छे जेमके जाणी बूझीने झेर खाइए तो पछी शी रीते जीवीए ? मरकी प्रमुखनी हवा चालती होय त्यांथी खशी जवुं जोइए. तेम करवाथी बचाव थाय छे, ते पण एकांत नहीं. हवे दाक्तरने पण नाशी जवुं जोइए, आ सवाल आवशे. केमके बीजा नासे त्यारे दाक्तर केम न नासे ? त्यारे अमो कहीए छीए के नासवानो एकांत नहीं. दाक्तर मरकी न लागे एवा बंदोबस्तथी रहीने लोकनी संभाल करे, दाक्तर नासे नहीं, बीजा माणस बीजे स्थले जाय. एज प्रमाणे नाणुं पेदा करवुं, ते मेहेनत करवाथी नाणुं पेंदा थाय एम कहे छे तेने कहीए छीए जे मेहेनत करवाथी नाणुं पेंदा थाय छे ने नथी पण थतुं. बुध्धिवान बुध्धिथी नाणुं पेंदा करे छे ते पण एकांत कहेवाशे नहीं. बुध्धिवान देवालां काढे छे, अने वगर बुध्धिवान धन साचवी राखे छे, ते पण एकांत नहीं रहे. बुध्धिनी खामीथी घणुं नुकशान थाय छे. खावुं ए सारुं छे पण एकांत कहेवाशे नहीं. केमके शरीरमां खाधेलुं पच्युं नथी ने खाय तो अजीर्णादिक रोग थाय, माटे तेणे खावुं नहीं, तेमां पण एकांत नथी. सेहेज पदार्थ संतोषने सारु, निभाव सारु, खाधेली पचवा सारु खावुं. घी पदार्थ उत्तम छे, खावा जोग छे पण निरोगीने, रोगीने नहीं. रोगीने पण न खावो ए एकांत नथी, दवाना अनुपानमां रोगना उपर वा शरीरनी स्थीति उपर विचार करी वैद या दाक्तर खावा कहे ते खावुं. दान देवुं उत्तम छे पण एकांत नहीं. पोताने माथे देवुं होय ते आपे नहीं अने दान दे, तेवी रीते देवुं नहीं ते पण एकांत नहीं. पोताने खावाने बे रोटला कर्या छे, तेमांथी अरधो वा एक रोटलो आपे छे ने बाकी रहेलामांथी निर्वाह करे छे. तो ते उत्तम छे. दान न आपत तो

पोते खात ते पोते खाधुं नहीं ने आप्युं, तो महा फलदायी छे. कोइने दुःख न देवुं ए शब्द एकांत छे तो पण ते एकांत नहीं. कोइ उत्तम पुरुषने रोग थयो छे. ते रोग टालवा दुःख दे तो ते लाभकारी छे. जेमके गुमडुं थयुं होय ने नस्तर मूके छे तेथी दुःख थाय छे. पण शाता करवा सारु दुख देवुं छे, तो ते दुःख देवुं निषेध नथी. छोकराने भणवा सारु महेताजी विगेरे दुःख दे, ते दुख देवुं निषेध नथी, ते पण एकांत नहीं ने मारवाथी हाथ पग भागे, कोइ घा पडे, लोही नीकले, कोइ भारे इजा थाय एवो मार विगेरे मारवो जोइए नहीं. वली कोइ कोमल अंगनो होय एवाने बीलकुल मारवो न जोइए, वली कोइ शिष्य अयोग्य होय तो मारवो न जोइए. एम सर्वे विद्या भणवी ए साधारण नियम छे पण ते एकांत नहीं. जेमां मंत्रादिक विद्या छे, ते काम करवानी शक्ति न होय, तेणे ए भणवुं नहीं. एम तप करवो ए लाभकारी छे, तो पण ते एकांत नहीं, जेनी शक्ति होय ते तो सुखे तप करे, पण जेने शक्तिनी खामी छे, तेथी प्रणाम बगडे तेवुं छे तेणे तप करवो नहीं, वली ते पण एकांत नहीं. छेल्लो मरण समय छे. ते वख्ते शरीरनी शक्ति न होय तो पण चारे आहारनो त्याग करे, ते पण एकांत नहीं. जेने भाव सारा न रहे अने प्रणाम बगडी जाय तो तेणे त्याग करवो नहीं. धर्म उपदेश देवो ए सारी वात छे, पण ते एकांत नही जेणे यथा प्रकारे शास्त्रनुं ज्ञान मेलव्युं छे ते उपदेश दे, पण ते ज्ञान जेणे न मेलव्युं होय ने ते उपदेश दे तो प्रभु आज्ञाथी विरुद्ध देवाइ जाय, माटे ज्ञान रहित होय तेणे उपदेश देवो नही. ज्ञानवंत छे ते पण सांभलनार उपदेशने लायक न होय तो उपदेश देवो नहीं, ते पण एकांत नहीं. हालमां लायक नथी पण उपदेश देवाथी लायक थाय एवुं होय तो देवो. अयोग्यने जवाब न देवाथी शास-

ननी लघुता थती होय, तो ते लघुता न थाय ते सारु उपदेश देवो. आ स्याद्वादनी रीत छे. अपेक्षा अपेक्षानां वचन जुदां जुदां छे, हवे एवी अपेक्षाउ न समजे ने एकज रीतनी वात करे ते ज्ञानी के अज्ञानी ? सरकारना कायदामां पण अपवाद बताव्या छे, तेम जैन शासनमां उत्सर्ग अपवाद मार्ग बताव्यो छे. वगर अपेक्षाए हा तेनी ना एवो जैन मार्ग नथी, तेवी रीते जैन मार्ग जाण्या विना कोइ ठेकाणे शास्त्रमां उत्सर्ग मार्गनी वात होय, कोइ ठेकाणे अपवाद अपेक्षाये होय, ते विचार जाण्या विना कहे छे जे जैनमां एक ठेकाणे कंइ छे ने एक ठेकाणे कंइ छे.आ कहेनार केवल मुर्खता वापरी कहे छे. जो जैन शासननुं माहापण मळ्युं होत तो कदापि कहे नहीं. जैनमां जे साते नय सप्त भंगी आदे बतावी छे, ते आवी रीते अपेक्षाज्ञान थवाने सारु छे, ते नयादिकनुं यथार्थ ज्ञान थाय तो सर्व ठेकाणे जे जे नयनुं वचन होय ते ते नयनुं ते ते ठेकाणे थापे तो कोइ वातनो संशय रहे नहीं, पण ते ज्ञान विना जैन शासननी स्याद्वाद वात संबंधी विपरीत भाखे वा बोले ए पोताना वाम्हानो हठ छे. जे जे पदार्थो रह्या छे तेनो निर्णय स्याद्वाद ज्ञानथी थाय छे. दुनियामां कोइ पण वस्तुनो स्वभाव स्याद्वाद विना नथी. जेम के जीव छे ते अविनाशी छे, ए सत्य छे, कोइ दिवस जीवनो विनाश थतो पण नथी, एज पक्षपर एकांत रहीए तो जे जे संसारमां रोलाता जीवो छे ते एक शरीर मुकी बीजी जातिमां बीजुं शरीर धारण करे छे, तो प्रथम हाथी हतो त्यारे पोताना आत्मप्रदेश हाथीना आखा शरीरमां फेलाइने रह्या हता, ते हाथी पण मरण पाम्यो ने माखी थइ तो जे हाथीमां फेलावो हतो तेनो संकोच करी माखी जेटलामां समाया; एवी रीते आत्मप्रदेश थया तो हाथी वाली अवगाहनानो नाश थयो, तथा हाथीनी पण बोलवुं, चालवुं, खावुं,

पीवुं वगेरे जे जे प्रवर्त्तना हती ते बंध थइ गइ मांखपणानी थइ, तो हाथीपणुं नाश थयुं ते अपेक्षाए जीवमां नाश धर्म पण रह्यो. जे नाश धर्म न माने ते विपरीत के केम? परमाणु पदार्थ अविनाशी छे पण एक बीजामां मलवुं जुदा पडवुं ए धर्म रह्यो छे, ते विनाशी धर्म. तेमज माटीना अनेक घाट बने छे. ते विनाश थाय छे, माटी अविनाशी पणे छे; तो एवा पण बे धर्म रह्या छे. तेवा बे बे धर्म रह्या छे. आत्मामां स्वभाव धर्म अने विभाव धर्म बे, बे अपेक्षाये रह्या छे. स्वभाव धर्म कृत्रिम नथी. स्वभाव धर्म जडमां रहेवानो, जडनी साथे वर्त्तवानो नथी. मुख नथी तेथी बोलवानुं नथी, चालवानुं नथी फक्त जाणवुं, देखवुं, स्वभावमां स्थीर रहेवुं ए स्वभाव आत्मानो छे. हवे एकांत मानीए तो जड प्रवृत्ति करे छे ते कोण करे? वेदांती लोक एम कहे छे, के मायाथी–अविद्याथी थाय छे तो ते रीते पण परसंजोगे वर्त्तवुं तो थयुं, तो जीवमां स्वभाव न होय तो वर्ते शी रीते. हवे वर्त्तवानो स्वभाव मानीए तो एथी रहित थाय नहीं. एम कांइ पण एक स्वभाव मानवाथी वस्तु निर्णय थशे नहीं. जैनशास्त्रकारो स्वभाविक धर्ममां कांइ पण जड प्रवृत्ति नहीं एम कहेछे ते सत्य छ, तेम न होय तो संसारथी मुकाइने शुद्ध कोइ थाय नहीं, माटे शुद्ध निश्चय नयना पक्षथी निज स्वभावमां रहेवुं एज धर्म छे. अशुद्ध निश्चयना पक्षथी जडनी संगते कर्म बांधेलां छे, ते कर्मना संजोगथी जडनी प्रवृति थायछे. जड जेम वर्त्तेछे, तेम आत्मा वर्त्तेछे. हवे ते प्रवृति छोडवाने सारु व्यवहारमां धर्म साधन करवुं छे अने जे जे कर्म बांधेलां छे ते खपे एवो उद्यम करवो. कर्म खपाववानो उद्यम यथार्थ कर्या विना आत्मा निर्मल थवानो नथी ने कर्म खपवानां नथी. एवा वस्तुउमां स्वभावि धर्म विभाविक धर्मोनुं ज्ञान विना ध्यान करे तो विपरीत

ध्यान थशे, माटे पदार्थोना धर्मनो दर्शाव जैन शास्त्रने विषे बहु विस्तारे छे, ते जाणी पछी दया दानादिक करे तो सफल थाय, अने मोक्ष साधन पण तेनेज कहीए. स्वभाव धर्मने स्वभाव पणे श्रद्धा करी, विभाव धर्ममां वर्त्तना छे ते वर्त्तना दूर करवामां, प्रथम विभाव वर्त्तना करवी पमशे, जेमके गृहस्थ पणानी प्रवृत्ति विभाविक छोमी साधु धर्मनी प्रवृत्ति करवी, हवे निश्चय नयनी अपेक्षाए ए पण विभाव छे, पण ए विभाव केवो छे? के स्वभावने आवर्ण लागेलाने खसेमनार छे—वीतराग आज्ञाए साधु पणुं आवे छे, ततो विभावना अंश खपवाथीज आवे छे, ते जेम जेम संजममां तत्पर थाय अने संजम स्थानमां चमे, तेम तेम विभाव दशा खसती जाय, अने आत्मशुद्धि थाय. अनुक्रमे गुणस्थान चमे ते सर्वथा विभावथी मुक्त थाय, अने स्वभाव धर्म प्रगट थाय, तेथी अनंत ज्ञान शक्ति प्रगट थाय, तेथी एक समयमां त्रण लोकना भाव जाणवामां आवे, अनंत दर्शन प्रगट थाय, तेथी सामान्य उपयोग रूप बोध थाय, अनंत चारित्र गुण प्रगट थाय तेथी स्वभावमां स्थिर रहे, अव्यावाध सुख वेदनी कर्मना क्षयथी प्रगट थाय, नाम कर्मना क्षयथी अरूपी गुण प्रगट थाय, गोत्र कर्मना क्षयथी अगुरुलघु गुण प्रगट थाय, अंतराय कर्मना क्षयथी अनंत वीर्य प्रगट थाय, आयु कर्मना क्षयथी अक्षय स्थिति प्रगट थाय आवी रीते अनंत आत्माना गुण प्रगट थाय, अने लोकाग्रे सिद्धिने विषे विराजमान थाय.

प्रश्न—सिद्ध स्थान क्यां छे अने त्यां शुं करवा रहेवुं

उत्तर—सिद्ध स्थान चौद राजलोकनी उंचाइ छे तेना छेमाना भागमां अलोकने अमीने रह्या छे. अलोक एटले त्यां धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, जीवास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय, काल ए पांचे पदार्थ नथी तेथी अलोक कहीए, ते अलोक नीचे रह्या छे,

कारण जे धर्मास्तिकाय अलोकमां नथी तेनी सहाय विना च-
लातुं नथी माटे त्यां रह्या छे, त्यां केहेवा रूपे रह्या छे. देह नथी
तेथी वर्ण नथी, गंध नथी, फर्स नथी, रस नथी अरूपी पणे रह्या
छे, ते सदाकाल अवस्थित पणे रह्या छे, कोइ पण दिवस फरी
चलायमान पणुं नथी. अचलस्वभावी (संसारी सुख अथिर छे,
तेवुं अथिर सुख नथी) स्थिर सुख छे. जन्म मरण करवानां दुःख
टली गयां छे. संसारमां विकल्पनुंज दुःख छे, ज्यारे विकल्प न
होय त्यारे संसारमां सुख थाय छे तेमां सिद्धमहाराज सदा वि-
कल्प रहित छे. कोइ पण वखत कोइ पण कारणनो विकल्प
नथी तेथी सदाकाल सुखमयी रहेछे. संसारमां इच्छाओ प्रवर्त्ते छे, ते
इच्छाओ पुरी न थाय तेनुं दुःख छे; पण सिद्धमहाराजने संसारी कोइ
पण चीजनी इच्छा नथी एटले दुख नथी तेथी सदा सुखमयी छे.
जे जे पदार्थो जोवामां जाणवामां आवे छे, ते संबंधी रागी जी-
वने राग थाय छे, पछी ते मलतुं नथी तेनुं दुःख थाय छे; अने सिद्ध
महाराज वीतराग दशाने पाम्या छे तेथी तेमना जाणवा देखवा-
मां चौद राज्यलोकना पदार्थ समये समये आवेछे पण वीतराग
दशाने लीधे जे पोताना आत्माना स्वभावथी जणाय छे तेमां
कांइ पण चित्त नथी, विकल्प नथी, पण स्वभावाणंदमां वर्त्ते छे.
जेटलां जेटलां संसारमां दुख छे, तेमांनुं एक पण दुख सिद्ध म-
हाराजने नथी. वली संसारनां जे जे सुख छे ते दुःखमयी छे
अनित्य छे, मात्र सुख माने छे, एटलुं छे. ज्ञानदृष्टिए विचारीए
तो सुख नथी, कारण जे जगतना जीव स्त्रीना भोगे करी आ-
णंद माने छे पण तेज वखत शरीरने केटली पीडा थाय छे, तेना
उपर लक्षज नथी. ते दुःख न मानतां सुख माने छे—विषयथी
आयुष्यनी हानी—पइशानी खरावी—ते सरवे वात कोरे मुकी सु-
ख माने छे; तेमज तमाशा खेल जोवा जाय छे त्यां उजागरा

करे छे, कन्ना कन्ना पग दुखे छे, ते दुख मानताज नथी; आभुषण पहेरी खुशी थाय छे, तेनो भार भोगववो पडे छे अने शरीरे पीडे छे, तेहना उपर लक्षज नथी; तेमज खावाना विषय सेववाथी केटलीएक एहवी चीज छे के जे खावाथी रोगनी उत्पत्ति थाय छे पण तेहना उपर लक्षज नथी, केटलाएक पदार्थ शरीरने अडचण करे एहवा नथी ते पण प्रमाणथी खाय तो, पण ते प्रमाण उपर लक्ष नही ने अतिशय खायतो अजीर्ण थाय ने मरे वा मांदो पडे तेनो पण विचार विषय आगल रहेतो नथी; प्रमाणथी खाय तो तेमां पण केटलां दुख भोगववां पडे छे, जेमके जीवने दुधपाक खावानुं मन थाय छे, अने ते दुधपाक खाइने खुशी थाय छे; पण ए दुधपाक रांधतांज केटलो शरीरमां पसीनो नीकल्यो त्यारे तइयार थयो, ते कोइ विचार करता नथी; एवी रीतनां संसारी सुख दुखगर्भित छे. स्त्रीयोने विषयने सारु पुरुषनुं दासपणुं करवुं पडे छे; जो विषयनी इच्छा न होय तो पाणिग्रहण करवानी जरुर न पडे, पण विषयनी इच्छाथी पाणिग्रहण करे छे. पछी पुरुष मारे, कुटे, गालो दे, घरनुं आखो दिवस काम करावे, आटलुं दुःख भोगवे त्यारे विषयनां पेहेरवानां सुख मले. माटे वस्तुपणे संसारी सुख, सुख मानवारूप पण दुःखमयी छे, अने सिद्ध महाराजने एमांनुं एक पण दुःख नथी; केवल सुखज छे; अने सादि अनंत भांगे छे. एटले सिद्धमां गया त्यारथी आदि छे पण ए सुखनो अंत आववानो नथी. एनुं स्वरूप अकल छे. कोइथी कल्युं जाय एवुं नथी, तेम ए सुख मुखे कह्युं जाय तेवुं नथी. शास्त्रमां एक दृष्टांत आप्युं छे के एक राज पुरुष वक्र शिक्षित अश्व उपर बेठो अने पछी तेनी जेम जेम लगाम खेंचे छे तेम तेम दोडतो जाय छे, जंगलमां उज्जड भूमिमां लइ गयो, माणसो वधा पाछल रह्या अने राजा एकलो वनमां गयो. राजाने भय

लागवाथी लगाम मुकी दीधी. एटले अश्व उभो रह्यो. पछी अश्व उपरथी उतर्यो. राजाने पाणीनी तरस बहु लागी छे, पण पासे कांइ नथी. एटलामां एक भील आव्यो, तेनी पासे राजाए पाणी माग्युं, तेणे दया लावीने पातरामां पाणी लावी आप्युं, ते पाणी पीने राजा संतोष पाम्यो. पछी ते भीले फल प्रमुख लावी आप्यां ते राजाए खाधां, तेथी राजा बहु खुशी थयो. पछी पाछलथी प्रधान विगेरे आवी पहोंच्या. तेमने राजाए कह्युं जे आ भीले प्राण राख्या. पछी राजा भीलने पोताना घेर तेडी गया. त्यां खाजां, घेवर वगेरे अनेक पदार्थ खवराव्या, ते खाइने भील पण अतिशे राजी थयो. एम केटलाएक दिवस रहीने राजानी रजा लेइने भील पोताने घेर गयो. त्यारे स्त्रीए पूछ्युं जे नगरमां केवुं सुख हतुं? तो बहु सुख हतुं एम कहे, पण शुं सुख हतुं ते कही शके नहीं. तेम सिद्ध महाराजनुं सुख कही शकाय नहीं, कारण के सिद्ध महाराजना सुखना जोडानुं सुख आ संसारमां नथी; माटे खरी रीते जे ए दशा प्राप्त करे, ते ए सुखने जाणे. केटलांएक लखवामां आव्यां छे, ते दृष्टांत रूप छे. तेथी बुद्धिवान केटलुंक समजी शके छे. आवुं सिद्ध महाराजनुं सुख अढार दुषणनो त्याग करवाथी थायछे. माटे दरेक दूषण भगवंते त्याग कर्यां. तेनुं स्वरूप ते ते दूषण नाम मात्र बताव्युं छे विस्तारे शास्त्रमां छे त्यांथी जोइने जेम भगवंते त्याग करवानो उद्यम द्रव्य भावथी कह्यो छे तेम करवो के आत्मानुं कल्याण थाय. अने सिद्ध महाराज वच्चे भेद छे ते भागीने सिद्ध महाराजना सरखा गुण वालो आत्मा थाय. मनुष्य जन्म पाम्यानुं एज सार छे.

प्रश्नः—आत्माना गुण आत्माने आपवा तेने दान कह्युं तथा आत्माना गुणनी प्राप्तिने लाभ विगेरे लख्युं ते शा आधारथी?

उत्तर—देवचंदजी कृत चोवीसीमां सुपार्श्व स्वामीना स्त-

वनमां दर्शाव्या छे. वली आनंदघनजी महाराजनी चोवीसीमा पण एवो दर्शाव छे तेना आधारथी लख्युं छे.

प्रश्न--हालमां महा पुरुषोना करेला ग्रंथोना तथा सूत्र सिद्धांतनां भाषांतर थाय छे ते योग्य छे के नहीं ?

उत्तर--हालमां भाषांतर थाय छे ते भाषांतर कोइ मुनि महाराज तो करता नथी. पूर्वेना करेला बालाव बोध मुनि महाराजो तथा आचार्यादिकना करेला छे, तेना उपर पण टीकाउ जेटलो विद्वानो भरोसो करता नथी. टीका जोइ मलतुं टीका साथे होय ते मान्य थाय छे. अने हालमां तो एवा पुरुषो कोइ ग्रंथनुं भाषांतर करता जणाता नथी. फक्त पोतानी आजीविकाने अर्थे गृहस्थो (जैनी) अथवा ब्राह्मणो करे छे. जे माणस पोतानी आजीविकाने अर्थे करेछे तेमणे जिनशासननी रीत पेहेलीज लोपी छे. कारण जे आ लोकने अर्थे प्रभुनी पूजा करे तेने लोकोत्तर मिथ्यात्व कह्युं छे, तो ज्ञानने अर्थ करी वा पुस्तक वेची पैसा पेदा करवा ते आ लोकनो लाभ छे तो प्रथमज लोकोत्तर मिथ्यात्व थयुं, ते मिथ्यात्व लागे छे, एम शास्त्रथी जाणेछे पण पोताने मिथ्यात्व लागे छे एम मानता नथी, आवी दशावाला जैनीउ तथा ब्राह्मणो मिथ्यात्वीछे एवा जीवोने यथार्थ सिद्धांतनो बोध केवी रीते थाय? अने यथार्थ बोध विना अर्थनो अनर्थ थाय. माटे ए काम आत्मार्थीए करवुं योग्य नथी. तेम छतां आजीविका निमित्ते काम करेछे तेने शुद्ध क्षयोपशम थतो नथी. वली विशेषावश्यकमां तो एम कह्युं के सामायक अध्ययन गुरु पासे भणवुं. पण " न नु पुस्तक चोर्यात् " पोतानी मेले पुस्तकमांथी भणवुं नहीं. तो आतो सिद्धांतना अर्थ करवा छे. वली पयन्नादिक विना बीजां आगम (अंग उपांगादिक) श्रावकने साधुजी भणावे तो प्रायश्चित निशिथजीमां कह्युं छे. तो भणवानी

तो नाज होय. अने आतो पोतानी मेळेज अर्थ करे, तेमा गुरु महाराजना आशय ते आवेज नहीं तेथी बरोबर अर्थ थाय नहीं; माटे आत्मानी बीक राखी एवां काम करवाने समता राखवी अने जे जीव, भय न राखे ने ए काममां वर्त्ते तेना करेला बाळावबोध उपर आत्मार्थी भरोसो राखवाना नथी; अने जेने मार्गनुं ज्ञान नथी, मार्गना ज्ञानवंतनी अनुजाइए चालवुं नथी ते पोतानी मरजी प्रमाणे वर्त्तशे तेमां कांइ इलाज नथी.

प्रश्न--तमारा करेला प्रश्नोत्तर चिंतामणिमां जिनपूजामां अल्प हिंसा लखी छे, अने बीजा शास्त्रमां तो अल्प हिंसा पण नथी केहेता तेनुं कारण शुं?

उत्तर--पूर्व पुरुषो अनुबंध हिंसा नथी केहेता ते केहेवुं व्याजबी छे. पूजामां अनुबंध तो कुशलानुबंधी छे. एटले मोक्षमां जोडे एवो अनुबंध छे, माटे अनुबंध हिंसा नथी, स्वरूप हिंसा छे, ते केहेवा मात्र छे फल नथी, तेम अमारुं केहेवुं शब्द भेद छे, आशय एकज छे. अमे अल्प जे प्रते मुक्ति सुखनी प्राप्ति थाय. एटले मोक्ष सुखने आपनारी जिन पूजा छे अल्प हिंसानुं फल थाय नहीं. अल्प शब्द अभाव वाची पण छे, तेवोज समजवो एवी रीते केहेवाथी पूर्व पुरुषोना केहेवा प्रमाणेज छे. पूर्व पुरुषथी विरुद्ध श्रद्धा अमारी नथी. कोइ ठेकाणे हमारी भूल थाय पण महंत पुरुषनी भूल थायज नहीं एज अमारी पण श्रद्धा छे. हमारी चोपडीमां ज्यां ज्यां पूर्व पुरुषथी विरुद्ध जोवामां आवे तेनी श्रद्धा करवी नहीं. ते ते ठेकाणे पूर्व पुरुषनीज श्रद्धा करवी. ते अमने पण जणाववुं के अमो अमारी भूल सुधारीए.

प्रश्न—प्रश्नोत्तर रत्न चिंतामणिमां पाने १८७ मे क्षायक सम्यक्त्व शुद्ध अशुद्ध भेद सारु तत्वार्थनी शाख आपी छे ते तत्वार्थमां छे ?

उत्तर--तत्त्वार्थमां तो सादि सपर्यवसान, सादि अपर्यवसान ए रीते बे भेद करेला छे ते पेहेला भेदना स्वामी श्रेणीकादिक छद्मस्थ कह्या छे. ने केवलज्ञानीनुं क्षायक सम्यक्त्व सादि अपर्यवसान, ए रीते बे भेद करेला छे. एज भेद नवपद प्रकरणनी टीकामां शुद्ध अशुद्ध कह्या छे ते बे शास्त्र एकठी लखी छे. शुद्ध अशुद्ध भेदना अक्षर नव पद प्रकरण टीकामां पाने ४९ मे तथा समयसुंदरजी कृत प्रश्नने विषे छे, त्यांथी जोइ लेवुं.

प्रश्न--दिगंबर मत पहेलो के श्वेताम्बर मत पेहेलो?

उत्तर--दिगंबर मत विषे शास्त्रमां घणे ठेकाणे कह्युं छे. भगवंतना निर्वाण पछी छसेंने सत्तर वर्षे शिवभूति आचार्ये दिगंबर मत काढयो छे. ते वात दिगंबरी नथी मानता कारण जे तेमणे नवां शास्त्र रच्यां छे. अगियार अंग तथा बार उपांगादिक प्रगट छे, पण कहे छे के विछेद गयां छे अने पोताना मत काढनारना करेला ग्रंथो छे तेज आधारे चाले छे. एटले एमने शास्त्रथी समजावीए ते माने नहीं पण न्यायथी समजाववा जोइए. ते आत्मार्थी तो सेहेजे समजी जाय तेवुं छे. जो न्यायनी बुद्धि जागी होय तो हालमां संप्रति राजाना भरावेला हजारो जिन बिंब छे. ते संप्रति राजा भगवानना निर्वाण पछी आशरे ३०० वरसे थया छे ते प्रतिमाजीने लिंगनो आकार नथी. वली कच्छ देशमां महावीर स्वामीजीनी प्रतिमाजी भद्रेसरमां छे. त्यां त्रांबाना लेख छे ते प्रतिमाजीने २५०० वरस थयां छे, वली महुवामां जीवत स्वामीनी प्रतिमा छे, ते महावीर स्वामी विद्यमान अवसरमां भरावेला छे ए आदि दिगंबर मत नीकलता पहेलांनी जिन प्रतिमा घणे ठेकाणे छे, ते प्रतिमाजीने लिंगनो आकार नथी. तेम त्यार पछीना पण श्वेतांबर देरासर घणां छे ने घणां जिन बिंब छे, ते सर्वे लिंगना आकार विनानां छे. अने दिगंबरना देरासरमां लिंग

वालां जिनबिंब छे तो विचारो के वीर भगवानथी चालतो धर्म दिगंबरनो होत तो जुनी प्रतिमाजी लिंगवाली होत, अथवा श्वेतांबर मत नवो होत तो पण जुनां प्रतिमाजी लिंगवालां होत पण ते जणातां नथी. माटे श्वेतांबर मत भगवानना वखतथी चाल्यो आवे छे. दिगंबर प्रश्न करे छे के अमारां जिनबिंब जुनां छे. ते विषे जाणवुं जे ते जुनां छे एवो पुरावो नथी अने श्वेतांबरना जुनां प्रतिमाजीनो पुरावो छे, भद्देसरना लेख छे, संप्रति राजा क्यारे थया ते पण लेख छे, माटे पुरावो बलवान छे. आबुजी, तारंगाजी, समेतशिखरजी तथा गीरनारजी, सिद्धाचलजी ए मोटा तीर्थ उपर चैत्यो जुनां कोनां छे ? कबजो कोनो छे ? असलथीज श्वेतांबरीनो कबजो छे. फक्त श्वेतांबरी श्रावकोए कोइ कोइ ठेकाणे मेहेरवानी दाखल देरासर बांधवा दीधेलां जणाय छे, कारण के मुख्य जगोपर तो श्वेतांबरीनांज देरासर छे, अने दिगंबरीनां हमणां थोडा वखतमां थयां छे. ए जोतां श्वेतांबरी धर्म श्रीमत् महावीरस्वामीथी चालतो आव्यो तेज छे. हालमां कोइ कोइ देशमां श्वेतांबरीनी वस्ती उंछी छे, दिगंबरीनी वस्ती वधारे छे. तेवी जगोए मालकोनो पग पेसारो करे छे तेमां श्वेतांबरीए दया लावी देरासरमां आववा दीधा तथा दिगंबरी प्रतिमाजी केटलेक ठेकाणे पधरावबा दीधा ते दया करी तेने बदले अपकार करी मालकीनी तकरारो केटलेक ठेकाणे करे छे पण उपकार विचारता नथी. ए दिगंबरीनी ज्ञान दशानी खामीनां फल छे. पण देरासरो तथा कबजा उपरथी श्वेतांबरी मुलथीज छे ते खातरी थाय छे. दिगंबर मतनो वाद तो अध्यात्म मत परीक्षामां बहु छे, एटले लखवानी जरुर नथी. पण केटलो-

एक न्याय विचारमां आवे छे ते लावी लखुं छुं. दिगंबरीए व-स्त्ररहित मुनिमार्ग प्रकाश्यो अने श्वेतांबरीनो सिद्धांत स्थविर कल्पी साधु ते वस्त्र सहित होय. आ विधि चालतो आव्यो ते चाले छे, तेथी श्वेतांबरीना हजारो साधुजी त्यागी वैरागी आ-त्मार्थी जोवामां आवे छे, ने दिगंबरीना साधुनो लोप थयो. वली जुज कोइ होय छे तो ते पण वस्त्र ओढे छे, तो नाम दिगंबर ध-रावी पाछा वस्त्र पेहेरवानी जरुर पडी तो वस्त्र पहेरवां, ने दिगं-बरी नाम धारण करवुं, ए केवो बालक जेवी वात छे. अहींआं कोइ दिगंबरी प्रश्न करशे के सिकंदर बादशाहनी तवारीखमां छे के जैनना नग्न साधु गाम बहार हता, तो असल वस्त्र नहीं एम साबित थाय छे, एम कहे तेने समजाववुं के श्वेतांबर साधु बधी वखत कपडां राखे छे, एम समजवुं नहीं. एकांतमां ध्यानादिक करे त्यारे वस्त्ररहित होय, केमके श्वेतांबरी एकासणानुं पच्च-क्खाण करे छे, तेमां चोलपटा आगारेण एवो आगार छे, ते आगारनो अर्थ एवो छे के एकासणुं करवा मुनिमहाराज बेठा छे ने एवामां गृहस्थ आवे तो उठीने चोलपटो पहेरी ले, तो एकास-णुं भागे नहीं, आ आगार गृहस्थने नथी. आ जोतां गृहस्थनी रुबरुमां वस्त्र सहित होय एम समजाय छे; माटे सिकंदर बाद-शाहे दीठेला श्वेतांबर साधु जंगलमां काउस्सग्ग ध्यानमां वस्त्र रहित जोया होय, तेथी ते कांइ दिगंबरी साधु थया नहीं, माटे मार्ग वस्त्र सहितनो श्वेतांबर चालवाथीज, साधु साध्वीनो मार्ग कायम रह्यो. वली दिगंबर मतना काढनारने पण साध्वी वस्त्र रहित रहे ते सारु लाग्युं नहीं तेथी साध्वी थवानो मारग नष्ट थइ गयो; अने श्वेतांबर मतमां हजारो साध्वीजी थइ गयां छे,

थाय छे ने थशे. अने तेथी आत्मानुं कल्याण करशे, अने दिगंबरी स्त्रीउनुं तो आत्म कल्याण नष्ट थइ गयुं. आ दिगंबरी बाइउने फायदो कर्यो के केवल धर्मसाधन करवामांज अंतराय कर्यो. वली दिगंबरीउए स्त्रीने मुक्ति उगावी. पण पोताना गोमतसार ग्रंथमांज स्त्रीलिंगे मुक्ति जवा कहे छे, ते ग्रंथनुं अपमान करेछे अने स्त्रीउनुं मोक्ष साधन रोके छे, तो जेटलो जेटलो नवो मार्ग प्ररूप्यो छे, तेमां फायदानुं नाम नथी. तेमणे श्वेतांबरी साधुजीनी केटलीएक निंदा पोताना ग्रंथमां करी छे, तेवो मार्ग श्वेतांबरी साधुनो छे नहीं ने तेम साधु चालता पण नथी. कोइक संजम थकी भ्रष्ट थइ वर्त्ते तेने कांइ श्वेतांबरी साधु मानता नथी, ते छतां श्वेतांबरी साधुजीनी निंदा करे छे, तेथी पोतानो आत्मा बगाडे छे. साधुजीने कांइ हरकत थवानी नथी. पोताना साधुनी महत्वत्ता करे छे. पण पंच महाव्रतने दूषण लागे एवो ज व्यवहार बांध्योछे. मुनिने सावद्य प्रवृत्ति कंइ पण करवी कराववी नथी. तेम छतां दिगंबरी साधु आहार लेवा आवे तो बे जणने पडदो झाली उभा रहेवुं जोइए, आहार पण एमने खपतो करी मुकवो जोइए, एक माणस थाली वगाडनार जोइए. आ रीत बधी असंयमी संयमी सारु करे, तो असंयमी निर्वद्य काम शी रीते करशे ? सावद्यज करशे अने ते सावद्य मुनिने लागशे तो पंच महाव्रत केवी रीते पालशे ते विचार दिगंबरीने करवानो छे. श्वेतांबरी साधु असंयमी पासे कंइ पण करावे नहीं, पोताने सारु करेलुं पण वापरता नथी. गृहस्थ पोताने सारु कर्युं होय तेमांथी जुज ले छे. फरीथी गृहस्थने पोताने सारु पण करवुं न पडे एटले कोइ पण रीतनुं श्वेतांबरी मुनिने सावद्य

लागतुं नथी दिगंबरी साधु सारु तो कर्युं होय तेज काम लागे छे एटले सावद्य लागे छे तो संजम क्यां रह्युं. आ थवानुं कारण एटलुंज छे जे भगवंतनां प्ररूपेलां आगम विद्यमान छतां ते मानवां नहीं, ने पोतानी मरजीनां कल्पेलां शास्त्र मानवां ते कल्पनामां सर्वज्ञ जेवुं ज्ञान क्यांथी थाय? ए चोख्खुं समजाय छे. वली दिगंबरी गृहस्थो प्रभुनी पूजा एक अंगे करे छे, ने कहे छे जे श्वेतांबरी भगवानने आभूषण चमावे छे ते योग्य नथी; पण विचार करता नथी के पोते काचा पाणीथी पखाल करे छे ते पण गृहस्थावस्थानो आरोप करे छे, वली एक अंगे केशर वगेरे चमावे छे ते पण साधुपणानो आरोप नथी. पण जे वखते इंद्र महाराजे भगवंतने राज्याभिषेक कर्यो ते वखते युगलीआए एक अंगुठे पखाल वीगेरे कर्युं, तेवो हेतु धारता होय तो ए पण राज अवस्थानो छे. वा मेरु शिखर उपर इंद्रे अभिषेक कर्यो ते अवस्था लेता होय तो ए बंने अवस्थाए सर्व अंग केशर, चंदन, वस्त्र, आभूषण छे, तो एक अंगे पूजवानी कइ अवस्था छे ते विचारशे तो भूल जणाशे. जो केवली अवस्था कहेशो तो ते वखत तो टाढुं पाणी चढवानुं छेज नहीं, माटे ते अवस्था थपाशे नहीं. अने ते नहीं थापो त्यारे तो जन्म अवस्था अथवा राज अवस्थाविना बीजी अवस्था थपाशे नहीं. अने ते थापो त्यारे तो सर्व अंग पूजो, आभूषण घरेणां पहेरावो. वली दिगंबरना तेरा पंथीउए तो आवो तर्क आववाथी एक अंग पूजवुं मूकी दीधुं, मात्र पखालज करे छे. तो ते पण पखाल वखते कइ अवस्था विचारशे, वली नैवेद्य प्रभु आगल मुकशे त्यारे कइ अवस्था विचारशे? तेमनाथी पण बीजी अ-

वस्था अपाववानी नथी. पण पोतानी भूल आत्मार्थी समजशे. आ भूल थवानुं कारण आगम नहीं मानवां तेज छे, बीजी नथी. भगवान आहार करता नथी एम माने छे अने नैवेद्य धरे छे, ते तेमने विचार करवानो छे. अमारे तो आहार करे छे एम मानवुं छे. एटले श्वेतांबरीने बधुं सीधुं छे. दिगंबरीकृत समयसार नाटकमां तो कहे छे जे ज्ञानी पुरुषनो भोग छे ते निर्जरानो हेतु छे तो भगवान छद्म ज्ञानी छे? के कर्म बंधनो हेतु थशे. एम विचार करे तो आहार करवाथी भगवानने दोष लागे छे ते कहेवुं खोटुं छे एम समजाशे. आ वातोनो वधारे विस्तार अध्यात्म मत परीक्षामां छे, तेथी अहीं वधारे लखतो नथी. त्यांथी जोइ लेवुं. आत्मार्थी जीवने श्वेतांबर दिगंबर मतनी परीक्षामां एटलुंज जोवानुं छे के आत्मानो जे स्वभाव छे ते प्रगट थवानुं साधन कया मार्गमां छे ते जोवुं. जे जे आत्मा निर्मल थवानां कारणो बंने मार्गमा बताव्यां छे, तेमांथी निकट कया मार्गमां छे ते जोवुं जोइए.

केटलाएक अध्यात्मी ग्रंथो दिगंबर मार्गमां छे, ते ग्रंथो वांचीने घणा जीवो संसारमां पडी जाय छे, तेनुं कारण एटलुंज छे जे जेम जशविजयजी उपाध्यायजीए अध्यात्मनां शास्त्र रच्यां छे, तेमां एक ढाल निश्चयनी, तेनी साथे एक ढाल व्यवहारनी छे, तेथी ते वांचवाथी कोइ मार्गथी उपरांठा थतां नथी. अने तेम दिगंबरना ग्रंथोमां नथी. तेथी दिगंबरना ग्रंथ वांची निश्चे पामता नथी अने व्यवहार पालता नथी तेथी जीवो बे मार्गथी भ्रष्ट थाय छे, एनुं कारण एटलुंज छे के आगम नहीं मानवाथी आगममां तो आ कालमां वधारे चार नयनीज व्याख्या

करवा कहेलुं छे, तेनुं कारण जे व्यवहार मार्गमां पुष्ट नथी थया ते जीवो निश्चय एकांत वांचवाथी संसारमां लीन थइ जाय छे. अने जे व्यवहार मार्गमां मजबूत थएला होय, तेने निश्चय मार्गनुं ज्ञान थवाथी व्यवहार मार्ग पालता होय, तेनो अहंकार नष्ट थइ जाय छे, के जेम प्रभुजीए आत्मतत्त्वमां रमवुं कह्युं छे तेम रमातुं नथी; माटे निज स्वभावमां रमीश ते दिवस पूर्ण धर्म कर्यो गणाशे. माटे ते बाबतनी मारामां खामी छे. ते खामी मटाडवा साधन करवुं. ते साधनमां तत्वज्ञानना शास्त्र तथा तत्त्वज्ञानना जाणकार पुरुषनी संगत करुं, आम विचारी निश्चय धर्म पामवाना उद्यमी थाय. एटले गुणनी वृद्धि थाय, पण जे एम विचारे जे ज्ञान विना क्रिया कायक्लेश छे, माटे क्रिया करवीज नहीं एम विचारीने क्रिया उपरथी विमुख थाय छे. ते शुं करे छे ? तप न करे त्यारे खाइने पुद्गलनी पुष्टता करे, विषय कषायनी वृद्धि करे, प्रतिक्रमणनी क्रिया न करे, नवराशना वखतमां उंघे वा छोकरा रमाडे, वा गप्पां मारे, आवो नकामो वखत जाय, अने एवां गप्पां मारवानी टेव पडवाथी वांचवानो अभ्यास पण छुटी जाय छे, पछी संसारमां मग्न थाय छे. एवा थएला जोवामां आवे छे माटे पूर्व पुरुषोए "ज्ञानक्रियाभ्यां मोक्षः" आ पाठ मुकेला छे. माटे आत्मार्थीए अध्यात्मज्ञाननो अभ्यास करी संसारी विषय कषायनी क्रियाथी मुकावुं जोइए. अने जे कुशलानुबंधी अनुष्ठान छे ते आदरवुं जोइए. अने जे जे गुणस्थानमां जे जे क्रिया मुकवानी छे ते मूकवी. अने जे जे क्रिया ग्रहण करवानी छे ते ग्रहण करवी तोज गुणस्थान चडवानो वखत मले, अने आत्म विशुद्धि थाय. तेवी तेवी प्रवृत्ति थवाथी अध्यात्म ज्ञान

खरुं थयुं गणाय. नाम अध्यात्म, ठवण अध्यात्म अने द्रव्य अध्यात्म तोआनंदघनजी महाराज छांमवा कहे छे, तेम ते अध्यात्म कार्य थशे नहीं, भाव अध्यात्मज आत्मानुं कार्य करनार छे, ते अध्यात्म दिगंबरी श्वेतांबरीनुं जूडुं नथी, पण सामान्य रीते ठीक छे, पण वस्तु धर्मना ज्ञानमां फेर न होय. फेर होय तेने जिनागममां भाव अध्यात्म केहेता नथी. प्रभुए कहेला वस्तु धर्मनी यथार्थ श्रद्धा करी ध्यानादिक करे छे, तो सफल थाय छे. पण ते विपरीतपणे श्रद्धा करी ध्यान करे ते सफल थतुं नथी. अरूपी पदार्थनुं ज्ञान तथा रूपीपदार्थना वस्तु धर्मनुं ज्ञान सर्वज्ञता आव्या विना यथार्थ थतुं नथी, माटे तेनी श्रद्धा आगम अनुसारे करे तोज बने; अने ते आगम प्रमाण न करे तो यथार्थ श्रद्धा क्यांथी थाय? अने ते न थाय त्यां सुधी भाव अध्यात्म आवे नहीं, ने आत्म कार्य थाय नहीं. ते आगमनी श्रद्धा श्वेतांबर धर्ममां छे, माटे एज कल्याण करनारुं छे.

प्रश्न--तमे एम कहोगे जे आगमनी श्रद्धाएज भाव अध्यात्म आवे तो जैन आगममां पंदर भेदे सिद्ध थया छे ते केम मनाशे.

उत्तर--पंदर भेदे सिद्ध कह्या छे ते प्रमाण छे ने तेमां केटलाएक भेद तो आगम माननारना छे. फक्त अन्यलिंगे सिद्ध कह्या छे ते आगम माननार न होय पण ते जे पक्ष मानतो होय, तेमां आगमथी विरुद्ध वात होय ते वात उपर सेहेजे तेनी अश्रद्धा थाय छे. जेम कोइ माणसने वगर उद्यमे पग गरकी जाय छे ने निधान मळे छे, तेम ते जीवोने सिद्धांत प्रमाणे श्रद्धा पोताना क्षयोपशमना बलथी जागे छे, तेथी जे जे तेना

आगममां जैन आगमथी विपरीत छे, ते विपरीत आवी जाय, अने जैन आगम जोया विना जैन आगममां कह्या प्रमाणे श्रद्धा थाय, तेने भाव अध्यात्म प्रगट थाय छे, तेम दिगंबरने पण थाय तेमां कांइ नवाइ जेवुं नथी. वीतरागनो धर्म कांइ केवल लिंगमां नथी पण यथार्थ नवे तत्वनुं तथा षट् द्रव्यनुं ज्ञान जेने थाय तेने भाव अध्यात्म प्रगट थाय. माटे वस्तु धर्म यथार्थ खोजवानो उद्यम करवो तेथी कार्य थशे.

प्रश्न--जैनमां रूवा कूटवानी रीती छे ते योग्य छे ?

उत्तर--जिन एटले राग द्वेषने जीते तेहने जिन कहीए तेहना सेवक ते जैनी कहेवाय छे तो जिननो उपदेश पण रागद्वेष जीतवानो छे. उपदेशना सांभलनार राग धरीने रुदन करे छाती कूटे माथां कूटे तो तेथी प्रभुनी आज्ञानुं उलंघन करवुं थाय छे. वली रुदन करवाथी अने मरनारनी फीकर करवाथी केटलाएक माणस मरण करे छे. जुवो लक्ष्मणजीनो संबंध ! लक्ष्मणजीने रामचंद्रजी बे बन्नेना स्नेहनुं वखाण इंद्र महाराजे कर्युं ते कोइक देवताथी सहन न थयुं अने ते जोवा आव्या. मनुष्य लोकमां आवीने लक्ष्मण सांभले एम सीताजीनुं रूप धारण करी रामचंद्रजी काल करी गया एहेवुं रुदन लक्ष्मणे सांभळ्युं तेवोज मनमां अत्यंत शोक प्राप्त थयो ने ते शोकनी अत्यंतताथी तरत लक्ष्मणजी मरणने पाम्या. आवी हानी वासुदेव जेवा पुरुषने थइ तो तेमना वीर्यनी अपेक्षाये आपणामां कंइ पण बलशक्ति वीर्य नथी तो आपणा शरीरने हानी केम न पहोंचे. कदापि तेमनामां भाइनो राग हतो, तेथी ओछो राग होय तो मरण न थाय, पण शक्ति तो घटेज. रोगादीक पण वखते थाय.

वखते माणस फीकरमां गांझा थाय छे बुद्धि भ्रष्ट थाय, भ्रमित थाय छे. आ म्होटुं प्रगट नुकशान छे. वली जगतमां पण आबरु नथी पामता. वली राजकर्त्ता यवन राजा छे तो पण आ रझवा कुटवानी रीतने धिक्कारे छे. आपणे जगतमां ऊंच कोम कहेवाइए, तेनी नीच कोम हांसी करे ए आपणी आबरुने केटलुं हीणुं लगाडनार छे. बजार वच्चे रझवुं कुटवुं ते जोइ रस्ते चालता माणसने केटली इजा थाय छे ने हांसी करे छे. वली केटलाएक देशमां लाज काढवावालां बैरां छे, तेम छतां माथानो छेडो कमरे बांधीने कुटे छे, केड ऊपर अंग बधुं खुल्लुं रहे छे, आ केवुं हांसी कारक छे. आ रीत नीच कोम जेवी छे के नहीं ते विचारथी जुए तो समजाय. हमेश माणसने छातीनुं जोर सारुं होय तो बुद्धि सारी रहे छे ने छातीए जोरथी कुटवाथी छातीनी कमजोरी थाय छे तेथी बुद्धिनी पण हानी थाय छे, वली एथी छातीमां हार्टडिसीझ रोग (इंग्रेजीमां कहे छे ते) थाय छे, ए रोग एवो छे के ए रोगवालो एकदम मरी जाय छे वली काम करवाने अशक्त थाय छे, ने तेम हालमां छातीना दरदवाला घणा माणस म्हारा जोवामां आवे छे ते माणसने तप, संयम ज्ञान अभ्यास करवानी बहु हरकत आवे छे. अमदावाद जेवा शेहेरमां घणो चाल हतो ते केटलोक फेरव्यो छे, तेटलो बीजा शहेरमां फर्यो नथी, पण म्हारा विचार प्रमाणे अने ज्ञानी पुरुषो थइ गया तेमना विचार प्रमाणे आ चाल बंध करवा योग्य छे आपणा देव वीतराग छे अने तेमनो हुकम पण वीतराग दशा लाववानो छे तो माणस मरी गयुं ते जोइने विचारवानुं छे के आ माणस बाल उमरमां मरण पाम्यो तो हुं क्यारे मरीश ते खबर नथी तथा हुं घरडो थइने मरीश ए पण निश्चे नथी तो म्हारे हवे धर्ममां ऊजमाल थवुं; आ-

वी म्हारी आत्मानी जे स्वभाव दशा छे ते प्रगट करवाने मुख्य कारण राग द्वेषथी रहीत थवुं ए छे तो हवे म्हारे रागादिक घटाडवा. ते घटाडवा सारु प्रभुजीए जे वैराग्यनां शास्त्र कह्यां छे तेनो अभ्यास करुं एवा शान्त पुरुषनी सोबत करुं के जेथी म्हारी रागादि दशा ओछी थाय; आवा विचार करवा जोइए ते न करतां उलटो रोश वधे एवुं करवुं ते अयोग्य छे अने कहे छे के, म्हारे म्हारा भाइ साथे बहु स्नेह हतो ते याद आवे छे तेथी रडुंछुं पण ते माटे रडतो नथी. एम कहे छे ते लोकमां मान पामवा. पण चित्तमां तो पोतानो स्वार्थ जे भाइथी थतो ते बंध थयो ते सारु रडे छे, पण ते वास्ते रडे कार्य थतुं नथी पण पोताना कर्मनो विचार करवो जोइए. पोते तेनी पासे लेणुं मुक्युं हतुं ते लेइ चूक्या हवे ते क्यांथी आपे अथवा पुन्य बलवान हशे तो भाइ करतो हतो ते बीजो करनार मलशे, पण आवा रडवा कुटवाना विकल्प करवाथी उलटी बुद्धि नष्ट थइ जाय छे अने जे काम करवां छे ते थतां नथी; वली केटलाएक रडवानु ढोंगरूप पण करे छे कारण जे देखीतुं रडे छे अने भाइनो छोकरो होय तेनी वा भाइनी स्त्रिनी वा भाइनी पुंजी होय ते खाइ जाय छे अने तेहने बरोबर आपता नथी वा समुलगी खाइ जाय छे वा भाइनी स्त्री साथे वखते खोटी वर्तणुक चलावतां पण भाइनो स्नेह विचारतो नथी आवा माणसनुं रडवुं कुटवुं ते ढोंग छे. वली सगांवहालां तथा न्यातनां माणसो आवे छे तेहनुं काम ए छे के आ माणसनो भाइ मरी गयो, तो हमो जइने तेहने संतोष पमाडीए पण संतोष न पमाडतां उलटा पोते रडे छे ने पेला रडता बंध थया होय तेने रडवानुं जारी करावे छे, वली बाइओने कुटती वखत उपदेश करे छे के आम शुं कुटो छो ? एटले जोरथी कुटो आ मतलबनो उपदेश करे छे, तेथी

कोइ समजथी थोडुं कुटतुं होय तेहने उलटुं जोरथी कुटवुं पडे छे पण आ उपदेशथी शुं फल थशे ते अज्ञानपणे जाणती नथी के रडवुं कुटवुं ए रौद्र ध्याननुं आलंबन छे, एटले एथी रौद्र ध्यान थाय अने रौद्र ध्याननुं फल ज्ञानीए नरक वताव्युं छे तो नरकनां दुःख केवां कह्यां छे ते जीव भावना ग्रंथ वा सुयगडांग सुत्र सांभले हृदय कांपी जाय एवां नरकनां दुःख आ उपदेशथी मले छे. कोइ समजु माणस आवा सुंदर विचार करी थोडुं रडे कुटे वा समुलगुं न रडे कुटे तेनी अज्ञानपणे निंदा करे छे आ निंदा करनारने दुर्गति सिवाय बीजां फल शी रीते मले, माटे जे नाम धरावीए छीए ते नाम पालवानी फीकर राखी जेम बने तेम निंदा तो एवा माणसनी न करवी. पण रडवा कुटवानुं बंध करनारने धन्यवाद आपवो; अने पोतानी शक्ति प्रमाणे उपदेश देइने ए चाल उठे थाय तेम करवुं ने शक्ति न होय तो जेओ सारां काम करवा इच्छता होय तेमनी मदद करवी ने तेमना संपमां रहेवुं ए काम बंध करवामां जेम ते सलाह आपे तेम करवुं तो तेथी कल्याण छे. वली पैसानुं जोर होय ने पैसानी लालचथी ए काम बंध थाय एवुं होय तो ते रीते बंध थाय एहवा इलाज करवा. न्यातना शेठथी थाय एवुं होय तो न्यातना जोरथी बंध करवुं. जे जे उद्यम करवाथी ए काम बंध थाय एवो प्रयास करवो जोइए. कदाचित हठीला माणस होय तो मध्यस्थ रही पोते ए कामथी मुक्त रहेवुं. वली आपणने अनुकुल माणसने समजावी तेहने ए कामथी छोडववाने जे आपणाथी बनी शके ते करवुं के जेथी आपणने आर्त्त रौद्रध्यान न थाय अने नरकादिक गतिना परोणा न थवुं पडे. बधा माणसनो वाद करवानी जरुर नथी. पोते पोताने त्यां सुधारो करीए पछी धीमे धीमे बीजा पण सुधरे छे अने तेवा दाखला घणा जोयां

छे; ने कइक सुधारा थया छे माटे बुद्धिवाला पुरुषोए पोताने त्यां एवो चाल बंध करवो जोइए. ए बंध करवाथी निंदा थवानी बीक राखवी नहीं. एवी बीक राखवाथी आपणे धर्म करी शकता नथी. में म्हारी माताजी काल धर्म पाम्यां त्यारे ए रीवाज़ बंध करवा धार्युं त्यारे म्हारा पीताजी हयात हता अने ते पण धर्म चुस्त हता, तेथी उलटा कहेवा लाग्या जे एम करवुं व्याज़बी छे. आ वखत बंध थशे तो म्हारी पाछल पण बंध रहेशे तो म्हने पण लाभ मलशे एम विचारी म्हारा पीताश्रीए वीर्य फोरवी बंध कर्युं, तेथी अज्ञानी निंदा करता हता; पण सुज्ञ पुरुषो तो साबाशी आपता हता. पछी म्हारा पीताए काल कर्यो ते वखते म्हारी मातानी वखत निंदा करता हता तेटली निंदा न थइ; माटे पहेली वखत अणसमजु बोले तेना उपर समभाव राखीने आवा चाल बंध राखवा पहेल कर्या विना बनतुं नथी. सर्वे चीज उद्यमने आधिन छे अने पोताना घरना पोते राजा छे माटे पोताने त्यां एवुं रूवा कुटवानुं न करे तो कंइ न्यातवाला न्यात बहार मूकवाना नथी, माटे हिमत पकडीने ए चालने रोकवा जोइए. ए रूवा कुटवानुं काम एवुं छे के एक माणस रूतुं होय ते वात शान्त पुरुषने सांभलवामां आववाथी एने पण राग प्राप्त थवाथी आंसु आवे छे तेनो निमीत्त भूत रूनार माणस छे माटे ज़ेम बने तेम ए चाल सुज्ञ पुरुषोए ओछो करवो ज़ोइए, तेने बदले एवो वहीवट थयो छे के आपणे तेने त्यां रूवा कुटवा नहीं जइये तो आपणे त्यां रूवा कुटवा कोण आवशे एटले जीवता माणसे पण रूवे कुटे तेमां शोभा लेवानी ठरावी. आ ते कहेवी अज्ञाननी राजधानी छे मुवा पछी पाते जोवा तो आववानो नथी अने रूशे कुटशे के नहीं तेनी

खबर नथी. पण ए बाबतनुं कर्म बांधी ले छे आ अज्ञानता छे ते आत्मार्थीए अज्ञानता टालवी. अने रूवा कुटवानी इच्छा तो न राखवी पण कुटुंबी माणसने समजाववुं जे म्हारी पाछल आ पाप करशो नहीं. एवी सखत रीते जलामण करवी के कर्म न बंधाय. पण कर्म बांधवानो जय लाग्यो एज शुभ प्रणामे शुभ कर्म उपार्जन थाय माटे एवो ठरावज करवो के म्हारी पाछल रूवा कुटवानुं करवुं नहीं एटले पाछल वालां एनो हुकम न माने तो पण मरनारने कर्म बंध थायज नहीं. आ लखवाथी एम न समजवुं के मरण थाय त्यां जवुंज नहीं. जवुं तो जोइए कारण के स्नेही वा न्यातना माणसने दुःख पड्युं तो जरुर जइने संतोष पमाड्वो ते दीलगीरीमां छे तो तेमनुं कामकाज करी आपवुं. तेम जो न करीए तो निर्दयता थाय, माटे जवुं, संतोष पामे एवी वात करवी, के तेनुं चित्त शान्त रहे. वली मरनारनी देहने ठेकाणे पोंचाड्वामां मदद करवी; ए करवुं जरुरी काम छे. ए करवामां एवी फीकर रहे जे म्हारी देहने ठेकाणे नहीं पाड्नार मले ने तेमां जीवनी उतपत्ति थशे वा तेथी कोइ प्रकारनुं काम थशे, तेथी कर्म बंध थशे ते पण फीकर राखे, तेथी पण कर्म बंधनो जय रह्यो तेमां हरकत नथी; अने जे पुरुष संथारो करी वोसराववानीज जावना करे छे तेने ए विचार थतो नथी. फक्त स्नेहीने मदद करवी अने शबमां वधारे वखत लागवाथी जीवनी उत्पत्ति थशे ते फीकरथीज जरुर जवुं, कामकाज करवुं. रूवा कुटवानो विकल्प बंध कराववो वा उछो कराववो ए जरुरी छे. वली, केटलाएक देशमां हालमां पण हिंडुलोकमां पण मरण वखते रूता कुटता नथी. उलटा ढोल वगाडे छे, तो शुं ते लोकने मरनार उपर राग नहीं होय? रागथी आंखमां आंसु आवे ए स्वाजावीक नियम छे तेम बने, पण ते ओडा वखतमां वि-

कल्प शांत थइ जाय. पण तेनी वर्तणुक याद लावी रमे ते-
नो पार न आवे अने मारुं ध्यान पण विशेष थाय वली स्त्रियो
धणीनुं सुख याद करी रमवाथी काम पण दीप्त थाय; तो पछी
कुलक्षण सेववानी बुद्धि थाय. आवा नुकशान कारक चाल सु-
धारवा ए म्होटा पुरुषनी फरज छे. ए नित्य एवुं रमवानुं जारी रहे-
वाथी धणीने स्त्री संबंधी विकार जागवानुं साधन थाय छे, माटे ए
वदले एटलो वखत धर्म साधनमां काढवो एवुंज मुकरर कर्युं होय
तो वैराग्य दशा जागे, विकल्पनी शान्ति थाय, खोटा मार्गनी बुद्धि
थाय नहींने होय तो ते खोटी बुद्धि नष्ट थाय माटे एवा अवसरमां
वैराग्यनी कथा विगेरे सांभलवामां वखत काढवो, आ बावत ज-
रुरनी छे. पण जैनमां हालमां वर्त्ते छे एवी रीति होय एम संभ-
वतुं नथी. त्यारे अहीं कोइ प्रश्न करशे जे, जे वखत मरुदेवी
माताजी निर्वाण पाम्यां त्यारे भरत महाराजे पोक मुकी ते
वात शास्त्रमां छे ए कंइ धर्म रीत नथी, संसार रीत छे के एवी
पोक मुकवाथी लोकना जाणवामां आवे तेथी सर्वे लोक एकठा
थइ जाय. ए तो मरण वखतनी एक क्रिया छे, पण आवुं वजार
वच्चे कुटवुं, रोज छमा वालीने वेसवुं, ते कंइ सावीत थतुं नथी.
ते वखते रागना बंधनथी रुदन थइ जाय, लोकने जणाववा पो-
क मुके ए कृत्य संसार नीतिनुं छे पण त्यार बाद जे वधारे कृत्य
थाय छे ते धर्मीष्टने करवा योग्य नथी. धर्मीष्टने तो जे रागा-
दिक घटे एम करवुं एज सार छे.

प्रश्न.—जैन कोमनी चमती दशा केम थाय ?

उत्तर.— आ प्रश्ननो जवाव तो अतिशे ज्ञानी विना बी-
जो कोइ देवा समर्थ नथी अने ते आपणा भाग्यनी कसरथी
अतिशे ज्ञानीनो विरह पम्यो छे एटले खातरी पूर्वक जवाव
देवा अशक्त छुं. वली हुं जवाव लखुंछुं ते करतां पण म्हाराथी

वधारे बुद्धिवान वधारे बतावी शके, माटे जेनुं विशेष होय ते अंगीकार करवुं,

१ प्रथम तो अन्यायनी प्रवृत्ति जैनमां जे धनाढ्यपणे दीपता पुरुषो तथा शेठीआ नाम धरावता होय वा धर्मीमां नाम लखावता होय एवा पुरुषोए बंध करवी जोइए, कारण के यथा राजा तथा प्रजा तेम म्होटा पुरुषोनी एवी सुंदर प्रवृत्ति जोइने नाहाना पण न्यायमां प्रवर्ते एम वर्त्तवा सारु मार्गानुसारीना गुण योगशास्त्रमां तथा धर्मबिंदुमां तथा श्राद्धगुणवर्णवमां बताव्या छे ते उपरथी म्हारी चोपडी प्रश्नोत्तर रत्न चिंतामणी नामनी छे, तेमां जोशो तो जणाशे. ए गुणमां जैन कोम वर्त्ते एवा उपदेश मुनि महाराजोए पण देवाना जारी राखवा जोइए तथा जेम रात्री भोजन विगेरेना नियम करावदामां उद्यम करे छे तेम आ उपदेशना उद्यममां वर्त्ते तो वधारे लाभ थाय एवो उपदेश नथी देता एम म्हारुं कहेवुं नथी, पण देनार महा पुरुषोनो उत्साह वधारवा लख्युं छे अने कोइ सामान्यपणे देता होय ते विस्तारे उपदेश दे ते सारु लखवुं छे. ग्रहस्थोए एवी प्रवृत्ति रोकीने पोताना स्नेहीने अन्याय त्याग करे एवी भलामण कर्याज करवी जोइए. कदाच भलामण कोइ धारण करतुं नथी तेथी पण उदास थइ ए उपदेश बंध करवो नहीं. हमेश जारी राखवाथी कंइ कंइ सुधारो थाय. अन्यायनुं धन स्थिर रहेतुं नथी एवुं श्राद्धविधि विगेरे शास्त्रमां घणे ठेकाणे कह्युं छे माटे न्यायनी प्रवृत्ति धन मले ते स्थिर रहे. वली जैन कोमनो बीजी कोममां घणो विश्वास पडे तेथी वेपार करवा पैसा जोइए ते पण सुखे मले; वली नोकरी करवा जाय तो झट नोकरी सारा पगारनी मले. दलाली करवा जाय तो ते धंधामां पण पेदाश करे. हरकोइ माल वेचवानी दुकान मांडे, घणां घ-

राक तेनी दुकाने आवे ए वाबतमां सुरतमां कल्याणजाइ करीने उत्तम श्रावक हता तेमनी शाख एवी पमी हती जे टोपीउना वेपारमां रुपिआ वे त्रण हजार दर वरसे पेदा करता हता. वळी पिता पासे पुजी नोहोती ते ठतां पोते आशरे चालीश हजारनी पुंजी मेलवी हती. ते त्रण जाइउ तथा पिताए वहेंची लीधी. त्यार वाद पोते वेपार करवानो वंध कर्यो तो पठी जाइउ दुकान चलावी न शक्या. अने पेदाश नहीं थवाथी दुकान वंध करवानो वखत आव्यो. जरुचमां एक पारसीनी दुकान ठे ते एकज रीतनो जाव राखे ठे तेमां तेने त्यां घणो वकरो थाय ठे. मुंवाइमां जफीसोवाला म्होटा वेपारी एक रीत राखे ठे तो तेमां सुखी थयेला जोइए ठीए, माटे वेपारमां अन्याय जो वंध करे तो म्होटी साख पमी जाय अने पुन्यानुसारे सारी पेदाश थाय. गया कालमां सत्यवादी श्रावको थइ गया ठे ते एटली वधी ठाप मारी गया ठे के श्रावक गेर-व्याजवी रीते चाले नहीं, तेथी हालमां श्रावक वुरु काम लूचाइ करे ठे एटला अर्थमां श्रावक लुचाइ न करे आ ठाप चाली आवे ठे, तेना वदलामां हमणांना समयमां धर्मी नाम धरावीने पण केटलाक ठगाइ करता जोवामां आववाथी वीजा धर्मी श्रावकने त्यां कोइ जलामण करे ठे तो धनवान ग्रहस्थो तेनो विश्वास नथी करता अने धर्म ठगनी उपमा आपे ठे. ते में पण सांजली ठे आ थवामां धनवाननी जूल नथी पण धर्मी थइने ठगाइनो धंधो करे त्यारे लोकमां सर्व धर्मीनी निंदा थाय अने वेपार रोजगारमां विश्वास उठवाथी पेदाश थाय नहीं अने सुखी थवानो वखत मले नहीं माटे जेम वने तेम श्रावकोए ठाप सारी पामवी जोइए. केटला एक वेपारी वेपार करे ठे तेमां नुकशान लागे ठे त्यारे देवामांथी ठूटवा सारु सरकार पासे लाय ले ठे एटले कायदानो फायदो लइने

मुक्त थाय छे तेमां पैसा छुपावी राखे छे. ए अन्याय छे के शुं छे वली कदापि कोइए न राख्या अने पाछा पैसा पेंदा कर्या ने लाखो मळ्या पण पेहेलाना देवामां जुज रकम देवी होय तो देवा वालाने आपे नहीं तो जगतमां जैन कोमने सुंदर छाप शी रीते पडे ते विचारवुं जोइए; अने एवा पैसा राखी शासननी परभावना करे संघ जमाडे तेमां अन्यायना पैसा आवे तो जमनारनी बुद्धि केवी रीते सुधरे. साधारण माणस दाखलो ले के देवा वाला ते आवा धनवान थाय छे, शासनना थांभला जेवा केहेवाय छे, ते आपता नथी तो आपणे शी रीते आपीए? एवा विचार फेलावाथी लोकना मनमां एवुं आव्युं जे पैसा हशे तो मान पामीशुं. देवा वालाने बधा पैसा आपी दइशुं तो मान नहीं पामीये. आ बुद्धि फेलाइ गइ छे तेथी सर्व कोइने देन थाय ते आपवानी बुद्धि थाय नहीं. आ बाबतमां संघनो अंकोश एवो जोइए वा नाती वालानो के जे देवादार थाय तो तमाम पैसा देवा वालाने अपाववा जोइए अने पछी तेने म्होटा वरा संघ जमाडवानां खरच करवां देवां जोइए एवी चीज करवा तैयार थयो के न्याते भलामण करवी तें ला लीधी छे ते वखत छगा पैसा आप्या छे, ने बाकीनुं देवुं छे ते पेटे न्यातना तथा संघना खरच जेटला पैसा आपी दो अने ते देवुं पुरु थया पछी तमारी मरजी प्रमाणे खरचो. आवी अंकुश न्यात राखी शके तो जैननी बहु मानता थवामां बाकी रहे नहीं अने एवी छापथी श्रावकोने धीरतां कोइ आंचको खाय नहीं. सर्वेथी शिरोमणि कोम थइ जाय पण हालमां तो श्रावको प्रथम देव द्रव्यनाज पैसा खाइ जनार उपर एवी अंकुश राखी शकती नथी अने तेथी लोको दुखी थया विना रहेता नथी. केटलाएक गाममां एवी पण रीत छे के देवद्रव्यनुं देवुं होय त्यां सुधी श्रावक तेहने त्यां न्यात जमवा जता

नथी तेथी तेवा स्थलोए देवद्रव्यना लेहेणानो निकाल आवी जाय छे पण एवो रीवाज सरवे देवा आशरी सर्वे सेहेरमां तथा सर्व गाममां थाय तो जैन कोम सुखी थवानुं साधन छे वली कोइ माणसे देवालुं काढ्युं नथी पोतानी रीतमां छे पण पैसा नथी ते माणस देवुं करी न्यात विगेरे जमाडे छे तेनी न्यात जमवी नहीं. वली ठगाइ लुच्चाइनो वेपारज करे छे तो तेनी पण न्यात तरफथी शिक्षा करवी. आ रीत थाय तो न्यात सुखी थाय अथवा आ लोकमां वेपार रोजगार सारो चाले अने जगतमां बहु मानता थाय अने सुखी थाय अने तेना पुण्यथी परलोकमां पण सुखी थाय. विद्याभ्यास करी हुंशियार थइ वर्त्तणुक अन्यायनी सुधारे नहीं तो तेथी पण कोमनुं बहुमान थवानुं नथी. बहुमान थवानुं कारण अन्याय छोडवो एज छे. ते म्होटा पुरुषे करी बतावको जोइए तथा देव द्रव्य साधारण द्रव्य ज्ञान द्रव्य एवां द्रव्य श्रावकने त्यां वधारे व्याज ऊपजतुं होय तो पण धीरवुं नहीं, ए बाबत श्राद्धविधी तथा द्रव्य शीतेरी विगेरे शास्त्रमां मना करी छे अने तेमां घणा विस्तारे बताव्यो छे ते जोवुं जोइए. देवादिक द्रव्य जेणे खाधुं तेनी सात पेढी सूधी तेनो वंश सुखी थतो नथी माटे धीरवानो पायोज वंध करवो जोइए अने राखनारे व्याजे तो न लेवुं पण धीनी टीपना देवा पैसा पण राखवा नहीं; अने राखवाथी घणुंज नुकशान शास्त्रमां बताव्युं छे, माटे ए वातनो खूब लक्ष राखवाथी सुखी थवानुं साधन छे, देरासर संबंधीना पैसामां कांइ पण पोताना पैसानो भेल करवो नहीं तेथी आ लोकने परलोकना सुखना भाजन थशे.

२ बीजुं जैन कोमना शेठीआओए सट्टानो वेपार करवा देवो न जोइए. सट्टाना वेपारथी माणसने घणां प्रकारनां नुकशान थाय छे. एकतो प्रथम आलसु थाय छे कांइ पण वेपार ढुंडवानी

શીખવાની બુદ્ધિ નષ્ટ થાય છે. વેપારની રીતની ખબર પડતી નથી નામાની રીત પણ શીખી શકતો નથી, એ સટ્ટાના ધંધાવાળાને બીજા વેપારની વાકેફગારી થતી નથી. તેથી કદાપિ સટ્ટાના ધંધામાં નુકશાન ગયું, તો પછી સુખી થવાના વખતની મુશ્કેલી છે. વળી એ ધંધાથી માણસ વાંકુ બોલવું, લુચ્ચાઇ કરવી, એવી અનેક રીતો ખોટી શીખે છે, કોઇક ભાગ્યશાળી ન શીખે તેને એ ઠપકો નથી; પણ એ નિમિત્ત એવું છે. એ વેપારવાળાને પોતાની પાસે રૂ. ૫૦૦) આપવાની શક્તિ હોય અને પાંચ હજાર ખોટ જાય એવો વેપાર કરે ત્યારે હવે નુકશાની ક્યાંથી આપીશું. એ ફીકર રહી નહી. ને ખોટ જાય તો દેવાલું કાઢવુંજ પડે, અને પાછો ફરી પેદા કરે તો તે આપવાની દાનત્ત રહેતી નથી તો એ અન્યાય છે કે શું છે? એ વેપાર લાંબો કેમ કરી શકે છે કે વેપારમાં પૈસા રોકવા પડતા નથી. જો રોકવા પડે તો લાંબો વેપાર સહેજે થાય નહી. વળી જુગાર અને આ નામફેર છે. જુગારમાં પણ પૈસા જોઇતા નથી. ફક્ત એકી વા બેકી બેમાંથી એક બોલવામાં આવે તે સાચું પડે તો જીતે છે તેમ આંકના ધંધામાં પણ એજ રીત છે. કલકત્તેથી મળતો આંક આવે તે જીતે છે ને નફો લે છે તો બે રીત એક છે. હાલમાં સુરતમાં બાઇઓ પણ એ વેપાર કરવા લાગી છે. આ સ્થિતીને આપણી શ્રાવક કોમ પોહોંચી છે. હવે સુખી શી રીતે થાય? સટ્ટામાં એક પેદા કરે અને એક ખુએ ત્યારે એક શ્રાવક સુખી થયો અને એક દુખી થયો, તેમાં કાંઇ બહારથી પૈસો આવ્યો નહી અને બીજા વેપારમાં તો માલ દેશાવર ચડાવે વા મંગાવે તેમાં ફાયદો થાય છે. યા કોઇ કહેશે શ્રાવક સિવાય બીજી કોમ શું સટ્ટાનો ધંધો નથી કરતા તે વિષે જાણવું જે બદ્ધી કોમ કરે છે પણ ઘણું કરી શ્રાવકની વસ્તિના પ્રમાણમાં શ્રાવક ઘણા સટ્ટાના ધંધા કરનાર નિકળે છે. મ્હોટા શહેરોમાં દલાલો અને સટ્ટાના ધંધા કરનાર વધારે

देखाय छे तेमां दलालीना धंधाने हमो वखोडता नथी, कारण के ए वेपार वगर जोखमनो छे, नुकशाननुं नाम नथी ए पेदा करवानो ज धंधो छे पण जे सट्टाना दलालो छे ते दलाली उपर संतोष करीने रहे तो जरुर दलालीमां सारु पेदा करे पण ते दलालो पाछा सट्टानो धंधो करी दलालीमां पेदा करेलुं सट्टामां वहोलताए आपे छे एटले दलालोने पण सुखी थवानो वखत मलतो नथी वली जेना बाप सट्टाना धंधा करता होय तेना छोकरा पण एज वेपारमां पडे छे. तेमनी वधारे भणवा गणवानी बुद्धि पण जागती नथी तेम मा बापने पण भणाववानी कालजी रहेती नथी माटे सट्टानो वेपार जैन कोमने करवो नही एवो न्याती वा संघ तरफथी बंदोवस्त थाय तो जैन कोमने बीजा वेपार करवानी खोजना थाय. माता पिताने अने छोकरांउने भणवानी बुद्धि थाय तेथी छोकरांउ विद्वान थाय तो न्याय अन्याय सहेजे समजे अने अन्याय सहेजे त्याग करे, माटे हरेक प्रकारे सट्टाना धंधा छूटे एवा भाषणो तथा मुनी महाराजनो उपदेश जारी करी माणसोना मनमां ठसावी पछी न्यातीनो बंदोबस्त थाय तो सारी रीते सुधरवानुं स्थानक छे.

३ त्रीजुं के जैन कोममां विद्याभ्यासनी घणी खामी छे माटे जैनने विद्याभ्यासमां जोडवा जोइए. ते जोडवानुं काम नाणानुं छे नाणां विना बनतुं नथी हवे नाणां भेगां करवामां एवुं थवुं जोइए के जे नाणुं खर्चाय छे तेमांथी बचावीने नाणां कढाववां जोइए, के कोम खरचना बोजामां आवे नही ते सारु मन एम थाय छे के लगन सिमंत अने मर्ण पाछळ हजारो रुपिआ खर्चाय छे. केटलीक न्यातमां केटला एक शहेरमां लगनमां एक एक छोकरो परणे छे त्यारे पैशा वहेंचवानो सो सो दोढसो दोढसो रुपीआ खरच थाय छे ते बुम काढी नांखी ते ख-

रचना पैशा विद्याभ्यासना फंडमां लेवा. जे न्यातमां लग्नने सिमंतनी एक न्यात करतां वधारे न्यातो जमाडवानो चाल छे ते न्यातमां एक न्यात करतां वधारे न्यात जमाडवानो रीवाज बंध करी तेना वचावना पैशा आ फंडमां लेवा. तेनो एवो अंकुश जोइए के ज्या सुधी ठरावेला पैसा फंडमां नहीं आपे त्यां सुधी हस्तमेलाप विगेरे थाय नही. आ ठराव पसार थाय तो केटलीएक उपज दर वरसनी थाय. वली मर्ण पाछळ केटलीएक ज्ञातीमां न्यातो जमाडवानो रीवाज छे ए रीवाज बहुज दीलगीरी भरेलो छे. घणुं करी अन्य दर्शनीनी रीत जैनमा दाखल थएली जणाय छे ए जमण केटलुं निर्दय छे ते थोडुं जणावुंछुं. केटलाएक देशमां जे दिवस न्यात होय तेज दिवशे परदेशना माणसो रडवा आवे ते घणुं करीने जे वखत न्यात जमवा बेसे तेज वखत रडवा कुटवानुं काम चाले छे. हवे जे माणसने त्यां मृत्यु थयुं होय ते माणस केटली दीलगीरीमां होय ते तो सर्व कोइने अनुभव छे. हवे एवी दीलगीरीवालाने त्यां जमवा जवानुं मन वज्र जेवी छातीवालाने थाय, पण दयालु माणसनुं मन शी रीते थाय? अने थाय तो निर्दयता साबीत थाय छे. वली एक बाजु उपर रडता कुटता होय ने कुटवाथी छातीमांथी लोहीधारा निकळती होय अने ते वखत जमवा बेसनार सुखे प्रसन्नताये खाय ए केवी निर्दयता छे. वळी केटलाएक बुड्ढा माणस मरवा पड्या होय ने मर्ण जेवी स्थितीमां होय तेने जोइने आवीने लोकने बोलतां सांभळ्या छे के हवे लाडवा सही थाय एवुं छे. पछी ते माणस मर्ण पामेछे, त्यारे खुश थाय छे के हवे लाडवा मलशे. ए जे लाडवा बदल खुश थाय छे तेमां गरभित पंचेंद्रीना मर्णनी अनुमोदना थाय छे, आ पाप केटलुं छे. ते ज्ञानी केह ते खरु. पण खावानी तृष्णाने लीधे माणस

विचारता नथी अने ए चाल चलाव्या जाय छे, माटे ए चाल बंध थाय तो पैसा बचे अने वली वहाली अनुमोदनानुं पाप टले माटे ए रीवाज बंध करीने तेना बचता पैसा आ फंडमां लेवा. वळी मरण पाछळ शुभ मार्गे हजारो रुपीआ काढे छे तेमांथी कंइक भाग आ खातामां लेवानो राखवो जोइए, तथा म्होटा गृहस्थोए खुशीथी म्होटी रकमनी मदद करवी जोइए आम थवाथी खर्चातां नाणां आ फंडमां आवशे एटले वधारे बोजो आवशे नहीं अने ए सारु विद्याभ्यासना काममां आ फंडमांथी मदद थशे. कदापि एटले नाणे बस न थाय तो पेदाश उपर सेंकडे एक एक रुपिओ अथवा अरधो रुपिउ ठरावबो जोइए एक हजार रुपिआ सुधीना पेदा करनार उपर सेंकडे रु ०॥ लेवो जोइए अने तेनी उपरनी पेदाशवाळानो सेंकडे रु १) ठरावबो जोइए. म्होटी पेदाशवाळाने कंइ भारे पडे एम नथी कारण के शास्त्रमां तो हेमचंद्र आचार्य पेदाशमांथी चोथो भाग शुभ मार्गे वापरवा कहे छे तो आतो एक रुपिउ कंइ भारे पडवानो नथी आ सिवाय न्यातोमां केटलाएक दंडो लेवानो चाल छे ते दंडना पैसा आ फंडमां लेवा जोइए. आम थवाथी पैसानी उत्पत्ति सारी थवानो संभव छे अने हंमेश तेमांथी जे जे कामो करवां हशे ते थयां करशे. हालमां दरेक न्यातमां न्यातनी पूंजीउ छे ते पूंजीयो आ फंडमां जो आवे तो कामनी शरुआत सहेजे थाय अने कोइने पैसा घरमांथी काढवा पडे नहीं. अने हंमेशनी आवक शरु थाय. पेदाशमां लेवानुं अनुकुळ ना आवे तो घणी जातना मालना वेपार छे ते दरेक जातना माल उपर कंइ लेवानो ठराव करवो एवो ठराव पांजरापोळ सारु छे तो ते सुखे ते कारखानुं चाले छे पण वस्तुपणे पेदाशनो ठराव वधारे उत्तम छे. वेपार उपर नांखवाथी वेपारमां केटलीएक हरकतो

पडे माटे पेदाशपर थाय त्यां सुधी वेपार उपर टेक्ष करवो नहीं पण जेम माणसो समजे तेम करवुं, केमके बधा माणसना विचार मळवा मुश्केल पडे छे अने आवां काम माणसने प्रसन्न करीने करवानां छे; जेम कोइने अप्रीती न थाय तेम करवानुं छे. आ काम करवाथी जेम पोतानी जातिना माणसने जमवानुं मळे छे ते पोताना छोकरा हुशीआर थशे तो वधारे जमवानुं मळशे, जमवानुं जवानुं नथी. वली कर नहीं आपे तो छोकरा ज्ञणाववा निशाळमां वधारे कर आपवो पडशे ते पण बचशे, माटे सर्व ज्ञाइज्ञए मनमां आ वात विचारवी जोइए अने पैसानुं फंड प्राप्त करवुं. पैसा विना कंइ काम बने एवुं नथी.

४. ए पैसाना खरच करवामां प्रथम निशाळो गुजराती इंग्रेजी संस्कृत अने जैनधर्मनुंए ज्ञणे एवी निशाळो जोइए. आ निशाळमां पण अन्यायमांथी मन खसे एवुं शिक्षण आपवुं जोइए. संस्कृत ज्ञणनार माणसने घणां वर्ष अभ्यास करवो पडे छे त्यां सुधी एमना कुटुंबनुं पोषण थाय एवा बंदोबस्तनी जरुर छे, ते विना हालमां संस्कृतशाळामां अभ्यास छोकरा करे छे पण ते छोकरा पुरुं संस्कृत ज्ञान मेळवी शकता नथी, अधुरुं मूकी चाल्या जाय छे; तेनुं कारण एटलुंज छे के धनवानना छोकरा तो प्राये अभ्यास करता नथी अने ते करनार विरलाज निकलशे. साधारण स्थितीना छोकरा पचीश त्रीश वर्षनी उमर सुधी अभ्यास करे त्यारे संस्कृत ज्ञान पुरुं करी शके तो एटली उमर सुधी एना कुटुंबनो निर्वाह केम थाय? वली धननी तृष्णा धनवानने लाखो मले तो पण शमती नथी तो साधारण माणसने तृष्णा केम शमे माटे पंदर वरशनी उमर थाय त्यार थी कुटुंबना निर्वाहनी फीकर थाय, ते फीकर न थाय एवो बंदोवस्त ज्ञणावनार तरफथी थयो होय तो सुखे अभ्यास पुरण

करे ए सारु प्रथम व्याकरणनो अभ्यास करे तेनो रु ५) महिनो आपवानो जारी करवो पछी जेम जेम अभ्यास वधे तेम तेम परीक्षा लेइने पगार वधारवो छेवट न्यायशास्त्र पुरण करतां सुधी अभ्यास करे त्यारे रु ५०) नो महिनो आपवो. एवी आशा होय तो संस्कृतनो अभ्यास पुरण करनार उमेदवार छो करा नीकलशे माटे एवा नियमो बांधवाथी जैनमां संस्कृत जा- णेला विद्वान थशे. वली ब्राह्मणो पासे साधुजीने जणवुं पडे छे ते जणवुं पडशे नहीं. तेज जाइने संघ पगार आपी राखी लेशे तो श्रावकना पैशा बीजी कोम दर वरशे एवा पगारना आशरे बधा मलीने शाख्वित पचीश हजार रुपैआ खाता हशे ते जैन कोम खाशे माटे आ फंड थाय तो तेमांथी आ करवानी जरूर छे. कोइ सुखी माणस हशे ते पोताना आत्महित बदले जाणशे तो ते पगार नहीं पण ले पण आ शालामां मोटामां मोटी रु ५०) ना महिनानी आशा-आपवानी जरुर छे. पचाश नो महिनो आ फंडमांथी तो एक वरशथी वधारे वखत आपवो नहीं पडे, पण ते छोकराने पचासना आपनार घणा मलशे. वली संस्कृतनां भाषान्तर विगेरेमां वा बीजी शाळामां एवी पेदाश थइ शकशे जैननी विद्वत्ता वखणाशे जे तेनी साथे वाद करवा कोइ शक्तिवान थशे. एथी म्होटी प्रभावना थशे. तेमज जैन धर्मना ज्ञाननो अभ्यास तो हालमां सुरतने अमदावादमां जेम एक कलाक करावे छे तेम करवानुं जारी रहेशे तोए बस छे.

जे माणसो वीन रोजगारी छे ने दुखी छे तेने सारु दरेक म्होटा शेहरमां उद्योगशाळा करवानी जरुर छे ते शाळामां ते- मने दाखल करवाने तेने काम करवानुं सोंपवुं. जे जे काम जे- नाथी बनी शके तेवुं काम सोपवुं के जैन कोम भूखे न मरे ए शाळामां कंइक माल वेचतां नुकशान थाय ते आ फंडमांथी

आपवुं. घणी जातना वेपार हाथे करी करवाना छे ने जे आवडी शके एवां काम उद्योगशालामां राखवां, जेथी सहेजे ते काम करे माटे नमुना दाखल बताव्युं छे. जे चीज जैनोमां हजारो मण खपे छे ते बनाववानुं काम बैरां सहेलाइथी शीखी शके. दशीयो वणवानुं काम ते पण बनावी शके. वालाकुंचीयो बांधवानुं पण बनावी शके एवुं छे. नबली स्थितीनी बाइओने योग्य काम दाल विणवा विगरेनुं सोंपवुं ने ब्राइओने बीडीयो वालवानुं, सुतरना दडा करवानुं, दोरडां वणवानुं ने गुंथवानुं काम, केटलाक सुका पदार्थनी गोलीयो दवा सारु बनावी वेचवानुं काम, आवां काम सोंपवां. मीलो विगेरेमां काम करी शके एवा ने ते धंधामां जोडवा. केवल अशक्य माणसने छुपी मदत पैसानी आपवी. आम थवाथी जैन कोम निराधार वधारे रहेशे नहीं. आ उद्योग तो एक नाम मात्र लख्या छे. जगतमां घणी तरेहना वेपार छे, तेमांना बनी शके तेमां नुकशान थोडुं ने नफो घणो एवा जोइने दाखल करवा. बनावेल वस्तु वेचवानुं काम पण तेने सोंपवुं के गाममां फरीने ते वेचे.

५ जैन कोमनी लडाइओ सरकारमां जाय छे वा न्यातमां तड पडे छे अने तेथी एक बीजामां द्वेष बुद्धि बहु रहे छे, एक संप रहेतो नथी अने ते एक बीजा वच्चे घणा वरस सुधी पोहोंचे छे, अने ते बदल दरेक बाबतमां तकरारो पडे छे अने सरकारमां हजारो रुपैआ जैन कोमना बगडे छे. मन जुदां थवाथी एक बीजानुं बगाडवाना उद्यम थाय छे ए सारु एवो बंदोबस्त थवो जोइए के जैननी दरेक गाममां लवाद कोरट ठराववी अने जे तकरार होय ते लवाद कोरटमांज मूके एवो न्यात तरफथी ठराव थवो जोइए पण तेमां एटलुं राखवुं के ते गामना लवादना फेंसलाथी नाराज थाय तो तेथी म्होटा शहेरोमां लवाद कोरटमां अपील करे. अमदावाद ने मुंबाइ जेवा शहेरमां त्रण त्रण कोरट करवी १ नंबर.

२ नंबर. ३ नंबरनी एक एकथी चमती एटले सौथी मोटी पहेला नंबरनी के त्रीजा कलासना फेंसलाथी नाराज थाय तो बीजा नंबरनी कोरटमां पछी पहेला कलासना लवाद आगल अपील करे के जेथी कोइने पक्षपातनो वहेम रहे नहीं, ने हरेक कजीउ टुंकामां पती जाय. मारा मारी विगेरेना तोफान करनारने योग्य शिक्षा पण करवी के कोरटमां सीपाइ विगेरेनो खरच निकले. आ ठराव थवाथी घणा कजीआ ओछा थशे ने नातोमां कुसंप चालशे नहीं. न्यातना रीवाजना कायदा न्यातमां अनुकूल होय ते बांधी राखवा तेमां बहु मते सुधारा एक बे वरसे कर्या करवा पण ते हंमेश चाले एम करवुं. आम थाय तो बहु फायदो थाय वारसानी म्होटी रकमनी तकरारना पण निकाल आवी जाय. लाख रुपिआ उपरना फेंसला सारु एक म्होटी दस वीस माणसनी सभा करवी जेमां बधा देशना म्होटा गृहस्थो--लवाद निमावा जोइए ने छेल्ला फेंसला तेउने करवाने सोंपवा, के अपक्षपात इन्साफ मले, जेथी जैन कोमनी एवी तकरारोमां पूंजीउनो नाश थाय छे ते थतां अटके.

६ वीसा श्रीमालीनी न्यात घणा गाममां छे ते छतां ते लोक एक बीजाने ऊंचा निचा गणे छे ते गणवा न जोइए. वस्तुपणे तो तमाम श्रावकोमां भेद न होवो जोइए पण ते भेद भांगवानो हालमां समय जणातो नथी. तेम छतां तेम थाय तो वधारे सारुं ने तेम न थाय तो पोतानी न्यातनो माणस कोइ पण शहेरमां होय तेने कन्या आपवा लेवानो भेद होवो न जोइए, ने कन्या आपी पैसा ले छे ते पण लेवा न जोइए. एना बंदोवस्तनी पण जरुर छे. तेमां ते गामवालानो घणो भाग सरखो होय त्यां न्यातनुं जोर चालतुं नथी, माटे तेने अटकाववानो रस्तो बीजा शहेरवालाए करवो जोइए. घणुं करीने म्होटा शहेरवाला पैसा आपे छे ते आपनारना उपर पण अंकुश रहे तो

ते सहेजे बंध थइ जाय. तेथी अयोग्य स्थानमां कन्याउ जइने दुःख पामे नहीं माटे दैसा आपनार लेनार बेने मना करी होय तो ए काम सुधरे. श्रीमाली, पोरवाड, उसवाल विगेरे जे जे न्यात जे जे देशवार होय ते सर्वेनी साथे आप लेनो वहीवट करवामां अटकाव छे ते काढी नांखवो जोइए, अने वली उसवाल श्रीमाली पोरवाड विगेरे दसा विसानो न्नेद छे ते निकली जाय तो वधारे सारुं. एन्नांथी जेम बहु मते सवड थाय तेम करवा जेवुं छे. वली जैन धर्मना पालनार केटलीएक न्यातना छे ते आपणा धर्मी न्नाइउ छे तेमनी साथे एकठा जमवानो रिवाज नथी ते पण खराब छे, कारण के अन्य धर्मी ब्राह्मण वाणीयानुं खाइए छीए ते खावामां बाध छे केमके ते लोक आपणे जेने अन्नक्ष कहीए छीये ते वस्तु खाय छे, माटे तेमनुं खावुं न जोइए; ते खावानी प्रवृत्ति छे ते रोकवाथी श्रावकना व्रतमां दुषण नहीं लागे एटलो फायदो छे अने जे जैनी न्नाइउ गाळेला पाणीना पीनार अन्न-क्षना पण त्याग करनार एवा जैनीउनुं न खावुं तेथी प्रन्नुनी आज्ञा न लोपाय एम समजातुं नथी, कारण जे स्वामी न्नाइनां तो बहुमान करवां ए समकीतनो आचार छे तेना बदलामां तेमने निचा केहेवा तेथी समकीत केम मलीन नहीं थाय? आ जगो उपर मने कोइ सवाल करशे के तमे केम जाण्या छतां ते प्रमाणे चालता नथी? ते विषे म्हारो जवाब ए छे के घणा लोक तेम प्र-वृत्ति करता नथी ते प्रवृत्ति हुं करुं तो ते घणा माणस साथे विरोध थाय माटे ते विरोध पोतानी जातीना साथे न थाय तेम हुं वर्त्तु छुं पण म्हारी श्रद्धा तो बीजी कोमना श्रावक साथे न्नेद न पाडवो एज छे अने म्हारी मलती श्रद्धावालाने न्नलामण करुं छुं के एक साथे मेलाप करो एक साथे विरुद्ध करवुं तेथी कांइ फायदो नथी अने हालमां पण बधा लोको हजु जैन धर्मनी

मर्यादा शुं छे ते जाणता नथी त्यां सुधी आ वात मान्य पण भाग्ये करशे, माटे ए वात मान्य न करे तो केटला एक शहेरमां जुदी न्यातना जैनीओनुं सीधुं लइने जमे छे अने केटला शेहेरमां तो एवो हठ बंधायो छे के जैनधर्मी पाछलथी थएला एवा लाडवा श्रीमाली छे हवे ते पाछळ थया के केम तेनो लेख जोवामां नथी पण तेमनी साथे संबंध हालमां जमवा खावानो नथी राखता. तेथी जाणीए छीए के पाछळथी थयेला होवा जोइये कारण जे ओसवाल पोरवाड प्रमुख न्यातो पण आचार्य माहाराजे प्रतिबोध करी स्थापी आपी छे ने ते स्थापती वखत जे जे धणीए आचार्य महाराजनी आज्ञा पाली ते सरवे ओसवाल थया तेमां ज्ञाति भेद रह्यो नथी, तेमज हरिभद्र सुरी महाराजे पोरवाड स्थापती वखते पण एमज थयुं छे अने ते सरवे ओसवाल पोरवाड श्रीमाली विगेरे जमे छे, तेम लाडवा श्रीमालीनामां पण कोइ आचार्ये प्ररूप्युं होवुं जोइए अने जैन धर्म पामवाथी एक न्यात थएली जणाय छे ते छतां तेमना पैसाथी सीधुं लावेलुं ने तेनी रसोइ ओसवाल श्रीमाली पोते रांधी जमवा कहे तो पण ओसवाल प्रमुख जमवानी ना कहे छे. आ कोइक प्रकारथी असल हठ बंधायेलो जणाय छे. ए हठ छोडवा लायक छे कारण के शा कारणथी हठ बंधायो ते पण कोइने खबर नथी अने ते हठ पकडी बेसवो ए भूल भरेलुं छे. केटलाएक शेहेरमां कणबी तथा भावसार पैसा वा सीधु आपे छे ते श्रीमाली पोरवाड प्रमुख खुशीथी जमे छे अने वहीवट चालतो आवेलो चाले छे अने तेवीज रीते लाडवा श्रीमाली आ वहीवट चालतो नथी ते चलाववो जरुर छे. आगल ते लोक जमता हता पण आपणे तेमनुं नहीं जमवाथी तेमने खोटुं लागवाथी ते लोक पण आपणुं जमता नथी.आथी शासनमां भेद

पमी गयो छे. ए जैन भाइओमां भेद पमवाथी केटलाएक शासनना काममां घणी गुंचवणो आवे छे. ते लोक आपणा विचार प्रमाणे चालता नथी ने जो तेमनी साथे ऐक्यता होय तो ते पण आपणा विचारथी जुदा पमी शके नहीं. वली तेमनी पासे आपणे धर्म पामवो ने आपणी पासे तेमने धर्म पामवो सुलभ पमे अने घणीज सुगमता पमे, माटे एकगा थवुं जमवुं खावुं तो उत्तम छे पण ते न बने तो तेमना पैसा लइ जमवानो भेद काढी नांखवो. जेटलो भेद भागशे ते गुणदाई छे. साका त्रणसें गाथाना स्तवममां गच्छमां भेद न पाकवा एम साधु महाराज आश्री कहेवुं छे ते तेमज श्रावकमां पण भेद पाकवा जोइए नहीं. बे दीलीथी शासनने घणुं नुकशान छे, वली समत्वी ओसवाल श्रीमाली प्रमुख छे तो कहे छे जे अमो ऊंचा छीए ए लोक निचा छे एम बोली तेमनी निंदा करे छे तेथी नीच गोत्र बंधाय छे, कारण के श्रावकनो धर्म पांचमा गुणस्थाननो छे ते गुणस्थानमां मनुष्यने नीच गोत्रनो ऊदय ज नथी ते छतां श्रावकने नीच कहेवा ए भूल भरेलुं छे ने कर्मबंधनुं कारण छे; वीतरागनी आज्ञा विरुद्ध छे. विचारसारनी टीकामां प्रश्न थयुं छे के हरिकेशी चंमाले दीक्षा लीधी छे ते छठे सातमे गुणस्थानके वर्त्ते छे अने छठे सातमे गुणस्थानके नीच गोत्रनो ऊदय नथी तेना जवाबमां देवचंद्रजी महाराज कहे छे के जेने नरेंद्र जे चक्रवर्त्ती अने देवेंद्र जे सुधर्म इंद्र महाराज नमस्कार करे छे तेने ऊंच गोत्रनो ज उदय कहीए, नीच गोत्र उदय होत तो पूजनीक थातज नहीं. पूजनीकपणुं ऊंच गोत्रना उदयथी ज थाय छे. बार व्रतनी पूजामां श्रावकना बहुमान आश्री कह्युं छे के विरतिने प्रणाम करीने इंद्र सभामां बेसे. गुणस्थानवंत श्रावकने इंद्र महाराज नमस्कार करे छे ने तेवा व्रतवंत ओसवाल श्रीमाली पोरवाम विगरे सि-

वायनी नातमां शुं नहीं होय? अर्थात होय ज. तेम छतां आवो भेद राखवानी पद्धती होय तो व्रतवंत लाडवा श्रीमाली प्रमुखनी निंदा थाय ते शुं प्रभुनी आज्ञा बहार नथी? माटे प्रभुनी आज्ञानुं आराधन थवुं एज उत्तम पुरुषनुं तथा उत्तम पुरुष थवुं होय तेनुं काम छे केमके कर्मग्रंथनो ५६ मी गाथामां मिथ्यात्व मोहनी उपार्जना करवानां उन्मार्गनी देशना विगेरे घणा बोल कह्या छे तेमां संघनुं प्रत्यनीकपणुं पण गण्युं छे अने ते गाथाना अर्थमां श्रावकनी निंदा विगेरे करवाथी मिथ्यात्व उपार्जे एम कहे छे, माटे पर न्यातना धर्मीछने नीचा कहेवाथी एज गाथामां फल कह्यां छे ते पामीये तेमज तेमनी साथे भेद भांगी एकत्र थइए तो समकीत निर्मल थाय माटे आपण सर्वे भीओए आ भेद मनमांथी काढी नांखी अभेदपणुं थाय एम उद्यम करवो जोइए. जैन धर्मना पालनार अने प्रशंसाना करनारनां जेम बने तेम तेमनां बहुमान करवां, तेमने बने एटली मदत आपवी, पण तेमना उपर इर्ष्याभाव द्वेषभाव लाववो नहीं तेम ए नीच जाति छे एवुं कलंक देवुं नहीं जोइए. हालमां रजपुतोनुं आपणे खाता नथी तेज जातिमांथी ओसवाल प्रमुख थया छे तेमज लाडवा श्रीमाली विगेरे धर्म पालवाथी एकन्यात थइ छे. असल आपणे हता तेमने जेम संभारता नथी तेम तेमनी शुं न्यात हती ते तपासवानुं काम नथी. महावीरस्वामी महाराज आदे तिर्थंकर महाराजना गुण ग्रामना करनार तेमना प्ररूपेला मार्गने सेवनार छे माटे ते गुणनी बहुमानता जेटली आपणथी थाय ए करवी पण तेनी लघुता करवी ए महा दुषण समजुं छुं माटे सर्व भाइओए आ प्रयास लेवा योग्य छे.

७ जैनमां न्यातनी वर्तणुकना कायदा करवा जोइए ते सर्वे जैनीओनी एकज जातनी वर्त्तणुक जोइए. रीतो भातोनो

आपवा लेवानो पण कायदो बंधाय तो सहेज सहेजमां न्यातो-मां तफ पडे छे अने लडाइओ थइ ऐक्यता भंग थाय छे ते का-यदाने आधारे चालवानुं होय तो वर्तणुक भंग थाय नहीं. हमेश भर रहे भंग करे तेहना प्रायश्चितनी व्यवहारी मरजादा जोइए अने एक गामना लडे तो तेनुं समाधान कायदामां देश परदेश उपरीउ कर्या होय ते करे एटले तेनो निकाल आवी जाय ने तकरार लांवी पोहोंचे नहीं, कारण जे थोडा थोडा माणसमां पक्षपात थइ शके छे. आखुं जैन मंडल एकज थाय अने तेमनुं बंधारण कायदानुं कर्युं होय ते बंधारण जे तोडे तेनी साथे देशो देशनुं जैन मंडल विरुद्ध थाय तो जैननो कायदो तोडतां भर रहे अने बधा साथे विरुद्धता थइ शके नहीं. कायदा कर्या पछी पण तेमां अडचण पडे तो आखुं मंडल दर वरसे मले त्यारे काय-दामां सुधारो करता जाय आ करवाथी पण जैन कोमने सुखी थवानां साधन छे.

८ आ सिवाय काम सुधारानां करवानां घणां छे पण ए करनार माणसनी खामी छे. ए खामी क्यारे दूर थाय ज्यारे जैन मंडलमांथी परोपकारी माणसोए आवुं काम करवानी खुशी बतावती जोइए, तेमां वे वातनी खुशी बतावती जोइए. एकतो पोते जेटलुं काम करी शके तेटलुं काम करवानी खुशी बतावती जोइए. बीजुं जेटला पैसानी जे मदत करे वा चहाता होय ते-टला पैसानी मदत करवा तैयार थयलाए जणाववुं जोइए. हवे ते कोने जणावे ए बंधारण सारुं एकठा थइ परोपकारी अग्रेसर मुकरर करवा जोइए. अने पैसानी मदतमांथी श्रावको कारभार करनार राखवा जोइए अने ते माणसोथी तथा परोपकारी म-हेनतुं भाइओनी महेनतथी जेटलुं जेटलुं बने ते बनाववुं तेम करतां करतां कोइक वखत बधो सुधारो थवानो वखत मलशे.

एकली वातो करवाथी आ काम बनतुं नथी चतुरविध संघमाथी कोइ पण धनवान गृहस्थ अग्रेसरी थाय तो ए काम बने माटे जेने पूर्वे पुण्य उपार्जन कर्युं छे ते पुण्यात्मा हित सारु उपार्जन कर्युं छे माटे ते पुण्यनां फल एज छे धनवान पुरुषो सारा गुमास्ता राखे पोताना वेपारनुं काम तेमने सोंपी पोते परमार्थनां काममां कम्मर बांधवी के जेथी शासन दीपे अने पुण्यशाली शेठतो कहे जे अमने फुरसद नथी त्यारे साधारण माणसने फुरसद तो होयज क्यांथी? त्यारे पुन्यवंतने धन मळ्युं तेनां फल खावां ते खाइ शकता नथी. अने जे जे जेटलुं जेटलुं काम करे छे ते तो तेटलुं तेटलुं फल चाखे छे अने भगवंतनुं शासन एकवीश हजार वरस सुधी जयवंतु कह्युं छे, माटे कोइ पण भाग्यशाली शासननां काम करवा कम्मर बांधशे अने शासन जयवंतु वर्त्तशे. जे जे भव्य प्राणी शासन जयवंतु राखवानी मेहनत करे छे ते कांइ उछुं पुण्य बांधे छे एम नथी, अतुल्य पुन्य उपार्जे छे; माटे आ वांची कोइ पण भाग्यशाली तत्पर थाय ते सारु आ लखाण कर्युं छे. भाग्यशाली पुरुषो जागे नहीं त्यां सुधी तो चाले छे एम चालवानुं छे पण हालना वखतमां केटला एक भाग्यशालीउ जाग्या जणाय छे ने एनो उद्यम करे छे तेमने मारा लखवाथी कंइ कंइ सारु लागे तो तेउ ते वापरे ते सारु ज लखाण कर्युं छे वा आवता काले पण जैन कोम सुधारवाना कामी थाय तेमने पण मारी बाल बुद्धिना विचारमां कांइ सारो विचार होय ने पसंद पडे ते वर्त्ते ते सारु आ लख्युं छे. कदापि आ लखाण प्रवृत्तिनुं छे तेमां कोइने खोटुं लगाडवा लख्युं नथी तेम छतां पण मारी भूलथी कोइने खोटुं लागे एवुं लखाइ गयुं होय तो तेमनी पासे अगाउथी क्षमा करवा विनंती करुं छुं अने मने लखशे तो पत्र द्वारे हुं माफी मागीश अने प्रभुजी

आगल तो प्रभुनी आज्ञाथी विरुद्ध लखायुं होय तेनुं मन वचन कायाये करी मिच्छामि डुक्कडं दउ छुं.

प्रश्न—जेम जैनमां अभक्ष्य पदार्थ मांस मदीरा मध मांखण मूला प्रमुख अनंतकाय वीदल वेगण रात्री भोजन अभक्ष्य कह्यां छे तेम अन्यदर्शनीउए कह्यां छे ?

उतर--श्रीचंद्र केवलीना रासमां पुराणोमां कहेला श्लोक टांकेला छे ते श्लोक नीचे लखुं छुं, तेथी खात्री थशे. जे जे आत्मार्थी माणसो छे ते तो वीचारशे पण विषयी जीवो छे ते लोक तो जे धर्म माने छे तेना पण शासन उपर भरोंसो न राखे एटले इलाज नथी. अन्यदर्शनीओना धर्म प्रकाशनार ज पोताना शास्त्रमां अभक्ष्य कहेलुं छे ते वांचीने तेहनो त्याग करे नही एटलुं श्रोताना गलामां उतरे एहवो उपदेश पण दइ शके नही, एटले हालमां एहवुं थयुं छे के श्रावक राते खाय नहीं कोइ दयालु ब्राह्मण राते न खाय तेने कहे छे जे तुं तो श्रावक थइ गयो छे आवी दशा वनी छे; ए वधुं योग्य गुरु नही मलवानां फल छे माटे जैनीभाइओए तेहनी दया चींतववी तेज उत्तम छे, पण जैनी थइने हालमां केटलाएक शेहेरमां नलो थया छे तेथी नले चीथरां वांध्यां एटले पाणी गलइ गयुं अने संखारो पण साचवता नथी, आ कांइ थोडी अफसोसनी वात छे! के अन्यदर्शनी कहे जे जैनीओ पाणी गलीने वापरे ने जैनीभाइओ आ वात छोडता जाय छे तो दीर्घकाले अन्यदर्शनी जेवुं ज थशे. केटला एकने कहीए छीए के नलमांथी पाणी लइ तेने गाली नाखी तेनो संखारो जो नल तलावमांथी होय तो तलावमां नांखवो ने कुवामांथी नल होय तो कुवामां नांखवो पण तेम करनार घणा ज थोडा छे, माटे जैनभाइओ जीव दया प्रतिपाल कहेवाय तो ते नाम साचे साचुं क्यांरे थाय के ज्यारे जीवनी जतना करे त्यारे माटे

जीव रक्षा सारु पाणी गलवुं ने तेनो संखारो तलाव वा कुवामां ज्यांनुं पाणी होय त्यां नांखवो. अन्नक्ष्य बावीस जैनशासनमां, कह्यां छे तेनो त्याग करवो. तेमांनां केटलांएक अन्यदर्शनीमां पण कह्यां छे पण केटलांएक अन्यदर्शनीने खबर नथी तेथी नीचे लख्यां छे. जैन न्नाइओने पोतानी त्याग करवानी चीजने अन्यदर्शनी पण त्याग जोग कहे छे तेथी त्याग करवानी श्रद्धा वधे ते सारु लख्युं छे.

॥ श्री जिनो जयतु, यदुक्तं महान्नारते ॥

घातकश्चानुमन्ता च, न्नक्षकः क्रयविक्रयी ॥
लिप्यंते प्राणिघातेन, पञ्चैतेऽपि युधिष्टिर ॥ १ ॥
यावान्त पशु रोमाणि, पशु गात्रेषु न्नारत ॥
तावद्वर्षसहस्राणि, पच्यन्ते पशुघातकाः ॥ २ ॥

अर्थ–महान्नारतमां कह्युं छे के हे युधिष्टिर जीवोने प्राण घाते करीने मारनार, संमत्ति आपनार, खानार, वेचनार, वेचातु लेनार, आ पांचे जणाओ पापथी लेपाय छे अने पशुना शरीरमां जेटलां रुवाटां छे तेटला हजार वर्ष सुधी नरकमां रहे छे.

॥ शान्तिपर्वेप्युक्तम् ॥

यूपं छित्त्वा पशुन् हत्वा, कृत्वा रुधिर कर्दमान् ॥
यद्येवं गम्यते स्वर्गे, नरके केन गम्यते ॥ १ ॥

अर्थ–शान्तिपर्वमां पण कह्युं छे के थांन्नलाने छेदीने अने पशूओने मारीने पृथ्वी उपर लोहीना कादवो करीने जो स्वर्गमां जाय तो नरकमां कोण जाय? अर्थात् पशु विगेरे जीवोने मारनार ज नरकमां जाय ॥ माटे पशुघात अने यज्ञ होमादीक करवाथी एहवांज फल थाय.

॥ मार्कंडपुराणे ॥

जीवाना रक्षणं श्रेष्ठं, जीवाः जीवितकांक्षिणः ॥

तस्मात् समस्तदानेभ्योऽजयदानं प्रशस्यते ॥ ४ ॥

अर्थ—मार्कंड पुराणमां कह्युं छे के जीवोनुं रक्षण करवुं ए श्रेष्ट छे. जीवो पण पोताना जीवीतनी इच्छा करे छे, माटे सर्व दान थकी जीवोने अजयदान आपवुं ए अधिक गणाय छे. ॥ अजयदाननी महत्वता केटली बतावे छे ते छतां पशुने होमवुं थाय ते केटली बालचेष्टा छे, माटे सर्वे धर्ममां कोइने दुःख न थाय एम वर्तवुं एज धर्म छे.

॥ तत्रैव मार्कंडे पुष्पाण्युक्तान्यष्टौ ॥

अहिंसा परमं पुष्पं, पुष्पं इंडिय निग्रहम् ॥ सर्व जूत दया पुष्पं, क्षमा पुष्पं विशेषतः ॥ ध्यान पुष्पं तपः पुष्पं, ज्ञान पुष्पं तु सप्तमं ॥ सत्यं चैवाष्टमं पुष्पं, तेन पुष्यंति देवता ॥ ५ ॥

अर्थ—मार्कंडपुराणमां 'जीवानां रक्षणं श्रेष्टं' ए जग्योए आठ पुष्प कह्यां छे, तेमां हिंसा न करवी ए पहेलुं पुष्प, इंडिय निग्रह करवो ए बीजुं पुष्प, त्रीजुं पुष्प सर्व जीवमां दया राखवी, चोथुं पुष्प शान्ति राखवी, पांचमुं पुष्प ध्यान करवुं, छठुं पुष्प तप करवो, सातमुं पुष्प ज्ञान मेळववुं, ने आठमुं पुष्प सत्य बोलवुं, एथी देवताउ प्रसन्न रहे छे.

॥ यडुक्तं महाजारते ॥

यूकामत्कुन दंशी मसात्, जंतुश्च तुदति तनूं ॥ पुत्र वत् परि रक्षंत्ति, ते नराः स्वर्ग गामिनः ॥ ६ ॥ आत्म पादौ च ये घ्नन्ति, ते वै नरक गामिनः॥ सर्वत्र कार्या जीवानां ॥ रक्षा चैवापराधिनाम् ॥ ७ ॥

अर्थ— जू, मांकड, मछरने आदे लइ जंतु शरीरने चटका मारे छे तो पण तेनुं पुत्रनी पेठे जे रक्षण करे छे, ते प्राणियो स्वर्ग

मां जवा योग्य छे ॥ अने जे मनुष्य ज़ीवोना शरीर आदे लइने पग विगेरे मारे छे ते मनुष्य नरकमां जाय छे माटे अपराधी जीवोनी पण सर्व प्रकारथी रक्षा करवी ए मुख्य धर्म छे.

॥ अन्यदप्युक्तं महाभारते ॥

विंशत्यंगुलमानं तु, त्रिंशदंगुलमायतम् ॥ तद्वस्त्रं द्विगुणीकृत्य, गालयित्वा पिबेत् जलम् ॥१॥ तस्मिन्वस्त्रे स्थितान् जीवान्, स्थापयेत् जलमध्यतः ॥ एवं कृत्वा पिबेत् तोयं, स याति परमां गतिम् ॥ २ ॥

अर्थ–पाणी गालवा विषे कह्युं छे के, वीश आंगल पहोळुं ने त्रीश आंगल लांबु वस्त्र लइ तेने बेवडुं करी तेनाथी पाणी गालीने पीवुं, ने ते वस्त्रमां रहेला जीवोने कूवा विगेरेमां नांखवा, आवी रीते करीने जे मनुष्य पाणी पीए ते उत्तम गतिने पामे ॥ १ ॥ आ रीते महाभारते छे, छतां सन्यासी पुराणी थइ अणगल पाणी पीये, वापरे, नहाय, तेनी शी गति थाय? ते महाभारत वांचनार सांभलनार लक्ष नथी देता, ते केवी बाल दशा छे तो आत्मार्थिये दया करवी.

दृष्टिपूतं न्यसेत्पादं, वस्त्रपूतं पिबेत् जलं ॥
सत्यपूतं वदेत् वाक्यं, मनःपूतं समाचरेत् ॥

अर्थ–आंखोथी जोइने पग मूकवा, वस्त्रथी गलीने पाणी पीवुं, सत्यथी पवित्र वचन बोलवुं, मन पवित्रथी आचरवुं.

॥ महाभारते ॥

मधु भक्षणेपिदोषः– संग्रामेण यत् पापं, अग्निना भस्मसात् कृतं ॥ तत् पापं जायते तस्य, मधुबिंदु प्रभक्षणात् ॥ १ ॥

अर्थ–मोटुं युद्धकरवाथी जेटलुं पाप थाय छे, अग्निथी गाम

विगेरे बालवाथी जेटलुं पाप थाय छे, तेटलुं पाप मधनुं बिंदु मात्र खावाथी थाय छे ॥ मधनुं आवुं पाप छे तोपण शास्त्र वांचनार त्याग न करे तो सांभलनारने त्यागनी शी वात? माटे प्रथम कथा वांचनार दयालुये मधनो त्याग करवो के जेथी श्रोता सुधरे.

॥ विष्णुपुराणेऽपि ॥

ग्रामाणां सप्तके दग्धे, यत् पापं समुत्पद्यते ॥
तत् पापं जायते पार्थ, जलस्याऽगलिते घटे ॥ १ ॥
संवत्सरेण यत् पापं, कैवर्तस्यैव जायते ॥
एकाहेन तदाप्नोति, अपूतजलसंग्रही ॥ २ ॥

अर्थः—विष्णुपुराणमां कह्युं छे के हे पार्थ! सात गाम बालवाथी जेटलुं पाप थाय छे तेटलुं पाप घडामां गाळ्या वगरनुं पाणी भरवाथी थाय छे. माछी वर्ष सुधी जाल नांखे ने तेने जेटलुं पाप लागे तेटलुं पाप एक दिवस गाळ्या विना पाणी वापरनारने थाय छे ॥२॥

॥ विष्णुपुराणे ॥

यः कुर्यात् सर्वकार्याणि, वस्त्रपूतेन वारिणा ॥
स मुनिः स महासाधु, स योगी स महाव्रती ॥ १ ॥

जे वस्त्रथी गालेला पाणिये करीने सर्व कार्य करे छे तेज मुनि, तेज मोटो साधु, तेज योगी, ने तेज मोटा व्रत वालो जाणवो.

॥ यदुक्तं ऐतिहासपुराणे ॥

अहिंसा परमं ध्यानं, अहिंसा परमं तपः॥ अहिंसा परमं ज्ञानं. अहिंसा परमं पदं ॥१॥ अहिंसा परमं दानं, अहिंसा परमो दमः ॥ अहिंसा परमो जापः, अहिंसा परमं शुभम् ॥२॥ तमेवमुत्तमं धर्मं, मंहिंसा धर्म रक्षणं ॥ ये चरन्ति महात्मानः, विष्णुलोकं व्रजान्त ते ॥ ३ ॥

अर्थ—ऐतिहासपुराणमां कह्युं छे के ॥ अहिंसा ए उत्तम

ध्यान छे, अहिंसा ए उत्तम तप छे, अहिंसा ए उत्तम ज्ञान छे, अहिंसा ए उत्तम पद छे, अहिंसा ए उत्तम दान छे, अहिंसा ए-उत्तम दम छे, अहिंसा ए उत्तम जप छे, अहिंसा एज उत्तम शुभ छे, अहिंसा रूप धर्म करवो एज उत्तम धर्म छे, ते धर्मनुं जे महात्माउ आचरण करे छे ते विष्णु लोकमां जाय छे ॥ ३ ॥

॥ यदुक्तं नागपफुल ग्रंथे ॥ युधिष्टिरं प्रति कृष्णः ॥

अभक्ष्याणि नभक्ष्याणि, कंदमूलानि भारत ॥
नूतनोद्गमपत्राणि, वर्जनीयानि सर्वतः ॥ १ ॥

अर्थः—नागपफुल ग्रंथमां धर्मराजाने कृष्णें कह्युं छे के हे धर्मराजा कंदमूल अभक्ष्य छे ते न खावां तथा नविन उगेला अंकुरादिनां पांदडां विगेरे पण त्याग करवां आ रीते कह्या छतां कंदमूल जे सूरण शकरियां विगेरे एकादशी करीने खाय तेनुं केटलुं पाप ते बुद्धिवाने विचारवुं.

॥ मधुपाने विशेषमाह ॥

मधुपाने मतिभ्रंशो, नराणां जायते खलु ॥ धर्मेण तेभ्यो दातृणां. नध्यानं न च सत्क्रिया ॥१॥ मद्यपाने कृते क्रोधो, मानं लोभश्च जायते ॥ मोहश्च मत्सरश्चैव, दुष्टभाषणमेव च ॥२॥ अन्यदप्युक्तं ॥ मद्ये मांसे मधुनि च, नवनीते बहिःकृते ॥ उत्पद्यंते विलीयंते, सुसूक्ष्म जंतु राशयः॥

अर्थः—मदिरा पीवामां मनुष्योने बुद्धिनो भ्रंश थाय छे तेथी पापाचरण करे छे, माटे तेउने आपनारने धर्म थतो नथी ने मदिरा पीनारने ध्यान तथा सत्क्रिया फल रहित थाय छे ॥ १ ॥ मदिरा पीवाथी क्रोध, मान, लोभ, मोह, मत्सर थाय छे, तथा दुष्ट भाषण बोलाय छे ॥ २ ॥ वीजुं पण कह्युं छे के मदिरा, मांस, मध तथा छासमांथी वार काढेला मांखणमां, झीणा जंतुउना समुह उत्पन्न थाय छे ने नाश थाय छे ॥ मांखणनो दोष कह्यो छे पण

दोष गणता नथी अने कहे छे के शास्त्रथी विरुद्ध नथी ते न्याथीए विचारवुं.

॥ अनंतकाय नक्षणे दोषमाह ॥

पुत्रमांसं वरभुक्तं, न तु मूलक नक्षणं ॥
नक्षणात् नरकं याति, वर्जनात्स्वर्गमाप्नुयात् ॥१॥

अर्थः—पुत्रनुं मांस खावुं ते सारुं पण मूलो न खावो, मूलो खावाथी प्राणी नरकमां जाय छे ने एनो त्याग करवाथी स्वर्गमां जाय छे ॥ १ ॥

॥ ऐतिहासपुराणेऽपि ॥

यस्तु वृंताक कालिंग, मूलकानां च नक्षकः ॥
अंतकाले स मुढात्मा, न स्मरिष्यति मां प्रिये ॥ १ ॥

अर्थः—ऐतिहासपुराणमां नगवाने कह्युं छे के हे प्रिये वेंगण, कालिंगमो अने मूलाने खानार प्राणी अंतकालमां पण मने नहीं संन्नारे ॥ १ ॥ एनो आशय एज छे के वेंगण, कालिंगमा अने मुलानो खानार अधर्मी छे तेथी अंतकाले मने संन्नारशे नहि तेथी डुर्गतिमां जशे.

॥ शिवपुराणेऽपि ॥

यस्मिन् गृहे सदा नाथ, मूलकं पचति जनः॥ श्मशान तुल्यं तद्वेश्म, पितृन्निः परिवर्जितं ॥ १ ॥ मूलकेन समं नोज्यं, यस्तु नुंक्ते नराधमः॥ तस्य बुद्धि र्न चैधेत, चांडायणशरीरीणः ॥ २ ॥ नुक्तं हलाहलं तेन, कृतं चा नद्यन्नक्षणं॥ वृंताक नक्षणाच्चापि, नरा यांत्येव रौरवं ॥३॥

अर्थः—शिवपुराणमां कह्युं छे के ॥ हे नाथ! जेना घरमां निरंन्तर मूला रंधाय छे तेनुं घर श्मशान तुल्य छे, ने ते घरने पितृ लोकोए त्याग कर्युं छे. मूलानी साथे जे वस्तुनुं नोजन करे छे

ते मनुष्यमां अधम गणाय छे ने तेनी बुद्धि चांद्रायणादि व्रते करीने पण शुद्ध थती नथी ॥ २ ॥ जेणे अभक्ष्य, मूला, वेंगण विगेरे खाधां तेणे हलाहल झेर पीधुं समजवुं ने अंते ते प्राणी रौरव नामना नरकमां जाय छे. ॥ ३ ॥

॥ पद्मपुराणेपि ॥

गोरसं माषमध्ये तु, मुद्गादिके तथैव च ॥
भक्षयेत्तंभवेत् नूनं, मांसतुल्यं युधिष्ठिर ॥ १ ॥

अर्थः—हे युधिष्ठिर ॥ दुध, दहिं, छाश अडदमां तथा मग विगेरे कठोलमां नाखे छे ते मांस तुल्य थाय छे, माटे ए खावुं ने मांस खावुं बराबर छे ॥ १ ॥

॥ अन्यदप्युक्तं तत्रैव ॥

अस्तंगते दिवानाथे, आपो रुधिर मुच्यते ॥ अन्नं मांससमं प्रोक्तं, मार्कंडेन महर्षिणा ॥ १ ॥ चत्वारो नरक द्वारः, प्रथमं रात्रिभोजनं ॥ परस्त्रिगमनं चैव, संधानाऽनन्तकायिकाः ॥ ३ ॥

अर्थः—पद्मपुराणमां बीजुं पण कह्युं छे के दिवसनो स्वामी सूर्य अस्त पामे, त्यार पछी पाणी पीवुं ए लोही तुल्य छे ने अन्न खावुं ए मांस तुल्य छे ॥ १ ॥ चार नरकनां द्वार छे तेमां प्रथम रात्रे भोजन, बीजुं परस्त्री साथे गमन, त्रीजुं अथाणुं विगेरे खावुं. चोथुं मूला विगेरे खावा जेमां अनंतकाय जीव थाय छे ॥ ३ ॥

आ श्लोकमां रात्री भोजन, परस्त्री गमन तोत्र अथाणां जे सुकातुं बराबर नथी अने कीडा पडे छे [illegible]
काय एटले अनंत जीवो छे तेथी, [illegible]
माटे त्याग करवो.

॥ समाप्त